राजा पन्नालाल गोवर्द्धनलाल ग्रंथमाला

नंददास

द्वितीय भाग

संपादक
उमाशंकर शुक्ल, एम० ए०
राजा पन्नालाल स्कॉलर

प्रकाशक
प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग

सिद्धांत पंचाध्यायी

जै जै जै श्री कृष्न, रूप, गुन, कर्म अपारा।
परम धाम, जग-धाम, परम अभिराम, उदारा॥
आगम, निगम, पुरान, स्मृती-गन जे इतिहासा।
अवर सकल विद्या-बिनोद, जिहि प्रभु की उसासा॥
रूप, गंध, रस, सब्द, स्पर्स जे पंच बिषै बर। ५
महाभूत पुनि अंच, पवन, पानी, अंबर, धर॥
दस इंद्रिय अरु अहंकार, महतत्व, त्रिगुन, मन।
यह सब माया कर बिकार, कहै परमहंस गन॥
सो माया जिन के अधीन निन रहत मृगी जस।
बिस्व-प्रभव, प्रतिपाल, प्रलै-कारक, आयस-वस॥ १०
जाग्रति, स्वप्न, सुषुप्ति, धाम परब्रह्म प्रकासै।
इंद्रियगन मन-प्रान, इनहि परमातम भासै॥
षट गुन अरु अवतार-धरन, नाराइन जोई।
सब को आश्रय,अवधि-भूत, नँद-नंदन सोई॥
सिसु, कुमार, पौगंड, धरम पुनि बलित, ललित लस। १५
धरमी, नित्य-किसोर, नवल चित-चोर एक रस॥
जे जग मैं जगदीस कहैं, अति रहैं गरव भरि।
सब को कियौ निरोध, अनन निज सहज खेल करि॥

महा मोहिनी-मय माया मोहे तिरसूली ।
२० कोटि कोटि ब्रह्मांड निरखि, विधि हू गति भूली ॥
महा प्रलै कौ जल-बल लै, गिरि पै बरस्यौ हरि ।
न जनौं गरब गिरि तै गिरि, कत गयौ धूरि मूरि ररि ॥
ब्रह्मादिक कौ जीति, महा मद मदन भर्यौ जब ।
दरप-दलन नँद-ललन, रास-रस प्रगट कर्यौ तब ॥
२५ अवधि-भूत गुन-रूप-नाद-तरजन जहँ होई ।
सब रस कौ निरतास, रास-रस कहियै सोई ॥
ननु विपरीत धरम यह, अति सुदर दरसन करि ।
कौंन धरम-रखवारौ, अनुसरै जीउ-सदृस हरि ॥
काल, करम, माया अधीन, ते जीउ बखाने ।
३० बिधि-निषेध, अरु पाप-पुन्य, तिन मैं सब साने ॥
परम धरम ब्रह्मन्य, ग्यान - बिग्यान - प्रकासी ।
ते क्यौं कहियै जीउ-सदृस, श्रुति - सिखर - निबासी ॥
करम, काल, अनिमादि जोगमाया के स्वामी ।
ब्रह्मादिक कीटांत जीउ, सर्बांतरजामी ॥
३५ बहे जात संसार-धार, जिय - फंदे - फंदन ।
परम तरुन करुना करि, प्रगटे श्री नँद-नंदन ॥
सघन सच्चिदानंद, नंद-नदन ईस्वर जस ।
तैसैई तिन के भगत, जगत मैं भये भरे रस ॥
श्री बृंदाबन चिदघन, छन छन घन छबि पावै ।
४० नंद-सुवन कौ नित्य-सदन, श्रुति-स्मृति जिहि गावै ॥

सुंदर सरद सुहाई रितु, जहँ सदा बिराजै।
नव अखंड-मंडल-ससि, सब ही रजनी भ्राजै॥
जमुन-तीर बलबीर चीर हरि, बर जिन दीनौ।
तिन-सँग बिबिधि बिलास रास रमिबे मन कीनौ॥
तिहि छिन सोई उड़राज उदित, रसराज सहाइक। ४५
कुमकुम-मंडित प्रिया-बदन, जनु नागर नाइक॥
कमल-नयन पिय कौ हिय, सुंदर प्रेम-समुद जस।
पूरन ससि तन निरखि, हरखि बाढ़ी तरंग रस॥
अरुन किरन मिलि अरुन भयौ, छबि कहि नहिं जाही।
जनु हरि-हिय अनुराग, निकसि बिकर्‍यौ बन माही॥ ५०
सब्द-ब्रह्म मैं बेनु बजाइ सबै जन मोहे।
सुर - नर - गन - गंधर्व, कछु न जानैं हम को हे॥
परम मधुर मादक सु नाद, जिहि ब्रज-जुव मोही।
त्यौं ही धुनि सुनि चली, छटा सी अतिसय सोहीं॥
मन पहिलेई आकरषे, सुंदर घन-मूरति-हरि। ५५
अब मधुराधर-मधु मिलाइ, बोलीं सुनाइ करि॥
सुनि उमगी अनुराग-भरी, सावन-सरिता जस।
सुंदर नगधर, नागर-सागर मिलन बढ़ौ रस॥
कोउ गमनी तजि सोहन, दोहन, भोजन, सेवा।
अंजन, मंजन, चंदन, दुजपति - देवन - लेवा॥ ६०
धरम, अरथ, अरु काम, कर्म ये निगम निदेसा।
सब परिहरि हरि भजत भई, करि बड़ उपदेसा॥

प्रीतम-सूचक सब्द सुनत जब, अति रति बाढ़त ।
होत सहज सब त्याग, नाग कंचुकि जिमि छाँड़त ॥
६५ जदपि कहूँ के कहूँ वधुन आभरन बनाये ।
हरि पिय पै अनुसरत, जहाँ के तहँ चलि आये ॥
कृष्न-तुष्टि करि कर्म करै जो आन प्रकारा ।
फल बिभिचार न हौइ, हौइ सुख परम अपारा ॥
मात, पिता, पति, कुलपति, सुत अति रोकि रहे जब ।
७० नहिंन रुकीं, रस-धुकी, जाइ सो मिली तहाँ तब ॥
मोहन नंद-सुवन पिय, हिय हरि लीनौ जाकौ ।
कोटि कोटि विघनेस, विघन करि सकै न ताकौ ॥
जे अरवर मैं अति अधीर, रुकि गईं भवन जब ।
गुनमय तन तजि, चित्सरूप धरि, पियहि मिली तब ॥
७५ ग्यान बिना नहिं मुकति, यहै पंडित गन गायौ ।
गोपिन अपनौ प्रेम-पंथ, न्यारौई दिखरायौ ॥
ग्यान आत्मा-निष्ठ, गुनत यौं आतम-गामी ।
कृष्न अनावृत परम ब्रह्म, परमातम स्वामी ॥
नाहिंन कछु सिंगार-कथा इहि पंचाध्याई ।
८० सुंदर अति निरवृत्ति-परा तैं इती बड़ाई ॥
जिन गोपिन कौ प्रेम निरखि सुक भये अनुरागी ।
ब्रह्मानंद मगन, ते निकसे ह्वै बैरागी ॥
पुनि तिन की पद-पंकज-रज, अज अजहूँ बांछै ।
ऊधौ बुद्धि विसुद्धन सौं पुनि सो रज इंछै ॥

संकर नीके जानत, सारद, नारद गावत । ८५
तातें सबै जगतगुरु, गोपिन गुरु करि मानत ।।
ब्रज-रमनी, गज-गमनी, कानन में जब आई ।
सुंदर बृंदाबन घन, छन छन घन छबि पाई ।।
त्रि ुन पवन लै, आगे ह्वै, अलि धाये आये ।
अवर सहेली चेली, तिन हूँ अति सुख पाये ।। ९०
मनिमय नू ुर किंकिनि, कंकन के झनकारा ।
तैसिय अलि-झंकारनि, चंचल कुंडल-हारा ।।
आनि हरि निकट ठाढ़ी, सोहति प्रेम नवेली ।
मानहुँ सुंदर सुरतरु, चहुँ दिसि आनँद-बेली ।।
नागर गुरु नँद-नंदन, बोले अति अनुरागे । ९५
काम-बिषै-पर बचन, कहे सब रस के पागे ।।
जे पंडित सिंगार-ग्रंथ-मत यामैं सानैं ।
ते कछु भेद न जानैं, हरि कौं बिषई मानैं ।।
अनाकृष्ट-मन कृष्न, दुष्ट-मद-हरन पियारे ।
जहँ जहँ उज्जल परम धरम, ताके रखवारे ।। १००
धरम-अरथ-पर बचन, कहे ते काहे तें इत ।
ब्रज-देबिन के सुद्ध प्रेम-रस प्रगट करन हित ।।
सुनि पिय के अस बचन, चकित भई ब्रज की बाला ।
गदगद कंठ रसाला, बोली यौं तिहि काला ।।
अहो अहो जसुमति प्यारे, सुंदर नंददुलारे । १०५
जिनि कहौ बचन अन्यारे, तुम तौ प्रानपियारे ।।

धरम कर्‍यौ दृढ ताकौ, जो धरमहि रत होई।
जा धरमहि आचरत, समल मन निरमल होई॥
मन निरमल भये सुबुधि, तहाँ बिग्यान प्रकासै।
११० सन्य ग्यान आनंद, आतमा तब आभासै॥
तब तुम्हरी निज प्रेम-भगति-रति अति ह्वै आवै।
तौ कहुँ तुम्हरे चरन कमल कौ निकटहि पावै॥
तिन कहुँ हो तुम प्राननाथ, फिरि धरम सिखावौ।
समझि कहौ पिय बात, चतुर सिरमौर कहावौ॥
११५ अरु जे सास्त्र-निपुन जन, ते सब करहिं तुमहिं रति।
तुम अपने आतमा नित्य पिय नित्य धरम गति॥
दार, गार, सुत, पनि इन करि कहौ कौन आहि सुख।
बढ़ै रोग सम दिन दिन, छिन छिन देहिं महा दुख॥
ब्रह्मादिक जा चितवन लगि नित सेव करी है।
१२० सो लछिमी सब छोड़ि, तिहारे पाइ परी है॥
तैसैंहि हम सब परिहरि, तिहारे चरननि आई।
नाहिं तजौ, पिय भजौ, तजौ यह सब निठुराई॥
सुनि गोपिन के प्रेम-बचन, हँसि परे भरे रस।
जदपि आतमा-राम, रमत भये नवल नेह बस॥
१२५ बिहरत बिपिन बिहार, कहत कछु नहिं कहि आवै।
बार बार तन पुलकित, सुक मुनि तिहिं तहँ गावै॥
अवधि-भूत नागर नगधर-कर-पारस पायौ।
अधिक अपनपौ जानि, तनक सौभग-मद छायौ॥

गरबादिक जे कहे काम के अंग आहि ते ।
सुद्ध प्रेम के अंग नाहि, जानहि प्राकृत जे ॥ १३०
कमल-नैन करुनामय, सुंदर नंद-सुवन हरि ।
रम्यौ चहत रस रास, इनहि अपनी समसरि करि ॥
तातैं तिन ही माहि तनक दुरि रहे ललन यौं ।
दृष्टि-बंध करि दुरैं, बहुरि प्रगटैं नटवर ज्यौं ॥
अलक, पलक की ओट, कोट जुग-सम जिन जाही । १३५
तिन कहँ पल छिन ओट, कोट दुख गनना नाहीं ॥
सुधि न रही कछु तन मै, बन मै बूझति डोलैं ।
निगम-सार सिद्धांत-बचन, ते अलबल बोलैं ॥
कृष्न-बिरह नहि बिरह, प्रेम-उच्छलन कहावैं ।
निपट परम सुख-रूप, इतर सब दुख बिसरावैं ॥ १४०
ढुँढन लगी ब्रज-बाल, लाल मोहन पिय को तहँ ।
नूत, प्रयाल, कदंब, निंब अरु अंब, पनस जहँ ॥
आवहु री ये बड़ महान वट, पीपर बूझैं ।
मोहन पियहि बतैहैं, जौ कहुँ इन कौ सूझैं ॥
आगे चलि ब्रज-जुवती, रोवति आनि परी तहँ । १४५
नूत, प्रयाल, कदंब, निंब अरु अंब, पनस जहँ(?)॥
सखि ये तीरथ-बासी, पर उपकारी सब दिन ।
बूझहु री नँद-नंदन-मग, इन सूझत है किन ॥
रूप-गुनन-भरी लता, जे सोहति अति बन माही ।
नँद-नंदन इन बूझौ, निरखे हैं कै नाहीं ॥ १५०

इहि बिधि बन घन ढूँढ़ि, प्रेम-वस लगत सुहाई।
करन लगी मन-हरन, लाल-लीला मन-भाई ॥
सिसु, कुमार, पौगंड-वलित, अभिनय दिखराये।
कमल-नैंन प्रापति उपाइ, सब लोक सिखाये ॥
१५५ अरु जे आहिं उपासक, तिनहिं अभेद बतायौ।
सिसु, कुमार, पौगंड-कान्ह एकै दिखरायौ ॥
अवतारी अवतार-धरन, अरु जितक बिभूती।
इह सब आश्रय के अधार, जग जिहि की ऊती ॥
तातैं जग, गोपी, सुक मुनि हू पुनि पुनि गावैं।
१६० सनक-सनंदन जग-बंदन, तेऊ सिर नावैं ॥
नँद-नंदन-लीला करि, ललना धन्य भई जब।
सुंदर चरन-सरोज-खोज, निकटहिं पायौ तब ॥
सुनि सब धाई आई, जीवनमूरि सी पाई।
पुनि पुनि लेहिं बलाई, आपनी करति बड़ाई ॥
१६५ सखि इहि कृष्न-चरन-रज, अज-संकर सिर धारैं।
रमा रमनि पुनि धारैं, अपने दोस निवारैं ॥
पुनि पेखे ढिँग जगमगात, पग प्यारी के जब।
कौंन आहि इहि बड़भागिनि, यौं कहन लगीं तब ॥
इन नीके आराधे, हरि ईसुर वर जोई।
१७० तातैं अधर-सुधा-रस, पीवत निधरक सोई ॥
सोऊ पुनि अभिमान भरी, यौं कहन लगी तिय।
मो पै चल्यौ न जाइ, जहाँ तुम चलन चहन पिय ॥

जब जब जो उदगार होइ अति प्रेम-बिधुंसक।
सोइ सोइ करै निरोध, गोपकुल-केलि-उतंसक॥
नहिं कछु द्रियगामी, कामी कामिन के बस। १७५
सब घट अंतरजामी स्वामी परम एक रस॥
नित्य आत्मानंद, अखंड सरूप उदारा।
केवल प्रेम सुगम्य, अगम्य अवर परकारा॥
तातैं तिन ही माहिं पुरयौ, परि दूरि न भायौ।
सो बाला अति बिलपि, अखंडित प्रेम दिखायौ॥ १८०
जैसेई कृष्न अखंड-रूप, चिदरूप उदारा।
तैसेई उज्जल रस अखंड तिन करि परिवारा॥
जगत-उधारन-कारन, गुरु ह्वै मग दिखरावैं।
कामी कामिनि समभावै, ज्यौं जिनि इहि गावै॥
सो तब तिन हूँ देखी, ठाढ़ी सोहति ऐसी। १८५
नव अंबुद तैं अब हीं, बिछुरी बिजुरी जैसी॥
सोचैं, चितवै, बन मैं, मन मैं, अचरज भारी।
किन कीनी चंद तैं चारु चंद्रिका न्यारी (?)॥
धाइ भुजन भरि, लै पुन तिहि, जमुना-तट आईं।
कृष्न-दरस-लालसा, सु तरफैं मीन की नाईं॥ १९०
अपनेई प्रेम-सुधा-निधि बढ़ि गई अधिक कलोलैं।
बिह्वल ह्वै गईं बाल, लाल सौं अलबल बोलैं॥
तब प्रगटे नँद-नंदन, सुंदर सब-जग-बंदन।
गोपी-ताप-निकंदन, को है कोटिक चंदन॥

१९५ मधुर मधुर मुसकाते, विलुलित उर-वनमाला।
केवल मनमथ मन-मथ, चंचल नैन बिसाला॥
पियहि निरखि ब्रजबाल, उठीं सब एकहि काला।
ज्यौं प्रानन के आये, उझकहि इंद्रिय-जाला॥
साँवरे पिय-कर-परस पाइ, सब सुखित भई यौं।
२०० परमहंस भागवत मिलत, संसारी जन ज्यौं॥
जैसैं जागत स्वप्न सुपुप्ति, अवस्था मैं सब।
तुरिय अवस्था पाइ जाइ सब भूलि गईं तब॥
मिलि जमुना-तट विहरत, सुदर नँद के लाला।
तैंसिय ब्रज की बाला, भरीं अति प्रेम रसाला॥
२०५ जदपि अखंडानंद, नंद-नंदन ईस्वर हरि।
तदपि महा छवि पाईं, छबीली ब्रज-देविन करि॥
पुनि ब्रज-सुदरि सँग मिलि, सोहत सुदर वर यौं।
सक्ति अनेक करि आवृत, सोहत परमातम ज्यौं॥
पुनि जस पुरुष उपासक ग्यानादिक करि सोहै।
२१० यौं रस-ओपी गोपी मिलि, मनमोहन मोहै॥
कृष्न-दरस आनंद-बरस, दुख दूरि भयौ मन।
पाइ मनोरथ अपनौ, जैसैं हरषै श्रुतिगन॥
जब लगि श्रुति करि कर्म-कांड करमनन प्रमानै।
तब लगि इंद्र-बरुन-रबि, ईस्वर इन ही गानैं॥
२१५ ग्यान-कांड मैं परमेस्वर, बिग्यान परम सुख।
बिसरि गयौ सब काम्य, कर्म-अग्यान महा दुख॥

तैसेंई गोपी प्रथम काम, अभिराम रमी रस।
पुनि पाछे निःसीम प्रेम, जिहिं कृष्न भये बस॥
जेन-केन परकार होइ अति कृष्न-मगन मन।
अनाकर्न चैतन्य, कछु न चितवै साधन तन॥ २२०
महा द्वेष करि महा सुद्ध, सिसुपाल भयौ जब।
मुक्त होत वह दुष्टपनौ, कछु सँग न गयौ तब॥
अरज्या, सरवा, स्त्रुवा, जग्य-साधन अविसेखै।
मरग जाइ, सुख पाइ, बहुरि को तिन तन देखै॥
जोगी जिहिं अष्टांग-साधना हू साधत ते। २२५
पाइ परम परमात्म, बहुरि का बहुरि करत ते॥
तैसेंई ब्रज की बाम, काम-रस उत्कट करि कैं।
सुद्ध प्रेममय भईं, लई गिरिधर उर धरि कैं॥
आरंभित तब रुचिर रास, अद्भुत हुलास जहँ।
अमल अष्टदल-कमल, महा मंडल मंडित तहँ॥ २३०
मधि कमनीय करनिका, ता पर बिबि किसोर बर।
पुनि द्वै द्वै गोपी करि, हरि-मंडित मंडल पर॥
एकै मूरति ललित, लाल आलात की नाईं।
सब के असनि धरी, साँवरी बाँह सुहाई॥
जदपि बच्छस्थल रमति, रमा रमनी बर कामिनि। २३५
तदपि न यह रस पायौ, पायौ जो ब्रज-भामिनि॥
जितक हुतीं ब्रज-बधू, कोटियन कोटि भरी रति।
तितेई तहाँ रागिनी-राग, संगीत भेद गति॥

काहू के काहू न गीत-संगीत छुयौ जहँ।
२४० भिन्न भिन्न अपनाइ, अनागत प्रगट कियौ तहँ॥
बनिता जहँ सतकोटि, कहत कछु नहिं कहि आवै।
अपने गुन गति, नृत्य, नाद, कोउ पार न पावै॥
जग मैं जो संगीत-नाट, जिहिं जगत रिझायौ।
सो ब्रज-तियन कौ सहज गमन, यौं आगम आयौ॥
२४५ जो ब्रज-देबी निर्तति मंडल रास महा छबि।
तिहिं कोउ कैसै बरनै, ऐसौ कौंन आहि कबि॥
राग - रागिनी - सम, जिन कौ बोलिबौ सुहायौ।
सु कौन पै कहि आवै, जो ब्रज-देबिन गायौ॥
जैसैं कृष्न अमित महिमा, कोउ पार न पावै।
२५० ऐसैं ही ब्रज-बनिता गुन गन गनत न आवै॥
जब नाइक के भेद-भाउ, लावन्य, रूप, गुन।
अभिनय करि दिखरावैं, गावैं अद्‌भुत गति उन॥
तहाँ साँवरे कुँवर, रीझि कै रीझि रहत यौं।
निज प्रतिबिंब-बिलास, निरखि सिसु भूलि रहत ज्यौं॥
२५५ जिन की गीत-धुनि, छटा, सकल जग छाइ रही है।
जिमि रंचक लछिमी कटाच्छ, सब बिभव कही है॥
ते तौ मदनमोहन पिय, रीझि भुजन भरि लीनी।
चुंबन करि मुख-सदन, बदन तैं बीरी दीनी॥
लटकि लटकि ब्रज-बाला, लाला उर जब फूली।
२६० उलटि अनंग अनंग दह्यौ, तब सब सुधि भूली॥

रीझि सरद की रजनी, न जनी केतिक बाढ़ी।
बिलसत सजनी स्याम, जथा रुचि अति रति गाढ़ी॥
थके उड़प अरु उड़गन, उन की कौन चलावै।
काल-चक्र पुनि चकित थकित, कछु मरम न पावै॥
निरखत सारद, नारद, संकर, सनक-सनंदन। २६५
हरषत, बरषत फूलन, जै जै जै नँद-नंदन॥
अद्‌भुत रस रह्यौ रास, कहत कछु कहि नहि आवै।
सेस सहस मुख गावै, अजहूँ अंत न पावै॥
हो सज्जन-जन रसिक! सरस मन कै यह सुनियै।
सुनि सुनि पुनि आनंद हृदै ह्वै, नीके गुनियै॥ २७०
सकल सास्त्र-सिद्धांत, परम एकांत, महा रस।
जाके रंचक सुनत-गुनत, श्री कृष्ण होत बस॥
सकल रास-मंडल-रस के जे भँवर भये हैं।
नीरस बिषै-बिलास, छिया करि छाँड़ि दिये हैं॥
'नंददास' सौं नंद-सुवन! जौं करुना कीजै। २७५
तिन भक्तन की पद-पंकज-रज सौं रुचि दीजै॥

दशम स्कंध

प्रथम अध्याय

नव लच्छन करि लच्छ जो, दसयें आश्रय रूप ।
'नंद' बंदि लै प्रथम तिहि, श्री कृष्नाष्य अनूप ।।

परम विचित्र मित्र इक रहै, कृष्न-चरित्र सुन्यौ सो चहै ।
तिन कही 'दशम स्कंध' जु आहि, भाषा करि कछु बरनौ ताहि ।
५ सबद संसकृत के है जैसें, मो पै समुझि परत नहिं तैसें ।
तातें सरल सु भाषा कीजै, परम अमृत पीजै, सुख जीजै ।
तासौं 'नंद' कहत हैं तहाँ, अहो मित्र ! एती मति कहाँ ।
जामैं बड्डे कबिजन उरझे, ते वे अजहूँ नाहिन सुरझे ।
तहँ हौ कवन निपट मतिमंद, बौना पै पकरावौ चंद ।
१० अरु जु महामति श्रीधर स्वामी, सब ग्रंथन के अंतरजामी ।
तिन कही यह जु भागवत ग्रंथ, जैसें दूध उदधि कौ मंथ ।
मंदर गिरि से मज्जत जहाँ, रेनुकनूका हौ को तहाँ ।
तामैं यह श्री 'दशम स्कंध', आश्रय वस्तु कौ रसमय सिंधु ।
तिहि मधि हौ किहि बिधि अनुसरौं, क्यौ सिद्धांत-रतन उद्धरौं ।
१५ मित्र कहत है तौ यह ऐस अहो 'नंद' तुम कहत हौ जसें

जो गुरु गिरिधर देव की, सुदर दया दरेर।
गुंग सकल पिंगल पढै, पंगु चढ़ै गिरि मेर॥

प्रथम कहौं नव लच्छन कौन, तिन कौं नीके समझत हौं न।
जब लगि इन के भेद न जानै, आश्रय वस्तु सु क्यौं पहिचानै। २०
'नंद' कहत तौं सुनि नव लच्छन, जैसैं बरनत बड़े बिचच्छन।
'सर्ग', 'विसर्ग', 'स्थान' अरु 'पोषन', 'ऊति' 'मन्वंतर' 'नृपगन तोषन'।
इक 'निरोध' अरु 'मुक्ति' सु दच्छिन, आश्रय बस्तु के ये नव लच्छन।
महदादिक जे कारन बर्ग, तिन की सृष्टि जु कहियै 'सर्ग'।
कार्ज सृष्टि यह बिस्व जु आहि, विदुष 'बिसर्ग' कहत हैं ताहि। २५
सूर्जादिक मर्जाद बितान, ताहि सु 'थान' कहत कबि जान।
जद्यपि भक्त भरयौ बहु दोपन, ताकी रच्छा कहियै 'पोषन'।
साधु-असाधु बासना जहाँ, 'ऊति' विभूति समझि लै तहाँ।
समीचीन धर्म की प्रबृत्ति, सो कहियै 'मन्वंतर' बृत्ति।
मुचुकुंदादि नृपन की कथा, सो ईसान कथा है जथा। ३०
दुष्ट नृपन कौ हरन अबोध, ताकौ बुधजन कहत 'निरोध'।
अन्य रूप की त्यागन जुक्ति, निज स्वरूप की प्रापति 'मुक्ति'।
इन लच्छन करि लच्छित जोई, आश्रय बस्तु कहावै सोई।
सो आश्रय इहि दसम निकेत, प्रगट आहि भक्तन के हेत।
दसयैं मधि जु निरोध बखान्यौ, दुष्ट नृप-दलन सब ही जान्यौ। ३५
अवर निरोध भेद हैं जिते, अति अद्भुत तू सुनि लै तिते।
भक्तहि इतर बिषै ते निरोध, उतहि मोक्ष सुख तैं अवरोध।
सुद्ध प्रेम मधि प्रापति करै, इक निरोध इहि बिधि बिस्तरै।

ज्यौं ब्रजबासिन मोक्ष दिखाइ, ब्रह्मानंद बहुरि लै जाइ।
४० मधुर मूर्ति बिन जब अकुलाने, तब फिरि बहुरयौ ब्रज ही आने।
अवर निरोध भेद सुनि मित्र, बरनत जा कहुँ परम विचित्र।
जदपि कोटि ब्रह्मांड के कर्ता, अरु तिन के भर्ता-संहर्ता।
परन सनेह भक्ति होइ जाके, ईस्वरता कछु फुरै न ताके।
ज्यौं जसुमति मुख मैं जग पेख्यौ, सुत ईस्वर करि नाहिंन लेख्यौ।
४५ ललित लाल लीला लपटानी, सो वह भूत-क्रिया सी जानी।
अब सुनि कृष्न-बिषैक निरोध, जदपि अनंत अखंडित बोध।
सो तब रंचक ताहि न फुरै, जब हठि मातस्तन अनुसरै।
अवर निरोध भेद जो आहि, रस-लीलन मैं लीज्यौ चाहि।
अब सुनि भक्ति परीच्छिन बातैं, श्री भागवत प्रगट है जातैं।
५० सुंदर हरि मूरति जो आहि, उदर मध्य सो आयौ चाहि।
सब ठाँ कृष्न परीच्छत लह्यौ, तातैं नाउँ परीच्छित कह्यौ।
जे उत्तम श्रोता रस-सने, तिन मैं मुख्य परीच्छित गने।
बिसरे जाहि अहार-बिहार, केवल हरिगुन-श्रवन-अधार।
तैसैई उत्तम बक्ता बने, श्री सुक परम प्रेम-रस सने।
५५ कृष्न ललित लीला अनुरागी, ब्रह्म तैं निकसि भये बैरागी।
सनकादिक अरु श्री सुक कहियाँ, अंतर बहु इन दोऊ महियाँ।
वे कामादिक के डर डरैं, रहत हैं बालबैस मैं ररैं।
ये नव जोबन बर बपु धरैं, कामादिक जाके डर डरैं।
तिन सौं प्रश्न परीछित करी, नख-सिख कृष्न-चरित रस भरी।
६० हो प्रभु! तुम करि रबि-ससि-बंस, नीके कहे रहे नहि संस।

अरु जे उभय बंस के भूप, तिन के जे जे चरित अनूप।
ते सब पाछे आछे बरने, मनहरने, जग-मंगल करने।
अरु जदु धर्मसील कौ बंस, सो पुनि तुम करि भले प्रसंस।
धर्मसास्त्र-वल निर्मल हियौ, पितहि न अपनौ जोवन दियौ।
तिहि कुल मैं ईस्वर अवतरे, अंस कला बिभूति करि भरे। ६५
मच्छ-कच्छ अवतार बिभावन, भूतन के भावन, मनभावन।
सो प्रभु इहि जदुकुल मैं आइ, कीने जे जे कर्म सुभाइ।
ते विस्तार सौं मो सौं कहौ, हो मुनि सत्तम! अलस न गहौ।
कृष्न-गुनानुबाद के विषै, सब अधिकारी अपनी इषै।
मुक्त तेउ गावत रस-भीने, जदपि सकल तृष्ना करि हीने। ७०
मुमुषन कौं भव औषधि यहै, जातैं संसृति रोग न रहै।
बिषई जन-मन अति अभिराम, जातैं सब ही रस कौ धाम।
विना पसुघ्नहि पुरुष सु कौन, कहै कि हरि गुन हौं न सुनौं न।
पसुघन सो जो करम दिढ़ावै, कृष्न-गुनानुवाद नहि भावै।
हमरे तौ हरि कुल के देव, तुम सब नीके जानत भेव। ७५
अर्जुन आदि पितामह मेरे, जब कुरुसेना-सागर घेरे।
अमरन करि जु न जीते जाही, भीष्मादिक अतिरथि जिहि नाहीं।
तेई तहाँ तिर्मिगिल भारे, अपनी जाति के भच्छनहारे।
'तिमि' इक जाति मीन की आहि, सत जोजन बिस्तार है जाहि।
ताहि गिलत जो जलचर लहियै, ताकौ नाउँ 'तिर्मिगिल' कहियै। ८०
तिन करि महा दुरत्यय सोई, जो देखै सो अचरज होई।
तहँ श्री कृष्न सु नौका भये, कव धौं तिनहिं पार लै गये।

अरु केवल तेई नहि तारे, मेरेऊ तन के रखवारे।
द्रोन-पुत्र कौ बान अन्यारौ, अग्नि तैं तातौ, रातौ भारौ।
८५ जब आयौ तब मैया मेरी, दौरी, सरन गई तिहि केरी।
मेरे हितकर वे हरि कैसे, कुत्सित उदर-दरी मैं पैसे।
कुरुवन कौ तौ संतति मात्र, पांडवन की भक्ति कौ पात्र।
सो यह मेरौ अंग सुहायौ, भस्म भयौ पुनि फेरि जिवायौ।
तिन के चरित अमृतमय जिते, हो सर्वग्य ! सुनावहु तिते।
९० तुम करि के संकर्षन अर्भ, प्रथमहि कह्यौ देवकी गर्भ।
बहुरयौ ताहि रोहिनी जने, देहांतर बिन कैसैं बने।
अरु ईस्वर भगवान मुकुंद, परमानंद कंद सुच्छंद।
ते काहे ते पितु गेह तैं, ब्रज आये सु कवन नेह तैं।
ब्रज बसि कवन कवन पुनि कर्म, कीने पर्म धर्म के बर्म।
९५ पुनि मधुपुरी आइ नँदनंद, बरषे कवन कवन आनंद।
अरु साच्छात मात कौ भ्रात, सो वह कंस हत्यौ किहि बात।
कितिक बरस द्वारावति बसे, कितिक ललित ललना मैं लसे।
जदपि तज्यौ है मैं जल अन्न, तदपि न ह्वैहै मो तन खिन्न।
तुव मुख-कमल हरिचरित-सार, चलिहै परम अमृत की धार।
१०० पान करत अस रस अनयास, काके छुधा कौन के प्यास।
ता राजा कौ करि सनमान, बोले बैयासिक भगवान।
कह्यौ कि धन्य धन्य नृप सत्तम, नीके करि निश्चै मति उत्तम।
जातैं कृष्नकथा रसमई, तातैं उपजी अति रति नई।
प्रश्न जु कृष्नकथा कौ जहाँ, बक्ता, श्रोता, पृच्छक तहाँ।

पावन करै सबन कौ ऐसैं, गंगाजल-धारा जग जैसैं। १०५

निगम-कल्पतरु कौ सु फल, बीज न बकला जाहि।
कहन लगे रस रँगमगे, सुंदर श्री सुक ताहि ॥

भूप रूप ह्वै असुर विकारी, कीनी भूमि भार करि भारी।
तब यह गाइ रूप धरि धरती, क्रंदन करती अँसुवन भरती।
बिधि सौं जाइ कही सब बात, सुनि कलमल्यौ कमल कौ तात। ११०
अमरन करि संकर सँग लये, तीर छीरसागर के गये।
देव देव पुरुषोत्तम जहाँ, स्तुति करि बिनती कीनी तहाँ।
गगन मै भई देव की धुनी, सो ब्रह्मा समाधि मैं सुनी।
सुनि कै बोल्यौ अंबुजतात, सुनहु अमरगन मो तै बात।
आग्या भई विलंब न करौ, जदुकुल बिषै जाइ अवतरौ। ११५
श्री बसुदेव धाम अभिराम, प्रगटहिंगे प्रभु पूरनकाम।
सेस सहसमुख सब सुख-दाता, ह्वैहै प्रभु कौ अग्रज भ्राता।
अरु जो जोगमाया गुनमई, ताहू कौ प्रभु आग्या दई।
इहि बिधि बिधि बिबुधन सौ कही, पुनि आस्वासित कीनी मही।
मथुरा जादव की रजधानी, श्री गोबिंदचंद की मानी। १२०
जितक आहि ब्रह्मांड अनेक, अंसन करि निबसत हरि एक।
जिहि ब्रह्मांड मधुपुरी लसै, पूरन ब्रह्म कृष्न तहँ बसै।
जब हरि लीला इच्छा करैं, जगत मैं प्रथम भक्त अवतरैं।
तिन कै प्रभु कौ परिकर जितौ, प्रगट होत लीला हित तितौ।
तब श्री कृष्न अवतरहिं आइ, सिद्ध करैं भगतन के भाइ। १२५
सूरसेन जादव इक नाम, परम भागवत सब गुन धाम।

ताके निर्मल निगम सरूप, प्रगटयौ सुत बसुदेव अनूप।
जाके जन्मत अमर नगर मैं, दुंदुभि बाजी बगर बगर मैं।
देवक जादव के इक कन्या, देवमई देवकी सु धन्या।
१३० सब सुभ लच्छन भरी, गुन भरी, आनि ब्रह्म-बिद्या अवतरी।
स्याम बरन तन अस कछु सोहै, इंद्रनील मनि की दुति को है।
राजति रुचिर जनक के ऐना, चंद सौ वदन, डहडहे नैना।
बोलन हसति, हरति इभि हियौ, जनु बिधि पुतरी मैं जिय दियौ।
ब्याहन जोग जानि छबिमई, सो देवक बसुदेवहि दई।
१३५ भयौ बिवाह परम रँग भीनौं, देवक बहुत दाइजौ दीनौं।
पटसत रथ कंचन के नये, गज सत चारि मत्त छवि छये।
पंद्रह सहस सुभग किक्यान, कनक भरे, नग जरे पलान।
बर बरनी, तरुनी रँग भीनी, दासी बीनि दोइ सत दीनी।
भई बरात बिदा ह्वै सजे, भेरी मंदल-कंदल बजे।
१४० उग्रसेन देवक कौ भ्रात, ताकौ पूत कंस बिख्यात।
भीनौ नव कुंकुम के रंग, कंचन रथ अनेक जिहि संग।
भगनी-रथ कौ सारथि भयौ, प्रीति बिबस सु दूरि लौं गयौ।
बानी भई गगन मैं गूढ़, रे रे कंस ! महा मतिमूढ़।
जाकौं तू भयौ जात है जंता, अठयौ गर्भ सु तेरौ हंता।
१४५ सुनतहि पापरूप वह कंस, धाइ गही देवकी नृसंस।
सुंदर बदन बिमन भयौ ऐसैं, राहु के छुवत छपाकर जैसैं।
काढ़ि खरग मारन कौं भयौ, आनकदुंदुभि तब तहँ गयौ।
महाराज जिनि करि अस काज, जा काज तैं होइ जग लाज।

भगिनी, बाला, अरु यह समै, तू बड़भागि, न करि अस अमै ।
जौ तू कहहि मरन-भय भारी, हौं आपनी करौं रखवारी ।　　१५०
तौ वह मरन न ढिंग ह्वै जाइ, बिधना लिख्यौ लिलार बनाइ ।
अबहिं मरौ कि बरष सत बीते, छुटे न कोऊ काल बली ते ।
तातैं पापाचरन न करियै, रंचक सुख बहुरचौ दुख भरियै ।
पुनि नहिं दूरि जबहिं यह मरै, तब हीं और देह कौं धरै ।
ज्यौं तृन-जोंक तृनन अनुसरै, आगे गहि पाछे परिहरै ।　　१५५
तैसै कर्मबिबस ये जंत, देह धरत दुख भरत अनंत ।
इन बतियन सु कंस क्यौं मानै, आसुर ग्यान प्रतच्छ प्रमानै ।
तब बसुदेव दया दिखरावै, साम बचन कहि कहि समझावै ।
यह तेरी अनुजा बर बाला, पुतरी सी बिधि रची रसाला ।
न करि अमंगल संगल काल, जातै तू बड़ दीनदयाल ।　　१६०
तदपि न ताके रंचक ब्यापी, केवल पापी, महा सुरापी ।

निपट निकट, संगम अगम, जिमि दर्पन मैं छाँह ।
जदपि रहति आगे तदपि, मिलै न भरि भरि बाँह ॥

निपटहिं ताकौं निग्रह जान्यौ, तब बसुदेव अवर मत ठान्यौ ।
नीचहिं सुत अपिबौ दिढ़ाऊँ, मीच के मुख तैं याहि छुड़ाऊँ ।　　१६५
जब मेरे उपजहिंगे तात, बाता की अनेक है बात ।
ज्यौं बन-नगर अगिनि परजरै, ढिंग के रहैं दूरि के जरैं ।
तब बसुदेव बिहँसि कै कहै, हे राजन रंचक इत चहै ।
डर तौ तोहिं अठयैं गर्भ कौ, नहिं याकौ नहिं अवर अर्भ कौ ।
हौं तोहिं दैहौं सिगरे तात, छुये कहत यह तेरौ गात ।　　१७०

करि प्रतीति जिय वसुदेव की, छाँड़ि दई हँसि कै सु देवकी।
प्रथमहि कीर्त्तिमंत सुत भयौ, वसुदेव ताहि लये ही गयौ।
सत्यप्रतिग्य अनृत तैं डरचौ, लालनादि लालच परिहरचौ।
अरु साधुन के दुस्सह कौन, जिन के नहिं ममता, मति औन।
१७५ अति कोमल बिलोकि कै बाल, कंस भयौ तिहि काल दयाल।
घर लै जाहु देव ! इहि अरभै, दीजौ मोहिं आठयौ गरभै।
चल्यौ सदन, पै बदन उदास, नीचन कौ कछु नहिं बिस्वास।
बसुदेव घर लौं जान न पायौ, नारद तबहिं कंस पै आयौ।
कंस के सांति होइ जौ अबै, देव-काज तौ बिगरचौ सबै।
१८० आइ कही तासौं सब बातैं, अहो कंस ! कछु समझत घातैं।
बसुदेवादिक जादव जिते, गोकुल मैं नंदादिक तिते।
ये तौ सबै देवता आहि, राजन ! रंचक जिनि पतियाहि।
कहि कै गयौ बचन इहि बिधि कौ, पर-घर-घालक, बालक बिधि कौ।
तब ही सो सिसु फेरि मँगायौ, बसुदेव ताहि लये ही आयौ।
१८५ डारचौ पटकि न उपजी मया, जे अस नृप, तिन के को दया।
देवकी बिषै बिष्नु अवतरिहैं, मेरे बध कौ उद्दिम करिहैं।
पहिले कालनेम हौं हुतौ, विष्नु सदा कौ बैरी सुतौ।
अब कैं ऐसैं जतनन जतौं, बिष्नुहि गर्भ बीच ही हतौं।
तब बसुदेव देवकी आनि, पाइनि सुदिढ़ संखला बानि।
१९० राखे निकट, बिकट अस ठौर, जहँ कोउ जान न पावै और।
जेई जेई बालक उपजत जात, तेई तेई हतै न बूझै बात।
बिष्नु जन्म की संका करै, मति इन हीं मैं ह्वै संचरै।

बंधु-मित्र जादव हे जिते, बल करि बंधन कीने तिते।
उग्रसेन अपनौ महतारौ, सो बाँध्यौ, दीनौ दुख भारौ।
महा बली अरु महा नृसंस, राजा भयौ मधुपुरी कंस। १६५

'नंद' जथा मति कै तथा, बरन्यौ प्रथम अध्याइ।
जाके रंचक सुनत सब, कर्म-कषाय नसाइ॥

द्वितीय अध्याय

अब सुनि लै द्वितीय अध्याइ, जामैं ब्रह्मादिक सब आइ।
गर्भस्तुति करिहैं सिर नाइ, चरन-कमल बैभव दिखराइ।
जे हैं नीच बुरे ही बुरे, ते सब आनि कंस पै जुरे।
अघ, बक, बकी, प्रलंब, अरिष्ट, तृनावर्त्त, खर केसी नष्ट।
मागध, जरासिंध बल-अंध, तासौं जाहि ससुर संबंध। ५
जादवन कौ दैन दुख लागे, ते तजि देस-बिदेसन भागे।
कैइक रहे ताही अरगाने, अक्रूरादिक अनसनमाने।
देवकि के पट सिसु जब कंस, हते महा बल , महा नृसंस।
सप्तम गर्भ बिष्नु कौ धाम, भयौ अनंत जाहि है नाम।
देवकि तहाँ अति न परकासी, हर्ष-सोक दोऊ मिलि भासी। १०
कछु फूली, कछु नाहिन फूली, जैसैं प्रात कमल की कली।
जदुकुल कौ दुख दिखि भगवान, ब्याकुल भये जानमनि जान।
बोलि जोगमाया मनहरनी, तासौं प्रभु सब बातैं बरनी।
हे भद्रे ! बड़भागिनि महा, भाग महिम तुव कहियै कहा।

१५ जाहि जगत यह रचना तेरी, वह बिभूति इक न्यारी मेरी।
जातें तू अब गोकुल जैहै, देखत निरवधि सुख कौं पैहै।
गोपी-गोपन करि अति मंडित, तामैं नित्यानंद अखंडित।
राजत गोपराइ तहँ नंद, मूरति धरे सु परमानंद।
ताके घर बसुदेव की घरनी, दुरी रहति रोहिनि बर-बरनी।
२० देवकी जठर गर्भ जो आहि, रोहिनी उदर ताहि लै जाहि।
गर्भ-मरन संका जिनि करै, मेरौ अंस न कबहूँ मरै।
तदनंतर तिहि जठर अनूप, ऐहैं हम परिपूरन रूप।
तू उहि नंद गोप के धाम, मुकति-गेहिनी जसुमति नाम।
तू तहँ नाममात्र होइ कै, करि सब काज सबन मोइ कै।
२५ ह्वैहैं भुवि तेरे बहु नाम, पूरन करिहैं सब के काम।
'भवा', 'भवानी', 'मृडा', मृडानी', 'काली', 'कात्याइनी', 'हिमानी'।
ऐसैं प्रभु की आग्या पाइ, माया तुरत महीतल आइ।
रोहिनि बिषैं देवकी गर्भ, आन्यौ करखि तबहिं सो अर्भ।
नगर मैं, बगर बगर ह्वै गयौ, देवकि गर्भ बिसंसृत भयौ।
३० तब ईस्वर सब अंसन भरे, आनकदुंदुभि मन संचरे।
बसुदेव तिहि छन अतिसै सोहे, भानु समान परत नहि जोहे।
मन ही करि देवकि मैं धरे, न कछु धातु संबंधहि ररे।
ज्यौं गुरु स्निग्ध सिष्य के हेत, हृदगत बस्तु दया करि देत।
हरि उर धरि देवकि अति सोही, अपने रूप आप ही मोही।
३५ ऐ पर घर ही घर आभासी, बाहिर कहुँ न तनक परकासी।
जैसैं घट मैं दीपक-जोति, भीतर जगमग जगमग होति।

अरु ज्यौं बंचक में सरस्वती, पर उपकार करत नहिं रती।
ऐसें जगमगाति ही जहाँ, आयौ कंस पापमति तहाँ।
कहत कि मेरौ हंता जोई, अब कै निश्चै आयौ सोई।
जातें पाछे हुती न ऐसी, राजति तेजरासि सी वैसी। ४०
को उद्दिम करियै इहि काल, सुसा, गुर्बिनी, बहुरचौ वाल।
याकौ वध न श्रेय कौं करै, आयु, कीर्ति, संपति सब हरै।
अरु ह्याँ सब कोउ धृग धृग करै, मरे महा रौरव मैं परै।
इहि परकार बिचारहि आइ, फिरि गयौ घर पै, कछु न बसाइ।
निसि दिन जनम-प्रतीच्छा करै, थर-थर डरै, नींद नहिं परै। ४५
बैठत-उठत, चलत, चकि रहै, मति इत ही तें उठि मोहिं गहै।
अंबर झारि सेज पर सोवै, भोजन करत सीथ टकटोवै।
बैर-भाव जिय अति बढ़ि गयौ, सब जग जाहि बिप्नुमै भयौ।
तदनंतर संकर, अज, सारद, अवर अमर बर, मुनि वर नारद।
दरसन हित आये अरबरे, अति मुद भरे, अचंभे भरे। ५०
जाके उदर मध्य जग सबै, सो देवकी जठर मैं अबै।
केई रबि से केई ससि से गये, आगे दिन दीया से भये।
देवकि जठर झलमलत ऐसें. रतन-मँजूषा नव नग जैसें।
करि दंडवत महा मुद भरे, इकहि बेर सब पाइनि परे।
पुनि पुनि उठि चरनन लटपटे, कीटन के जु कोटि कटपटे। ५५
बनी जु मुकट रतन की जोति, जनु श्री हरि की आरति होति।
गदगद कंठ, प्रेम-रस भरे, अंजुलि जोरि स्तुति अनुसरे।

कहत कि अहो सत्य-संकल्प, सब बिधि सत्य, नित्य, बड़ कल्प।
तुमहि प्रपन्न भये हम सबै, रच्छा करहु हमारी अबै।

पूर्व पक्ष

६० जौ कहहु कि तुम ही सब लाइक, जगनाइक अरु सब फलदाइक।
क्यौं बोलत लिलात से बैन, तहँ तुम सुनहु कमल-दल-नैन।
तुम परमेस्वर सब के नाथ, बिस्व समस्त तिहारे हाथ।
छिनक मैं करौ, भरौ, संहरौ, ऊर्ननाभि लौं फिरि बिस्तरौ।
तुम तैं हम सब उपजत ऐसैं, अगिनि तैं बिस्फुलिंग गन जैसैं।
६५ ये अद्भुत अवतार जु लेत, बिस्वहि प्रतिपालन के हेत।
जौ दिन दिन दिनमनि न उवाइ, तौ सब अंध-धुंध ह्वै जाइ।
अरु अपने भक्तन के हेत, दुर्लभ मुकति सुलभ करि देत।
तव पदपंकज-नौका करि कै, पार परे भवसागर तरि कै।

पूर्व पक्ष

जौ तुम कहौ वह नाउ सुढार, मुक्त भये लै गये सु पार।
७० वार रहे तिन की गति कैसैं, तहाँ कहत ब्रह्मादिक ऐसैं।
पदपंकज के सन्निधि मात्र, तव हीं भये मुक्ति के पात्र।
तिन कौं भवसागर भयौ ऐसौ, गो-बछ-पद कौ पानी जैसौ।
सो पदपंकज सुंदर नाउ, इत ही राखि गये भरि भाउ।
जैसैं इतर तरहिं भव-सिंधु, परम सुहृद वे सब के बंधु।
७५ जे बिमुक्त, मानी, मद-भरे, तुव पद-कमल निरादर करे।
ते ऊँचे चढ़ि कै खरहरे, धमकि धमकि नरकन मैं परे।

जिन करि चरन-कमल आदरे, ते कबहूँ न उखटि कै परे।
जग मैं जे विघनन के राइ, तिन के सीसन धरि धरि पाइ।
बिचरत निरभै भगत तिहारे, तुम से प्रभु जिन के रखवारे।
ते वै तुम्हरे चरन-सरोज, या अवनी पर परिहै खोज। ८०
ठौर ठौर तिन कौं देखिहै, जीवन-जनम सफल लेखिहै।
तब देवकि आस्वासित करी, तुम सी को है भागन भरी।
जाकी कूख विषै भगवान, जो साच्छात पुरान पुमान।
आयौ रच्छक जदुबंस कौ, धुंसक असुर बंस कंस कौ।
पुनि बंदन करि भरे अनंद, चले घरन बृंदारक-बृंद। ८५

गर्भस्तुति हरि अर्भ की, सुनै जु द्वितीय अध्याइ।
सो न परै फिरि गर्भ-मल, नर निर्मल ह्वै जाइ॥

तृतीय अध्याय

सुनि तृतीय अध्याइ अब, सुंदर परम अनूप।
प्रेम भरे जहँ प्रगटिहै, हरि परिपूरन रूप॥

तात-मात सौ बात बनैहै, पुनि ब्रजचंद नंद के जैहै।
पहिले उपज्यौ सुंदर काल, सब गुन भर्‍यौ, जु परम रसाल।
अति सोहन रोहिनी नछत्र, जाके सब ग्रह ह्वै गये मित्र। ५
ठाँ ठाँ मंगल पूरित मही, बहुत नदी दूध-घृत बही।
सब के मन प्रसन्न भये ऐसैं, निधन महा धन पाये जैसैं।
भादौं सलिल सुच्छ अस भये, जैसैं मुनि-मन निर्मल नये।

सरन मध्य सरसीरुह फूले, तिन पर लंपट अलिकुल भूले।
१० दिसा प्रसन्न सु को छबि गनौं, दिसि दिसि चंद उगहिंगे मनौं।
कुसुमित बनराजी अति राजी, ऐसी नहिंन बसंत बिराजी।
बुझे अगिनि आपुहि बरि उठे, हँसि हँसि मिले, हुते जे रुठे।
मंद सुगंध पवन अस बहै, जिहि सुबास त्रिभुवन चकि रहै।
मंद मंद अंबुद गन गजे, धर्म के जनु कि दमामे बजे।
१५ तैसिय बजत देव-दुदुभी, दुर्जन मन कंटक जिमि चुभी।
हरषे मुनि बर अमर पुरंदर, बरखे सुमन सु सुंदर सुदर।
निर्तति देवनटी छबि-जटी, लटकै जनु कि छटन की छटी।
सुदर अर्द्ध रैनि जब गई, अति सिंगार-मई छबि-छई।
तब देवकि तैं प्रगटे ऐसें, पूरब तैं पूरन ससि जैसें।
२० पूर्व जठर मधि नहिं कछु चंद, वादमात्र अस देवकि-नंद।
अद्भुत सिसु कछु परत न कह्यौ, आनकदुंदुभि चहि चकि रह्यौ।
माथे मनिमय मुकट सुदेस, सचिकन सुदर घुँघरे केस।
कुंडल-मंडित गंड सलोल, मंद हँसनि श्री करत कलोल।
कंचन-माल, मुकत की माल, झिलमिलात छबि छती बिसाल।
२५ सुंदर कंठ सु कौस्तुभ लसै, निकर-बिभाकर द्युति कौ हँसै।
गंध लुब्ध जे अद्भुत भृंग, ते आये बनमाली संग।
छबि बावरी साँवरी बाहु, मिटि गयौ हेरत हिय कौ दाहु।
कटि किंकिनि, चरननि बर नूपुर, हौ बलि बलि कीनौ तिन ऊपर।
बसुदेव देखि सु मन मन गुनें, ऐसौ बालक होत न सुने।
३० पुनि कीनौ श्रुति-सार-बिचार, मेरे घर ईस्वर अवतार।

कह्यौ हुतौ तु भयौ यह अबै, पूर्न मनोरथ मेरे सबै।
बढ़यौ जु आनँद-सिंधु सुहायौ, ताही मैं बसुदेव अन्हायौ।
दस सहस्र गैया रँग भीनी, मन ही करि संकल्पित कीनी।
सुद्ध बुद्धि, वत्सल रस भरे, अंजुलि जोरि स्तुति अनुसरे।
कही कि हो प्रभु ! मैं तुम जाने, प्रकृति तैं परे जु पुरुष बखाने।　　३५

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि याकौ कहा लह्यौ, पुरुष तौ प्रकृति परे ही कह्यौ।
तहँ तुम सुनहु कमल-दल-नैंन, जहाँ न पहुँचै श्रुति के बैन।
मुनि मन जिहि समाधि मधि हेरे, सो साच्छात दृगन-पथ मेरे।
प्रभु जु आनि मेरे अवतरे, परम तरुन करुना करि भरे।
नृप-दल करि बढ़ि असुर बिकारी, कीनी भूमि भार करि भारी।　　४०
तिनहिं निदरिहौ भू-भर हरिहौ, संतन की रखवारी करिहौ।
ऐ परि सावधान इहि बीच, निपटहि बुरौ कंस यह नीच।
तुम्हरे जनमहि सुनि कै अबै, ऐहै आयुध लीने सबै।
तदनंतर देवकि अवहेरे, महापुरुष लच्छन सुत केरे।
मद मंद मधुरे मुसकाइ, कीनी स्तुति थोरियै बनाइ।　　४५
ब्रह्म निरीह जोति अबिकार, सत्तामात्र जगत-आधार।
अरु अध्यातम-दीप जु कोई, बुध्यादिक परकासक सोई।
सो साच्छात वस्तु तुम आहि, भै-संका ह्याँ कहियै काहि।
अरु जब लोक चराचर जितौ, लीन होत माया मैं तितौ।
तब तुम हीं तहँ रहत अकेले, छेमधाम निज रस मैं फेले।　　५०

अरु यह मृत्युरूप जो ब्याल, संग फिरत नित महा कराल।
जो कोउ सकल लोक फिरि आवै, यातैं अभै न कित हूँ पावै।
कौंनहुँ भागि-जोग करि कोई, तुव पद-पंकज प्रापत होई।
तब भले मीच नीच फिरि जाइ, चरन-सरन गये कछु न बसाइ।
५५ प्रभु यह तुम्हरौ अद्भुत रूप, ध्यान जोग्य, निपट ही अनूप।
अरु प्रभु मो तैं जनम तिहारौ, जिनि जानैं यह कंस हत्यारौ।
रूप अलौकिक उपसंहरौ, हे सुंदर बर ! नर बपु धरौ।

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि मो सौं सुत पाई, पैहौ जग मैं बड़ी बड़ाई।
तब तुम सुनहु कमल-दल-नैंन, या अनूप रूप सौं बनै न।
६० जाके जठर मध्य जग जितौ, जथा बिकास रहत है तितौ।
सो मम गर्भ-भूत जो सुनिहै, हँसिहै मोहि, असंभव मनिहै।
तब बोले श्री हरि मुसकात, जौ तुम या कंस तैं डरात।
तौ मोहि उहि गोकुल नंद के, लै राखौ आनंदकंद के।
इतनी कहि कै मोहनलाल, देखत भये तनक से बाल।
६५ देवकि दौरि कंठ लपटाये, प्रान तैं अधिक पियारे पाये।
बसुदेव कहैं बिलंब न लाइ, दै मोहि सुत रिपु जैहै आइ।
लै लटि रही कंठ लपटाइ, अति सुंदर सुत दियौ न जाइ।
पुनि कंस तैं महा डर डरी, पिछले पूतन की सुधि करी।
लीनौ तनक पयोधर प्याइ, फूल सौ जिनि मग मैं कुम्हिलाइ।
७० पुनि पुनि बदन-चंद्रमा चूमि, दीनौ सुत पै अति दुख घूमि।

लयौ लपेटि सु पट वर बाल, बसुदेव चले तुरत तिहि काल।
आपुहि उघरे कुटिल किवार, भोर भये ज्यौं भजत अँध्यार।
पौरिनि परे पहरुवा ऐसै, अति मादक मद पीयें जैसें।
घुरि आये घन करि अँधियारौ, जान्यौ परै न ज्यौं रबि बारौ।
फुही फूल से परत सुदेस, ते सहि सक्यौ न सेवक सेस। ७५
प्रेम-मगन सु गगन मैं आइ, लयौ फनन कौ छत्र बनाइ।
बसुदेव सुत-मुख के उजियारे, चल्यौ जाइ आनँद भरि भारे।
जम-अनुजा की ढिंग जौ जाइ, बाट न घाट, रही जल छाइ।
उठहि जु लहरि सुधि न कछु परै, चढ़ी गगन सौं बातैं करै।
दृष्टि परि गये मोहन जब हीं, मधि तैं इत-उत ह्वै गई तब हीं। ८०
दीनौ प्रभु कौं मारग ऐसै, सीतापति कौं सागर जैसै।
इत सोचति देवकि महतारी, ह्वैहै मेरौ ललन दुखारी।
भरि भादौं की रैनि अँध्यारी, लहलहाति बिजुरी बजमारी।
बहुर्‍यौ बीच कलिंदी कारी, भरि रही नीर भयानक भारी।
चंद सौ बदन दुर्‍यौ नहिं रहिहै, दैया कोऊ दूरि तैं लहिहै। ८५
डोलत बहुत कंस के दूत, दैव कुसर सौं जैहै पूत।
यौं बिलल्लाइ देवकी माइ, कहति कि हौ हरि तुमहि सहाइ।
निरख्यौ जदपि पूत-परभाउ, तदपि प्रेम कौ यहै सुभाउ।
बसुदेव जब गोकुल मैं गये, देखे सब निद्रा-बस भये।
सुत जसुमति की ढिंग पौढ़ाइ, सुता परी तहँ तैं इक पाइ। ९०
लै आये फिरि ताही बाट, तैसैई जुरि गये कुटिल कपाट।
बैठे बहुरि पहिरि पग बेरी, ज्यौं कोउ गाड़ि धरै धन ढेरी।

जो कोउ जोतिमय ब्रह्ममय, रसमय सब ही भाइ।
सो प्रगटित निज रूप करि, इहि तिसरे अध्याइ॥

चतुर्थ अध्याय

अब चतुर्थ अध्याइ सुनि, परम अर्थ कौ दैन।
संस परी जहं कंस-जिय, चंड चंडिका बैन॥
बालक धुनि सुनि परी जु रौर, उठे पहरुवा ठौरहि ठौर।
धाये गये कंस के ऐन, अठयौं गर्भ महा भय दैन।
५ सुनतहि उठ्यौ तलपते कंस, कहत कि आयौ काल नृसंस।
कर करवार, सु बगरे बार, न कछु सँभार, महा विकरार।
उखटत परत, सु विहवल भयौ, डरत डरत सूती-गृह गयौ।
बोलि उठी देवकि छबिमई, भैया न डरि भनैजी भई।
याहि न मारि देखि दिसि मेरी, हौं अनुजा मनुजाधिप तेरी।
१० डारे हैं तैं हति बहुतेरे, पावक की उपमा सुत मेरे।
इह इक मो कौ माँगी दीजै, बलि बलि, अति अनीत नहिं कीजै।
नीचन के को सुहृद सुभाउ, तामैं यह नीचन कौ राउ।
चपरि छती तै लई छड़ाइ, पकरि पाइ ऊँचे उचकाइ।
सिल पर पटकन कौं भयौ जबै, कर तै निकसि गई सो तबै।
१५ जाइ गगन मैं देवी भई, महा तेज छाजनि छबिछई।
राजति राजिवदल से नैना, बोली बिहँसि कंस सौं बैना।
रे रे मंद! न करि जिय गारौ, उपज्यौ है तुव मारनहारौ।

ताके बचन सुनत ही कंस, विस्मय भयौ, परचौ जिय संस ।
कहत कि देवी बानी महा, झूठ परी सो कारन कहा ।
देवकि बसुदेव दीने छोरि, विनती करत कंस कर जोरि । २०
अहो भगिनि ! अहो भगिनीभर्ता! मो सम नहिन पाप कौ कर्ता ।
राच्छस ज्यौं अपने सुत खाइ, सो मैं कीनी नीच सुभाइ ।
ज्यौं ब्रह्महा जीवत ही मरचौ, ऐसौ हौं हूँ बिधना करचौ ।
नर तौ जनौं अनृत ही पगे, अमरौ अनृत बकन पुनि लगे ।
जिहि विस्वास सुसा के तात, सौनक ज्यौं मैं कीनी घात । २५
जिनि सोचहु उन के अनुराग, जातैं तुम समझत बड़ भाग ।
निज प्रारब्ध कर्म करि बौरे, रहत न सदा जंत इक ठौरे ।
तातैं सोक तजहु दुखमई, कर्म-बिवस जु भई सो भई ।
छिमा करहु मेरौ अपराध, जातैं दीनबंधु तुम साध ।
ऐसैं कहि लोचन जल भरचौ, दौरि सुसा के पाइनि परचौ । ३०
सांत भयौ देवकि कौ रोप, वसुदेव बहु पुनि कीनौ तोप ।
आग्या पाइ जाइ घर कंस, कन्या-बचन सुनि परी संस ।
रजनी गये भयौ परभात, मंत्रिन सौं बरनी सब बात ।
सुनि नृप-बचन असुर भहराने, अमरन पर निपट ही रिसाने ।
कहन लगे जौ ऐसैं आहि, महाराज तौ डरौ न ताहि । ३५
दस दस दिन के बालक जिते, हम सब मारि डारिहैं तिते ।
को उद्दिम करिहै सब देव, जानत है हम उन के भेव ।
अभय ठौर तौ बल्गन करैं, भीर परे तैं थर थर डरैं ।
सुरपति कवन अल्प बल जाहि, ब्रह्मा बपुरौ तपसी आहि ।

४० संभु न कछू, तियन तैं बुरौ, रहत इलावृत बन में दुरौ।
बिष्नु कहूँ इकंत है परयौ, हे राजन तेरे डर डरयौ।
ऐ परि रिपु अलप न जानियै, मर्म दुखद बहुतै मानियै।
किनक होत उह कंटक जैसें, चरन मध्य कसकत है कैसें।
अरु ज्यौं अंग रोग अंकुरै, तब हीं जौ न जतन अनुसरै।
४५ तौ बढ़ि जाइ न कछू बसाइ, तातैं कीजै तुरत उपाइ।
प्रथमहि उत्तम मति इह करौ, धरि धरि रूप धरनि संचरौ।
गाइन मारौ मखन बिगारौ, रिषिजन पकरि भछन करि डारौ।
बिष्नु के बध कौ इहै उपाइ, हतियै बिप्र, बेद, अरु गाइ।
मंत्रिन मिलि जब यह मत ठान्यौ, दुर्मति कंस महा हित मान्यौ।
५० संतन कौ बिद्वेस जु आहि, मृत्युमात्र जिनि जानहु ताहि।
आयु, कीर्ति, संपति सब हरै, अवर बहुत अनरथ कौं करै।
आग्या पाइ चले सब सठ वै, ज्यौं कोउ बृकन अजन प्रति पठवै।
बुरौ हौन कौं हौइ जब, तब उपजत ये भाइ।
बेद-बिप्र निंदा करैं, कह्यौ चतुर्थ अध्याइ॥

पंचम अध्याय

अब पंचम अध्याइ सुनि, जो हैं माथे भाग।
नंदमहोत्सव नवल घन, बरषैगौ अनुराग॥
नंद-महर-घर जब सुत जायौ, मुनि कै सवन प्रान सौ पायौ।
नंद उदार परम मुद भरे, फूले नैंनन राजत खरे।

यौं सुत-उदै-पयोनिधि पेखि, बढ़ति है रंग-तरंग बिसेखि। ५
बोले ब्रज के द्विज बड़भागी, जिन के हुती यहै लौ लागी।
स्वच्छ सुगंध सलिल अन्हवाये, त्रिप्रन चंदन तिलक बनाये।
नंद के भूषन दिखि मन भूल्यौ, जनु आनंद महीरुह फूल्यौ।
बिधिवत जातकरम करवाइ, लागे दान दैन ब्रजराइ।
द्वै लख धेनु सबछ बहु दूधी, प्रथम प्रसूता, सुदर, सूधी। १०
कंचन सीग मढ़ी सोहनी, कंचन की बड्डी दोहनी।
बहुरौ तिल अरु रतन मिलाइ, कीने बड्डे सैल बनाइ।
ऊपर कंचन छादन छाइ, दीने ब्रज के द्विजन बुलाइ।
अवर बहुत दीनौ ब्रजराज, अपने कुल-मंडन के काज।
तिहि छिन नंद-सदन की सोभा, नहिं कहि परत लगत जिय लोभा। १५
इत जु बेद-धुनि की छबि बढ़ी, मंगल बेलि सी त्रिभुवन चढ़ी।
इत मागध सु बंस जस पढ़ैं, इत बंदीजन गुनगन रढ़ैं।
गावत इत जु रागिनी राग, चुये परत जिन के अनुराग।
आनँदघन जिमि दुंदुभि बजै, जिन सुनि सकल अमंगल भजैं।
सुनि कै गोप महा मुद भरे, चले महरि-घर रंगनि ररे। २०
पहिरे अंबर सुंदर सुंदर, जे कब हूँ निरखे न पुरंदर।
मंगल भेंट करन मैं लिये, मैन से लरिकन आगे किये।
गोपी मुदित, भयौ मन भायौ, महरि जसोदा ढोटा जायौ।
प्रफुलित ही सो लागति भली, कौ है प्रात कमल की कली।
कुंकुम-रस रंजित मुख लौने, कनक-कमल अस नाहिन हौने। २५
चली तुरत सजि सहज सिँगार, छतियन उछरत मोतियन हार।

श्रवननि मनि कुंडल झलमलैं, बेगि चलन कौं जनु कलमलैं।
चलें जु चपल नैन छबि बढ़े, चंदन मनहुँ मीन हे चढ़े।
सुसम कुसम सीसन तैं खसे, जनु आनंद भरे कच हँसे।
३० हाथनि थार सु लागत भले, कंजनि जनु कि चंद चढ़ि चले।
मंगल गीतन गावति गावति, चहुँ दिसि तैं आवति, छबि पावति।
नंद-अजिर मैं लगी सुहाईं, जनु ये सब कमला चलि आईं।
छिरकत सबन हरद अरु दही, तब की छबि कछु परत न कही।
सुंदर मंदिर भीतर गईं, जसुमति अति आदर करि लईं।
३५ लै लै अंचल ललित सुहाइ, चूमे सबहिन सिसु के पाइ।
पौढ़े ललन जसोमति आगे, झीने पट मैं नीके लागे।
बदन उघारि उघारि निहारैं, देहि असीस अपनपौ वारैं।
हो हरि! यह लरिका चिर जीजौ, बहुत काल हम कौं सुख दीजौ।
ब्रज की छबि कछु कहत बनैं न, जहँ आये श्री पंकज-नैन।
४० घर औरै, अंगन कछु और, जगमग जगमग ठौरहि ठौर।
नग जु लगे, यौं बने सुहाये, गृहन के जनु कि नैन ह्वै आये।
मुक्ता-बंदनमाला लसैं, जनु आनंद भरे घर हँसैं।
धाम धाम प्रति धुजन की सोभा, जनु निकसी ब्रज-छबि की गोभा।
जितिक हुती ब्रज गो, बछ, बाछी, तेल-हरद करि आछी काछी।
४५ माथे मनिमय पटी बनाई, कंचन दाम सबन पहिराई।
तब नंद जू गोपगन जिते, बैठारे मनि आँगन तिते।
नव अंबर सुंदर मनिमाला, पहिराये सब जन निहि काला।
पुनि जितीक गोपी जन आईं, ते रोहिनीन सबहि पहिराईं।

कंचन पट, पदकन के छरा, सुंदर गजमोतिन के हरा।
औरो जन जे कौतुक आये, नंद-महर ते सब पहिराये। ५०
मंगत जन परिपूरन भये, दारिद हू के दारिद गये।
तब तैं ब्रज-छबि अस कछु लसी, रमा रीझि कै तहँई बसी।
मास दिवस के मोहनलाल, कछुक भये मुँहचहे रसाल।
सुंदर बदन विलोके नंद, छिन छिन पावत परमानंद।
रंचक द्वार-सभा मैं जाहि, बहुरचौ नंद भवन उठि आहि। ५५
दिन दिन बढ़त अंग की कांति, निरमल बाल इंदु की भाँति।
ऐसै माँझ महा दुख पायौ, कंस कौ कर देनौ दिन आयौ।
रच्छक राखि घोष मैं भले, मथुरा नगर नंद जू चले।
तन आगे, मन पाछे ऐसै, दंड के संग पताका जैसैं।
तुरत जाइ नृप कौ कर दियो, ब्रजपति ब्रज चलिबे कौ भयौ। ६०
समाचार वसुदेव जू पाये, सखहि मिलन सुनतें ही आये।
निरखि जु उठे नंद भरि नेह, ज्यौं प्रानन के आये देह।
जैसैं मीत-मिलन है कह्यौ, सो बसुदेव नंद के लह्यौ।
बैठे परम प्रेम-रस पागे, बसुदेव बात कहन अस लागे।
अहो भ्रात बड़ मंगल भयौ, बिधना तुमरे पूत जु दियौ। ६५
बड़े भये हे करत बिलास, कौनैं हुती पूत की आस।
अरु हम मिले भयौ मनभायौ, फिरि कै बहुरि जनम सौ पायौ।
सब ह्वै आवै अपने ढार, मीत-मिलन दुर्लभ संसार।
जौ कबहूँ काहू संजोग, आनि मिलहिं जे प्रीतम लोग।
तौ ` नाना कर्म विचित्र, इकठे रहन न पावैं मित्र। ७०

जैसै नदी तरंगन पाइ, मिलत है आठ-काठ बहि आइ ।
बहुरि जु कोउ लहरि उठि आवै, पकरि पकरि धौं कितहि बहावै ।
पुनि पूछत सुत की कुसरात, गदगद कंठ, फुरत नहि बात ।
अहो भ्रात ! वह तात हमारौ, नीकौ है रोहिनी-पियारौ ।
७५ तुम करि तोपित-पोषित गात, तुम हीं समभत ह्वैहौ तात ।
जदपि अर्थ धर्म अरु काम, इन करि भरचौ पुरुष कौ धाम ।
अहो नंद ! तदपि न सुख कोई, सुहृदन कौ बियोग जहँ होई ।
नंद समोधत ताकौ चित्त, सब अदिष्टवस होत है मित्त ।
जौ तो निपट बिकूल बिवात, केते हते कंस तुव तात ।
८० कन्या एक जु पाछे भई, मु पुनि अदिष्ट लई, उड़ि गई ।
है सब उहि अदिष्ट के धोरे, बिछुरे मिलवै, मिले बिछोरे ।
नंद की बानी दैवी जानी, मिलिहै मोहिं सुत, यौं जिय आनी ।
तब कही अहो बेगि तुम जाहु, पूतहि रंचक जिनि पतियाहु ।
ये दिखि फरकत मेरे गात, ब्रज मैं आहि कछू उतपात ।
८५ सुनतहि बचन नंद कलमले, कवन पवन ऐसी विधि चले ।
प्रेम-रपट बिच परी जु आइ, रंचक सूधे परत न पाइ ।
इहि प्रकार पंचम अध्याइ, जो कोउ सुनै तनक मन लाइ ।
दीपमान सो मुक्ति न गहै, और छुद्र सुख की को कहै ।

जदपि नित्य किसोर हरि, बदत बेद इमि बैन ।
९० सबै बैस सुख दैन ब्रज, प्रगटे पंकज-नैन ॥

षष्ठ अध्याय

सुनि लै छठौ अध्याइ अव, अहो मित्र अति चित्र।
जहाँ सकल मल को हरन, बकी चरित्र पबित्र॥

सोचत चले नंद मग माहीं, बसुदेव वचन मृषा तौ नाहीं।
हो हरि ईस्वर, सरन तुम्हारी, वा सिसु की कीजहु रखवारी।
इक तौ सहजहि हुती नृसंस, पुनि चेरी करि प्रेरी कंस। ५
ग्राम, नगर, पुर, पट्टन जिते, मास बीच के बालक तिते।
चली पूतना सिसुन सँघारति, केउ पटकति केउ खाइहि डारति।
इहि विधि बिचरति बिचरति बकी, इक दिन ब्रज आई तक तकी।
श्री सुक यौ जब कही सुभाइ, राजा सुनत बिकल ह्वै जाइ।
ताकौ समाधान सुक करै, हे राजन! इहि डर जिनि डरै। १०
नाममात्र जिहि प्रभु कौ जहाँ, ऐसन कौ प्रभाउ नहिं तहाँ।
सो साच्छात नंद कौ धाम, भै-संका कौ इहाँ न काम।
अद्‌भुत बनिता-बेष बनाइ, अँग अँग रूप अनूप चुचाइ।
ललित सु भूषन, ललित दुकूल, खसि खसि परत सीस तैं फूल।
कंठ मैं हीरा, आनन बीरा, पाइनि बाजत मंजु मँजीरा। १५
लटकि चलत तब को छबि गनौं, परिहै टूटि लटी कटि मनौं।
कमल फिरावत नयन डुरावति, मधुर-मधुर मुसकति, छबि पावति।
गोप रहे सब जोहे मोहे, जानहिं नहिन कछू हम को हे।
गोपी चकित चाहि कै ताहि, कहन लगी कि रमा यह आहि।
अपने पिय कौं देखति डोलति, यातैं नहिं काहू सौं बोलति। २०

लरिकन लहति लहति छबिछई, नंद के सुदर मंदिर गई।
आछी बनक कनक कौ पलना, पौढे तहाँ तनक से ललना।
स्यामल अंग सु को छवि गनौ, मृदुल नीलमनि पुतरी मनौं।
बाल भाउ मैं दुरि रहे ऐसैं, तीछन अगिनि भसम मधि जैसैं।
२५ आवत तकी बकी जब ऐना, मूँदे नैंन कमल-दल-नैना।
मेरे हेरत बेस कपट कौ, रहिहै नही पूतना अटकौ।
यातैं मूँदि रहे दृग नाथ, बिस्व चराचर जाके हाथ।
मुसकति मुसकति तहँ चलि गई, लालहि लपकि लेत ही भई।
देखत कौ तौ छुटनौ बाल, ऐ परि आहि काल कौ काल।
३० सोवत परचौ भुजंगम जैसे, रज्जु-बुद्धि कोउ गहत है तैसें।
अस कछु रूप-प्रेम करि छई, जसुमति पुनि न निवारति भई।
जैसैं तीछन अति करवार, ऊपर रतन-जटित परिवार।
जसुमति कहति चाहि कै ताहि, हौं जननी, कि जननि यह आहि।
आई है जो जुगति बनाइ, तरल गरल दुहुँ थनन लगाइ।
३५ प्यार सौ ललन पियावन लगी, चूमति जाति कपट-रस-पगी।
इक कुच मुख, इक कर मैं लिये, पियत गोविंदचंद मन दिये।
इकलौ बिप अपथ्य दुखदाइ, लीने ताके प्रान मिलाइ।
पियत भये सुदर नँद-नंद, मुसकत जात मंद छबि-कंद।
अँग अँग बिथित भई जब भारी, कहति कि छाँड़ि छाँड़ि हौं वारी।
४० छाँड़त क्यौं, है भूखौ बालक, जगपालक, ऐसैई घरघालक।
छुटै न सिसु अपनौ सौ पचो, कनक सौं जनु कि नीलमनि खचौ।
तब धरि अपनौ रूप चिघारी, भयौ जु नाद भयानक भारी।

सुर्ग रसातल, भूतल जेतौ, सब कलमल्यौ, हलमल्यौ तेतौ।
दोउ कुच पकरि उचकि वह नारी, लै डारी गोकुल तें न्यारी।
पट कोस के लता-द्रुम जिते, चूरन ह्वै गये तिहि-तर तिते। ४५
जे द्रुम-लता निपट प्रतिकूल, हुते न गोकुल के अनुकूल।
ते तिहि तन-तर चूरन करे, उबरे जे ब्रज-हित करि भरे।
प्रथमहि ताके नाद जु डरे, ब्रज-जन जहाँ तहाँ गिरि परे।
पाछे उठि उठि देखन धाये, देखि रूप अति त्रासहि पाये।
मुँह-वाये जु परी बिकरार, तपत ताम्र से वगरे वार। ५०
हल-दंड से वड़े बड़े दंत, गिरि-कंदर-सम नासा-दंत।
अंध कूप से नैन गँभीर, बैठि जु गये प्रान की पीर।
उदर भयंकर लागत ऐसौ, बिनु जल महा सरोवर जैसौ।
जघन सघन जु भयानक भारे, महानदी के जनु कि किनारे।
ताके उर पर सुंदर बाल, खेलत अभय, सु नैंन बिसाल। ५५
जे पद रहत भगत-जन हिये, लालति ललित भाँति श्री लिये।
मुनि-मन जिनहि पत्यात न रती, ते पद विलुठत ताकी छती।
गोपी परम प्रेम-रस-बोरी, फिरति पूतना तन पर दौरी।
ललहि उठाइ छती लपटाइ, लै आई जहँ जसुमति माइ।
ब्रजरानी अनेक धन वारति, पुनि पुनि राई लौन उतारति। ६०
गोमूत्र लै ललहि अन्हवाइ, गोरज, गोमय अंग लगाइ।
हरि के द्वादस नामन करि कै, रच्छा करी ब्रज तियन डरि कै।
नीकौ भयौ, पयोधर प्यायौ, जननी-जठर जीउ तब आयौ।
बदन चूमि जसुमति यौं भाख्यौ, आज पूत परमेसुर राख्यौ।

६५ तब लौं नंदादिक व्रज आये, ताहि निरखि अति बिस्मय पाये ।
लै लै तीच्छन धार कुठार, छेदे ताके अंग करार ।
करखि-कढ़ोरि दूरि लै गये, बहुत काठ दै दाहत भये ।
अचरिज नहिं जु कृष्न भगवान, ताकौं कियौ पयोधर पान ।
सिसु-घातिनी, परम पापिनी, संतन की डसनी साँपिनी ।
७० बहुरचौ हरि कौं मारन गई, सु तिय मुक्ति की रानी भई ।
जे जन श्रद्धा करि अनुसरै, मधुर बस्तु लै आगे धरै ।
तिन की कौन कहि सकै कथा, गोकुल की गो-गोपी जथा ।
सूँघत सूँघत व्रजजन जिते, नंद-महर-घर आये तिते ।
समाचार सुनि बिस्मय पाये, लल्लहि निरखि दृग जरत जुड़ाये ।
७५ नंद परम आनंदहि पाइ, लीनौ तनय कंठ लपटाइ ।
कही कि जहँ गयौ कोउ न आयौ, तहँ तैं मैं यह ढोटा पायौ ।
कीनी बहुरि बधाई नंद, दीने बहु धन, गोधन-बृंद ।
यह जु पूतना-चरित्र बिचित्र, छठे अध्याइ सु परम पवित्र ।
जो इहि हित सौं सुनै-सुनावै, सो गोबिंद बिषै रति पावै ।
८० दानव-कुल भोजन बिबिधि, कियौ चहत भगवान ।
प्रान पूतना के मनहुँ, किये प्रथम सोपान ॥
'नंद' न डरि, हिय हेतु करि, उर धरि छठौ अध्याइ ।
पूत भई जहँ पूतना, प्रभुहि अपेइ पिवाइ ॥

सप्तम अध्याय

अब सप्तम अध्याइ सुनि, सुंदर श्रुति कौ सार।
जामैं लाल रसाल कौ, बालचरित-मधुधार ॥

सुनि सप्तम अध्याइ उदार, जामैं बालचरित-मधुधार।
जिहि रस-सिंधु मगन भयौ राजा, फिरि पूछै सुक अति सुख काजा।
हो प्रभु ! हरि कौ बालचरित्र, अति बिचित्र अरु परम पबित्र। ५
जदपि अवर हरि के अवतार, मंगलरूप सकल श्रुति-सार।
पै यह बालचरित-मधुधार, या सम कछु न अवर ससार।
पियत तृपति मानत नहिं कान, औरौ कहौ जानमनि जान।
फुरे जु बालचरित-रस-रंग, कहन लगे सुक पुलकित अंग।
इक दिन आपुहि करवट लई, जननी निरखि मुदित अति भई। १०
बोलि सबै गोकुल की बाला, उत्सव किये महा तिहि काला।
सकट के अध धरि कंचन-पलना, सुतहि सुवाइ नंद की ललना।
बिदा करन लोगन कहुँ लगी, डोलत सुत-सनेह रँगमगी।
रतन मिलै तिल-चावल कीनी, भरि भरि गोद सबन कौ दीनी।
पूत उदै के हित ललचाइ, मति कोउ मन मैलौ करि जाइ। १५
लगी जु भूख ललन जब जगे, मधुर मधुर तब रोवन लगे।
पलना ढिंग बालक जब आइ, निरखे हरि बालक के भाइ।
कबहूँ किलकि किलकि कल केलत, चरन-अँगूठा मुख मैं मेलत।
जसुमति रुदन सुनति नहिं भई, अति आनंद मगन ह्वै गई।
बरहे चरत फिरत ज्यौं गाइ, सब मन रहत बच्छ मैं आइ। २०

तहँ अभिचार असुर इक सटक्यौ, दौरि कै सकट विकट में अटक्यौ।
ललन कौ दलन जबहिं वह नयौ, तब तहँ अदभुत कौतुक भयौ।
तनक जु बाम चरन यौं करयौ, उड़ि कै जाइ उड़नि में ररयौ।
बड़ौ सकट जब उलटौ परयौ, दिखि सब लोग अचंभे भरयौ।
२५ धाइ गई तहँ जसुमति मैया, कहत कि कहा भयौ यह दैया।
तान्तर पूत कुसर सौं पायौ, जननी जठर जीउ तब पायौ।
नंदादिक तहँ धाये आये, सकट बिलोकि सु बिस्मय पाये।
तिन सौं कहन लगे सिसु बात, अहो महर! यह तेरौ तात।
तनक चरन ऐसैं करि करयौ, तौ यह सकट उलटि है परयौ।
३० कहत कि कह जानहिं ये बारे, उलटत कूट कमल के मारे?।
सबन कही कि नंद बड़भागी, लरिकहि रंचक आँच न लागी।
तब तैं नंद महर की ललना, पूतहि परयौ पत्याइ न पलना।
इक दिन ललन लिये दुलरावति, लाल के बालचरित कछु गावति।
तृनावर्त जान्यौं आवतौ, कियौ चहत ताकौ भावतौ।
३५ मात सहित जौ मोहिं उड़ैहै, तौ मेरी मैया दुख पैहै।
तातैं ललन भयौ अति भारी, चकित भई जसुमति महतारी।
थँभ्यौ न सिसु, अपनौ सौ करयौ, तब धरनीधर धरनी धरयौ।
आयौ बातचक्र रिस भरयौ, धुनि सुनि सब गोकुल थरहरयौ।
उड़वत धूरि, धरे काँकरी, सबन के दृगनि परी साँकरी।
४० लै गयौ लरिकहि गगन उड़ाइ, तरफत फिरत जसोमति माइ।
मूँदे लोचन, ढूँढ़ति डोलति, रे कित गयौ पूत, यौं बोलति।
जितहि धरयौ हौ तित नहिं पायौ, जसुमति जिय धौं कित बिरमायौ।

परी धरनि धुकि यौं बिललाइ, ज्यौं मृत बच्छ गाइ डिडियाइ।
जसुमति-धुनि सुनि धाई गोपी, आई महा बिरह-रस-ओपी।
गिरि गई जसुमति ढिंग-ढिंग ऐसी, कंचन-बेलि पवन-बस जैसी। ४५
त्रिभुवन कौ जु भार हो जितौ, श्री हरि उदर धरयौ हो तितौ।
बदियैं तृनावर्त बल जुड़्यौ, ऐसैं लरिकहि लै नभ उड़्यौ।
थोरिक दूरि गयौ रँगमग्यौ, पुनि अति भार भरयौ डगमग्यौ।
कहत कि वह सिसु हाथ न आयौ, यह कोउ गिरिबर जाइ उठायौ।
लरिकहि डारन कौं अरबरे, लरिका डरपि घुरि गयौ गरे। ५०
गर के गहत लिचप्पित भयौ, दृगन की बाट निकसि जिउ गयौ।
तब वह महा असुर खरहरयौ, ब्रज के बीच सिला पर परयौ।
किरच किरच टुटि-फुटि गयौ ऐसैं, हर सर हत्यौ तिपुर रिपु जैसैं।
ताके उर पर मोहनलाल, खेलत अभै, सु नैंन बिसाल।
गोपिन धाइ जाइ सिसु लयौ, आनि जसोदा गोद मैं दयौ। ५५
सुनि कै सब जन धाये आये, निरखि रूप अति बिस्मय पाये।
चूमत बदन नंद बड़भागी, पोंछत रेनु तनय-तन लागी।
कहत कि कवन पुन्य हम कियौ, हरि अरचे कि दान बहु दियौ।
काल के मुख मैं बालक गयौ, तहँ तैं बहुरि बिधाता दयौ।
पापी अपने पापहि मरै, साधु की रच्छा ईस्वर करै। ६०

दीपक प्रगट्यौ नंद-घर, निर्मल जोति अभंग।
उड़ि उड़ि परन लगे जहाँ, दानव दुष्ट पतंग॥

तृनावर्त आवन मैं बाल, भयौ जु अति भारी तिहि काल।
जननी के जिय संका रहै, हरि वह भार जनायौ चहै।

६५ इक दिन ललन लिये गोद मैं, जसुमति मगन महा मोद मैं ।
बैठी मधुर पयोधर प्यावति, मुँह अंगुरि दै दै मुसकावति ।
अरुन अधर बँतियन की जोती, जपाकुसुम मधि जनु बिबि मोती ।
ललनहि तनक जँभाई आई, तब जसुमति अति बिस्मय पाई ।
धर, अंबर, सूरज, ससि, तारे, सर, सरिता, सागर, गिरि भारे ।
७० बिस्व चराचर है यह जितौ, सुत-मुख मध्य बिलोक्यौ तितौ ।
नैंन मूँदि रही अति भय भरी, बहुरि बिचार परी, सुधि करी ।
कहन लगी इह ईस्वर कोई, जाकी चितवनि मैं जग होई ।
बहुरि उदर मधि राखत जोई, मेरे घर इह बालक सोई ।
ऐसैं करि जब जसुमति जाने, तब हरि हँसि कै गर लपटाने ।
७५ पुत्र सनेहमई रससई, माया जननि उपर फिरि गई ।
ईस्वरता कछु नहिं दुरी, सब कोउ जानत ताहि ।
सो प्रभु सुत करि पाइबौ, यह अति दुस्तर आहि ॥

अष्टम अध्याय

अब अष्टम अध्याइ सुनि मित्र, नामकरन मन-हरन पवित्र ।
सुत-मुख-मध्य बिस्व जब चह्यौ, सो जसुमति ब्रजपति सौं कह्यौ ।
ब्रजपति हू के मन मैं गयौ, नामकरन जु नाहिंनैं भयौ ।
तब हीं गर्ग पुरोहित आयौ, नाम करन बसुदेव पठायौ ।
५ ताहि निरखि अति हरखे नंद, बरखे तन-मन परमानंद ।
प्रथम अमी-बचनन करि अरचे, बहुरचौ चंदन-बंदन चरचे ।

कही कि तुम परिपूरन नाथ ! रिधि-सिधि-निधि सब तुम्हरे हाथ।
कवन वस्तु करि पूजा कीजै, ज्यौं दिनमनि कौं दीपक दीजै।
महापुरुष जो चलत ठौर तैं, नहिं कछु चाहत काहु और तैं।
कृपन जु गृह-ममता करि बँधे, चलि न सकत दृढ़ फंदन फँधे। १०
केवल तिन कौ करन कल्यान, दिखियत नाहिन प्रयोजन आन।
ज्योतिसास्त्र जु अतीद्रिय ग्यान, ताके तुम हीं बीज निदान।
पूर्व-जन्म जु सुभासुभ करै, जा करि जंतु जगत संचरै।
आगे होनहार पुनि जोई, प्रभु तुम सम्यक जानत सोई।
नामकरन लरिकन कौ कीजै, कवन सु बिधि मोहिं आयसु दीजै। १५
गर्ग कहत अहो सुनि ब्रजराज ! यातैं अवर न उत्तम काज।
ऐ परि हौं गुर जदु-बंस कौ, मोहिं बड़ौ डर वा कंस कौ।
सुनि पावै नीचन कौ राइ, तौ तौ होइ बड़ौ अन्याइ।
नंद कहत तौ ऐसैं करौ, गृह-मधि गुपत ठौर अनुसरौ।
तनक स्वस्ति-बाचन करि लीजै, लरिकन कछू नाँउ धरि दीजै। २०
गर्गहि अरग गये लै नंद, अगिनिहोत्र करि मंदहि मंद।
प्रथम रोहिनी-सुत के नाम, धरन लग्यौ द्विज सब गुन-धाम।
याकौ एक नाम संकर्षन, जन-हर्षन, सब के मन-कर्षन।
बहुरयौ राम परम अभिराम, अति बल तैं कहिहैं बलराम।
अब सुनि अपने सुत के नाम, अद्भुत अद्भुत गुन के धाम। २५
इक श्री कृष्न नाम अस ह्वैहै, ससि-सम सुधा सबन पर च्वैहै।
कबहूँ पूर्व-जन्म सुत तेरौ, पूत भयौ हे बसुदेव केरौ।
तातैं बासुदेव इक नाम, पूरन करिहै सब के काम।

याके अवर जु नाम अनंत, गनन गनत कोउ लहै न अंत।
३० कहत हैं द्विजबर भरि आनद, बहुत कहा कहियै हो नंद।
नाराइन मधि गुन है जिते, तेरे सुत मधि झलकत तिते।
छवि, सपति, कीरति रसमई, नाराइन हू तैं अधिकई।
सुनि कै नंद परम आनंदे, बार बार द्विजबर-पद बंदे।
जसुमति ताहि बहुत कछु दयौ, गरग अरग लै मथुरा गयौ॥
३५ अब सुनि सुदर बाल-बिनोद, देत जु नंद-जसोदहि मोद।
जानुपानि डोलनि जगमगे, मनिमय आँगन रैंगन लगे।
सोहे सचिकन कच घुँघरारे, को हे मधुकर मधु-मतवारे।
अंजन-जुत नैंना मनरंजन, बलि कीने छवि-हीने खंजन।
लटकन लटकत ललित सु भाल, बनि रहे रुचिर चखौंडा गाल।
४० तनक तनक सी नाक-नथूली, फबि रही नील सु पीत झगूली।
जटित बघूली छतियन लसै, द्वै द्वै चंद-कलन कौ हँसै।
कटि-तट किंकिनि पैजनि पाइनि, चलत घुटुरुवनि तिन के चाइनि।
निज प्रतिबिंब निरखि चकि रहै, पकरयौ चहै अधिक छबि लहै।
लपटि जु रही दही मुख-कंजनि, परति न कही महरि मन-रंजनि।
४५ बिबि केहरि-नख हरि-उर सोहत, ढिंग ढिंग दधि-कन मो मन मोहत।
नखत-मंडली-मधि दुति जसी, जुरि निकसे द्वै द्वैज के ससी।
किलकि किलकि घुटुरुनि की धावनि, डरपि कै जननि निकट फिरि आवनि।
मैयन की वह गर-लपटावनि, चूमनि मधुर पयोधर प्यावनि।
ठाढ़े हौन लगे रँगमगे, धरत जु धरनि चरन डगमगे।
५० अँगुरि गहाइ सु मंदहि मंद, ललनहि चलन सिखावत नंद।
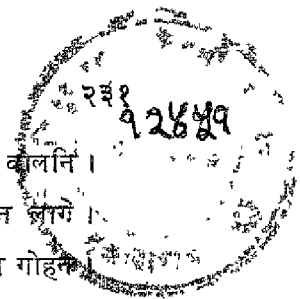
झुनुक सुनुक वह पगन की डोलनि, मधुर तैं मधुर तोतरी बोलनि।
आपुहि ललन चलन अनुरागे, दौरि पौरि लगि आवन लागे।
अपने रंगन खेलत मोहन, जसुमति डोलति गोहन गोहन।
अगन तैं, खगन तैं, नगन तैं डरै, जसुमति भाखति राखति फिरै।
दिखि दिखि बालचरित अभिराम, बिसरे सबन धाम के काम। ५५
लै ब्रज-बालक अपनी बयस के, दधि माखन की चोरी चसके।
मोहन मंत्र सौं घर घर डोरत, दधि-माखन चोरत, चित चोरत।
जब घर आवहि मोहनलाल, अंतर सहि न सकत ब्रज-बाल।
उरहन मिस मिलि नंद-निकेत, आवति मुख-छबि देखन हेत।
अहो महरि ! यह तुम्हरौ तात, कहा कहैं हम याकी बात। ६०
असमय देइ बछरुवन छोरि, ठाढ़ौ हँसै खरिक की खोरि।
चोरि चोरि दधि-माखन खाइ, जौ हम देहिं तौ देइ बगाइ।
धाम कौ काम कर्‌यौ ही चहियै, कब लगि धाम धसे ही रहियै।
जब कोउ रंचक इत उत जाइ, अरग अरग गृह-अंतर आइ।
नूपुर, किंकिनि लेइ छिपाइ, सखन खवावै आपुन खाइ। ६५
अस बड़ चोर कहि न कछु आवै, चपरि कै चखन तैं समिहि चुरावै।
यह सुनि आनँद भरि नँद-रानी, तिन सौं कहति मुसकि मधु बानी।
बलि बलि तौ तुम ऐसै करौ, दिन दस भाजन ऊँचे धरौ।
जब लगि याकी बुद्धि अयानी, तब लगि तुम ही हौहु सयानी।
हौ जसु ! जौ कोउ ऊँचे धरै, तहँ तुम सुनहु जु जतनन करै। ७०
ता-तर आनि उलूखल नावै, ऊखल पर इक सखहि चढ़ावै।
ता पर आपुन चढ़ि कै खाइ, चोर लौं इत उत चितवत जाइ।

बहुरयौ वुद्धिवंत अति आहि, तैसौई छिद्र बनावै ताहि।
मुख तें दधिकन गिरि गिरि परैं, चंद तें जनु मुक्ताफल झरैं।
७५ और की जब घर द्वारे आवै, उतरि कै ताके सनमुख धावै।
मुख भरि खीर नयन भरि लाके, चपरि जाइ ये चरित हैं याके।
ऊधम अवर सु कहियै काहि, तुम्हरे निकट साधु जनु आहि।
भैं भरे चखन चूमि नँद-रानी, तिन सौं बहुरि कहत मधु बानी।
वारी तौ तुम ऐसैं करौ, लै दधि-दूध अँध्यारे धरौ।
८० तहाँ कहति गोपी छबि ओपी, इहि रस जिनहि क्रिया सब लोपी।
अहो महरि ! ऐसैं हूँ करयौ, लै दधि-दूध अँध्यारे धरयौ।
कोटि दिया सम अंग सुहाये, पुनि मनि-भूषन तुमहिं बनाये।
जहँ यह जाइ तुम्हारौ बारौ, कवन भवन जिहिं रहै अँध्यारौ।
बोली अवर एक ब्रज-बाला, हरि तन मुसकि सु नयन बिसाला।
८५ अहो ब्रजेस्वरि ! सुनि इक बात, मेरे घर यह तुम्हरौ तात।
ढुकत ढुकत इकलौई गयौ, तहँ इक अद्भुत कौतुक भयौ।
मनि-खंभ के निकट मथि दह्यौ, माखन सहित धरयौ हो मह्यौ।
लौनौ लेन गयौ तहँ जाइ, मनि-खंभ मैं निरखि निज झाँइ।
अवर लरिक की संका पाई, तासौं ठाढ़ौ कितौ लिलाई।
९० कहत कि यह माखन सब लीजै, अहो मित्र हठ नाहिंन कीजै।
नित ही मेरे गोहन रहौ, ऐ पर मैया सौं जिनि कहौ।
यह सुनि बिहँसि परी नँद-रानी, चूमति बदन बोलि मृदु बानी।
धूरि धूसरित निरखि सु गात, पौंछति मात कहति यौं बात।
बलि बलि कत कौ पर घर जाहु, घर बहुतेरौ माखन खाहु।

अद्भुत सिसु कछु समझि न परै, सब बिधि सब ही के मन हरै। ९५
कबहुँक दिखियै माखन चोर, कबहूँ झलकै नवल किसोर।
ऐसै सब ब्रज कहुँ मधु प्यावत, मधि मधि ईस्वरता दिखरावत।
मधुर वस्तु ज्यौं खात है कोई, बीच अमल रस रुचिकर होई।
सिसुन कौ कहि राख्यौ जसु माइ, दिखियहु बलि यह चपल कन्हाइ।
माटी खाइ सलिल मैं जाइ, बलि बलि मो सौं कहियहु आइ। १००
इक दिन तनक कहूँ हरि बारे, मुख मेली माखन मो हारे।
धाइ गये सिसु जहँ जसु माई, तेरे कान्हर माटी खाई।
सुनि सहि सकी न इतनी बात, हित-ईषनी जसोमति मात।
धाइ जाइ गहि कै बिवि पानि, डाटन लागी आँगन आनि।
रे रे चपल-गात, अनियाई, क्यौं तैं दुरि कै माटी खाई। १०५
ये सिसु सबै कहत यह बात, अरु यह तेरौ अग्रज भ्रात।
भै भरी अँखियन कहत कन्हैया, मैं माटी नहिं खाई मैया।
ये सब मिथ्याबादी आहि, इन के कहैं न तनक पत्याहि।
जसुमति कहति कि अग्रज तेरौ, यह तौ झूँठ न बोलत मेरौ।
तब हरि कहत कि जौ न पत्याहि, मैया तौ मेरौ मुख चाहि। ११०
जननी कहति तौ बदन दिखाइ, डरपे कुँवर दियौ मुख बाइ।
बदन मध्य जौ जसुमति चहै, सगरौ बिस्व चराचर अहै।
प्रथम चह्यौ भूगोलक तहाँ, दीप, समुद्र, सरित, गिरि जहाँ।
जोति-चक्र, जल, तेज, समीर, अगिनि, अरक, ससि, तारक भीर।
इद्री अरु इंद्रिन के देव, सतगुन, रजगुन, तमगुन भेव। ११५
काल, कर्म, सुभाउ अरु जंत, बुद्धि, चित्त, मन मूरतिवंत।

पुनि अपन पै सहित ब्रज देखि, जसुमति चकित भई सु बिसेखि।
तहँ पुनि सुतहि लिये कर साँटी, डाटति ज्यों न भखन करै माटी।
तब जसुमति अति संभ्रम भरी, इत उत चहि बिचार अनुसरी।
१२० कहन लगी कि सुपन नहिं होई, जागति हौं कछु नाहिंन सोई।
अरु नहि हरि ईस्वर की माया, परती तौ सबहिन पर छाया।
जनु यह सिसु दर्पन सम कर्यौ, जग-प्रतिबिंब जासु मधि पर्यौ।
पुनि प्रतिबिंब बिंब मैं कैसें, देखति हौं या सिसु मैं तैसें।
बहुरि कहति दिखियत यह जितौ, जाकी माया करि सब सुतौ।
१२५ ऐसें जब निश्चय करि जाने, तब हरि हँसि कै उर लपटाने।
अपनी प्रेममई दिढ़ मया, जननी पर डारी करि दया।
सुनि कै नृपति महा मुद भर्यौ, पूछत सुकहि प्रेम रँग ढर्यौ।
कवन कर्म कीनौ अस नंद, पायौ परम उदय कौ कंद।
महा भाग जसुमति कौ कियौ, ताकौ मधुर पयोधर पियौ।
१३० अरु ये अद्भुत बालचरित्र, हियौ हरत जग करत पवित्र।
गावत कवि बर रंगन भरे, बिबुध सुधारस नीरस करे।
ते सुख तिन के कानन परे, जिन के हित हरि इत अवतरे।
श्री सुक कही कि हे नृप सत्तम ! सब तें प्रेम भगति रति उत्तम।
निरवधि वत्सल रस जो आहि, निगमहु अगम कहत है जाहि।
१३५ सो वत्सल रस ब्रज है नंद के, घर घर प्रति आनंद कंद के।
नंदज परमानंद है कोई, ताकी मूरति ब्रज में सोई।
ऐसें समाधान सुक कियौ, रस करि भरि राख्यौ नृप हियौ।
कही कि बालचरित कछु और, बरनन करौ रसिक-सिरमौर।

डरे जु जननी डाट तैं, साँट निरखि पुनि हाथ।
मुख मैं विस्व दिखाइ कै, बचे नाथ इहि साथ॥　　१४०
'नंद' न डरि भव-ब्याल तैं, बालचरित-मधु पाइ।
श्रवन-पुटन करि पान करि, इहि अष्टमौ अध्याइ॥

नवम अध्याय

अब सुनि मित्र नवम अध्याइ, जामैं अद्‌भुत अद्‌भुत भाइ।
जोगीजन मन ढूँढत जाकौं, बाँधैगी हठि जसुमति ताकौं।
इक दिन भोरहि उठि नँदरानी, आपुहि मंजु मथानी आनी।
थोरौई दूध पूत के हित ही, राखति जमु जमाइ नित नित ही।
और जु नंदमहर घर दह्यौ, कितक आहि कछु परत न कह्यौ।　　५
प्रेरी तहाँ अनेक जु दासी, मंथन करैं सबै कमला सी।
ठाँ ठाँ मधुर मथानी बजैं, जनु नव आनँद-अंबुद गजैं।
मथत जु आप जहाँ नँदरानी, सोभा नहिं कछु परत बखानी।
सुंदर गौर बरन तन सोहै, औटे कंचन कौ रँग को है।
मृदुल उजल गंगाजल पहिरैं, उठति जु तन तैं छबि की लहरैं।　　१०
पृथु कटि कल किंकिनि की बाजनि, बिलुलित बर कबरी की राजनि।
नेत की करखनि, बदन की हरखनि, तैसिय सिर तैं सुमन सु बरखनि।
आनन पर श्रमकन अस बनी, कनक-कमल जनु ओस की कनी।
किधौं चंद मधि प्रगटे मोती, आये जानि आपनौ गोती।
लाल के बालचरित कछु गावति, भाग-भरी सब राग रिझावति।　　१५

सोवत सुत तन पुनि पुनि देखति, मुसकति जाति जनमफल लेखति ।
लगी जु भूख कुँवर बर जगे, मीड़त नैन अलस-रस पगे ।
अरग अरग जननी ढिंग जाइ, नेत गह्यौ अति हेत बढ़ाइ ।
जसुमति कहति बोलि मधु बानी, बलि बलि मोहन छाँड़ि मथानी ।
२० तनक तजहु तुरत मथि लैऊँ, अपने ललन कौ लौनौ दैऊँ ।
नेत न तजत, ललन हठ ठानी, लै बैठी तहँ जसुमति रानी ।
मधुर पयोधर प्यावन लगी, कहि न परति जु प्रेम-रस पगी ।
चापि कै चूमति चारु कपोलनि, बोलत ललित तोतरी बोलनि ।
पूत कौ प्यारौ पियनौ पयौ, अधिक आँच तै उफनत भयौ ।
२५ यातैं सुत कौ धरि कै धरनी, धाइ गई तहँ नँद की घरनी ।
कोइक कबि कहैं तृष्ना बौरी, हरि परिहरि जु दूध कौं दौरी ।
ते कछु प्रेम-मरम नहिं जाने, जिहि बिधि श्री सुकदेव बखाने ।
या करि ब्रह्मानंद जु हरुवौ, भजनानंद दिखायौ गरुवौ ।
पय को पयमीतहि जु मिलाई, पूत पै बहुरि गई जसु माई ।
३० अतृपत सुत अति छुभित जु भयौ, भाजन भाँजि भवन दुरि गयौ ।
सुत कौ करम निरखि नँदरानी, मुसकी जनम सफलता मानी ।
बहुरि कहति अस लड़कि न कीजै, लरिकहि तनक कछू सिख दीजै ।
अरग अरग गई गृह मैं ऐसैं, नूपुर धुनि सुनि भजै न जैसैं ।
साँट लिये जौ जसुमति जाइ, चढ़्यौ उलूखल माखन खाइ ।
३५ जननिहि निरखि भीत की नाईं, उतरि भग्यौ तिहुँ लोक कौ साँईं ।
जसुमति मोहन गोहन लगी, तिहि छिन अद्भुत छबि जगमगी ।
जसु पै तैसैं जाइ न जाइ, श्रोनी-भर अरु कोमल पाइ ।

खसत जु सिर तैं सुमन सुदेस, जनु चरनन पर रीझे केस।
आगें फूल की बरषा करै, तिन पर ब्रजरानी पग धरै।
जोगीजन-मन जहाँ न जाहीं, इत सब बेद परे बिललाहीं। ४०
ताहि जसोमति पकरति भई, रहपट एक बदन पर दई।
पानि पकरि जब आँगन आने, जिन तैं डर डरपै सु डराने।
डर तैं नैंन सजल ह्वै आये, जनु अरबिंद अलिंद हलाये।
परत दृगन तैं जलकन जोती, डारत ससि जनु मंजुल मोती।
मींजत चख, मसि प्रसरित ऐसैं, निर्मल बिधु कलंककन जैसैं। ४५
भै भरे सुतहि निरखि नँदनारी, दीनी लकुट हाथ तैं डारी।
कहत कि रंचक बाँधौ याहि, जैसैं सिख लागै लरिकाहि।
मृदुल पाट की नोई लई, लाल के पेट लपेटति भई।
ऊखल सौं जब बनै न गाँठि, तासौं अवर लई तब साँठि।
सो पुनि परिपूरन नहिं भई, तब इक बडी जेवरी लई। ५०
उहै न तनक उदर फिरि आई, तब जसुमति अति बिस्मय पाई।
तिहि छिन गोप-बधू घिरि आई, हँसति परस्पर लगति सुहाई।
भै भरे लाल के लोइन लसैं, दिखि दिखि गोप-बधू सब हसै।
हँसि हँसि कहति, सु लगति सुहाई, ये न होंहि बलि बस्तु पराई।
धाम की दाँम-दाँवरी जिती, ब्रजतिय लै लै आवति तिती। ५५
जसुमति ग्रंथि दैन जब चहै, द्वै अंगुल तब ऊनी रहै।
आदि अंत कछु पैयै जाकौ, बंधन अवसि पूछियै ताकौ।
आदि अंत जो कोऊ न पावै, तनक जिवरिया किन फिरि आवै।
निपट अमित जननी कहुँ जानी, निरवधि बत्सल रस पहिचानी।

६० जद्यपि अस ईस्वर जगदीस, जाके बस विधि, विष्नु, गिरीस ।
ताहि जसोमति बाँधति भई, रसना प्रेममई, दिढ़, नई ।
भक्तवस्यता निगम जु गाई, सो श्री कृष्न प्रगट दिखराई ।
प्रभु तैं जो प्रसाद जसु पायौ, सो काहू सपने न दिखायौ ।
विधि सौं पूत जगत उजियारौ, आत्मा सिव सब ही तैं प्यारौ ।
६५ निकटहि रहति जदपि श्री ललना, कब बाँधे, कब झुलये पलना ।
हो नृप ! ये जु जसोदा-नंदन, नित्य अनूप रूप जगबंदन ।
भक्तिवंत कहँ सुखद हैं जैसैं, तन अभिमानी कौं नहि तैसें ।
बहुत जुगति जो जीवत लहियै, सो मुनि तन अभिमानी कहियै ।
ग्यानी पुनि यह सुखहि न जानैं, नीरस निराकार परवानैं ।
७० गत-अभिमान न यह सुख लहै, देहादिक कहुँ माया कहै ।
पायौ जु कछु नंद की घरनी, कापै परति सु महिमा बरनी ।
बंधन सहि न सकति तहँ गोपी, कहति जसोमति सौं रस-ओपी ।
अहो महरि ! अब बंधन छोरौ, सुदर सुत पर भयौ न थोरौ ।
डर तैं मुख पियरी परि गई, ललित कपोलन पर छबि छई ।
७५ ज्यौं दरपन परसत मुख-पौन, परिहरि महरि, परी हठ कौन ।
जसुमति हठी, कहति तिन आगे, नैंक रहन देहु ज्यौं सिख लागे ।
ऐसैं कहि जसु गृह मैं गई, इहाँ अवर इक अद्भुत भई ।
दिष्टि परे अर्जुन द्रुम दुवै, श्रापे हुते मुनि नारद जु वै ।
रैंगत रैंगत तहँ चलि गये, लरिका मोहन गोहन भये ।
८० ऊखल तनक तिरीछौ करि कै, डारि दिये तरु तिन मैं बरि कै ।

भक्ति बिना श्री भागवत, कहहिं सुनहिं जे 'नंद'।
दरवी ज्यौं विंजनन मैं, स्वाद न जानै मंद।।
'नंद' नवम अध्याइ यह, बरन्यौ कापै जाइ।
चातक चंचु-पुटी लटी, सब घन कितहि समाइ।।

दशम अध्याय

अब सुनि दशम कौ दशम अध्याइ, सुत कुवेर के गहि कै पाइ।
स्तुति करि हरि पै आग्या पैहैं, भक्ति-पात्र ह्वै निज घर जैहैं।
सुक मुनि सौं पुनि राजा कहै, नारद परम भागवत रहै।
तिन करि कवन कर्म अस करचौ, जा करि जिनहि क्रोध संचरचौ।
बोले विहँसि ब्यास के तात, हो नृप सत्तम ! सुनि यह बात। ५
सुत कुबेर के अति अभिराम, नलकूबर, मनिग्रीव सु नाम।
गंगा मधि ललनागन लियें, बिहरत हुते बारुनी पियें।
तहँ ह्वै नारद निकसे आइ, बीना कर आपने सुभाइ।
तिहिं दिखि तिय सब लज्जित भई, चटपट अपने पट गहि गईं।
ये दोउ नगन मगन अस भये, मद बाढ़े, ठाढ़े रहि गये। १०
कहन लगे मुनि तिन तन चाहि, जग मैं अबर बहुत मद आहि।
ऐ परि यह श्री-मद है जैसौ, बड़ अनरथ कर अवर न ऐसौ।
मति-भ्रंसक, सब धर्म-बिधुंसक, निर्दय महा बिरथ पसु-हिंसक।
नस्वर देह सबै कोउ जानैं, ता कहुँ अजर अमर करि मानैं।
रच्यौ पाँचभौतिक कौ देह, अंत सगै कृमि विष्टा खेह। १५

जा कहुँ कहत कि यह तन मेरौ, तामैं बहुरि बहुत अरभेरौ।
मा कहै मेरौ, पितु कहै मेरौ, मोल लयौ सु कहै मो चेरौ।
अन्न कौ दाता कहै कि मेरौ, स्वान कहै न अवर किहि केरौ।
ऐसैं साधारन इह देह, तासौं करि कै परम सनेह।
२० भूत हौइ आचरत न डरै, धमकि धमकि नरकन मैं परै।
श्री-मद करि जु अंध ह्वै जाइ, दारिद-अंजन परम उपाइ।
तन दुर्बल, मन निर्बल रहै, अपनी उपमा करि सब चहै।
कंटक चरन चुभ्यौ होइ जाके, और कौ दुख हिय कसकै ताके।
जाके कंटक चुभ्यौ न होइ, का जानै पर पीरहि सोइ।
२५ पुनि मुनि बोले करुना भरे, क्यौं तुम रहि गये द्रुम से खरे।
तब अति डरे दौरि पग परे, परम दयाल दया अनुसरे।
मथुरा-मंडल गोकुल जहाँ, अर्जुन तरु तुम उपजहु तहाँ।
नंद के नंदन बालक ह्वैहैं, बँधे उलूखल तुम कौं छ्वैहैं।
मो प्रसाद तैं तुम घर ऐहौ, दुर्लभ बस्तु सुलभ ही पैहौ।
३० ते दोऊ अर्जुन द्रुम भये, बढत बढ़त अंबर लौं गये।
नारद-बचन सुमिरि हरि आइ, छिनक मैं गिरि से दिये गिराइ।
परत जु चंड सब्द भयौ ऐसौ, घर पर बज्रपात होइ जैसौ।
निकसे उभय पुरुष दोउ बीर, पहिरे अद्‌भुत भूषन चीर।
जैसें दारु मध्य तैं आगि, निर्मल जोति उठति है जागि।
३५ नंद-सुवन के पाइनि परे, अंजुलि जोरि स्तुति अनुसरे।
कहन लगे हरि तिन तन चाहि, तुम तौ कोउ देवता आहि।
इमि इहि गोकुल-गोप-दुलारे, क्यौं हौ पकरत पाइ हमारे।

तब बोले अलका भौन के, हो प्रभु ! तुम बालक कौन के।
परम पुरुष सब ही के कारन, प्रतिपारन, तारन, संघारन।
व्यक्त-अव्यक्त जु बिस्व अनूप, बेद बदत प्रभु तुम्हरौ रूप। ४०
तुम सब भूतन कौ बिस्तार, देह, प्रान, इंद्री, अहँकार।
काल तुम्हारी लीला श्रीधर, तुम व्यापी, तुम अव्यय ईस्वर।
तुम ही प्रकृति, पुरुष, महतत्व, धर, अंबर, आडंबर, सत्व।
तुम हीं जीवन, तुम ही जीय, सब ठाँ तुम, कोउ अवर न बीय।

पूर्व पक्ष

घट-पट-ग्यान बिसेखै सब हीं, हमरौ ग्यान होइ किन अब हीं। ४५
दुर्लभ ब्रह्म सुलभ ही बनै, तहाँ कहत कुबेर के तनै।
इंद्रिन करि तुम जात न गहे, प्रगट आहि पै परत न चहे।
जैसें दिष्टि कुंभ कहुँ देखै, कुंभ तौ नाहिंन दिष्टि कौ पेखै।
कुंभ के दिष्टि होइ जब कब ही, सो तुम दिष्टिहि देखै तब ही।
तातें तुम कहुँ बंदन करें, जानि न परहु परे तें परें। ५०
इहि बिधि स्तुति करि हरि देव की, प्रार्थित पद-पंकज-सेव की।
हे करुनानिधि करुना कीजै, अपनी भाउ-भगति-रति दीजै।
बानी तुमरे गुन गन गनै, श्रवन परम पावन जस सुनै।
ये करि अवर कर्म जिनि करै, प्रभु की परिचर्या अनुसरैं।
मन-अलि चरन-कमल-रस रसौ, चित्र-कमल-जग भूलि न बसौं। ५५
हो जगदीस ! जसोदा-नंदन, सीस रहौ नित तुव-पद-बंदन।
तुमरी मूरति भक्त तुम्हारे, नित ही निरखहु नैंन हमारे।

तब बोले हरि करुनाधाम, पूरन होहि तुम्हारे काम।
नारद प्रीतम भक्त हमारौ, तुम पर कियौ, अनुग्रह भारौ।
६० मो भक्तन कौ यहै सुभाउ, जैसैं उदित होत दिनराउ।
सहजहि निबिड़ तिमिर कौं हरै, अवर बहुत मंगल बिस्तरै।
पुनि बोले हरि सब गुन-सींव, हे नलकूबर ! हे मनिग्रीव ! ।
अब तुम गवन भवन कौ करौ, मो माया डर तै जिनि डरौ।
आग्या भई रह्यौ नहि जाइ, पुनि पुनि पकरे सुंदर पाइ।
६५ बार बार परिकर्मा देहि, मोहन वदन बिलोकै लेहि।
अधिकारी पै रह्यौ न जाइ, चले ईस कहुँ सीस नवाइ।
उत्तर दिसि नभ ह्वै उड़ि चले, भक्ति-रस भरे सु लागत भले।
अग्नि के जनु निधूम ह्वै ऊक, किधौ बिभाकर बिंबि के टूक।

आपु तनक बंधन बँधे, तासौं कछु न बसाइ।
७० दिढ़ बंधन संसार तैं, गुह्यक दिये छुड़ाइ॥
'नंद' जथामति कथित यह, दशम-दशम अध्याइ।
सुनै जु श्रुति-रंध्रन कोऊ, बंधन सब मिटि जाइ॥

एकादश अध्याय

अब सुनि ग्यारह अध्याइ की कथा, सुंदर सुक मुनि बरनी जथा।
गोकुल तजि बृंदाबन जैहैं, बत्सासुर अरु बकहि बधैहैं।
सुनि द्रुम सबद सबै ब्रज डरयौ, कहत कि आनि बज्र जनु परयौ।
नंदादिक सब धाये आये, द्रुमन देखि अति बिस्मय पाये।

पतन कौ कारन लगे बिचारन, प्रबल पवन नहि, नहिं बड़ बारन। ५
कारन कवन जु ये तरु परे, दिखि सब लोग अचंभे भरे।
तिन सौं कहन लगे सिसु बात, अहो महरि यह तुम्हरौ तात।
आपुन इन के अंतर परयौ, ऊखल तनक तिरीछौ करयौ।
दये उखारि दोऊ द्रुम भारे, ये हम सिगरे देखनहारे।
निकसे उभय पुरुष दुति भरे, या ढोटा के पाइनि परे। १०
ऐसैं जब उन लरिकन कह्यौ, किनहूँ गह्यौ, किनहुँ नहिं गह्यौ।
तिन बिच हरि बैठे छबि-ऐना, डरपे मृग-सिसु के से नैंना।
अति बत्सल रस भरि ब्रजराइ, द्रुमन मध्य तैं लिये उठाइ।
बंधन छोरि छती लपटाइ, पौछन सुंदर अंग सुहाइ।
जसुमति परि ब्रजराज रिसाइ, ऐसै सिसु कोउ बाँधति माइ। १५
पुनि बिहरन लागे ब्रज महियाँ, दैन लगे सुख अपनन कहियाँ।
कहुँ ब्रज नवल बधू नँदलालहिं, पकरि नचावहिं नैंन बिसालहि।
जे जे बिकट मान उपजावहिं, ते ते सहज नाचि दिखरावहिं।
रीझि रीझि ब्रज की बर बाला, वारहि भूपन कंचन-माला।
चुंबन करहिं बलैया लेहिं, बहुरि नचावहि माखन देहिं। २०
कबहुँक बहुरि टहल अनुसरै, ब्रज की वहू कहैं सो करै।
कोउ कहै अहो अहो मोहनलाल ! मुहिं गुहि दै यह फूल की माल।
कोउ कहैं लाल लाउ दोहनी, कोउ कहैं मोहिं गहाउ सोहनी।
कोउ कहै बलि वे पाँवरि लावौ, बलि बलि मोहिं पिढ़ी पकरावौ।
अब लावौ मुख चुंबन करैं, इहि विधि ब्रज तिय सुख बिस्तरैं। २५
सिव कौ सर्बस, श्रुति कौ हियौ, सो ब्रजतियन खिलौना कियौ।

कबहूँ बिहरत जमुना नीर, धूरी धूसर सुभग सरीर।
तिन कौं लेन गई जसु मात, ठाढ़ी कहति मनोहर बात।
अरे पूत पूतना-निपातन, तो सौं कहि न सकत इक बातन।
३० निसि दिन रहत धूरि में सनौ, पूर्ब जन्म कौ सूकर मनौ।
भोर के आये दोऊ भैया, कीनौ नाहिन कलेऊ दैया।
भूखौ आहि, बलि गई मैंया, घर चलिहैं मेरौ भलौ कन्हैया।
अरु दिखि बलि ये सँग के बारे, मैयन कैसी भाँति सिँगारे।
तुमहुँ अन्हाइ तनक कछु खाइ, बलि बलि बहुरि खेलियहु आइ।
३५ बैठे महर थार पर जाइ, मो सौं कह्यौ कन्हैयहि लाइ।
तुम बिन तात तनक नहिं खात, बलि बलि चलि मेरे साँवर गात।
न चलहि खेल मगन अति भये, बाँह पकरि तब जसुमति लये।
मग मैं कहति जाति जसु माइ, सो राजा जु प्रथम घर जाइ।
महर के संग तनक कछु खाइ, चले पलाइ, गहे जसु माइ।
४० उबटन उबटि अंग अन्हवाइ, पठये मनि भूषनन बनाइ।

हरि गुन रतनन माँझ खचि, मनि - मानिक जु सुछंद।
बिषय-काँच करि कंचन बिच, पोइ बिगारि न 'नंद'॥

इहि परकार महाबन महियाँ, दै सुख नंद-जसोमति कहियाँ।
अब चाहत बृंदाबन गयौ, मंजु कुंज बिहरन मन भयौ।
४५ अंतरजामी अपनौ धर्म, ता करि प्रेरे सब के मर्म।
इक दिन गोप-सभा करि बैसे, अमर नगर मैं अमरन ऐसे।
नंद-सुवन के रस रँगमगे, ब्रज के हितहि बिचारन लगे।
इत उत्पात जगे हैं जैसें, देखे-सुने न कित हूँ ऐसें।

इन लरिकन की रच्छा करौ, ह्याँ तैं वेगि अनत अनुसरौ।
तहँ उपनंद नाम इक कोई, ग्वाल-वृद्ध, बय-वृद्ध है सोई। ५०
कहन लग्यौ कि कुसर है परी, इन तैं चलहु अबहिं इहि घरी।
आई प्रथम बकी घर-घालक, काल के मुख तैं उबर्‌यौ बालक।
अरु वह सकट बिकट भर भर्‌यौ, या सिसु के ऊपर नहिं पर्‌यौ।
पुनि वह बात-चक्र ह्वै आई, लै गयी लरिकहि गगन उड़ाई।
बहुर्‌यौ आनि सिला पर नाख्यौ, तब यह सिसु परमेसुर राख्यौ। ५५
जे द्रुम नभ सौं बातैं करे, ते तरु अकस्मात भुवि परे।
जौ जगदीस सहाइ न होई, तिन तर आयौ बचै न कोई।
चाहत हौ जौ ब्रज कौ भलौ, तौ तुम ह्याँ ते अब ही चलौ।
सुंदर बृंदाबन इक नाम, सब गुन-धाम, परम अभिराम।
जामैं गिरि गोवर्द्धन आहि, सब रितु संतत सेवत जाहि। ६०
गोपी-गोप गाइ-बछ लाइक, सुखदाइक, सुभकरन, सुभाइक।
एकै बुद्धि सबै जन सुठे, सुनतहि 'साधु साधु' कहि उठे।
अपने सकट तुरत ही जोरे, बड़े मंदल कंदल घोरे।
गोधन बृंद धरि लये आगे, धरे सरासन नीके लागे।
कंचन सकटहि चढ़ि चढ़ि गोपी, चली जु नंदसुवन-रस-ओपी। ६५
कंठनि पदिक जगमगत जोती, लटकै ललित सु बेसर-मोती।
केसरि आड़ ललाटन लसी, चंद मैं चंद-कला-दुति जसी।
चंचल दृग अंजन छबि बढ़े, ससिन मैं जनु नव खंजन चढ़े।
लाल के बालचरित जु पुनीत लये है बनाइ बनाइ सु गीत।
ठाँ ठाँ गोपी गान जु करैं, सीतल कंठ सब कौ हिय हरैं। ७०

राज-सकट बैठी जसु मोहै, उपमा कौ त्रिय त्रिभुवन को है।
सुरपति-रवनी रमा की चेरी, सो वह चेरी जसुमति केरी।
गोद मैं सुत, अति सोहत ऐसो, चंद जननि चंदहि लिये जैसो।
सुत-गुन गोपी गावति जहाँ, दै रही कान जसोमति तहाँ।
७५ इहि बिधि श्री बृंदावन आइ, निरखि अधिक आनंदहि पाइ।
सकट कौ थान बनायौ ऐसौ, सुंदर अर्द्धचंद होइ जैसौ।
बन बृंदावन गोधन गिरिबर, जमुना-पुलिन मनोहर तरवर।
रस के पुंज, कुंज नव गह्वर, अमृत समान भरे जल सरवर।
जदपि अलौकिक सुख के धाम, श्री बलराम, कुँवर घनस्याम।
८० रीझे तदपि देखि छवि बन की, उत्तम प्रीति लागि गई मन की।
औरै सुक, सारिक, पिक, मोर, औरै अंबुज, औरै भौंर।
रतन-सिखर-गिरि गोधन-सोभा, निकसी मनहुँ नई छबि गोभा।
तिन बिच्च सुंदर रासस्थली, मनि-कंचन-मय लागत भली।
गिरि तैं झरत जु निर्झर सोहै, निर्जर नगर अमृत-रस को है।
८५ औरै त्रिगुन पवन जहँ बहै, मुँह उचाइ हर सूँघत रहै।
कहन लगे बृंदावन जैसौ, वह हमरौ बैकुंठ न ऐसौ।
बाल-बैस सब रस जगमगे, बालक संग रंग रँगमगे।
बल समेत सिसु सब अभिराम, कंचन-भूषन, कंचन-दाम।
तिन मधि मधिनाइक जु नंद कौ, बरषत अमी कोटि चंद कौ।
९० ब्रज-समीप लगे बच्छ चरावन, सीखत बेनु बजावन, गावन।
अति गति चलत सु अति छवि पावनि, नूपुर-रव, किंकिनी बजावनि।
बदि बदि होड़नि, डेलनि मेलनि, कहूँ परस्पर बोलनि, खेलनि।

कहुँ कृत्तिम गो-वृषभ बनावत, तैसैंहि नादत, तिनहिं लरावत ।
इक दिन कान्ह कुँवर मनभावन, जमुन कच्छ गये बच्छ चरावन ।
तहँ इक असुर बच्छ ह्वै आइ, कछ के बछरन मैं मिलि जाइ । ९५
नष्ट दुष्ट-बुद्धि धरि आयौ, सो श्री कृष्न तबहिं लखि पायौ ।
चिदानंद-मय अपने बच्छ, यह प्राकृत अरु अधम असुच्छ ।
नैन-सैन करि बलहिं जनाइ, अरग अरग ताकी ढिँग जाइ ।
पुच्छ सहित लै पिछले पाइ, दियौ फिराइ फिराइ बगाइ ।
महाकाइ ऊपर ही मरयौ, बहुत कपित्थन लै धर परयौ । १००
'भले भले' कहि बालक हरषे, सुर हरषे, नव फूलन बरषे ।

(इति वत्सासुर लीला)

पुनि इक दिन बल अरु बलबीर, सखन सहित गये सरवर तीर ।
पहिले पानी बछरन दियौ, ता पाछे आपुन पय पियौ ।
ता ढिँग असुर एक बड़ वाम, बकी अनुज बक ताकौ नाम ।
निपट नृसंस कंस कौ हियौ, जिहिं डर अमरन मानत जियौ । १०५
सो तिन तैं तहँ पहिले आइ, बैठ्यौ बक कौ भेष बनाइ ।
कहन लगे बक होत न ऐसौ, गिरि तैं गिरयौ शृंग होइ जैसौ ।
ऐसै ठाढ़े करत बिचार, इत उत चितवत नंदकुमार ।
महा अकाइ असुर धर धाइ, गह्यौ तनक सौ मोहन आइ ।
जब बक ग्रस्यौ कुँवर नँदलाल, बल समेत सब ब्रज के बाल । ११०
भये बिचेतन ते तन ऐसैं, प्रान बिना इंद्रीगन जैसैं ।
बक कौ तालु-मूल जब जरयौ, तब इहिं बीच विचारहि परयौ ।
मैं अपने कर काज बिगारयौ, गहि कै प्रथम तहीं नहिं मारयौ ।

अबकैं मारि डारि भखि जाऊँ, ता पाछे ये सिगरे खाऊँ।
११५ डारयौ उगलि सुबल वह बालक, जगपालक ऐसेंई घरघालक।
डारि कै बहुरि ग्रसन कौं नयौ, तब तहाँ अद्भुत कौतुक भयौ।
रबकि कै रंचक वदन पसारयौ, पकरि कै चंचु फारि ही डारयौ।
फटत पटेरहि लागति बार, अस कछु कीनौ नंदकुमार।
जय जय धुनि अंबर मैं भई, बरषत फूल सूल मिटि गई।
१२० घिरि गये सखा प्रान से पाये, हँसि हलधर हू कंठ लगाये।
बछरन लै छवि सौं घर आये, समाचार सब सखन सुनाये।
सुनि कै गोपी गोप समेत, धाइ ग्राइ गये नंद-निकेत।
ज्यौं कोउ मरि परलोकहि जाइ, अपनन बहुरि मिलत है आइ।
तैसैं कान्ह कुँवर तन चहैं, प्रेम भरे यौं बातै कहैं।
१२५ तृषित दृगन मुख निरखत ऐसैं, अमृतहि पाइ पियत कोउ जैसैं।
कहत कि दिखहु मृत्यु अति दारुन, आवत सिसु कहुँ मारन कारन।
तेई फिरि मरि जात हैं ऐसैं, पावक परि पतंगगन जैसैं।
पूर्ब जन्म पुन्य कियौ कोई, राखत है इहि लरिकहि सोई।
तिन सौं नंद कहन तब लगे, गर्ग-वचन हिय मैं जगमगे।
१३० गर्ग अर्ग दै मो सौं कह्यौ, मैं तब सुत कौ लच्छन लह्यौ।
नाराइन मधि गुन हैं जिते, तेरे सुत मधि झलकत तिते।
सुनि कै सब आनंदन भरे, नंद महरि के पाइनि परे।
गोकुल गोपी गोप जितेक, कृष्नचरित-रस मगन तितेक।
कहत परस्पर करि नित नये, भव-बेदन जानत नहिं भये।

इहि परकार कुमार वयस के, करत बिहार, उदार सु रस के। १३५
कोउ होइ मेष, कोऊ होइ पालक, आपुन चोर होहि हरि बालक।

एकादश अध्याइ यह, अगदराज की धार।
पान करौ नर चित्त दै, मिटै रोग संसार॥

द्वादश अध्याय

अब सुनि लै द्वादसौ अध्याइ, महा सर्प-बपु धरि अघ आइ।
गिलिहै बछ-बालक वह नीच, हतिहै हरि तिहिं बढ़ि गल बीच।
इक दिन बन भोजन मन आनि, सोये सुंदर सारँगपानि।
बेनु बजाइ जगाये ग्वाल, सुनत उठे सब ताही काल।
जैसें कमल अमोदहि पाइ, ठाँ ठाँ उठत मधुप अकुलाइ। ५
बन भोजन जु कान्ह मन आनी, बेनु बजावन ही मैं जानी।
सुंदर बिजन सुंदर छीके, कनक लकुटियन लटकत नीके।
अपने बछरन लै लै आये, कान्ह के बछरन आनि मिलाये।
नंद-सुवन सौं मिलि कै चले, लागत सबै मैन से भले।
तिन मधि मोहन अति सुखदाइक, नग जराइ मधि ज्यौं मधि नाइक। १०
छीकन तैं बिजनन चुरावत, ते तौ इत कछु और बनावत।
हँसि हँसि कहत कि देखि कन्हैया, कहा दियौ इहि याकी मैया।
खेलत खेलत खेल सुहाये, सुंदर श्री वृंदावन आये।
और खेल खेलत छवि पावत, महुवरि बेनु बजावत-गावत।
बगन खिजावत, खगन खिजावत, केई खग की छाया गहि धावत। १५

केई मधुमत्त मधुप सँग गावत, केई मिलि कल कोकिल कुहुकावत।
केई मदमत्त मयूर जु नचैं, तैसैंहि नचैं, तनक नहिं बचैं।
केई बनचर के सनमुख जाइ, आवत तैसैंहि ताहि खिजाइ।
केई फल-फूल-माल गुहि लावत, मोहनलाल के उरसि बनावत।
२० लाल के गुंज-माल अति सोहै, लाल-माल तिन आगे को है।
बृंदावन-कुसुमन की कली, गजमोतिन तैं लागति भली।
केऊ अपनी प्रतिध्वनि सौं अरैं, गारि देहिं बहुरयौ हँसि परैं।
देखत बृंदाबन घन सोभा, जब हरि दूरि जात रस लोभा।
तब ये ग्वाल-बाल मिलि आछे, अंतर सहि न सकत परि पाछे।
२५ धावत कहत अमी जनु बरसैं, तेई राजा जु प्रथम ही परसै।
अब सुक तिन कौ भाग सराहत, कमल-नयन महिमा अवगाहत।
जो कछु ब्रह्म ब्रह्म सुख आहि, विदुषन कौं परकासत ताहि।
भक्तन हू के हिय अति सरसैं, तिन के नाथ नये सुख बरसैं।
मायाश्रित संबंधी जिते, नर-दारक करि समभत तिते।
३० देत सबन सुख अपनी ठौर, इन सम पुन्य-पुंज नहिं और।
जाके पद-रज-हित तप करि कैं, बहुत काल जोगी दुख भरि कैं।
प्रेरित चपल चित्त कहुँ भूरि, सो वह धूरि तदपि हू दूरि।
सो साच्छात दृगन-पथ चहियै, कवन भाग्य ब्रजजन कौं कहियै।
तदनंतर अघनामा दुष्ट, आयौ सुख दिखि सक्यौ न नष्ट।
३५ बक अरु बकी दुहुन तैं छोटौ, ऐ परि यह उन तैं गुन मोटौ।
जाके डर सुर थर थर डरैं, जदपि अमृत पान हू करैं।
तदपि कहैं जब लौं अघ जीवै, तब लगि ब्यर्थ अमी को पीवै।

किवा बालकेलि-सुख चहै, अमर-नगर मैं मिलि सब कहै।
कहा भयौ जो अमृतहि पियौ, हरि-रस बिन कछु गनत न जियौ।
निपट नृसंस कंस पुनि प्रेरयौ, गोपवस-अवतंसहि नेरयौ। ४०
हरि तन चितै कहत काकोदर, याके उदर दोउ मेरे सोदर।
तातै भगिनि-भिया की ठौर, पठऊँ इहि अरु ये सब और।
जौ मैं इते तिलोदक करे, अज माँझ के सहज ही मरे।
प्रान गये जौ बहुत दाम के, देह रहे तौ कौन काम के।
इहि बिधि अघ बिचार पर परि कै, महा बड़ौ अजगर-वपु धरि कै। ४५
इक जोजन बिस्तार बिस्तरयौ, आनि नीच मग बीचहि परयौ।
अघ कौ अधर धरा पर धरै, उरध अधर जलधर मैं करै।
बालक चके चाहि कै ताहि, कहन लगे कि कहा यह आहि।
कोउ कहै कछु बृंदाबन सोभा, ता पर भैया अजगर ओभा।
है तौ यह परवत की दरी, अजगर-आनन-आभा धरी। ५०
शृंग जु मनौ बने अहि-दंत, निबिड़ वदन सु तिमिर कौ अंत।
सधि कौ मग जनु रसना आहि, लपकति भिया कहत हौं ताहि।
कोउ कहै गगन मैं घन उनयौ, रबिकर परसि अरुन ह्वै गयौ।
तरहर ताकी छाया परी, तिन यह धरनि अरुन है करी।
कर्कस पवन गुहा तैं ऐसौ, आवत अजगर-मुख तैं जैसौ। ५५
दव जु लगी कछु लगति न रोचन, तातै राते जनु अहि-लोचन।
कोउ कहै रे तुम कहत हौ कहा, यह तौ केवल अजगर महा।
हमहिं सबन ग्रसिबे के काज, मग मैं आनि परयौ सजि साज।
कोउ कहै जौ है अजगर महा, तौ यह हमरौ करिहै कहा।

६० यौं कहि नंद-सुवन-मुख चाहि, देखै याहि कहाँ धौं आहि।
सुंदर वदन निरखि मुद भरे, दै दै करतारी तहँ वरे।
अलबेले ईस्वर नँद-नंदन, बालक नृप से सब जग-बंदन।
जब सब अजगर-मुख संचरे, तब हरि ह्याँ बिचार पर परे।
यह तौ सत्य ही अजगर महा, बरजे नहिन कियौ हम कहा।
६५ प्रभु पछितात, अनमने भये, अपने कर अजगर-मुख दये।
अब ह्याँ कवन जतन अनुसरौं, इहि मारौं, अपनन उद्धरौं।
आइ गई ईस्वरता ऐसै, बालक राज के रच्छक जैसें।
ब्रजपति-सुवन तनक मुसकाइ, पैठे ताके आनन जाइ।
अंबर माँझ अमरगन जिते, देखत हे घन-ओटन तिते।
७० हाहाकार परे, अति डरे, कहत कि अब हम सिगरे मरे।
अजगर तुंड तनक जब नयौ, तिहि छिन अद्भुत कौतुक भयौ।
नैसुक सिसु मुख-द्वारे खरौ, रुकि गयौ ताकौ सिगरौ गरौ।
भयौ निरोध प्रान घट घुट्यौ, ब्रह्मरध्र तब ताकौ फुट्यौ।
निकसि ज्योति अंबर मैं गई, दामिनि सी फिरि ठाढ़ी भई।
७५ जब लगि नंद-सुवन गोविंद, बछरा अरु ब्रज-बालक-बृंद।
अमृत-दृष्टि करि सींचि जिवाइ, लै आये बाहिर इहि भाइ।
तब लौं रही गगन मैं जोति, सब दिसि जगमग जगमग होति।
उलका ज्यौं तहँ तै उलटानी, आनँद भरि हरि माँझ समानी।
तदनंतर सुर-मुनि सब हरषे, जै जै करि पुहुपन सब बरषे।
८० रटन लगे गंधर्ब जितेक, नटन लगी अपछरा अनेक।
कोलाहल सुनि निज लोक मैं, आयौ ब्रह्मा ब्रज ओक मैं।

दिखि महिमा जसुमति-तात की, सुधि-बुधि गई कमल-जात की।
सो वह अजगर परम पवित्र, सूक्यौ बृंदावन मधि मित्र।
अति गह्वर तहँ ब्रज के बाल, डुका-डुकी खेले बहु काल।
यह कौमार बयस कौ कर्म, पायौ नहिं किन हूँ कछु मर्म।　　८५
छठौ बरस जब सब निरबह्यौ, तब उन सबन आनि ब्रज कह्यौ।
आजु जु एक नंद के लाल, मारचौ ब्याल सु केवल काल।
हम सब ताके मुख मधि गये, आये बहुरि जन्म धरि नये।
ताके तन तैं उठी जु जोति, नखत तैं टूटि ज्यौं ज्वाला होति।
जाइ गगन मैं थिर ह्वै रही, हम देखी अरु सबहिन चही।　　९०
कान्हहि निरखि बहुरि उलटानी, आनि कैं इन ही माँझ समानी।
ऐसै जब उन लरिकन कह्यौ, सुनि सब लोग अचंभे रह्यौ।
अहो मित्र सुनि चित्र न कीजै, हरि की महिमा मैं मन दीजै।
इन की जो कोउ प्रतिमा करै, एक बार बल करि हिय धरै।
प्रल्हादादिक की गति जोई, सु पुरुष सहजहि पावै सोई।　　९५
सो साच्छात अघासुर हिये, आये अपने भक्तन लिये।
सूत कहत है हो भृगुनंदन, सुनि हरि सुचरित दुरित-निकंदन।
पुनि पुनि मुनि के गहि कै पाइ, पूछत यहै परीच्छित राइ।
हो सर्बग्य ब्यास के तात !, यह कौमार बयस की बात।
पौगंडमय चरित सब कहे, अब लौं ये सिसु कहँ है रहे।　　१००
यह कछु हरि की माया आहि, हो प्रभु ! नीके बरनहु ताहि।
हम सम धन्य न इहि संसार, जातैं　　कृष्नकथामृत-धार।
निगम सार ताकौ पुनि सार, पियत है हम तिहि बारंबार।

बहुरि तुम्हारे मुख सु कमल तैं, मधुर तैं मधुर, अमल अमल तैं।
१०५ सूत कहत जब यौं नृप कह्यौ, श्री सुक नैन मूँदि तब रह्यौ।
फुरि आये जु चरित मव हियें, ज्यौं कोउ अति मादक-मद पिये।
बढ़ि जु गयौ उर अति आनंद, घूमत ज्यों मदमत्त गयंद।
बड़ी बेर जागे अनुरागे, राजा प्रति सुख बरषन लागे।
'नंद' हियें धरि नेह भरि, यह द्वादसौ अध्याइ।
११० अघ से मल निर्मल जहाँ, कृष्न-पद-परस पाइ॥
यह द्वादस अध्याइ जो, सुनैं तनक चित लाइ।
अघ न रहै अघ ज्यौं सुनत, 'नंद' अनघ ह्वै जाइ॥

त्रयोदश अध्याय

अब मुनि लै तेरह्यौ अध्याइ, हरिहै विधि वच्छ-बालक आइ।
श्री हरि तैसैई अवर बनाइ, खेलिहै एक बरष इहि भाइ।
भले प्रश्न कीनी नृप सत्तम, हे बड़भाग ! भागवत उत्तम।
जातैं कृष्न-कथा रसमई, सुनत ही छिन ही छिन करि नई।
५ जिन के उपज्यौ हरि-रस-भाउ, हे नृप ! तिन कौ यहै सुभाउ।
रति सौं कृष्न-कथा अनुसरैं, छिन छिन प्रति नूतन सी करैं।
ज्यौं लंपट पर बनिता बात, सुनत सुनत कबहूँ न अघात।
अब सुनि सावधान ह्वै कथा, बरनन करौं आहि यह जथा।
जदपि गोप्य रहै मो हियें, कहौं तदपि तव हित के लिये।
१० सिष्य सनेहवंत जो रहै, तिन सौं गुरु गुपतौ पुनि कहै।

अघ-मुख तैं जिवाइ बछ-बाल, लै गये जमुन-पुलिन नँदलाल।
भोजन कियौ चहत तिहि काल, करत स्तुति पुलिन की गोपाल।
कहत कि भिया भलौ यह ठौर, ऐसौ नाहिंन पाइहौ और।
सीतल मृदुल वालुका स्वच्छ, इत ये हरे हरे तृन कच्छ।
इत ये सुंदर सरसिज फूले, तरवर फूल फूलि जल झूले। १५
खगन की धुनि-प्रतिधुनि हिय हरै, मंद सुगंध पवन अनुसरै।
सब दिसि तैं ये परिमल लपटैं, आवति सहज सुखन की दपटैं।
भूख लगी है भोजन करैं, इत ये बच्छ कच्छ मैं चरैं।
मंडल करि बैठे ब्रजबाल, मध्य बने तहँ मोहनलाल।
सोहत सब तैं सन्मुख ऐसैं, कमल के बीच करनिका जैसें। २०
चहुँ दिसि बाल मंडली बैसी, नखत बिसाखा होति है जैसी।
तिन मधि स्याम सुभग सोहत यौं, राका-निसि राकेस लसै ज्यौं।
पुनि सुनि मित्र अवर उपाइ इक, अज हूँ ध्यान धरत ब्रह्मादिक।
जनु चहुँ दिसि मुक्ता-मनि रची, मधि गुपाल मरकत मनि खची।
रबिजा कर मुद्रिका दिखाई, यह ताकौ जगमगत जराई। २५
ऐसैं सुक राजा प्रति कही, नृप सुनि कै कमनीय सु गही।
भोजन करत कुँवर साँवरे, छबि दिखि अमर भये बावरे।
भाजन बिबिधि गुवालन बने, फल दल सिल बलकल अति घने।
अपने ब्यंजन तिन मैं धरे, चखत चखावत अति मुद भरे।
तिन के मध्य बने नँद-नंद, उड़-मंडल जस पूरन चंद। ३०
पट अरु जठर बीच तौ बेनु, काख बेत, कच लपटे रेनु।
दधि-ओदन कौ कवल सु किये, छबि सौं बाम हस्त हरि लिये।

अँगुरिन मथि मथि धरि सधान, जिनहिं निरखि बिधि भूल्यो ग्यान ।
लै लै व्यंजन चखनि चखावनि, हसनि, हसावनि, पुनि डहकावनि ।
३५ केवल बालकेलि अस करै, ईस्वर तनक न जाने परै ।
बछरा जब बन घन अनुसरे, दिखि सब ग्वाल-बाल भय भरे ।
तिन सौं कहत कमल-दल-लोचन, अद्भुत सिसु भय के भय मोचन ।
अहो मित्र, तुम भोजन करौ, अपने मन तनकौ जिनि डरौ ।
बछरन हम लै ऐहैं अबै, बैठे रहौ लहौ सुख सबै ।
४० ऐसैं कहि बन गहवर कुंज, तम करि भरी दरी तहँ पुंज ।
ढूँढ़त बच्छ बिस्व के नाथ, भोजन कवल लिये ही हाथ ।
ऐसैं माँझ कुबुधि बिधि आयौ, अघ तैं अधिक असह अनभायौ ।
कैसैं ये ईस्वर इमि कहै, तिन की महिमा चितयौ चहै ।
कच्छ तैं बच्छ लिये सब आइ, जब लगि हरि वै देखन जाइ ।
४५ तब लगि इत तैं लै गयौ बाल, अकिलेई रहि गये मोहनलाल ।
दुहुवन बन घन ढूँढ़न लगे, डोलत प्रेम-पगे, रँगमगे ।
पुनि हँसि परे कछू रिस भरे, इते काम इन बिधना करे ।
जौ अब हम इत चुप कै रहैं, तौ इन की जननी कहा कहैं ।
अरु जौ उन ही कौ अब आनैं, तौ बिधि मो महिमा कहा जानैं ।
५० हँसन लगे हरि सुंदर स्याम, कही कि ये सब बिधि के काम ।
हमरी महिमा देखन आयौ, हौहु सबै अब याकौ भायौ ।
जितक हुते बछ-बाछी-बाल, आपु ही भये कुँवर नँदलाल ।
वैसैई कंबर, अंबर, हार, वैसैई सहज अहार बिहार ।
वैसैई नाम, दाम गुन नीके, वैसैई शृंग, वेनु, दल छीके ।

बैसियै हसनि, चहनि पुनि बोलनि, बैसियै लटकनि, मटकनि, डोलनि । ५५
नूपुर, कंकन, किंकिनि माल, सबै भये ईस्वर नँदलाल ।
बेद जु विदित बिस्व यह जिते, सबै बिष्नुमय भासत तिते ।
जो यह बानी निगमन गाई, सो प्रभु मूर्तिवंत दिखराई ।
गंगाजल ज्यौं हिमकन पाइ, ठाँ ठाँ सहज जाइ ठहराइ ।
आपुहि आप घेरि बछ-बाल, लै आये ब्रज मोहनलाल । ६०
बेनु की धुनि सुनि गोपी धाई, अपने कंठनि लै लपटाई ।
धूरि झारि पुनि पुनि मुख चूमनि, नहि कहि परै प्रेम की घूमनि ।
उबटन उबटि सलिल अन्हवाये, मनभाये भोजन करवाये ।
उपज्यौ प्रेम तिन बिषै ऐसौ, पाछे नंदसुवन सौं जैसौ ।
अब सुनि लै गाइन कौ पेम, बिसरत जिहिं दिखि मुनि मन नेम । ६५
खरिक निकट जब बछरा बोलै, सुनतहि गोधनबृंद कलोलै ।
हूँकि हूँकि आतुर गति आवनि, इत तैं इन बछरन की धावनि ।
चुषनि, चुषावनि, चाटनि, चूँबनि, बार बार हित की वह हूँसनि ।
आपुहि बछरा, आपुहि बाल, बिहरत ब्रज बन मोहनलाल ।
एकाकी जस खेलत कोई, खेलत ताहि कछु न सुख होई । ७०
ऐसै बरस दिवस निरबह्यौ, संकर्षन हू नाहिन लह्यौ ।
इक दिन गिरि गोधन पर गाइ, चरति ही चढ़ी आपने चाइ ।
ब्रज-समीप बछरन अवहेरि, चली जु ग्वाल सके नहिं फेरि ।
स्वच्छ पुच्छ ऊँची करि लई, मानहुँ ढुरत चँवर छबिछई ।
अति गति पग डारनि, हुंकारनि, सींचति धरनि दूध की धारनि । ७५
बखरे बछरन पै चलि आई, मिली आइ, कछु नहिं कहि जाई ।

पाछे गोप जु धाये आये, छोभ भरे अति श्रम करि पाये।
सुतन निरखि तब सब सुधि गई, उपजी प्रीति नई, रसमई।
ता दिन बल के भयौ सँदेह, सिसुन विषै दिखि ब्रज कौ नेह।
८० कहत कि पाछे हुतौ न ऐसौ, निरवधि नेह अबहि है जैसौ।
अरु मेरें हू उपजत तैसौ, कान्ह कमल-लोचन सौं जैसौ।
ये ब्रजबालक वे तौ नाहीं, पाछे हुते जु या ब्रज माहीं।
अब तौ नाम, दाम, दल अंबर, बेनु, बिषान, बेत. बल कंबर।
कंकन, किंकिनि, भूषन जिते, मोहिं श्री कृष्न अभासत तिते।
८५ जब हँसि हलधर हरि तन चह्यौ, हरि तब सब हलधर सौं कह्यौ।
संकर्षन हू नहिं सुधि परै, विधि बावरौ जु पचि पचि मरै।
वर्ष दिवस बीते विधि आयौ, निरखि बिनोद सु बिस्मय पायौ।
वैसेई वच्छ स्वच्छ ब्रजबाल, जमुन-कच्छ खेलत नँदलाल।
तिनहिं निरखि उत धायौ गयौ, वैसेई दिखि अति बिस्मय भयौ।
९० तैसेई उत के तैसेई इत के, कहत कि सत्य आहिं धौं कित के।
पुनि जौ फिरि आवै इहि ठौर, ह्वै रही कछू और की और।
बालक-बच्छ इहाँ हैं जिते, बेनु, बिषान, बेत्र दल तिते।
मुक्तावलि, गुंजावलि जु हीं, नूपुर, किंकिनि, कंकन सुही।
अंबर, कंबर, संबर जिते, निरखे चारु चतुर्भुज तिते।
९५ घन-तन, पीतबसन, बनमाल, अरुन कमल-दल-नैन बिसाल।
कुंडल-मंडित गंड सुदेस, मनिमय मुकट सु घूँघर केस।
कंबु-कंठ कौस्तुभ मनि धरे, आयुध संख-चक्र कर करे।
छबि उलसी तुलसी की माल, बनि रही पदपर्जंत बिसाल।

बदन बदन मुस्कनि छबि लसी, चंदन मध्य चंद्रिका जसी ।
भिन्न भिन्न ब्रह्मांड बिराजै, तिन मधि इक इक मूरति भ्राजै । १००
ब्रह्महि आदि चराचर जिते, मूरति धरे उपासत तिते ।
अनिमा, महिमादिक सिधि जिती, महदादिक बिभूति है तिती ।
काल-करम-गुन अवर न अंत, सेवत हैं तहँ मूरतिवंत ।
सुधि गई बिधिहि अचेतन भयौ, हंस को अंस पकरि रहि गयौ ।
तिहि छिन ताहि फबी छबि ऐसी, चतुर्मुखी कोउ पुतरी जैसी । १०५
सरस्वति पति बिचार इमि करै, कहा आहि यह सुधि नहिं परै ।
तब श्री हरि निज हिये विचारि, अज पर अजा जवनिका डारि ।
कही कि ये अभिमानी लोग, मो महिमा नहिं चाहन जोग ।
तब श्री हरि वह माया जिती, अंतरध्यान करी तहँ तिती ।
बड़ी बेर बिधि सुधि भई ऐसैं, मरि कै बहुरि उठत कोउ जैसैं । ११०
दृग उघारि जौ बिधना चहै, तौ यह श्री बृंदाबन अहै ।
जामैं सर सुंदर, तरु सुंदर, जे कबहूँ निरखे न पुरंदर ।
अरु हरि-मृग जहँ इक सँग चरैं, क्षतपियास नैक न संचरै ।
मुद भरि श्री हरि कौं नित चहै, काके काम-क्रोध-भय रहै ।
तहँ निरखे व्रजराजकुमार, अद्वै ब्रह्म अनंत अपार । ११५
बहुरि अगाध बोध श्रुति बोलै, सो बछ-बालक ढूँढ़त डोलै ।
परचौ धरनि चरनन पर जाइ, सब मुकटन करि परसत पाइ ।
ज्यौं ज्यौं वह महिमा उर फुरै, उठि उठि पद-पकंज सो घुरै ।
श्री हरि कछु न कहत रिस भोये, हमरे खेल आनि इन खोये ।
उठ्यौ सु हरि-महिमा करि बोरचौ, बृंदाबन की रज मैं खोरचौ । १२०

हरैं हरैं उठि हरि तन चहै, टपकि टपकि नैनन जल बहै।
थर थर कंपत सकल सरीर, कमल लिये ठाढ़े बलबीर।
नमित बदन दृग भरि रहे पानी, गदगद कंठ फुरै नहिं बानी।
मापराध बिधि निपटहि डरयौ, अंजुलि जोरि स्तुति अनुसरयौ।
१२५ बच्छ-हरन, बिधि-बुधि-हरन, सुनै जु इहि अध्याइ।
'नंद' सकल मंगल करै, जग दंगल मिटि जाइ॥

चतुर्दश अध्याय

अब सुनि लै चउदहौ अध्याइ, ब्रह्मस्तुति जहँ अद्भुत भाइ।
अति अगाध महिमा अवगाहि, पुनि पुनि रूप अनूपम चाहि।
अवर न कछू फुरै अरबरै, बिधि नँदनंदन-बंदन करै।
अहो ईड्य ! नव घन तन स्याम, तड़ि दिव पीत बसन अभिराम।
५ मोर-पच्छ-छबि छाजत भाल, नैंन बिसाल, सु उर बनमाल।
रस-पुंजा गुंजा अवतंस, कवल, बिषान, बेत्र बर बंस।
मृदु पद बृंदा बिपिन बिहार, नमो नमो ब्रजराज कुमार।
हो प्रभु यह तुम्हरौ अवतार, सुलभहि प्रगट सकल श्रुतिसार।
मो पर परम अनुग्रह करयौ, किधौं भक्तन की इच्छा धरयौ।
१० याकी महिमा नहिं कहि परै, मो से जौ अनेक पचि मरै।
जो साच्छात बस्तु इक आहि, अवतारी अवलंबत ताहि।
सो तुम जाने परत कौन पै, ससि है जात न गह्यौ बौन पै।

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि हम अस दुर्गेय, पायौ परे न जाकौ भेय।
तौ पै इतर दुस्तर संसार, कैसें तरिहैं, परिहैं पार।
तहाँ कहत विधि माथ नवाइ, सुनहु नाथ निज प्राप्ति उपाइ। १५
ग्यान विषै प्रयास परिहरै, तुम्हरी कथा विषै मन धरै।
जैसें सुंदर संत तुम्हारे, कथा-अमृत के बरपनहारे।
तिन पै सुनै, श्रवन रस भरै, मन-बच-कर्म बंदन पुनि करै।
बैठे ठौर कथा-रस पीवै, जे इहि भाँति जगत मैं जीवै।
अहो अजित! तिन करि तुम जीते, ग्यानी डोलत भटकत रीते। २०
अब विधि कहत ग्यान है जोई, भक्ति बिना सोउ सिद्ध न होई।
तुम्हरी भगति अमीरस-सरवर, मोच्छादिक जाके बस निर्भर।
तिहि तजि जे केवल बोध कौं, करत कलेस चित्त सोध कौं।
तिन कहुँ छिन ही छिन श्रम बढ़ै, और कछू न तनक कर चढ़ै।
जैसें कनविहीन लै धान, धमकि धमकि कूटत अग्यान। २५
फल तहँ विरथ यहै दुख भरै, खोटक हाथनि फोटक परै।
अब बिधि सदाचार-बिधि लिये, करत प्रमान भक्ति दृढ़ हिये।
हो प्रभु ! पाछे बहुतक भोगी, तजि तजि भोग भये भल जोगी।
दिढ अष्टांग जोग अनुसरै, ग्यान हेतु बहुतै तप करै।
अति श्रम जानि तहाँ तै फिरै, तुम कहुँ कर्म समर्पन करै। ३०
तिन करि सुद्ध भयौ मन मर्म, तब कीने प्रभु तुम्हरे कर्म।
कथा श्रवन करि पाई भक्ति, जाके संग फिरत सब मुक्ति।
ता करि आत्मतत्व कौं पाइ, बैठे सहज परम गति पाइ(जाइ?)।

अब बिधि कहत कि निर्गुन ध्यान, तिहि समान दुर्घट नहिं आन ।
३५ लछिमी जदपि नित्य उर रहै, सो पुनि तनक कबहुँ नहिं लहै ।
जाके रूप न रेख, न क्रिया, तिहि लालच अवलंबै हिया ।
तदपि केई तजि तजि सब कृत्ति, निर्मल करत चित्त की बृत्ति ।
सहजहिं सून्य समाधि लगाइ, लेत है तामैं तुम कौं पाइ ।
पै यह सगुन सरूप तुम्हारौ, ह्याँ मन खोयौ जात हमारौ ।
४० ये अद्भुत अवतार जु लेत, बिस्वहिं प्रतिपालन के हेत ।
नाम, रूप, गुन, कर्म अनंत, गनत गनत कोउ लहै न अंत ।
धरनी के परमान जितेक, हिमकन, अरु उड़ गगन तितेक ।
कालहिं पाइ निपुन जन कोइ, तिनहिं गनै, अस समरथ होइ ।
ऐ परि सगुन रूप गुन जिते, काहू पै कहि परत न तिते ।
४५ तातैं तव भगतिहिं अनुसरैं, तुम्हरी कृपा मनायौ करै ।
कब मो पर नँदनंदन ढरिहै, मधुर कटाच्छ चितै रस भरिहै ।
निज प्रारब्ध कर्म-फल खाइ, अनासक्त, नैक न ललचाइ ।
अरु अति तप-कलेस नहिं करै, श्रवन-कीर्तन-रस संचरै ।
इहि बिधि जियै सुभागहि पावै, मरयौ कहा कोउ भगरन आवै ।
५० अपराधी बिधि थरथर डरै, निज अपराध निवेदन करै ।
देखहु नाथ दुर्जनता मेरी, महिमा चह्यौ चह्यौ प्रभु केरी ।
अगिनि तैं बिस्फुलिंग ज्यौं जगै, अगिनिहिं बिभव दिखावन लगै ।
पटबिजना ज्यौं पंख डुलाइ, लयौ चहत रवि-मंडल छाइ ।
और सुनहु प्रभु उपमा आछी, गरुड़हिं आँखि दिखावै माछी ।
५५ अब कहत कि मेरौ अपराधु, छमा करहु, हौं निपट असाधु ।

रज गुन तें उपज्यौ अग्यानी, तुम तें भिन्न ईस अभिमानी।
मायामद उनमद ह्वै गयौ, सूझै न कछू, अंध तम छयौ।
यातैं अनुकंपाही करौ, भृत्य जानि कछु जीय न धरौ।
चारयौ फुटी जु जन जानियौ, ताकौं नाथ न बुरौ मानियौ।

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि क्यौ इतौ लिलाहि, तुम हूँ तौ इक ईसुर आहि। ६०
तहाँ कहत बिधि जोरे हाथ, बातैं समुझि कहौ ब्रजनाथ।
कित हौं कित महिमा नाथ की, कहत हौ चींटी हथी साथ की।
प्रकृति, महद, हंकार, अकास, बायु, बारि, वसुमती, हुतास।
सप्तावरन जु यह इक भौन, तुम ही कहौ तहाँ हौ कौन।
सप्त बितस्ति काइ कौं करयौ, रहत वहुत कहाँ धौ परयौ। ६५
ऐसौ कोटि कोटि ब्रह्मंड, तुमरौ एक रोम के खंड।
उपजत भ्रमत फिरत नहिं चैन, जैसैं जालरंध्र त्रिसरैन।
निपटहि तुच्छ, न काहू लाइक, कृपा करौ, न लरौ ब्रजनाइक।
हो प्रभु जैसै जननी-गर्भ, रहत है निपट अबुध वह अर्भ।
कूखि बिषै कर-चरनन तानै, तौ कहा मात बुरौ है मानै। ७०
तैसै हौ तव कूखि के माहीं, करत कलोल कछू सुधि नाहीं।
अब कहत कि हौ तुम्हरौ चेरौ, तुम तैं प्रगट जनम यह मेरौ।
जब सब लोग चराचर जितौ, प्रलय-उदधि मधि मज्जत तितौ।
तब हौ तुम्हरी नाभि-कमल तैं, निकस्यौ नहिं इहि उदर अमल तैं।
'कमलज कमलज' मेरौ नाम, मृषा आहि जानै सब ग्राम। ७५

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि वे तौ हम नाही, सो वह नाराइन जल माही।
हमरौ ब्रज-बृंदावन धाम, तहीं जाहु ह्याँ नहिं कछु काम।
क्यौं आयौ हमरे ब्रज इहाँ, कहत है बिधि नव बातहि तहाँ।
तुम नहिं नहिं नाराइन स्वामी, अखिल लोक के अंतर्जामी।
८० नार कहावत जीव जितेक, बहुरि नार ये नीर तितेक।
तिन मैं नहिंन अयन रावरौ, हो प्रभु मोहिं करत बावरौ।
नीरहि मैं नाराइन जोई, हो प्रभु तुम्हरी मूरति सोई।

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि हम यौ करि पाये, अपरिछिन्न नित निगमन गाये।
तुम परिछिन्न कहत हौ धात, तहाँ कहत बिधि इहि बिधि बात।
८५ जब हौ कमल-नाल ह्वै गयौ, मन के बेग बरष सत भयौ।
जौ तुम जल करि आवृत होते, रहते दुरे कितक लौं मो ते।
पुनि जब तुमहि दया करि कह्यौ, तप तप सो मैं दृढ़ करि गह्यौ।
तब रंचक तुम हिय मैं आइ, बहुरयौ गये चटपटी लाइ।
ये तुम्हरी माया की गुरझैं, सब जन अरझै, नाहिंन सुरझैं।
९० अरु अब ही याही अवतार, हो ईस्वर ब्रजराजकुमार।
जननी कौ माया दिखराई, चकित भई अति बिस्मय पाई।
बिस्व चराचर है यह जितौ, बाहिर प्रगट देखियै तितौ।
सो तुम जठर मध्य दिखरायौ, तहँ इक कौतुक और बतायौ।
तामैं तुम देखे इहि भाइ, साँट लिये डाँटति जसु मा ।

बिंब मध्य प्रतिबिंब तौ होइ, जाकौं कहैं-चहैं सब कोइ। ९५
प्रतिबिंब में बिंब दिखरावै, माया बिन यह क्यौं बनि आवै।
जातैं थर थर कंपत हियौ, अजहूँ सुधि न कहा है कियौ।
प्रथमहि मै तुम देखे एक, बहुरचौ बालक-बच्छ जितेक।
बेनु, बिषान, बेत्र दल जिते, ह्वै रहे चारु चतुर्भुज तिते।
पुनि इक इक ब्रह्मांड के नाइक, सेवत मो समेत सब लाइक। १००
पुनि अति एक एक छबि बाढ़े, देखे मैं मनमोहन ठाढे।
तव महिमा कौतुक जौ आहि, को समरथ जानै जो ताहि।
हों प्रभु तव-पद-कमल सुदेस, ताके रस प्रसाद कौ लेस।
कबहूँ काहू पै ढुरि आवै, तब भल महिमा तत्वहि पावै।
ऐसैं अस्तुति बहु बिधि कीनी, निर्गुन-सगुन रूप रँग भीनी। १०५
पुनि प्रार्थत सब सुरन कौ रानौ, भक्ति-बिभौ जु देखि ललचानौ।
अहो नाथ ! मो कहुँ यौं करौ, जौ तरुना करुना रस ढरौ।
इहि जनम मैं, और जनम मैं, नर जनम मैं, तृजग जनम मैं।
तुमरे भक्तन मैं कछु ह्वै कै, सोऊ चरन-सरोजन छूवै कै।
अब बिधि भक्तानंद जु पग्यौ, ब्रज कौ भाग सराहन लग्यौ। ११०
हो प्रभु धन्य धन्य ये गोपी, धनि ये धेनु परम रस ओपी।
बालक ह्वै, बछ ह्वै प्रभु जिन के, पीवत भये पयोधर तिन के।
बहुरचौ तनक स्तन-पय पाइ, बार बार तुम रहत अघाइ।
कव के जग्य-भाग हो खात, तहँ तुम तनकौ नहिन अघात।
इह ब्रजजन की भाग बड़ाई, हो प्रभु, मो पै नहिं कहि जाई। ११५
जा प्रभु के आनँद कौ लेस, बर्तत अज, सिव, सेस, महेस।

सो तुम निरवधि परमानंद, जिन के मित्र परम सुख-कंद ।
पुनि परिपूरि रहे जहँ-तहाँ, जाहु तौ तव जव हौहु न उहाँ ।
जगत बियापी ब्रह्म जु आहि, प्रभु की प्रभा कहत कवि ताहि ।
१२० स तैं बहुरि अनत कहुँ जात न, यातें नंदसुवन जु सनातन ।
इन की भाग महिम तौ रहौ, हमरे भूरि भाग तन चहौ ।
जद्यपि इन की इंद्री जिती, हम करि नाहिन कीनी तिती ।
तदपि तनक अभिमान के साथ, हम सब कृत्य कृत्य भये नाथ ।
नेत्रादिक इंद्रियगन जिते, हमरे पानपात्र प्रभु तिते ।
१२५ तुम्हरे सुंदर सुंदर अंग, छिन छिन उठति जु अमृत तरंग ।
तिन करि पुनि पुनि पियत जथारथ, सूर्जादिक सब भये कृतारथ ।
बहुरचौ इक इक इंद्रिय केरे, धन्य भये हम से बहुतेरे ।
जिन की सब इंद्रिय रस पगी, सब ही बिधि ने तुम ही लगी ।
तिन के भाग की महिमा जौन, हो प्रभु ताहि कहि सकै कौन ।
१३० तातै यह माँगत प्रभु पहियाँ, कै ब्रज कै बृंदाबन महियाँ ।
औषधि, बीरुध, तृन, द्रुम, बेली, जहँ इन ब्रजबासिन की केली ।
तहँ कौ मोहिं कछू अस करौ, इन की पद-रज मो पै परौ ।

पूर्व पक्ष

जौ कहौ सत्य लोक क्यौं तज्यौ, मर्त्य लोक काहे तें भज्यौ ।
तहाँ कहत बिधि इहि बिधि बैन, हे श्री कृष्न कमल-दल-नैन ।
१३५ जा प्रभु की पद-पंकज-धूरि, ढूँढ़त निगम सु अजहूँ दूरि ।
सो तुन जिन के जीवननाथ, जैसें दीन मीन के पाथ ।

इन के भक्ति लहलहत ऐसी, देखी सुनी न कितहूँ तैसी ।
मोहि तौ सोच्र परचौ है महा, हों प्रभु इन कौ देहौं कहा ।
बडी बड़ाई मुकति तुम्हारे, जाकौं चारचौ बेद पुकारे ।
इन के बेष मात्र पूतना, महा पापिनी, जगत धूतना । १४०
बहुरचो प्रभु कौ मारन कारन, आई थन लगाइ गर दारुन ।
सो वह बकी सकल कुल लै कै, बैठी जाइ तनक बिष दै कै ।
जिन के गेह देह धन धाम, लागे सकल रावरे काम ।
देहौं कहा महा अरभेरो, मोह्यौ जात इहाँ मन मेरौ ।
हौं जानौं नित रिनी रहौगे, टक टक इन के बदन चहौगे । १४५

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि ये तौ सब रागी, सुत, वित, मित्र, बिषै-रस पागी ।
मोहि कोउ बीतराग भल पावै, तहँ बिधि भक्ति-बिभौ दिखरावै ।
हे सुंदर बर नंदकिसोर, रागादिक तबई लगि चोर ।
तबई लगि बंधन आगार, देह, गेह अरु नेह बिथार ।
तबई लगि दिढ़ जंजर जेरी, मोह-लोह की पाइनि बेरी । १५०
तब लौ मननि बासना छये, जब लगि तुम्हरे नाहिन भये ।
जो कोउ कहै प्रभु-बैभव जितौ, हम सम्यक जानत हैं तितौ ।
जानहु ते जानहु जो जग चर, मो तैं तौ मन, बचन अगोचर ।
अब मो कौ अपनौ करि जानौ, मो कृत कछु अपराध न मानौ ।
हमरौ ग्यान बीर्ज बल जितौ, प्रभु तुम सम्यक जानहु तितौ । १५५
इतनी माँगत अहो अनंत, बंदन करौ कल्प परजंत ।

बार बार परिकर्मा दै कै, सुंदर बदन बिलोकन कै कै।
चल्यौ नाथ कौं माथ नवाइ, अधिकारी पै रह्यौ न जाइ।
जब बिरंचि गमने निज धाम, तब घनस्याम परम अभिराम।
१६० कच्छ तैं बच्छ लिये ही आये, तिहिं पुलिन सिसु बैठे पाये।
बीत्यौ जदपि बरष इक काल, बिछुरे सुंदर मोहनलाल।
तदपि अर्द्ध छिन मानत भये, अद्भुत प्रभु की माया छये।
कवन कवन माया नहिं भूले, जगत-हिंडोरे बहु झूले।
ये कछु माया करि नहिं मोहे, प्रभु की च्छा करि अति सोहे।
१६५ मोहे से तब कहत हैं बाल, बेगि ही आये मोहनलाल।
एकौ कवल न पावन पायौ, भैया तो बिन जाइ न खायौ।
तैं हूँ तौ हम बिन नहि खायौ, हाथ कवल वैसैं ही आयौ।
आवहु बैठहु भोजन करैं, इत ये बच्छ कच्छ मैं चरैं।
जब ऐसैं बोले ब्रजबाल, बिहँसन लागे नंद के लाल।
१७० मंडल करि बैठे पुनि आछे, जैसैं बान बन्यौ हो पाछे।
अति रुचि सौं मिलि भोजन कर्यौ, इहि बिधि वा बिधि कौ मद हर्यौ।
सीथ जु परैं दही-रस भरे, सदन जाइ बिधि लालच खरे।
काक न भयौ फिर्यौ इतरातौ, चुनि चुनि सुंदर सीथन खातौ।

(इति वच्छहरण लीला)

चले घरन अजगर दरस ते, हिय सरसते, सुखन बरसते।
१७५ गातनि धात के चित्र बनाये, सीसनि मोर के चंद सुहाये।
बेनु सृंगदल ललित बजावत, नव नव गीत पुनीतन गावत।
पंकज फेरत, बछरुन घेरत, लै लै तिन के नाम निबेरत।

गोपी दृगन के उत्सव रूप, ब्रज आये नँद-नंद अनूप।
बीत्यौ एक बरष जिहि काल, ब्रज मैं कहत भये ब्रजबाल।
आज एक नंद जू के लाल, मार्‍यौ ब्याल महा बिकराल। १८०
यह जो चरित मोहनलाल कौ, बन भोजन, मर्दन ब्याल कौ।
अरु बिधि स्तुति जो सुनै-सुनावै, सो नर सब पुरुषारथ पावै।
चित दै सुनै जो चतुर कोउ, चतुरदसौं अध्याइ।
गुनत चतुरदस भुवन तें, परै परम गति जाइ॥

पंचदश अध्याय

अब सुनि लै पंद्रहौ अध्याइ, चलिहैं कान्ह चरावन गाइ।
बन की स्तुति कछु श्रीमुख करिहैं, धेनुक हति ब्रज सुख बिस्तरिहैं।
मंडित बय पौगंड सुदेस, छिन छिन ससि लौं बढ़त सु बेस।
खेलत ललित खेल ब्रज महियाँ, चलत चहन लागे परछहियाँ।
गोपालन संमत जब जाने, द्विज बर बोलि नंद जू आने। ५
भल मुहूर्त्त लै दान दिवाइ, पठये कान्ह चरावन गाइ।
जसु लगी मंगल गीत गवावन, नंद चले बन लौं अवरावन।
सखा साथ, बल भैया साथ, राजत रुचिर मंगली माथ।
बीच अछत सु कवन छबि गनौं, मोती जमे चंद मधि मनौं।
आगे करि दये गोधन-बृंद, वदन चूमि ब्रज बगदे नंद। १०
गाइन की छबि नहिं कहि परै, रूप अनूप सब के हिय हरै।
कंचन भूपन सब के गरै, घनन घनन घंटागन करै।

उज्जल बरन सु को है हंस, कामधेनु सब जिन कौ अंस।
दरपन सम तन अति दुति देत, जिन मधि हरि झाँई झुकि लेत।
१५ बृंदावन छबि कहत बनैं न, भूलि रहै जहँ हरि के नैन।
जामैं संतत बसत बसंत, प्रफुलित नाना कुसुम अनंत।
कंटक द्रुम एकौ नहिं जहाँ, चिदाभास भासत सब तहाँ।
चलत जु नहि लीलारस-रले, मति हरि आवैं इत ही चले।
सुंदर तरु सुरतरु तहँ को है, जे मनमोहन के मन मोहै।
२० अरुन अरुन नव पल्लव पात, जनु हरि के अनुराग चुचात।
रटत बिहंगम रंगन भरे, बात कहत जनु द्रुम रस ढरे।
कोकिल कूजति इमि छबि पावति, जनु मधु-बधू सुमंगल गावति।
कुसुम धूरि धूँधरी सु कुंज, गुंजत मंजु घोष अलि-पुंज।
सुंदर सर निर्मल जल ऐसैं, संत जनन के मानस जैसैं।
२५ तिन मधि अमल कमल अस लसे, जनु आनंद भरे सर हँसे।
जल पर परी पराग जु सोहै, अबीर भरे नव दर्पन को है।
जहँ लगि बृंदावन की भूमि, औरहि बिधि रही जमुना झूमि।
परमाधार सु रस जो आहि, बहति रहति निसि-बासर ताहि।
जित दिखियै तित सुख की रैनी, कनक करारे रतनन सैनी।
३० मंजुल बृंदाबन की गुंजा, कृष्न नाम मुख सुख की पुंजा।
तिनहिं बिलोकि लटू ह्वै गये, तुरतहि तोरि हार गुहि लये।
निरखे द्रुम जु फूल-फल नये, मधुकर निकर महा छबि छये।
नये जु फल-फूलन के भार, लगि लगि रही धरनि द्रुम-डार।
बार बार हरि तिन तन चहैं, बल भैया सौं बातैं कहैं।

देखहु हो ये द्रुम या बन के, सब सुख करने, हरने मन के। ३५
सिखा निकरि परसत तुव पाइ, जानत हौ कछु इन को भाइ।
कहत कि हो ईस्वर जगनाइक, हौ तौ तुम सबहिन सुखदाइक।
ऐ परि हम पर बहुतै ढरे, जातैं या बन के द्रुम करे।
अरु देखहु या बन के भृंग, बोलत डोलत तुम्हरे संग।
जनु ये मुनिगन अलि ह्वै आये, जदपि गुपत तदपि लखि पाये। ४०
धनि यह धर जा पर पग धरौ, धनि ये कुंज जहाँ संचरौ।
धनि ये सर-सरिता जहँ खोरत, धनि ये कुसुम जिनहिं कर तोरत।
इहि बिधि बिहरत बृंदावन में, छिन छिन अति रति उपजत मन में।
कहुँ कहुँ हंसन मिलि सु कलोलत, वैसें ही डोलत, वैसें ही बोलत।
कहुँ मत्त निरतत दिखि मोर, तैसें ही निरतत नंदकिसोर। ४५
कहुँ मदांध मधुप जहँ गावत, तिन सँग मिलि गावत छबि पावत।
कबहूँ दूरि जाइ जब गाइ, ललित कदंबन पर चढ़ि जाइ।
आनँदघन सम सुदर टेरनि, इत उत वह हेरनि, पट-फेरनि।
हे गंगे, हे हे गोदावरि, हे जमुने, हे भावरि, चावरि।
हे मंजरि, हे कुंजरि, सीयरि, हे हे धौरी, धूनरि, पीयरि। ५०
कबहूँ मल्लजुद्ध मिलि खेलत, मद गज ज्यौं ठेलत, पग पेलत।
श्रमित होत आवत तरु तरे, किसलय सयन, सु पेसल करे।
पौढ़त सखा सघन सिर नाइ, कोई बड़भाग पलोटत पाइ।
कोई कोमल पद लै कर मीजत, कोई लै कुसम बीजना बीजत।
कोई अति मधुर मधुर सुर गावत, साँवरे कुँवरहि नींद अनावत। ५५
कबहूँ बल भैया के पाइ, आपुन हरि दाबत भरि भाइ।

बिहरत इहि परकार बिहार, ज्यौं गाइन सँग ग्वार गँवार ।
जा कहुँ मुनि मन करत बिचार, निगम अगम पावत नहिं पार ।
लछिमी ललना ललित सु पाइ, लालति ज्यौं निधनी धन पाइ ।
६० बड़ी बेर आवत सिव मन मैं, सो प्रभु यौं बिहरत या बन मैं ।

(इति बनविहार लीला)

खेलत खेलत खेल सुहाये, गोधन लै गिरि गोधन आये ।
सखा एक श्रीदामा नाम, बोल्यौ जाइ सकल गुनधाम ।
अहो अतुल बल श्री बलराम, अहो दुष्ट-निदरन घनस्याम ।
इत तैं निकट ताल बन महा, मिष्ट मिष्ट फल कहियै कहा ।
६५ यह दिखि उन कौ परिमल आवत, चपरचौ हमरे चितहि चुरावत ।
भारी भूख लगी है चलौ, भैया बहुत मानिहैं भलौ ।
ऐ परि तहँ इक धेनुक नाम, बड़ौ बाम ताकौ बिश्राम ।
जाके डर नर जात न कोई, तछिन भछन करि डारै सोई ।
सुनतहि चले सु लागत भले, ऐसैं दुष्ट कितैं दलमले ।
७० आगे भये बिहँसि बलराम, पाछे करि लये मोहन स्याम ।
धसे बिसाल ताल बन जाइ, मत्त गयंद ज्यौं कानन आइ ।
दिये जु ताल सनाल हलाइ, भूखे ग्वाल लिये सब खाइ ।
सुनि कै आयौ धेनुक धाइ, धर डगमगत धरत यौं पाइ ।
गर्दभ सब्द करत इहि भाइ, सुर डरपे कि लिये हम आइ ।
७५ अति बल सौं बल कौं ढिंग गयौ, पछिले चरन चलावत भयौ ।
ते पग तबहिं पकरि है लये, पकरत प्रान निकसि ही गये ।
फेरि फेरि ऐसै गहि डारचौ, ऊँचे हुतौ सु ता करि भारचौ ।

औरौ खर आये रिस भीने, तेऊ सबै डेल से कीने ।
परे जु ताल बिसाल सु ऐसैं, प्रबल पवन के मारे जैसैं ।
परे बिसाल ताल इमि मही, बिच बिच गर्दभ परत न कही । ८०
ज्यौं रबि अस्त होत आडंबर, कारे पियरे बादर अंबर ।
छिनक में मारि डारि सब चले, कहत हैं ग्वाल भले जू भले ।
ब्रज कहुँ आवत अति छबि पावत, बालक-बृंद सु कीरति गावत ।
ऊपर सुर सुमन सु बरषावत, मुदित भये दुंदुभी बजावत ।
मंद मंद गति गाइन पाछे, चलत ललन छबि पावत आछे । ८५
गोरज छुरित कुटिल कच बने, जनु मधुकर परग रस सने ।
मंजुल मोरमुकट की लटकनि, कंचन कुडल गंडनि झलकनि ।
उर बनमाल, सु नैन बिसाल, बाजत मोहन बेनु रसाल ।
सुनि कै गोपबधू सब निकसी, मुद्रित कमल-कली जनु बिकसी ।
हरि-मुख-कमल भरयौ रस-रंग, गोपी-लोचन लंपट भृंग । ९०
पुनि पुनि करि कै पान अघाने, दृगन के बासर बिरह सिराने ।
तब कछु नैंनन पूजा कीनी, लज्जा सहित हँसनि रँग-भीनी ।
ता पाछें बर कुटिल कटाछे, चली जु प्रेम रँगीली आछे ।
यह तिन की पूजा अभिराम, लै आये घर मोहन स्याम ।
जसुमति द्वार आरतौ कियौ, पौंछि कै बदन सदन में लियौ । ९५
उबटन उबटि फुलेल लगाइ, स्वच्छ सुगंध सलिल अन्हवाइ ।
सुभग सुस्वाद सु बिंजन आनि, जननी ज्यौंये अपने पानि ।
रितु रितु के भोजन अनुकूल, रितु रितु के बर फूल दुकूल ।
भोजन करि तब खरिकनि जाइ, फिरि घर गवने गाइ दुहाइ ।

१०० दुग्ध-फैन सम सेज बनाइ, पौढ़े तहाँ कुँवर बर जाइ।
'नंद' नींद नँद-नंद की, कही जु इहि अध्याइ।
गुनातीत कौ सोइबौ, सब भगतन कौ भाइ॥
(इति धेनुकमर्दन लीला)
पुनि इक दिन बिन ही बलराम, सखन सहित बन गवने स्याम।
पसु अरु पसुप तृषित अति भये, चले चले कालीदह गये।
१०५ बनमाली आवत हे पाछे, बन छबि देखत देखत आछे।
तब लगि ग्वाल-बाल अरु गाइ, महा गरल जल पीयौ जाइ।
जौ पाछे आवहिं नँदलाल, मरे परे सब गोधन-ग्वाल।
अमृत-दृष्टि करि सींचि जिवाये, उठे सबै अति बिस्मय पाये।
कहन लगे कि मरे हम सबै, इहि नँदलाल जिवाये अबै।
११० तब बनमाली सब गुनसाली, काढ़ि दियौ तिहि दह तैं काली।

षोडश अध्याय

अब सुनि लै षोडसौ अध्याइ, कीनी प्रश्न परीच्छित राइ।
हो प्रभु वह दह महा अगाध, तरल गरल करि भरयौ असाध।
कमल तैं अति कोमल बनमाली, तहँ तैं कैसैं काढ़यौ काली।
तहँ पुनि बहुत जुगन कौ कह्यौ, सर्प अजलचर क्यौं जल रह्यौ।
५ गोप बेष श्रीकृष्न चरित्र, अति बिचित्र अरु परम पवित्र।
निरवधि मधु की धारा आहि, सु को जु तृपतैं पीयत ताहि।
हरिलीला-रससिंधु हिलोले, मंद मुसकि तब श्री सुक बोले।

जमुनहि मिल्यौ निकट ही महा, अति अगाध ह्रद कहियै कहा।
बिष की आगि लागि जल जरै, उड़ते खग जहँ गिरि गिरि परै।
पवन रासि उठि सुठि जल लहरै, तिन तै विष की फुही जु फहरै। १०
इक जोजन के थिर चर जंत, जरि जरि मरि मरि गये अनंत।
जो वृंदावन जोग्य न हुते, ते सब विष-जल-ज्वाला हुते।
ताही ढिंग इक मृदुल कदंब, सो छ्वै सक्यौ न विष कौ अंब।
या पर कृष्न-चरन परसिहैं, इहि चढ़ि या दुष्टहि करसिहैं।
भावी जा कदंब की ऐसें, विष-जल परसि सकै तिहि कैसें। १५
ऐसै ही भावी भक्त जु आहि, कालादिक छ्वै सकत न ताहि।
कान्ह कह्यौ कि हमारी जमुना, क्यौ पूछियै बिप भरी अमुना।
सरितहिं सुद्ध करन कलमले, छवि सौ उहि कदब ढिंग चले।
किंकिनि सौ कटि पटहि लपेटि, कुटिल अलक मुकट मैं समेटि।
चट दै जिहि कदंव पर चढे, छाजत ता छिन अति छबि बढ़े। २०
जिहि जल छुवत जात जन जरे, तिहि जल कुँवर कूदि ही परे।
वर बारन ज्यौ जल मैं धसरै, सत सत धनु चहुँ दिसि पय पसरै।
अति ऊधम सुनि काली डरचौ, बज्र परचौ कि गरुर बल करचौ।
अरग अरग आयौ रिस भरचौ, कोमल कुँवर दिष्टि-पथ परचौ।
नूतन घन तन सुंदर स्याम, तड़ि दिव पीतबसन अभिराम। २५
घन इव, तड़ि दिव उपमा ऐसैं, साखा बिन ससि सुझै न जैसें।
बिहरत बिभु अपने रस-रंग, ईस्वरता कछु नाहिन संग।
ताकौ कह जानै यह नीच, लोचन भरे महा तम कीच।
अरुन कमल से कोमल पाइ, डसत भयौ दुरात्मा आइ।

३० लपटि गयौ पुनि सिगरे गात, रोष भरे दृग अनल चुचात।
ऐसैं जब निरखे ब्रजबाल, गाइ, बृषभ, बछ, बाछी, बाल।
मुरझि परे ठाँ ठाँ सब ऐसैं, सुंदर तरु बिन मूलहि जैसैं।
ब्रज मैं हौन लगे उतपात, असुभ सूचने फरके गात।
भूमिकंप नभ ते उड़ि गिरे, अवर असगुन निरखि थरहरे।
३५ कहत कि आज राम बिन स्याम, बन जु गये कछु बिगरयौ काम।
अति कलमले बिरह दलमले, बाल-बिरध सब कानन चले।
तिन सौं कछु न कहत बलदेव, जानत हरि भैया कौ भेव।
चरन-सरोज-खोज ही लगे, जिन मैं सुभ लच्छन जगमगे।
अरि, दर, मीन, कमल जव जहाँ, अंकुस, कुलिस, धुजा छबि तहाँ।
४० जा रज कहुँ सिव, अज नित बंछत, अनुदिन सनक, सनंदन इंछत।
तिहि सिर धारत अतिसय आरत, कृष्न कृष्न गोबिंद पुकारत।
क्रम क्रम करि जमुना अनुसरे, निरखे ग्वाल-बाल, पसु परे।
दह मैं दिष्टि परे बनमाली, लपटि रह्यौ तन कारौ काली।
जौ बलभद्र बीच नहिं परैं, तौ सब जन जल-ज्वाला जरैं।
४५ तिन मैं गोपबधू भरि नेह, दृगन मैं प्रान रहे तजि देह।
जसुमति उमगि उमगि दह परैं, छन छन संकर्षन भुज धरैं।
ब्रज अनन्य गति दिखि बनमाली, गहि डारचौ तब कारौ काली।
ठाढ़ौ भयौ भयानक भारौ, इक सत फन्न, बरियारौ कारौ।
फन फन द्वै द्वै जीभ कराल, लपलप करैं निपट बिकराल।
५० डारत बार बार फुकार, छुटत जु गरल अनल की झार।
द्वै सत लोचन राते ऐसैं, माड़े पकने भाँड़े जैसैं।

तिन तैं अगिनि की चिनगी परैं, ठाढ़े इहाँ तीर के जरैं।
ऐसैं काली सौं बनमाली, खेलन लगे सकल गुनसाली।
बाम भाग दिये तिहि उर मेलत, जैसैं गरुड़ सर्प सौं खेलत।
बुझि गयौ ओज उरग कौ ऐसैं, नाग दवन के देखत जैसैं। ५५
पुनि ताके फन पर चढ़ि गये, सकल कला गुरु निर्तत भये।
सोहैं नंद-सुवन तहँ ऐसैं, सेस उपर नाराइन जैसैं।
तिहि छिन ब्रज गंधर्ब जितेक, लै लै ताल मृदंग अनेक।
सुघर सुघर जे सुर लोक के, सिव लोक के बिष्नु ओक के।
अद्भुत नर्त्तक नहि कछु बचे, सर्प फनन पर तांडव नचे। ६०
फनन तैं निकसि निकसि मनि परै, पगन मैं झलमल झलमल करै।
तैसिय हरि-नख-मनि की जोति, सब दिसि जगमग जगमग होति।
जोई जोई फन अहि उन्नत करै, तहँ तहँ मान कान्ह कौ परै।
पगन की कूटनि दुखित जु भयौ, सर्प कौ दर्प सबै गिरि गयौ।
कहत कि यह बल नाहिन मनुज कौ, निरवधि ईस्वर बल जु अनुज कौ। ६५
सापराध अहि निपटहि डरयौ, मन करि चरन सरन अनुसरयौ।
दुखित देखि ताकी सब तिया, आई थर थर कंपत हिया।
छुट्टे लरिकन आगे किये, जैसै दया फुरै हरि हिये।
नैनन तें जलकन यौं परैं, कमलन तैं जनु मुक्ता झरैं।
बिगलित कच सु बदन छबि बढ़े, अहि सिसु जनु कि ससिन पर चढ़े। ७०
कछु मुद भरी कछू भय भरी, करि दंडवत स्तुती अनुसरी।
अहो नाथ अनुचित नहिं करयौ, अहि कहुँ दंड न्याय ही धरयौ।
दुष्ट-दमन तुम्हरौ अवतार, हो ईस्वर ब्रजराज-कुमार।

जो दिखियत यह विस्व पसारौ, सो सब क्रीड़ा-भार तुम्हारौ।
७५ अहि कहुँ तुम जु दंड नहिं धरयौ, या पर परम अनुग्रह करयौ।
अहो प्रभु तुम तें जिती बड़ाई, इन पाइन सौं किनहुँ न पाई।
एक अंड कौ भार सु किती, गरबत सेस धरे सिर तितौ।
अमित अंडमय बपु रस भरयौ, सो इन धरयौ बहुत ही करयौ।
सुनतहि बचन दया रस भरे, तातैं तुरत उतरि ही परे।
८० हरैं हरैं उठि बोल्यौ काली, हो अद्भुत ईस्वर बनमाली।
तुम ही हम इहि बिधि के करे, गरल भरे अति तामस भरे।
तब नहिं सोचे इह बिधि बानत, अब हो नाथ बुरौ क्यौं मानत।
तब बोले ब्रजराज कुमार, यह बन हमरौ नित्य बिहार।
अब तू रमनक दीपहि जाहि, वा गरुड़ तैं नैक न डराहि।
८५ मो पद चिह्नन चिह्नित भयौ, करि आनंद, सबै भय गयौ।

काली मर्दन लाल की, लीला सुनै जु कोइ।
महा ब्याल कलिकाल तैं, तिहि न तनक भय होइ॥

सप्तदश अध्याय

अब सुनि लै सत्रहौ अध्याइ, सर्पहि रमनक दीप पठाइ।
उठिहै निसि बन बन्हि अचान, पानी लौं हरि करिहै पान।
नृप सुनि करि पुनि पूछै ऐसैं, हो प्रभु! मो सौं कहि यह कैसैं।
रमनक दीप अहिन कौ धाम, क्यौं छाँड़यौ इन काली बाम।
५ गरुर कौ कहा कियौ अनभायौ, जातैं यह इहि दह मैं आयौ।

श्री सुक कही अहिन के ठौर, परी रहति नित खगपति दौर।
थोरे खाइ, वहुत हति जाइ, तब सर्पन मिलि कियौ उपाइ।
आवहु मास मास वलि दीजै, इहि विधि भले कैऊ दिन जीजै।
तब पर्बनि पर्बनि तरु तरे, अपनी अपनी बलि लै धरे।
यह अति विष-बीरज-मद भरयौ, गरुड़ तैं रंचक नाहिन डरयौ। १०
अपनौ भाग, अवर कौ भाग, खाइ जाइ यह काली नाग।
सुनि कै कुपित भयौ द्विजराज, कद्रू-सुतहि हतन के काज।
महा बेग धरि रिस भरि धायौ, बल-आलय उरगालय आयौ।
इत यह बली बालि भिहरानौ, मधु-रिपु-आसन अनि समुहानौ।
इक सत फनन फुफात सु तातौ, द्वै सत लोचन अनल चुचातौ। १५
अति बल गरुड़ नखायुध जाके, दूजौ मधुसूदन बल ताके।
बाम पच्छ नव कंचनमई, रहपट एक जु ताकौं दई।
तहँ तैं भज्यौ सु बिह्वल भयौ, धाइ आइ इहि दह दुरि गयौ।
इहाँ गरुर की कछु न बसानी, फिरि गयौ सौभरि संका मानी।
सुनि कै प्रश्न करी नृप ऐसैं, हो प्रभु ! सौभरि संका कैसै। २०
तब राजा सौं श्री सुक कहै, सौभरि कौ तहँ आश्रम रहै।
इक समै इहि दह मैं आइ, खगपति कीनौ बहुत उपाइ।
तहँ के मीनन कहुँ दुख दीनौ, तिन कौ राउ पकरि है लीनौ।
जलचर दुखित देखि कै खरे, बोले रिषि अति करुना भरे।
अब कै जौ ह्याँ खगपति आवै, प्रान सहित तौ जान न पावै। २५
अकिलौ काली जानत आहि, और न लेलिह जानत ताहि।
सो वह काली, हरि बनमाली, काढ़ि दियौ करि कीर्त्ति बिसाली।

सुत-कलित्र लै भरि अनुराग, रमनक गयौ नाग बड़भाग।
तब नँद-नंदन दह तै निकसे, मुसकत नवल कमल से विकसे।
३० अहिपति निज कर पूजे स्याम, अद्भुत पट, अद्भुत मनि-दाम।
बन्यौ जु वदन सु को छबि गनौं, दीनी ओप चंद मधि मनौ।
धाइ घुरि गई जसुमति मैया, इत हँसि दौरि घुरचौ बल भैया।
गोपी, गोप, गाइ, बछ जिते, घुरि गये सुदर अंगनि तिते।
चलत सवन के नैंनन नीर, जनु निकसी जल ह्वै उर पीर।
३५ आये ब्रज के द्विज अनुरागे, नंद सौं कहन सबै यौं लागे।
जा कहुँ ऐसौ बिषधर खाइ, सो सुत बहुरि मिलै तोंहि आइ।
तातैं दान देहु ब्रजराज, अपनौ कुल मंडन के काज।
जु कछु जन्म-उत्सव मैं कीनौ, ब्रजपति तातैं दूनौ दीनौ।
दानन देत परि गई साँझ, रहि गये ताही कानन माँझ।
४० सब दिन अति कलेस करि भरे, सोवत हुते महा निसि परे।
तहँ अभिचार मंत्र करि प्रेरचौ, उठचौ अगिनि, तिहि सब ब्रज घेरचौ।
दुष्ट पवन लगि उठति जु लपटैं, दूरि दूरि लगि अति झर झपटैं।
जगे जु लोग कुलाहल परचौ, कहत कि अब कै सब ब्रज जरचौ।
पौढ़े हुते साँवरे जहाँ, सब जन धाये आये तहाँ।
४५ अहो कृष्न, श्री कृष्न पियारे, जरत हैं सबै दवानल जारे।
हमहिं कछू तौ डर न मरन कौ, नहिं सहि परत बियोग चरन कौ।
सुनत जगे, अति नीके लगे, आलस पगे, उठे रँगमगे।
करन नैंन मीजत छबि पावत, रुठे कमल, मनु कमल मनावत।
एक सकति कहुँ आग्या दई, कब धौं अगिनि पान करि गई।

जे द्रुमलता दवानल जरे, अमी-दृष्टि करि तैसैई करे। ५०
भोर भये अपने ब्रज आये, मिटे अमंगल, मंगल गाये।
अगिनि पान हरि जान कौं, गान जु करिहै कोइ।
महा झार संसार-झर, बहुरि न परिहै सोइ॥

अष्टादश अध्याय

अब सुनि अष्टादसौं अध्याइ, सुनत सहज सब ताप नसाइ।
जामैं कृष्न केलि अभिराम, हतिहैं असुर प्रलंबहि राम।
श्री सुक कहत है हो नृप सत्तम, अवर एक लीला सुनि उत्तम।
गोप-बेष करि अद्भुत सोहत, राम-कृष्न सब के मन मोहत।
ग्रीषम रितु आपने सुभाइक, प्रगट्यौ जगत सबन दुखदाइक। ५
अति निदाघ तहँ कछु सुधि नाहीं, दादुर दुरे फनी-फन-छाँहीं।
सो बृंदाबन मधि जब आयौ, सरस बसंत समान सुहायौ।
ठाँ ठाँ गिरि तै निर्झर झरैं, ते वै सलिल सिलन पर परैं।
तिन तैं बहति जु सरिता गहिरी, दूरि दूरि लौं परसति लहरी।
बहुरि अनेक अगाध सु सरवर, रस झूमरे, घूमरे तरवर। १०
तिन के तर तृन-बीरुध जिते, हरित हरित रँग भरित सु तिते।
तरनि किरन जिन नैंक न परसै, छिन छिन मैं छबि तिन मैं सरसै।
कुसुमित बनराजी अति राजी, जैसी नहिंन बसंत बिराजी।
ठौर ठौर सर सरसिज फूले, डोलत लंपट अलिकुल भूले।
कमल पवन, अरु चंदन पौन, मिलि जु बहत, सुख कहियै कौन। १५

बोलत सुक, जनु सुक मुनि पढ़ै, सरसुति सम कल कोकिल रढ़ै।
मधुर मधुर सुर बोलत मोर, नंद-सुवन के मन के चोर।
इहि बिधि बृंदाबन छबि पावत, तहँ मनमोहन धेनु चरावत।
बल समेत, ब्रजबाल समेत, श्रीनिकेत सबहिन सुख देत।
२० कहूँ अवधि बदि मेलत डेलन, कहूँ परस्पर खेलत बेलन।
कहुँ अँग छुवनि, कहूँ दृग बंधनि, कहुँ चढ़ि जात द्रुमन के कंधनि।
कहूँ रचत भूषन बनमाल, लै लै फल-दल-फूल, प्रबाल।
कबहूँ निर्तत मोहनलाल, ताल बजावत, गावत ग्वाल।
कबहूँ बर हिंडोल बनावत, झूलत मिलि, गावन छबि पावत।
२५ कबहूँ राज सिँघासन ठानत, छत्र, चँवर फूलन के बानत।
राजा ह्वै रजई दिखरावत, ग्वाल-बाल दुदुभी बजावत।
लौकिक लरिकन की सी नाँई, खेलत खेल जगत के साँई।
असुर प्रलंब गोप के बानक, आनि मिल्यौ तिन माँझ अचानक।
नंद-सुवन तब ही पहिचान्यौ, दुष्ट न दुरै दई कौ हान्यौ।
३० ताकौं हतन हिये मैं आन्यौ, तब हरि और खेल इक ठान्यौ।
कहत कि सुनहु भिया ही हीरी, अवर खेल खेलहु बटि बीरी।
द्वै द्वै ह्वै ह्वै आवहु ऐसैं, बल अरु अबल जानि कै जैसैं।
जो हारै सो लेइ चढ़ाइ, बट भंडीर तीर लै जाइ।
भले भले कहि किलके हँसे, ललित कटिन झट दै पट कसे।
३५ नाइक भये स्याम बलराम, आवन लागे धरि धरि नाम।
कोउ लेउ चंद, कोउ लेउ सूर, कोउ खजूर, कोउ लेहु बबूर।
परलंबादि ग्वालगन जिते, नंदकिसोर ओर गन तिते।

श्रीदामा बृषभादिक ग्वाल, बल दिसि गये बजावत गाल।
जमुना पुलिन ललित चौगान, खेलन लगे जान-मनि जान।
लै गये मारि टोल बल प्यारे, कमल-नयन दिसि के सब हारे। ४०
तिन पर चढ़ि चढ़ि बल ओर के, चले चपल अपनी जोर के।
श्रीदामा हरि पर चढ़ि चले, को ठाकुर जो खेल मैं रले।
बल प्रलंब पर सोहत ऐसैं, सो उपमा अब कहियत कैसैं।
बट भंडीर तीर लगि चढ़े, लै गये बालकेलि रस बढ़े।
कान्ह कुँवर की दृष्टि बचाइ, असुर अवधि तें आगे जाइ। ४५
अपने रूपहि आश्रित भयौ, तब ही अंबर लौ चढि गयौ।
ता छिन भयौ भयानक भारौ, पहिरे कंचन-भूषन कारौ।
ता पर संकर्षन अति सोहे, ब्रजबालक विलोकि सब मोहे।
जो होइ कारी भारी घटा, बिच बिच चमकै-दमकै छटा।
ऊपर सरद चंद होइ जैसै, सोहै रोहिनि-नंदन तैसै। ५०
बिकट बदन अरु बड्डे दंत, बिकट भृकुटि दृग अग्नि वमंत।
तपत ताम्र से सिररुह लसे, तब दिखि हलधर रंचक त्रसे।
पुनि सुधि आइ तनक मुसकाइ, दियौ जु मुठिका मूँड़ बनाइ।
किरच किरच ह्वै गयौ लिलार, मुख तें चली रुधिर की धार।
धरयौ प्रलंब न कछु संभारयौ, गिरि जस गिरत बज्र कौ मारयौ। ५५
पाँउ पसारि असुर जब परयौ, निरखि रूप तब सब ब्रज डरयौ।
घुरि घुरि मिले ग्वालगन ऐसैं, मरि गयौ कोउ फिरि आवत जैसैं।
अमर निकर बर अतिसय हरषे, बल पर सुमन सु सुंदर बरषे।
फूलन पर ह्वै ब्रज कौं आवत, बालक-बृंद सु कीरति गावत।

६० ब्रज मैं दिन दूलह नँद-नंद, छिन छिन दुतिया कौ सौ चंद ।

अष्टादस अध्याइ इह, सुनै तनक मन लाइ ।
ताके पाप प्रलंब जिमि, सब मरि, गरि, सरि जाइ ॥
अष्टादस अध्याइ कौ, फल न कछू कहि 'नंद' ।
अपने ही हिय रहन दै, चरित सहित ब्रजचंद ॥

एकोनविंश अध्याय

अब उनइसवौ सुनि अध्याइ, स्याम-राम मुंजा बन जाइ ।
गोप-गाइ-गन गहबर डर तैं, लैहैं राखि दवानल झर तैं ।
वृंदाबन सब छबि कौ धाम, सखन समेत स्याम बलराम ।
बिहरत अति आसक्त जु भये, गोधन निकसि बनांतर गये ।
५ मुंजारन्य नाम है जहाँ, अति गहबर सुधि परत न तहाँ ।
पसु-सुभाउ तैं लुबधे लोभा, चलि गये चरत चरत बन गोभा ।
आगे कुंज पुज अति भीर, नहिन नीर परसै न समीर ।
मारग नहिं जु उलटि इत परैं, गोधन-बृंद सु क्रंदन करैं ।
खेल छाँड़ि जौ इत उत चहै, गोधन कहूँ निकट नहि लहै ।
१० बालक बिकल भये सब ऐसैं, धन गये होत कृपन जन जैसैं ।
उच्च द्रुमन पर चढि चढि हेरत, धौरी, धूमरि, पीयरि टेरत ।
टेर सुनहि जब हौहि सु नियरी, दूरि गई वे काजरि पियरी ।
तब जुरि खोज खोजि ही चले, जहँ जहँ तृन खुर-दलन दले ।
आगे अति गहबर दिखि चके, धसि न सके तित ही सब थके ।

तव हरि इक कदंब पर चढ़े, छाजत तिहि छिन अति छबि वढ़े। १५
जनु सब क्रत कौ फल रस-पग्यौ, इहि कदंब एकै यह लग्यौ।
चंचल दृगन की इत उत हेरनि, मधुर मधुर टेरनि, पट फेरनि।
मुकट की झलकनि, कुंडल झलकनि, कछु कछु राजति गोरज अलकनि।
लै लै नामन गाइन टेरे, यह छवि सदा बसहु मन मेरे।
बगदी उत तैं चाइन चाइन, हरि-मुख तै सुनि अपने नाइन। २०
प्रेम सहित आवनि, हुंकारनि, सींचत धरनि दूध की धारनि।
आनि जु भई धेनु इकठौरी, धौरी धौरी, अति छबि बौरी।
सब के कंठनि कंचन-माला, सोहत सुंदर नयन बिसाला।
घनन घनन घंटागन गजैं, अमरराज-गज की छबि लजैं।

हरि सनमुख आवति उमहि, उज्जल गोधन-नार। २५
समुदहि मनहुँ मिलन चली, गंग भई सतधार॥

ऐसैंहि माँहि दवानल लग्यौ, बृष-रबि-रस्मि परसि जगमग्यौ।
प्रबल पवन लगि अति झर झपटै, लतन सौं लपटि द्रुमन सौ लपटै।
जरि जरि ताल तमाल जु लटके, पटके बाँस, काँस-तृन चटके।
डरे गोप-गोधनगन सबै, आये नंद-सुवन ढिंग तबै। ३०
ज्यौं कोउ काल ब्याल तैं डरै, भजि हरि-चरन-सरन अनुसरै।
कहन लगे कि अहो वलराम, हो श्रीकृष्ण कृष्ण घनस्याम।
राखि लेहु हम बंधु तुम्हारे, जरत हैं सबै दवानल जारे।
तब हँसि बोले मोहनलाल, मूँदहु नैन धेनु, बछ, बाल।
जब सव के दृग मुद्रित भये, तब हरि अगिनि पान करि गये। ३५
दृग उघारि जो चहहिं अभीर, ठाढ़े बट भांडीर के तीर।

कहन लगे अति बिस्मय पाये, कित हम हुते, कितै अब आये।
यह जु नंद कौ नंदन आहि, भिया मनुज जिनि जानहु याहि।
देवन मैं जु देव बड़ कोई, हम जानहिं कि आहि यह सोई।
४० आगे धरि लै गोधनबृंद, चले सदन ब्रज कदन-निकंद।
मधुर मधुर धुनि वेनु वजावत, बालकबृंद सु कीरति गावत।
गोपीजन कौ परमानंद, भयौ निरखि बृजपति कौ चंद।
जिन कहुँ जा बिन इक छिन ऐसैं, वीतत कोटि कोटि जुग जैसैं।
श्रीदामादि सखा जिते, जीतत खेलहि लागि।
४५ ऐसी ठौर न सुधि परै, पियौ जात क्यौं आगि॥
सुनैं जु कोऊ हरि-चरित, उनबिसत अध्याइ।
पाप न परसै नंद तिहि, पदमिनि-दल-जल न्याइ॥

विंश अध्याय

अब सुनि लै बीसौं अध्याइ, बनित जहँ द्वै रितु के भाइ।
इक बरषा अरु सरद सुढार, विहरत जहँ ब्रजराज-कुमार।
प्रथमहि प्रावृट प्रगटित तहाँ, सब जंतुन कौ उद्भव जहाँ।
छुभित जु गगन पवन संचरै, रबि अरु ससि कहुँ मंडल परै।
५ नील बरन नीरद उनये, गरजि गरजि नभ छादित भये।
जैसैं सगुन ब्रह्म यह जीय, सत, रज, तम करि आवृत कीय।
अष्ट मास धर कौ जल जितौ, रस्मिन करि रबि पीयत तितौ।
चारि मास पुनि निर्झर झरैं, सब दुख हरैं, सुखन बिस्तरै।

जैसे नृप अपनौ कर लेइ, समय पाइ पुनि परजहि देइ।
तड़ित-दुगन करि मेघ महंत, देखे ताप तपे सब जंत। १०
प्रेरे पवन सु जीवन बरषै, सबन के दुख करषै, मन हरषै।
जैसें करुन पुरुष पर हेत, अपने प्यारे प्रानन देत।
ग्रीष्म-ताप करि कृश हुती धरनी, सरस भई, सोहति बर बरनी।
ज्यौ सकाम कोउ फल कौ पाइ, भोगन भुगति पुष्टि ह्वै जाइ।
साँझ समै पटबिजना चमकै, घन करि छपे नखतगन दमकै। १५
ज्यौं कलि बिषै पाप पाखंड, नहिंन निगम के धरम प्रचंड।
घन-गरजनि सुनि मुदित जु भेक, बोले धरनि अनेक अनेक।
ज्यौ गुरु आग्या सुनि चटसार, चटा पढ़ि उठत एक हि बार।
पाछे सुकी हुती जे सरिता, उत्पथ चली बहुत जल भरिता।
अजितेंद्रिय नर ज्यौं इतराइ, देह, गेह, धन, संपति पाइ। २०
बुढ़ी लुढ़ी जु हरित भई धरनी, उछलीध्र छबि फबि हियहरनी।
जनु कोउ भूपति उतर्‍यौ आइ, छत्र तनाइ, बिछौन बिछाइ।
निपजे छेत्र कागुनी धान, तिनहिं निरखि हरखे जु किसान।
धनी लोग उपतापहि जाहीं, दैवाधीन सु जानत नाहीं।
जल के, थल के बासी जिते, जल-सोभा करि सोभित तिते। २५
जैसें हरि-सेवा करि कोई, रुचिर रूप अति राजत सोई।
सरित-संग करि छुभित जु सिंधु, उमगि ऊरमी, ह्वै गयौ अंधु।
ज्यौं अपक्व जोगी चित धाइ, बिषयन पाइ भ्रष्ट ह्वै जाइ।
गिरिगन पर जलधर बर बरसै, ऐ परि गिरि कछु बिथा न परसै।
परसे पै निरसै नहि ऐसें, कष्टन पाइ कृष्नजन जैसें। ३०

मारग ठौर ठौर तृन छये, पंथ चलत पथिकन भ्रम भये।
ज्यौं अभ्यास बिन बिप्र सु बेद, समभि न परै अरथ-पद-भेद।
मेघन विषै अलप जल परै, तड़ि भई अलप नेह परिहरै।
ज्यौ लंपट जुवती जग माही, निधन भये पुरुषहि तजि जाही।
३५ घन घुमड़नि मधि चाप सुरेस, बिन गुन सोभित भयौ सुदेस।
प्रगट प्रपंच जगत मैं जैसै, निर्गुन पुरुष बिराजत तैसैं।
गगन मैं सघन घनन करि छयौ, तहँ उड़राज बिराजत भयौ।
लपटि, अहंता ममता जैसै, जग मै जीव न सोहत तैसैं।
सुनि कै सुंदर घन हर घोर, भरि आनँद वन कुहकैं मोर।
४० जैसैं ग्रहन बिषै दुख पाइ, रहत है ग्रही बैरागहि आइ।
तिन के जाहिं संत जन जैसैं, दुख हरने, सुख करने तैसै।
सरन के तट, तहँ कंटक कीच, चक्रवाक बसे तिन ही बीच।
ज्यौ कुचील घरनि मै गँवार, बसत है बिबस उदर व्यवहार।
इद्र के बरषत जल भरि भारी, टूटि फूटि गई सब मिंडवारी।
४५ ज्यौ कलि बिषै दंत रस स्वाद, लोपहि भई बेद मरजाद।
पके आँब, जामुन अरु दाख, मधुर खजूर सु लाखन लाख।
तहँ मनमोहन धेनु चरावत, बल बालक समेत छवि पावत।
सीसनि सुदर छतना दिये, कंचन लकुट करन में लिये।
सोभित सिरनि कसूँभी खोरी, लाल निचोइ मनहुँ रँग बोरी।
५० मुरली मधुर मलार सु गावत, उघरे अंबुद फिरि घिरि आवत।
भीजि बसन सुंदर तन लपटनि, दृगनवंन कहुँ अति सुख दपटनि।
जब हरि धेनु बुलावत बन मै, फूलि नही समात तन-मन मै।

चलि न सकत ऐनन के भार, आवत श्रवत दूध की धार।
ठाँ ठाँ द्रुमन श्रये मधु नये, निरखि बनौकस प्रमुदित भये।
गिरि तैं गिरत जु जल की धार, तिन तैं उठत नाद झंकार। ५५
बल समेत, ब्रजबाल समेत, निरखत डोलत रमानिकेत।
पवन सहित जब बरसत मेह, परसत सीत सु कोमल देह।
तब कंदर कदंब के मूलनि, दुरत है जाइ कलिंदी कूलनि।
कबहूँ स्वच्छ सलिल तट जाइ, सिलन के थार, कचोर बनाइ।
दधि-ओदन, विंजन बिस्तरैं, पैठि परस्पर भोजन करैं। ६०
अवर अनेक बिहार उदार, करत बिपिन ब्रजराज-कुमार।

शरद वर्णन

सरद समै मनभायौ कानन, स्वच्छ सलिल अरु अनिल सुहावन।
पानी पाहुने से चलि बसै, सरनि मैं सरसिज छबि सौं लसै।
ज्यौं जोगीजन-मन वहि परै, बहुरि जोग बल निर्मल करै।
गगन के घन जलमल भुव पंक, जंतन की संकीरन संक। ६५
सरद हरित भयौ सहजहि ऐसैं, कृष्न-भक्ति-आश्रय दुख जैसैं।
अपनौ सरबस दै करि मेह, राजत भये सु उज्जल देह।
सुत-बित-इच्छा परिहरि जैसै, सोहत मुनि गतकल्मष तैसैं।
गिरिबर निर्मल जल की धार, कहूँ श्रवत, कहुँ नहिं निज ढार।
जैसै ग्यान-अमृत कहुँ ग्यानी, देहि न देहि, दया रस बानी। ७०
अलप जलन मैं जलचर रहे, छीन होत जल नाहिंन लहे।
ज्यौं नर मूढ़ छिनहि छिन माही, छीजत आयु सु जानत नाहीं।

तुच्छ सलिल के पुनि ये मीन, सरद ताप तपि भये जु दीन।
कृपन, दरिद्र कुटुंबी जैसैं, अजितेंद्रिय दुख भरत है तैसैं।
७५ सनै सनै थल-पंक सिटाई, बीरुध-तृनन की गई कचाई।
ज्यौं मुनि धीर सरीरन विषै, तजत अहंता ममता इषै।
सुंदर सरदागम जब भयौ, निश्चल जल समुद्र ह्वै गयौ।
आतम विषै एक चित जैसैं, त्यक्त-क्रिया-मुनि राजत तैसैं।
बयारिन बिगै किसानन बारि, ठाँ ठाँ रोके सुदिढ़ सुधारि।
८० ज्यौं इंद्रिन करि श्रवत है ग्यान, रोकि लेत जोगीजन जान।
सरद अर्क दिन तपति जु दई, उड़प उदित ह्वै सब हरि लई।
ज्यौं देहाभिमान कौ ग्यान, ब्रज-जुवती-दुख कौं भगवान।
बिन घन गगन सु सोभित तहाँ, उदित अमल नाराइन जहाँ।
जैसैं सुद्ध चित्त अति सरसै, सब्द ब्रह्म के अरथहि दरसै।
८५ ससि अखंड मंडल जु गगन मैं, राजत भयौ नछत्र-गनन मैं।
ज्यौं जदुकुल करि अवनी ऐन, राजत कृष्न कमल-दल-नैंन।
गो, मृग, खग, जुवती रसमई, सरद समै पुहुपवती भई।
तिन के संग फिरत पति ऐसैं, कृष्न क्रियन-पाछे फल जैसैं।
रबि के उगत कमल-कुल लसै, कुमुदन हसै, सकुचि मन त्रसै।
९० नृप-प्रताप ज्यौं निर्भय साधु, दुरत भोर भये चोर असाधु।

सुनै जु उपमा सरद वर, यह बीसौं अध्याइ।
सरद समै के नीर जिमि, मन निर्मल ह्वै जाइ॥
'नंद' देहरी दीप जिमि, करि बीसौं अध्याइ।
नेह-तेल भरि कंठ धरि, दुहूँ दिसि कौ तम जाइ॥

एकविंश अध्याय

अब सुनि इकईसौ अध्याइ, सरद समै वृंदाबन जाइ।
वेनु बजैहैं मोहनलाल, तिहि सुनि सुंदर ब्रज की बाल।
बरनन करिहैं परम पुनीत, अहो मीत ! सुनि गोपी-गीत।
सरद स्वच्छ जल-कमल जितेक, प्रफुलित भये अनेक अनेक।
तिन की बास बायु लै गयौ, ता करि सब बन बासित भयौ। ५
तिहि बन अच्युत मोहनलाल, गवने बल-बालक-गोपाल।
औरौ सुसम कुसमगन फूले, मधुकर मत्त फिरत जहँ भूले।
तरवर, सरवर के खग जिते, मुद भरि करत कुलाहल तिते।
तहँ गिरि गोधन सुछ छबि छये, नित बरसत, सरसत सुख नये।
जहँ नंद-नंदन चारत धेनु, मधुर मधुर सुर बजवत बेनु। १०
सो वह बेनु-गीत सु रसाल, सुनत भई ब्रज मैं ब्रजबाल।
बढ़्यौ जु तन-मन प्रेम अनंग, मनु उत ही हैं हरि के संग।
बरनत भई सखिन प्रति ऐसैं, परतछ कान्ह कुँवर बर जैसैं।
हे सखि ! दिखि नटवर बपु धरैं, कर्ननि कँवल कर्निका करैं।
धरैं मुकट चटकीलौ माथ, फेरत कमल दाहिने हाथ। १५
राजत उर वैजंती माल, चलत जु मत्त द्विरद की चाल।
अधर-सुधा मुरली के रंध्रनि, निकसति मिलि सुर सप्त सुगंधनि।
ता करि सब बन धूनित कियौ, काहू माँझ रह्यौ नहिं हियौ।
निज पद अंकित, नित कमनीय, बृंदारन्य परम रमनीय।
तहाँ प्रवेस करत छबि पावत, गोपबृंद कल कीरति गावत। २०

मोहन-मंत्र सु मुरली राग, सुनि कै ब्रजतिय भरि अनुराग।
बरनन करत भई मिलि ऐसें, हरि परिरंभन देत है जैसें।

गोपी कहति हैं

हे सखि ! नैनन कौ फल यहै, सुंदर प्रियतम-दरसन चहै।
तिन कहुँ फल पिय-दरसन फरै, छिन छिन वदन विलोकन करै।
२५ यातें अवर नाहिन कछु परै, निसि-बासर अवलोकन करै।
सो फल सखिन सहित बन घन मैं, बल समेत डोलत गोगन मैं।
मधुर मधुर धुनि बेनु बजावत, अनेक राग-रागिनि उपजावत।
तानन के सँग स्निग्ध कटाछे, चलत जु मंद हँसनि के पाछे।
जिन करि वह सुंदर मुख चह्यौ, नैनन कौ फल तिन हीं लह्यौ।

अन्याह

३० हे सखि ! अवर एक छवि लहौ, प्रिय घनस्याम-राम तन चहौ।
नूत प्रवाल पुहुप वर गुच्छ, मत्त मयूर चंद्रिका स्वच्छ।
छबि-पुंजा गुंजा बलि पहिरै, तिन मैं उठति जु छवि की लहरै।
कमल-दलन की काछनि काछे, धातु विचित्र चित्र तन आछे।
चटकीलौ पट कटि-तट लसै, नील-पीत दामिनि कहुँ हँसै।
३५ सखन मध्य दिखि राजत कैसे, रंगभूमि बिच नटवर जैसें।

अन्याहु

हे सखि ! यह जु बेनु रँग भीनौ, इन धौं कवन पुन्य है कीनौ।
अधर-सुधा सरबस जु हमारौ, ताकौ निधरक पीवनहारौ।
अरु दिखि जिन के जल करि पुष्ट, ते सरिता लखियत अति तुष्ट।

तिन मधि नहि बिकसे जलजात, जनु अनंग भरि पुलकित गात ।
अरु दिखि या बन के द्रुम जिते, मधु-धारा धर बरसत तिते । ४०
कहत कि धनि धनि हमरौ बंस, जामैं उपज्यौ यह बर बंस ।
मधुन श्रवत अति हर्ष जु भरे, दृगन तैं जनु आनँद-जल ढरे ।
ज्यौं कुल वृद्ध अपने कुल महियाँ, निरखि निरखि हरि सेवक कहियाँ ।
अति प्रमोद भरि, दृग भरि नीर, सीचत जैसैं सकल सरीर ।

अन्याहु

हे सखि ! बृंदाबन भुवि कीरति, स्वर्ग तैं अधिक भई मुनि ईरति । ४५
जसुमतिसुत-पदपंकज करि कै, पाइहै छबि संपति हिय भरि कै ।
अरु दिखि नँद-नंदन पर कांति, परसत नील मेघ की भाँति ।
ता कहुँ आगम घन मानि कै, मुरली-धुनि गर्जनि जानि कै ।
निर्त्तत मत्त मोर छबि छये, अवर बिहंगम चित्र से भये ।
अनत नहिन सुनियत यह बात, यातैं भुवि कीरति बिख्यात । ५०

अन्याहु

हे सखि ! दिखि इहि बन की हरिनी, जदपि मूढ़मति इन की बरनी ।
बेनु-नाद सुनि अति सचु पावति, पतिन सहित चलि हरि पै आवति ।
सुंदर नंद-कुँवर बर बेष, निरखत लगत न नैन निमेष ।
प्रेम सहित अवलोकनि दूजै, आदर सहित हरिहि जनु पूजै ।
हमरे पति जु गोप अति मंद, जब इत ह्वै निकसत नँद-नंद । ५५
तब जौ हम अवलोकन करैं, सहि नहिं परै, अवर जिय धरैं ।

अन्याहु

हे सखि ! अवर चित्र इक चहौ, गगन मैं सुर-बनिता किन लहौ।
बैठी जदपि बिमानन महियाँ, अपने पतिन सौं दै गरबहियाँ।
दृष्टि परे साँवरे अनूप, निपटहि बनिता उत्सव रूप।
६० पुनि सुनि बेनु-गीत-गति नई, कल नहिं परत बिकल ह्वै गई।
लगे जु सर सुमार मार के, खसत जु कुसम कबरि भार के।
धीरज धरे हियै पुनि हरै, नीबी-बंधन खसि खसि परै।

अन्याहु

हे सखि ! देव-बधुन की रहौ, तुम इन गाइन तन किन चहौ।
हरि मुख तैं जु स्रवत है बाल, बेनु-गीत-पीयूष रसाल।
६५ श्रवन उठाइ पिवत है ऐसैं, नैक कहूँ छरि जाइ न जैसैं।
अरु देखहु बछ-बछियन ओर, सुनि कै बेनु-गीत चितचोर।
पियत थनन मुख भरि रह्यौ छीर, चित्र सी रहि गई गैयन तीर।
गाइ-बृषभ बछ-बाछी जिती, हरि तन इकटक चितवत तिती।
दृगन के मग लै मोहन कहियाँ, धरि कै अप अपने हिय महियाँ।
७० पुनि पुनि तहँ परिरंभन करैं, अति सुख आनँद-अँसुवा ढरैं।

अन्याहु

हे सखि ! बन बिहंग किन हेरौ, सुनत जु बेनु-गीत पिय केरौ।
बैठे रुचिर द्रुमन की डारैं, इकटक मोहन बदन निहारैं।
छुवत न फल, न बदत कछु बात, अति सुख उमगत, घूमत जात।
निपट चटपटी सौं मुख चहैं, फल प्रबाल अंतर नहिं सहैं।

मुनि पुनि कर्म फलन तजि जैसैं, अप अपनी श्रुति-साखा बैसैं।　७५
कमल-नयन अवलोकन करैं, फलन के अंतर नहिं सहि परैं।
तैसैई इह बन खगगन जिते, मुनि हौंन के जोग है तिते।

अन्याहु

हे सखि ! चेतन जन की रहौ, ये जु अचेतन ते किन चहौ।
बेनु-गीत सुनि सरिता जिती, उमगि मनोभव बिथकित तिती।
बीच जु भ्रमत भँवर अभिराम, मारत मनहि मसूसे काम।　८०
लै लै अमल कमल उपहार, लहरि भुजन करि ढारहि ढार।
पकरे चहत स्याम के पाइ, जैसैं काम-बिथा मिटि जाइ।

अन्याहु

बन मैं बल अरु सुंदर स्याम, पसु चारत, परसत दिखि घाम।
निरखहु सजनि मेह कौ नेह, छत्र करि लियौ अपनौ देह।
छोह किये डोलत दिन संग, फुही फूल बरपत बहु रंग।　८५
कनक-दंड जिमि दामिनि बनी, छाजति छबि कछु परत न गनी।
सखा भयौ घन घनस्याम कौ, नातौ मानि एक नाम कौ।
जग-आरति हरने, रस-सने, दोऊ आनि एक मे बने।

अन्याहु

हे सखि ! मेह-नेह की रहौ, भील-भामिनी तन किन चहौ।
प्रमुदित इत जु फिरति है सखी, मैं इक इनके मन की लखी।　९०
प्रिया-उरज कुंकुम-रस-पगे, ते कुंकुम हरि पिय-पद लगे।
पदन तैं बन-तृन भूषित भये, ते तृन इन तीयन लखि पये।

तिहिं कुंकुम दिखि बढ़ि गयौ काम, विकल भई भीलन की भाम।
सो कुंकुम मुख-कुचन लगावति, ता करि मनमथ-बिथा सिरावति।
९५ यातैं धनि भीलन की तिया, हसनि कछू तरफरत है हिया।

अन्याहु

देखौ सखी गोबर्धन कहियाँ, परम श्रेष्ठ हरि-दासन महियाँ।
राम-कृष्न-पद परसन करि कै, रह्यौ जु अति आनंदहि भरि कै।
नव नव तृन अंकुर छबि छये, रोम रोम जनु उत्थित भये।
गोप-बृंद गोविंद समेत, आदर सहित सबन सुख देत।
१०० सीतल जल सुंदर, तृन सुंदर, सीतल अति पवित्र गिरि-कंदर।
कंद-मूल-फल, धात विचित्र, अवर अनेक अनेक पवित्र।
तिन करि सेवत सब सुखदाइक, धन्य धन्य गोधन गिरि नाइक।

अन्याहु

हे सखि गिरि गोधन की रहौ, सुंदर नंद-कुँवर तन चहौ।
अद्भुत गोपबेष बर करै, सेली कंध सु मुनिमन हरै।
१०५ ठाढ़े गाइ गहन के काज, किये फिरत ग्वालन कौ साज।
तैसिय रूप-माधुरी सरसै, रंग-रली-मुरली मधु बरसै।
ता करि हरे सबन के हियें, चर कीने थिर, थिर चर किये।
अहो मित्र! इहि बिधि ब्रजगोपी, परम पबित्र कृष्न-रस-ओपी।
बैठि परस्पर बरनत भई, प्रेम-बिबस तनमय ह्वै गई।
११० ता करि बढ़यौ जु प्रेम अनंग, रम्यौ चहति हरि प्रीतम संग।
तब कात्यायनि अर्चन करयौ, पायौ परम उदय रस भरयौ।

'नंद' इकीस अध्याइ यह, ऐसैं सुनि चित चाहि ।
प्रिया-बचन जिमि पीय के, सुनिबौई फल आहि ॥

द्वाविंश अध्याय

बिबि बिंसत अध्याइ सुनि मित्र, बस्त्रहरन मनहरन पबित्र ।
नंद गोप ब्रज की दारिका, अद्भुत अद्भुत सुकुमारिका ।
जदपि समस्त बिबाहित आहि, नंद-सुवन के रूपहि चाहि ।
बिबस भई पति परिहरि परिहरि, करत भई ब्रत हिय हरि धरि धरि ।
हिम रितु प्रथम मास अभिराम, देबी कात्यायनी जु नाम । ५
तिहि पूजन जमुना-तट जाहिं, तहाँ न्हाइ हबिषा कछु खाहिं ।

ब्रत कौ पूर्ब भाग कहत हैं

उठैं बड़े खन चाइन चाइन, बोलत छबि सौं मधुरी भाइन ।

कछुक आगमोक्त भक्त तिन के नाम कहत हैं

प्रेमकला, बिमला, रतिकला, कामकला, नवला चंचला ।
चद्रकला, चंद्रावलि, चंदनि, जग-बंदनि वृषभान की नंदनि ।
कामलता, ललिता, रतिबेलि, रूपलता, चंपकलता एलि । १०
अवर अनेक नहिंन कहि परैं, चंचल नैन मैन-मन हरैं ।
सब दिसि तैं आवति छबि पावति, नूतन मंगल गीतन गावति ।
अमुना बिधि जमुना-तट आवति, अलिसैं करि मन मोद बढ़ावति ।
करि संकल्प सलिल मैं जाइ, मौन धरे बिधि सहित अन्हाइ ।
बहुरि कालिंदी कूलन सरैं, बारू की बर प्रतिमा करैं । १५

दिव्य आभरन, दिव्य दुकूल, चंदन, वंदन, तंदुल, फूल।
प्रीति सहित तिहि अर्चन करैं, पुनि पुनि ताके पाइनि परैं।
अये गवरि! इस्वरि सब लाइक, महामाइ बरदाइ सुभाइक।
देवि दया करि ऐसै ढरौ, नंद-सुवन हमरौ पति करौ।
२० बोली बचन देवि रस भारे, पूर्न मनोरथ होहु तुम्हारे।
कात्यायनि तैं यौं बर पाइ, बहुरि धसी जमुना-जल आइ।
बुड़किन बिहरति अतिछबि झेलति, जनु नव घन गन दामिनि खेलति।
तदनंतर सुंदर नँद-नंदन, चित की पाइ, आइ जग-बंदन।
नीर तीर तैं चीर चुराइ, चढ़े गोबिंद कदबनि जाइ।
२५ लज्जित ह्वै धसि गईं जल गहरें, उठत जु तामैं दुति की लहरें।
बदन बदन छवि दिखि कै भूली, कनक-कमल कलिंदि जनु फूली।
चपल दृगंचल पिय-मन-रंजन, कमल कमल जनु जुग जुग खंजन।
लटन तैं चुवति जु जलकन जोती, जनु ससि छिदि छिदि डारत मोती।
तब बोले हरि तिन तन चितै, हे अवला अब आवहु इतै।
३० आनि कै अपने अंबर गहौ, कत कौ भीत, सीत तन सहौ।
सत्य कहत कछु करत न खेला, आवहु चलि न बिलंब की बेला।
पाछें हू मैं अनृत न कबै, बोल्यौ है ये जानत सबै।
चितै परस्पर तब सब हँसी, बड़ी अँखियन अति छबि लसी।
रूप-उदधि भरि भरि रस आछे, मीन चलत जिमि मीन के पाछे।
३५ सीतल सलिल कंठ परजंत, तहँ ठाढ़ी थर थर बेपंत।
तिन मधि मुग्ध बैस की बाला, ऐंड़ सौं कहति भई तिहि काला।
अहो अहो कान्ह, अनीति न करौ, बलि बलि कछू दई तैं डरौ।

नद-सहरि के पूत रावरे, जानि बूझि जिनि होहु बावरे।
देहु बसन, बरि गई अस हँसी, मरति है सीत सलिल मैं धसी।
पुनि तिन मैं जे प्रौढ़ा आहि, ते बोली हँसि हरि तन चाहि। ४०
हे सुंदर बर ! करहु न हाँसी, हम तौ सबै तुम्हारी दासी।
जो तुम कहहु, सोइ हम करिहै, देहु बसन, बिन काजहि मरिहैं।
जौ न देइहौ रस भाइ सौं, कहिहैं जाइ नंदराइ सौं।
तब बोले ब्रजराज दुलारे, मैं समझे संकल्प तिहारे।
इत आवहु, रंचक न लजाहु, ब्रत कौ फल लै लै घर जाहु। ४५
नंद-सुवन कौ मन हो जैसे, निकसी सब रस-बिकसी तैसें।
परम प्रेम के फदन परी, नद के नदन खेल की करी।
पुनि बोले ब्रजराज दुलारे, पूर्न मनोरथ होहु तुम्हारे।
पै आत्यंतिक नाहिंन ह्वैहै, मन-अभिलाष पाइ पुनि जैहै।
मेरे विषय जु मति अनुसरै, सु मति न बहुरि विषय संचरै। ५०
भुंजित धान जगत मैं जैसे, बीज के काम न आवहि तैसें।
ऐ परि जौ मो इच्छा होई, भूज्यौ बीज निपजि परै सोई।
आगामिनी जामिनी ऐहै, तिन मैं तुमहि बहुत सुख दैहै।
इहि बिधि बरहि पाइ छबि छई, कैसैं हूँ कैसै ब्रज गई।
बसन पये, पै मन नहि पये, मन मनमोहन गोहन गये। ५५

ब्रजतिय कौं दै अपनपौ, कृष्न कमल-दल-नैन।
जगपतिनी अपनी करन, चले अनुग्रह दैन॥

तिन के पति जु भक्ति-रति-हीन, कर्मन बिषय निपट लवलीन।
तिन तन दृष्टि दिये मुसकात, बन के द्रुमन सराहत जात।

६० सखन सौं कहत कुँवर नँदलाल, अहो भोज, अहो ओज रसाल।
अहो सुबल, अर्जुन, अहो अंस, अहो श्रीदामा, बंस अवतंस।
देखहु ये कैसैं द्रुम बने, छत्र से तने, सबै गुन सने।
जिन के तरहर सियरे सियरे, फल पियरे पियरे अरु नियरे।
दल करि फल करि, फूलन करि कैं, बलकल करि, अरु मूलन करिकै।
६५ पर काज ही सबै कछु जिन कौं, धनि है जग मैं जीवन तिन कौं।
बात-बरष अपने-तन सहैं, काहू सौं कछु दुख नहिं कहैं।
बैठत आनि छाँह हम सरसे, घाम मैं सुदर सीतल घर से।
ऐसैं कहत कहत छबि छये, बल समेत जमुना-तट गये।
पहिले जल गाइन कौं दियौ, ता पाछे आपुन पय पियौ।
७० बिंदि बिंसत अध्याइ यह, सुनै जु हित चित लाइ।
बनु देखे खग-अवलि जिमि, पापावलि उडि जाइ॥

त्रयोविंश अध्याय

अब सुनि त्रयबिसत अध्याइ, द्विज अरु द्विजपतिनिन के भाइ।
ठाढे हुते जमुन के तीर, बल अरु सुंदर बर बलबीर।
श्रीदामादि ग्वालगन जिते, आरत भये छुधा करि तिते।
बस्त्रहरन हित हरि के संग, देखन गोपबधुन के रंग।
५ भोर भये खन उठि उठि धाये, भोजन कछू लेत नहि आये।
यातैं भूखे हैं ब्रजबाल, आये तहँ जहँ मोहनलाल।
अहो बलराम अतुल बलधाम, हो घनस्याम, परम अभिराम।

भूख लगी भिया उद्यम करौ, प्रान प्रहारनि पापिनि हरौ।
जगपतिनीन अनुग्रह दैन, बोले तब हरि करुना-ऐन।
इत ये जाग्यक जग्यहि करैं, स्वर्ग-काम-हित पचि पचि मरैं।　१०
तिन पै जाहु, न तनक डराहु, अरु जाचंग्या तैं न लजाहु।
लीजहु जाइ हमारौ नाम, बल अरु, बल भैया घनस्याम।
ये ठाढ़े दोऊ तरु तरैं, तुम सौं कछू प्रार्थना करैं।
जौ न देहिं, वे रिस भरि जाहि, लाज तौ हमहि, तुमहिं तौ नाहिं।
गये जग्य जहँ थर थर डरतै, बहुत भांति दंडौतन करतै।　१५
अंजुलि जोरि डरात डरात, कहन लगे बिप्रन सौं बात।
हो भूदेव ! सुनहु इत हम पै, राम-कृष्न करि पठये तुम पै।
भोर के आये गोधन संग, खेलत खेलत अपने रंग।
घर तैं कछु भोजन नहिं लाये, भूखे हैं, अब तुम पै आये।
श्रद्धा होइ तौ ओदन दीजै, धर्मबिरुद्ध करम कत कीजै।　२०
कहँ यह हरि ईस्वर कौ जचिबौ, कहँ वह द्विजन कौ मद करि मचिबौ।
सुनत न सुनैं, भरे अभिमान, जनु इन द्विजन के नैन न कान।
पुनि जब भौंह अमेंठन लागे, तब ये ग्वाल-बाल डरि भागे।
जिन कर्मन करि अधिक कलेस, फल अति तुच्छ मिटै न अँदेस।
तिन मधि मूढ़ धरि रहे आस, छुयौ न अमृत पाइ अनयास।　२५
ह्वै निरास बालक उठि आये, समाचार हरि प्रभुहि सुनाये।
नंद-कुँवर तब हर हर हँसे, हँसत जु रदन बदन मैं लसे।
अस कछु जगमग जगमग होइ, मानिक ओपि धरे जनु पोइ।
सखन सौं बहुरि कहत रस-सने, रे भैया न होहु अनमने।

३० अरथी ह्वै बैरागहि आवै, सो अरथी अरथी न कहावै।
जाचक ह्वै जग मैं अस कौन, जचत अनादर भयौ न जौन।
ऐसै लोक-रीति दिखराइ, पुनि बोले प्रभु मृदु मुसकाइ।
अहो मित्र इन की तिय जिती, हम कौ नीके जानत तिती।
देहमात्र वे बसत गेह मैं, सदा मगन अद्‌भुत सनेह मैं।
३५ तिन पैं जाहु, लजाहु न भिया, समझौगे तब तिन के हिया।
सुभग-सुगध, स्वच्छ बर-व्यंजन, दधि-ओदन मोहन मन-रंजन।
दैहैं जात, विलंब न लैहैं, अपने करन लिये ही ऐहैं।
जगपतिनीन के गृह हैं जहाँ, सकुचत सकुचत गवने तहाँ।
राजति कंचन पीढ़नि बैठी, सोहति सुदर भौंह अमेठी।
४० पहिरे अद्‌भुत मनिमय भूषन, अद्‌भुत बसन नहिंन कछु दूषन।
डहडहे बदन निरखि सिसु भूले, कंचन-जलज अँगन जनु फूले।
द्विजपतिनिन के पाइन परे, बातैं कहत महा मुद भरे।
हे द्विजपतिनि ! कान्ह मनमोहन, आये इतहि गाइ-गन-गोहन।
छुधित आहि कछु भोजन दीजै, सखन सहित अघाइ सो कीजै।
४५ जिन के दरसन हित अरबरती, पतिन सौं बिनती करती अरती।
जुग जुग भरि निसि-वासर भरती, नैंनन नींद नैंक नहिं परती।
ते अच्युत ब्रजराज दुलारे, निकटहि पाये प्रानपियारे।
चारि प्रकार बिचित्र सुब्यंजन, भक्ष्य, भोज्य, चुस, लिह, मनरंजन।
लै चली कंचन भाजन भरि भरि, सुत-पति तिन सौं अरि अरि लरि लरि।
५० रोकि रहे सुत-पति अपनौ सौं, मानत भई ताहि सपनौ सौं।
जैसैं उमगत सावन-सरिता, कौन पै रुकहि प्रेम-रस-भरिता।

जमुना निकट सुभग इक बाग, सब असोक तरु अति बड़भाग।
इक तरु तरे कुँवर घनस्याम, ठाढे कोटि काम अभिराम।
पीतबसन बनमाल रसाल, मोरचंद छबि छाजत भाल।
सखा अंस बाईं भुज दियें, केलि-कमल दच्छिन कर कियें। ५५
अद्भुत गुनगन सुनि हिय धरि धरि, रही हुती उत्कंठा भरि भरि।
सो साच्छात प्रगट रस भरे, अति रोचन लोचन-पथ परे।
दृग-रंध्रन करि अंतर लये, तहँ प्रभु कौं परिरंभन दये।
सुखित भईं तिहि छिन सब ऐसैं, तुरिय अवस्था पाइ मुनि जैसैं।
तब बोले हरि हे बड़भागि! नीके आईं भरि अनुराग। ६०
प्रतिबंधक जे हुते तिहारे, ते तुम तिन से लघु करि डारे।
मो दरसन हित इत अनुसरी, उचित करी, अनुचित नहिं करी।
जे जन निपुन जथारथ बेदी, स्वारथ अरु परमारथ भेदी।
ते मो विषै भक्ति-रति करैं, फल न कछू रंचक चित धरैं।
हम सब ही के आत्मा आहि, तत्वबेत्ता लेत हैं चाहि। ६५
प्रान, बुद्धि, मन, इंद्री, देह, पुत्र, कलित्र, मित्र, धन, गेह।
जाके अध्यास तैं अचेत, प्रिय लागत अपनपै समेत।
सो तुम करि हम पाये सबै, धनि धनि धन्य भईं तुम अबै।
अब तुम देवि जजन प्रति जाहु, द्विज-जग्यन कौं करहु निबाहु।
तुम करि सत्र समापति करिहैं, अवर न कछू तनक मन धरिहैं। ७०
कहन लगीं तब सब द्विज तिया, सुनि यह बात बहकि गयौ हिया।
हे सुंदर वर सरसिज-नैंन, जिनि बोलहु अस करकस बैन।
अपनी प्रतिग्या तन किन चहौ, बेद-पुरानन मैं ज्यौं कहौ।

मन-क्रम-वचन जु चेरौ मेरौ, सो भव-भवन न करिहै फेरौ।
७५ हम पद-पंकज प्रापति भई, सहजहि सब उपाधि मिटि गई।
पद अवसिष्ट जु परम रसाल, डारहुगे तुम तुलसी-माल।
सो नित अलक रलक मैं धरिहैं, सरन परी पद-अर्चन करिहैं।
अहो अरिंदम, नंद के दारक ! काम, लोभ, मद, मोह बिदारक।
अब तौ पति, सुत, बांधव जिते, हमहिं तौ तनक छुवहिं नहिं तिते।
८० तातैं अवर गति न हरि हमरी, दास्य देहु, दासी भई तुम्हरी।
तब बोले ब्रजराज के नंदन, जग-बंदन, जग-फंद-निकंदन।
पति, सुत, मित्र, सुहृदजन जिते, नहिंन असूया करिहैं तिते।
लोक तौ सबै हमारे किये, रोकि रहे हम सब के हिये।
अरु देखहु ये देव जितेक, हमरी आग्या मध्य तितेक।
८५ बुरौ जु मानै सो वह कौन, सर्बबियापी हम जिमि पौन।
प्रेम बृद्धि जौ कीनौ चहौ, तौ तुम मो तैं न्यारी रहौ।
बिरह मैं चित्त समाधि लाइहौ, तुरतहि तब मो कहुँ पाइहौ।
ऐसैं जब हित सौं हरि बरनी, घर आई तब सब द्विज घरनी।
किनहूँ नहिंन असूया कीनी, सुत-पति सबन भुजन भरि लीनी।
९० तिन मैं इक जु हुती पति गही, जान न पाई, बहुत पचि रही।
तब नँद-सुवन सुने हे जैसैं, अपने हिय मैं धरि कै तैसैं।
तजत भई तिहि तन कहुँ ऐसैं, जीरन पट कोउ डारत जैसैं।
रे पिय जहाँ ममत है तेरौ, यह लै अब का करिहै मेरौ।
दिब्य देह धरि कै उहि घरी, सबन तैं आगे सो अनुसरी।
९५ तिन सायुज्य परम गति पाई, उन के संग फिरि न घर आई।

जगपतितिन जे व्यंजन आने, जाहि कै गोप-गोबिद अघाने ।
द्विज जु कहावत जे अति बड़े, तियन की गतिहि देखि सब गड़े ।

'नंद' जु गोबिंद भक्ति बिन, बड़ौ कहावत कोइ ।
बुझै जु दीपक ज्यौं बड़ौ, कहियत वह गति सोइ ॥

तियन की गतिहि निरखि द्विज जिते, पश्चाताप करत भये तिते । १००
जो प्रभु निगम अगम करि गाये, जैंवन मिस ते हम पै आये ।
धिग धिग हम, धिग धिग ये क्रिया, धिग धिग बिप्र जन्म धिग जिया ।
धिग बहुग्यता, धिग सब इषै, बिमुख जु कृष्न अधोक्षज बिषै ।
यह प्रभु की माया मोहनी, जोगीजन-मन की खोहनी ।
जा करि हम द्विज ह्वै मद भरे, गुरु कहाइ सठ भठ मैं परे । १०५
जिन के न कछु सोच आचार,गुरुकुल सेव न तत्त्व बिचार ।
नहिं जप, नहिं तप, नहिं सुभक्रिया, कर्कस, कुटिल, जटिल नित हिया ।
तिन के भई भक्ति-रति जैसी, देखी-सुनी न कित हूँ ऐसी ।
सम्यक द्विज कर्मन करि भरे, ते हम है झख मारत परे ।
हम करि जदपि सुन्यौ अवतार, जदुकुल बिषै हरन भू-भार । ११०
पुनि आये इत करुना-कंद, जाचन पूरन परमानंद ।
ओदन कहा चाहियै तिन के, कमला पाइ पलोटत जिन के ।
सुमिरि सुमिरि ग्वालन की बात, करन मीजि सब द्विज पछितात ।
पुनि कहै हम हूँ उत्तम भये, मन के सब संसय मिटि गये ।
जिन की ऐसी तिय बड़भागि, तन-मन-भरी कृष्न-अनुराग । ११५
जिहि अनुराग हमारे हिये, चपरि कै कमल-नैन मैं किये ।

२०

त्रयबिसत अध्याइ यह, सुनि नीके सुख-कंद ।
जप, तप, ब्रत, संयम न कछु, कृष्न-भक्ति बिन 'नंद' ।।

चतुर्विंश अध्याय

चतुर्बिस अध्याइ अनूप, सुनि हो मित्र ! परम सुख रूप ।
जामैं गिरि गोबर्धन पूजा, अति पुनीत अस गीत न दूजा ।
द्विजन कौं क्रिया गर्ब सब हर्यौ, चाहत इंद्रहि निर्मद कर्यौ ।
इंद्र कौ जग्य करन जब लगे, गोपी-गोप महा मुद पगे ।
५ पूछत हरि अजान से भये, मंद मुसकि सु नंद ढिंग गये ।
कहहु तात यह बात हैं कहा, भवन भवन आनंद है महा ।
कवन सु फल, काके उपदेस, कवन देवता सेस-सुरेस ।
मो मन अति अभिलाष है कहौ, लरिका जानि चाइ जिनि रहौ ।
यह करनी तुम सास्त्र तैं पाई, ऐ किधौं परंपरा चलि आई ।
१० कैधौं लोकरूढ़ है तात, मो सौं कहौ कहा यह बात ।
नंद जु कहत मेघगन जिते, मघवा के वसवर्त्ती तिते ।
अपनौ जीवन जग मैं बरषै, दुख करषै, सब जंतुन हरषै ।
यातैं यह जु पुरंदर आहि, जजत हैं जग्यन करि नर ताहि ।
हम हूँ सब यह तिहि उद्देस, करत हैं ज्यौं रस देइ सुरेस ।
१५ ता करि अर्थ, धर्म अरु काम, पावहिं सबै पुरुष बिश्राम ।
परंपरा चलि आयौ धर्म, अहो तात नहिं अब कौ कर्म ।
जो नर याकौं नाहिन करैं, लोभ-द्वेष-भय तैं परिहरैं ।

सो नर नहिं पावै कल्यान, कहत हैं वेद पुरान सुजान।
महानंद, उपनंद, सुनंद, निजानंद अरु बाबा नंद।
ऐसैं करि जब सबहिन कह्यौ, सब के ईस्वर नाहिन गह्यौ। २०
सुरपति अति श्रीमद करि छयौ, महा गर्व पर्वत चढ़ि गयौ।
तहँ तैं ता कहुँ डारयौ चहैं, करम की गति लिये बातैं कहैं।
ऐ परि नहिं प्रमान ये नित ही, सुरपति मान-भंग के हित ही।
इंद्रहि रिस दिवाइ दंद सौं, बोले मंद मुसकि नंद सौं।
अहो तात यह देव न कोई, करम की गति जु होइ सो होई। २५
कर्महि करि उपजत ये जंत, कर्महि करि पुनि सब कौ अंत।
कुसल-छेम, सुख-दुख, भै-अभै, होत हैं ये कर्मन करि सबै।
रज गुन करि उपजत है मेह, बरषत सब ठाँ नहिं संदेह।
ऊसर पर, पर्वत पर परै, ते सबै कहाँ जग्य है करै।
हमरे नहिं पुर-पट्टन ग्राम, बन, गिरि, नदी, निकट बिश्राम। ३०
जहँ सुख तहँ हम बसहिं निसंक, करिहै कहा पुरंदर रंक।
एक करहु जग्यन कौं जिती, करि ते सुभ सामग्री तिती।
और कछू जिय मैं जिनि आनौ, मेरौ कह्यौ सत्य करि मानौ।
सुनतहि मोहन मुख की बानी, भले भले कहि सबहिन मानी।
कुल-मंडन सपूत सुख-दैना, सब के जीवन, सब के नैना। ३५
रचहु बिबिधि परकार सु ब्यंजन, सुभग, सुगंध, स्वच्छ, मनरंजन।
पुवा, सुहारी, मोदक भारी, गूझा, रस-मूझा, दधि न्यारी।
मिश्री मिश्रित पायस करौ, बर संजाव भाव बिस्तरौ।
मुद्गा दाली, घृत की ब्याली, रस के कंदर सुंदर साली।

४० जैसैं नंद-सुवन उच्चरचौ, प्रीति सहित तैसैं ही करचौ।
पूजन चले गोप गिरि गोधन, आगे करि लिये अपने गोधन।
कंचन-सकटनि चढ़ि चढ़ि गोपी, चलो जु तिनहुँ सबै बिधि लोपी।
सुंदर नंद-कुँवर गुन गावति, भाग भरी नव राग रिझावति।
हरि धरि गिरि कौ सुंदर रूप, बैठे बिकसि सु निकसि अनूप।
४५ गिरि के द्वै द्वै रूप बताये, इक जड़, इक चैतन्य सुहाये।
गोबरधन की मूरति दूसरी, श्री गोबिंदचंद हित कुसरी।
दिखि कै गोप महा मुद भरे, नमो नमो कहि पाइनि परे।
तिन के संग रंग हरि करै, अपने पाइनि आप ही परै।
जेतिक भोजन ब्रज तैं आयौ, गिरि रूपी हरि सिगरौ खायौ।
५० भई प्रतीति, भरे मुद भारी, देहि प्रदच्छिन नर अरु नारी।
फिरत जु छबि बाढ़ी तिहि काल, गिरि गरे जनु मनि-कंचन-माल।
कहन लगे देखौ तुम्हरे काजा, प्रगट भयौ यह गिरिन कौ राजा।
मेघरूप ह्वै बरषा बरषै, कालरूप ह्वै यह आकरषै।
बिछी, व्याल, बृक, केहरि जिते, याके डर छ्वै सकत न तिते।
५५ ऐसैं करि पुनि पाइनि परे, घर आये अति आनँद भरे।

चतुर्बिंस अध्याइ यह, जु कोउ चतुर सुनिहै जु।
जे दिन बीते अनसुने, तिन कौं सिर धुनिहै जु॥

पंचविंश अध्याय

अब सुनि पंचबिस अध्याइ, पंचबिस निर्मल ह्वै जाइ।
सुनि कै इंद्र भरयौ रिस भारी, लाग्यौ देन सबन कौं गारी।
धन-मद-अंध नंद कौ बेटा, मो भयौ हमरे मख कौ मेटा।
ताके बल करि मो सौं घाती, रहिहै गोप कहौ किहि भाँती।
ज्यौं कोउ उरन पूँछि कर धारै, तरयौ चहै सठ सिंधु अपारै। ५
झूठ की जो कोउ नाउ बनावै, मूढ़ तहाँ लै कुटँब चढ़ावै।
ऐसैं गोपन कृष्न भरोसे, महा बैर कीनौ है मो से।
अब देखौ कैसी सिखलाऊँ, गोकुल गाँवहि खोदि बहाऊँ।
बोले मेघन के गन सोइ, जिन के जल जग परलै होइ।
परमातम पर पीर के नाइक, कृष्न कमल-लोचन सुखदाइक। १०
छाहन कहत कि तिन की कुटी, इंद्र मूढ़ की चारयौ फुटी।
'नंद' कहत श्रीमद सब ऐसैं, सुनैं न सुत कुबेर के जैसैं।
उमगे घन-गन रिस भरि भारे, ताते, राते, पियरे कारे।
तड़तड़ाहि तड़ि बज्र से परैं, घरहराहिं घन ऊधम करैं।
चली अपरबल बात अघात, उड़े जात कहि बनति न बात। १५
परन लगी नान्ही बुँदबारी, मोटे थाँभन हू तैं भारी।
तब ब्रजजन जित तित तैं धाये, सुंदर नंद-कुँवर पै आये।
धौरी धौरी धेनु जु दौरी, बड़ी बूँदन के दुख बौरी।
नमित सु ग्रीव, पुच्छ उच्च किये, छबिली छतिन तर बछरन लिये।
गोपिन पै कहि बनत न बात, थर थर कपत कोमल गात। २०

हो श्रीकृष्न कृष्न, जगनाइक ! असुभहरन, सुभकरन सुभाइक ।
गोकुल के तौ तुम ही नाथ, जैसैं मीन दीन के पाथ ।
कुपित भयौ सुरपति मतवारौ, हमरौ अवर कवन रखवारौ ।
बोले हरि बिलोकि तिन माहीं, कत भय करत, इहाँ भय नाहीं ।
२५ मुसकत मुसकत स्याम सुहाये, छबि सौं चलि गिरि गोधन आये ।
झट दै उचकि लियौ गिरि ऐसैं, साँप बैठना कौ सिसु जैसैं ।
गोपी-गोप, गाइ-बछ जिते, अपने सुख रहे तिहि तर तिते ।
बाम हस्त पर गिरि अव बन्यौ, फूल कौ जनु कि छत्र है तन्यौ ।
ललित त्रिभंगी अँग किये ठाढ़े, मुरली अधर धरे छबि बाढ़े ।
३० गिरि-मूल तैं जु गिरि की धात, गिरि गिरि परी साँवरे गात ।
अरुन, पीत, सित अंग सुहाये, फागु खेलि जनु अब ही आये ।
मित्र कहत अचरिज मो हिये, ठाढ़े हरि त्रिभंग तन किये ।
दुहुँ कर बेनु बजावत नाथ, सखा-मंडली राजत साथ ।
'नंद' कहत अचरिज जिनि मानि, गिरिवरधर अचरिज की खानि ।
३५ बाम हस्त लाघवता ऐसी, तरल अलात-चक्र-गति जैसी ।
कृष्न-कलपतरु मैं जहँ बनै, सब सुख बरसत, बर रस सनै ।
तब इक उपमा मो मन भई, कही कहति, किधौं उपजी नई ।
परबत पर तरु होत हैं घने, तरु पर परबत होत न सुने ।
जलद जु बरषन लागे पानी, कह कहियै, कछु अकथ कहानी ।
४० महा प्रलै कौ जल है जितौ, गोबरधन पर बरस्यौ तितौ ।
ता पर नग-खग अरु तरु बेली, तिन पर फुही न परति अकेली ।
इन्द्रहु अपने बज्र चलाये, पातन लगि तेऊ नहिं आये ।

सात दिवस अद्भुत झर ठान्यौ, ब्रजबासिन तनकौ नहिं जान्यौ ।
सुंदर बदन बिलोकन आगैं, भूख प्यास उर कौं नहिं लागै ।
निकसे तब जब गिरिधर भाख्यौ, गोबरधन फिरि तहँई राख्यौ । ४५
प्रेम-भरी बनिता जुरि आई, वारहि अभरन लेति बलाई ।
चूमति बदन जसोमति मैया, इत घुरि रह्यौ बड़ौ बल भैया ।
नंद परम आनंदहि पाइ, पूतहि रह्यौ छती लपटाइ ।
मुनिबर, सुरबर, सिधबर जिते, बरषत कुसुम भरे मुद तिते ।
दुंदुभि-धुनि, दुर-धुनि हिय हरैं, जै जै धुनि पुनि मुनिवर करैं । ५०
गावत गुन गंधर्ब सु गाइन, नृतत अपछरा चाइन चाइन ।
तिन मधि यह अमरन की रानौ, हौ रानौ पै निपट खिसानौ ।
हरि दिसि तकि, अपनी दिसि तकै, सुरन मै बदन दिखाइ न सकै ।
करन मीड़ि पछितात है ऐसैं, सुरापान करि द्विजबर जैसैं ।
तदनंतर गोपी अरु गोप, ओपे परम ओप की ओप । ५५
लोकन लै निज लोकन चले, रंगन रले, लगत अति भले ।
तिन मैं गोप-बधू सुख बरसैं, नूतन गीतन मरमन परसैं ।
तिन आगे हरि अरु बलराम, आवत कर जोरे छबि-धाम ।
कछुक कहत सब के जिय हरते, पुहुपन पर पद-पंकज धरते ।
खेल सौं खेलि कै इहि परकार, ब्रज आये ब्रजराज-कुमार । ६०

बल अनुजहि जु मनुज किये, जानै जग मैं कोइ ।
अहो 'नंद' इहि इंद्र जिमि, दई बिगारै सोइ ॥
पंचबिस अध्याइ यह, यौ हिय मैं धरि राखि ।
रसिक भक्त बिन आन सौ, 'नंद' न कबहूँ भाखि ॥

षड्विंश अध्याय

अब सुनि षडविंसत अध्याइ, नंद गरग के बचन सुनाइ।
समाधान गोपन कौ करिहै, बाल-चरित-मधु पुनि बिस्तरिहै।
अद्भुत कर्म कुँवर कान्ह के, निरखि गोप अति सब चकमके।
विस्मय भये, महा छबि छये, मिलि कै नंद महर ढिंग गये।
५ अहो नंद यह तुम्हरौ तात, यामैं सब अचरज की बात।
क्यौं बूझियै जनम हम माहीं, हम गँवार या लाइक नाहीं।
कहँ यह सात बरस कौ बारौ, कहँ वह गिरि गोबरधन भारौ।
कर करि उचकि लियौ वह ऐसैं, मद गजराज कमल कौं जैसैं।
अरु जब प्रथम बैस बर बारी, आँख्यौ नाहिन हुती उघारी।
१० आई जब जु बकी तक तकी, देति भई बिष, नहिं कछु सकी।
पय सौं ताके प्रान मिलाइ, जैसैं काल ऐन लै जाइ।
पुनि वह सकट विकट भर भरयौ, तामैं आनि असुर इक अरयौ।
तनक चरन ऐसैं करि करयौ, तब वह सकट उलटि ही परयौ।
पुनि जब एक बरष कौ भयौ, तृनावर्त्त उड़ि लै नभ परयौ।
१५ कैसैं कंठ घोटि कै मारयौ, बहुरयौ आनि सिला पर डारयौ।
अरु जब चोरी माखन खात, पकरे बाँधे जसुमति मात।
जमलार्जुन मधि आइ सुभाइ, कैसैं गिरि से दिये गिराइ।
अरु वह बत्सरूप ह्वै आइ, कैसैं पकरे पिछले पाइ।
दियौ फिराइ, उपर ही मरयौ, किलक कपित्थ साथ लै परयौ।
२० बकी अनुज बक बछरन चारत, आयौ मबन सँघारत मारत।

करकर चौंच बिदारचौ कैसैं, चीरत कोउ पटेरहि जैसैं।
धेनुक खर अति बल कलमल्यौ, बलदाऊ कैसैं दलमल्यौ।
ताके बंधु डेल से करे, ऊँचे फल तिनहूँ करि झरे।
गोप बेष करि असुर प्रलंब, कैसैं गयौ न लग्यौ बिलंब।
पसु अरु पसुप दवानल माहीं, चकित भये जित-कित ह्वै जाहीं। २५
कैसैं राखि आपने लये, अगिनिहि तच्छन भच्छन करि गये।
अरु वह काली गरल बिसाली, ताके फन पर चढ़ि बनमाली।
तांडव नृत्य नचे सो कैसै, देखे-सुने न कितहूँ ऐसैं।
जमुना कैसै निर्मल भई, मानौं बहुरि नई करि छई।
अहो नंद ! ब्रजजन हैं जिते, नर-नारी पसु-पंछी तिते। ३०
तेरे सुत सौं सब की प्रीति, कोउ सुभाइ कछु ऐसिय रीति।
संका उपजत इहि तन चाहि, जैसैं सब कौ वेत्ता आहि।
कत यह सात बरस कौ सबै, फूल सौ उचकि लियौ गिरि तबै।
यातैं संका उपजत महा, कहौ नंद सो कारन कहा।
तिन के समाधान ब्रजराइ, कहे गरग के बचन सुनाइ। ३५
नामकरन मधि लच्छन लहे, अरग-अरग दै मो सौं कहे।
याके चरित परत नहि बरने, हिय-हरने जग-मंगल-करने।
उज्जल अरुन और इक रीत, अब श्री कृष्न सु परम पुनीत।
पूरब जन्म कहूँ सुत तेरौ, पूत भयौ है वसुदेव केरौ।
तातैं बासुदेव इक नाम, पूरन करिहैं सब के काम। ४०
और बहुत तव सुत के नाम, सब गुन-धाम परम अभिराम।
रूप अनंत, गुन-कर्म अनंत, गनत गनत कोउ लहै न अंत।

अरु यह बहुत श्रेय कौं करिहै, तुम्हरी सबै आपदा हरिहै।
जो यासौ करिहै अनुराग, तिन सम अवर नहिंन बड़भाग।
४५ अति परिभव करि सिधिनि कैसैं, हरि अनुसरि नर सुर भयौ जैसें।
नाराइन मधि गुन हैं जिते, तेरे सुत मैं झलकत तिते।
श्री, कीरति, संपति रसमई, नाराइन हू तैं अधिकई।
यातैं याके करमन माहीं, रंचक बिस्मैं करियै नाहीं।
सुनि ये बचन नंद के नये, गोप सबै गत-विस्मय भये।
५० षर्डविसत अध्याइ यह, षर्डबिसत जु अनूप।
सो गिरिधर प्रभु नंद के, दसयें आश्रय रूप।।

सप्तविंश अध्याय

अब सुनि सप्तविंस अध्याइ, जामैं इंद्र मंद लजि जाइ।
बिनती करि, परि हरि के पाइ, जैहै घर अपराध छिमाइ।
अद्भुत कर्म कान्ह जब करयौ, छत्राकार महा गिरि धरयौ।
ऐसैं अरि तैं लयौ ब्रज राखि, बोले सुर मुनि जै जै भाखि।
५ तब वह सुररानौ बिलखानौ, आयौ कितहूँ तैं बिररानौ।
लोकन मुख दिखाइ नहिं सकै, नंददुलारेहि न्यारे हित कै।
तनक कहूँ एकांतहि पाइ, धाइ आइ हरि लै रह्यौ पाइ।
रवि सम मुकुट चरन पर लुठै, पुनि पुनि पगनि घुरै नहिं उठै।
देख्यौ-सुन्यौ प्रभाउ प्रभू कौ, गिरि गयौ गर्ब जु लोक तिहू कौ।
१० क्रम क्रम उठयौ सु थर थर डरै, अंजुलि जोरि स्तुती अनुसरै।

हो प्रभु सुद्ध तत्वमय रूप, एक रूप पुनि नित्य अनूप।
रज गुन, तम गुन, ये सब डरैं, तुम कहुँ दूरि परे तैं परे।
हम रज गुन, तम गुन करि भरे, अंध दुर्गंध गर्ब-मद-भरे।
कहँ तुम निज आनँद-रस-भरे, कित हम लोह, मोह, मद-भरे।
दुष्ट-दमन तुम्हरौ अवतार, हे अद्भुत ब्रजराज-कुमार। १५
परम धरम रच्छा जु करत हौ, हम से खलन कौ दंड धरत हौ।

पूर्व पक्ष

जौ कहौ सक्तिवान अस कौन, तुम कौ दंड धरि सकै जौन।
तुम तौ त्रिभुवन-कारन, पालक, हम ब्रजजन गोपालक बालक।
तहाँ कहत हँसि सुरपति बैन, हो श्रीकृष्ण कमल-दल-नैन।
जगत-जनक, गुरु-गुरु, तुम स्वामी, सब जंतुन के अंतरजामी। २०
तुम ही महा दुरासद काल, धारे दंड प्रचंड कराल।
तुम तौ उचित दंड कौ धरचौ, मो से उन्मद कौ मद हरचौ।
जौ कहौ तुम्हरौ हम कहा कियौ, ब्रज अपनौ राखि है लियौ।
तहाँ कहत सुरपति हो नाथ, तुम्हरे तनक खेल के साथ।
मो सन कौ जु महा अभिमान, मर्दन होत जानि-मनि जान। २५
नहिं जान्यौ तुम्हरौ परभाव, मत्त भयौ सुरराव कहाव।
मंद बुद्धि हौ निपट असाध, छमा करहु मेरौ अपराध।
अब प्रभु मो पै ऐसैं ढरौ, ऐसी असत मति बहुरि न करौ।
श्रीमद करि जु अंध ह्वै गयौ, मनु अंजन रंजन तुम दयौ।
तुम ईस्वर गुरु आतम अपने, और सबै रजनी के सपने। ३०

ऐसैं अस्तुति सरसिज-नैंन की, कीनी इंद्र अभय-पद-दैन की।
तब बोले हरि ढरि इहि भाइ, मधुर वचन, मधुरे मुसकाइ।
अहो अमर बर हो बड़भाग, मैं मेट्यौ जु रावरौ जाग।
ह्वै गयौ हुतौ निपट मतवारौ, श्रीमद-मान-पान करि भारौ।
३५ भूलि गये हे हम तुम ऐसैं, पुनरपि काज न ह्वैहै जैसैं।
गर्ब करौ जिनि भूलि कोउ, गृह-जन-धन कौं पाइ।
'नंद' इंद्र तैं को बड़ौ, दीनौ धूरि मिलाइ।।
तदनंतर सुरभी इत आइ, बंदे नंद-सुवन के पाइ।
जग मैं कामधेनु हैं जिती, आई ताके गोहन तिती।
४० स्तुती करति हैं, नैंन भरति हैं, पुनि पुनि प्रभु के पाइ परति हैं।
हो श्री कृष्न अमित परभाव, वलि कीनौ इहि सरल सुभाव।
इंद्रहि मंद तौ तुम ही करे, अजहूँ मत्त न डर उर धरे।
हती हुती हरि बिन हत्यारे, राखी सुदर कान्हर वारे।
बावरौ हुतौ रह्यौ यह मंद, बलि बलि तुम कहुँ करिहैं इंद।
४५ गाइ-विप्र देवता जितेक, तुव पद-पंकज परत तितेक।
अब तैं हमरी रच्छा करहु, ऐसै इंद्र बिना ही सरहु।
अभिषेक कौ करन जगमगी, डोलति सुरभि प्रेम रँगमगी।
अपनें पै कचन-घट भरैं, सुभग सुगंध सरस सौं अरैं।
गगन गंग कौ जल नवरंग, आये कर करि अमर ते अंग।
५० कंचन-आसन पर ब्रज-चंद, बैठारे जब सब सुख-कंद।
तिहि छिन गन गंधर्ब जितेक, बिद्याधर चारन जु तितेक।
लगे जु प्रेम विमल जस गावन, जिन के सुनत होइ जग पावन।

नचत अप्सरा अति मुद भरी, जनु नग-जरी छटन की छरी।
अमर नगर तैं बरषत फूल, सब के हिये समात न मूल।
हौन लगे अभिषेक जु महा, तिहि छिन की छबि कहियै कहा। ५५
कुटिल अलक तें चुवत जलकनी, वदन की दुति पुनि परति न गनी।
जनु अंबुज-रस अलि अनियारे, मुख भरि भरि डारत मतवारे।
धर्‍यौ गोविंद नाम अभिराम, पूरन भये सबन के काम।
जब ही इंद्र भये गोबिंद, ठाँ ठाँ उमगे परमानंद।
बूड़ि गई, कछु परति न बरनी, छाई रहति दूध करि धरनी। ६०
सरितन की छबि जात न कही, उमगि उमगि सब रस भरि वही।
जंतु सबै अति हर्षित भये, सहज प्रसन्न दुरमति मिटि गये।
फूले फूल रहत द्रुम जिते, मधुर मधुर मधु बरषत तिते।
अन्न अनेक भाँति ही नये, उपजत भये बिना ही वये।
नगन मध्य नग हुते जितेक, लै लै ऊपर बैठे तितेक। ६५
समुद पुनि उत्तम मोती जिते, कढ़ि कढ़ि बाहिर डारत तिते।
मंद सुगंध पवन नित सरसैं, करकस ह्वै कहुँ तनकन परसैं।
स्वर्ग तैं सुंदर सुंदर फूल, वरष्यौ करत सदा अनुकूल।
इंद्र-गोविंदहि दै अभिषेक, सुर, मुनिगन, गंधर्व जितेक।
आग्या पाइ चले निज ओक, सुखित भये तब ही सब लोक। ७०

सप्तविस अध्याइ यह, इंद्र भये गोविंद।
'नंद' नैक इहि गाइ धौं, को है कलि-मल मंद।

अष्टविंश अध्याय

अब सुनि अष्टविंस अध्याइ, पैहौ जहाँ निरोध के भाइ ।
सुरपति उनमद कौ मद हरचौ, अब चाहत बरुनहि बस करचौ ।
परमानँद मूरति जो नंद, अरु घर मैं सुत सब सुख-कंद ।
सो एकादसि ब्रत आचरै, हरि इच्छा बिन क्यौं अनुसरै ।
५ एक समै द्वादसि दिखि थोरी, उठे नंद कछु मति भई भोरी ।
सास्त्र के बल तैं अति कलमले, अरुनोदय तैं पहिले चले ।
जाइ जमुन निर्मल जल धसे, तहँ अन्हात नंद कछु लसे ।
उज्जल अंग सु को छबि गनौं, खोरत इंदु कलिंदि मैं मनौं ।
जप-तप कछू करन नहिं पये, बरुन के लोक पकरि लै गये ।
१० ब्रजराज के संग जन जिते, कूकत भये जमुन-तट तिते ।
सुनत उठे मनमोहन लाल, आलस-रस भरे नैंन बिसाल ।
पितु के हित आतुर गति भये, करुनालय बरुनालय गये ।
बरुन निरखि जु उठ्यौ अकुलाइ, पगन मैं लोट-पोट ह्वै जाइ ।
पाछे प्रभु-पूजा अनुसरयौ, डोलत बरुन परम रँग भरयौ ।
१५ उत्तम उत्तम रिधि-निधि जिती, आनि धरी हरि चरननि तिती ।
दुर्लभ दरस दिखि बढ़्यौ जु हेतु, अरप्यौ सब अपनपौ समेत ।
पुनि पुनि माथ नाथ-पग धरै, अजुलि जोरि अस्तुति कछु करै ।
हो प्रभु ! यह जु देह मैं धरचौ, अरु सब अरथ परापति करचौ ।
तव पद-पंकज दरसे-परसे, कौंन पुन्य धौं मेरे सरसे ।
२० अरु संसार असार अपार, सहजहि भयौ जु ताके पार ।

तुम अपने परमातम स्वामी, ब्रह्मरूप सब अंतरजामी।
लोक सृष्टि सिरजत यह माया, तुम तैं दूरि मलमई काया।
हे सरवग्य, अग्य जन मेरे, जाने नांहिन धर्म प्रभु केरे।
तुम्हरे पितहि जु इत लै आये, कछु भाये, कछु मोहिं न भाये।
पुनि पुनि धरत पगन पर सीस, अति प्रसन्न कीने जगदीस। २५
छबिली भाँति अपने घर आये, ब्रज मैं घर घर मंगल गाये।
नंद जु जब बरुनालय गयौ, निरखि विभूति चक्कृत अति भयौ।
पुनि जब सुत के पाइनि परयौ, तब ब्रजराज अचंभे भरयौ।
कहन लग्यौ हिय मैं यह बात, ईस्वर है यह मेरौ तात।
स्वच्छ मुक्ति जो ब्रह्म है कोई, हम कौं सहजहि दैहै सोई। ३०
ऐसैं जब विस्मय करि लसे, तब गोबिंदचंद्र मृदु हँसे।
भक्त मनोरथ पूरन करने, जैसैं बेद-पुरानन बरने।
जिहि गति प्रेरे जोगीजन-मन, जात है क्रम क्रम करि तप कै पन।
संसारी-जन तहँ को गने, काम-कर्म जु अबिद्या सने।
तिहि गति बैठे सब ब्रज लोइ, पूरन तरुन, किरनमय होइ। ३५
प्रथमहि ब्रह्म बिषै अनुसरे, इहि न ब्रह्म घर ता मधि अरे।
देह सहित ब्रह्म देखन गये, तहँ के सुख ते सब अनभये।
तातैं पुनि बैकुंठ सिधारे, तहँ के सुख नीके अवधारे।
मूर्तिवंत जहँ चारौ बेद, बरनत प्रभु के नाना भेद।
अरु कौतुक जे कान्ह ब्रज करे, गिरिबर-धरन अवर रँग भरे। ४०
ते सब गान करत श्रुति जहाँ, नंदादिक सुनि चकि रहे तहाँ।
परी चटपटी सब के मन मैं, कब देखैं इहि बृंदाबन मैं।

मधुर मूर्ति बिन जब अकुलानें, तब फिरि बहुरचौ ब्रज हीं आनें।
मित्र कहत कि ब्रह्म मैं जाइ, पुनि अकुंठ बैकुंठहि पाइ।
४५ बहुरि जु लोकन मैं फिरि आवै, यह संदेह मोहिं भरमावै।
'नंद' कहत कछु जिनि करि चित्र, जिन के मनमोहन से मित्र।
नंद-सुवन दिनमनि सम रूप, ब्रह्म-बियापी जाकी धूप।
बैकुंठ मधि सुक्ख है जिते, सब बृंदाबन ठाँ ठाँ तिते।
अष्टबिसत अध्याइ की, लीला सब सुख-कंद।
५० मुक्ति न मन-मानी जहाँ, फिरि आये ब्रजचंद ॥

एकोनत्रिंश अध्याय

उननीसौ अध्याइ सुनि मित्र, जामैं रास उपक्रम चित्र।
ब्रह्मादिकन जीति कंदर्प, बाढ़्यौ हुतौ वाके अति दर्प।
कियौ चहत अब ताकौ खंडन, जय जय गोपी-मंडल-मंडन।
आगामिनी जामिनी जु हीं, ब्रजभामिनीन सौं जे कही।
५ ते आई जब परम सुहाई, नंद-सुवन दिखि अति मनभाई।
प्रफुलित सरद मल्लिका जहाँ, अवर अनेक कुसुम छबि तहाँ।
जब ही नँद-नंदन मन भयौ, तब हीं उड़प उदय ह्वै लयौ।
अरुन बरन तहँ सोभित ऐसौ, प्राची दिसि तिय कौ मुख जैसौ।
दीरघ काल मिल्यौ है पीय, तिन मनु कुंकुम रंजित कीय।
१० लसत अखंडल मंडल जाकौ, ऐ किधौ है इह बदन रमा कौ।
उझकत कौतुक अपनें रवन कौ, अधिकार न जनु इतहि अवन कौ।

कोमल किरन अरुनिमा नई, कुंजनि कुंजनि प्रसरित भई।
हरिपिय-हिय-अनुराग जु भरयौ, सोई जनु निकसि बाहिरै परयौ।
स्याम रंग सिंगार कौ, अरुन रंग अनुराग।
पीत रंग है प्रेम कौ, ओढ़ै कोउ बड़भाग।। १५
तब लीनी कर-कंजनि मुरली, खर्जादिक जु सप्त सुर जुरली।
सोइ जोग-माया गुन-भरी, लीला-हित हरि आश्रित करी।
सिव मोहिनी जु वह मोहिनी, वा तैं मुरली सरस सोहिनी।
बहुरयौ अधर-सुधासव रली, मधुर मधुर गति ब्रज कहुँ चली।
मुनी सबन पै तेई आई, जे हरि मुरली माँझ बुलाई। २०
प्रीतम-सूचक सब्द सुढारक, सुनतहि इतर राग बिस्मारक।
दुहन चली जु दह्यौ तजि चली, सिद्ध बस्तु तेऊ दलमली।
या करि अर्थ, धर्म अरु काम, परिहरि चलति भई सब वाम।
मात-तात-भ्रातन करि बरजी, पतिन अनेक भाँति कै तरजी।
तदपि न रही सबै पचि रहे, जिन के मन मनमोहन गहे। २५
प्रेम-बिबस जु बिकल ब्रज-बहूँ, भूषन-बसन कहूँ के कहूँ।
धरे हुते जे परम सुहाये, जहाँ के तहाँ आप ही आये।
मन-बच-क्रम जु हरिहि अनुसरै, कवन बिघन जु बिघन कौ करै।
श्रवननि मनि-कुंडल झलमले, बेगि चलन कहुँ जनु कलमले।
कुंतल संकित बने जु नैन, मैन के मनहि देत नहिं चैन। ३०
एक जु तिय घर मैं घिरि गई, बिबस भई, निकसन नहिं पई।
देखे-सुने हुते हरि जैसैं, ध्यान धरे हिरदै मैं तैसैं।
तजि तजि तिहि छिन गुनमय देह, जाइ मिली करि परम सनेह।

जद्दपि जार-बुद्धि अनुसरी, परमानंद-कंद-रस भरी।
३५ मित्र कहत यौं बनत है कैसें, मो मन मैं आवत नहिं तैसें।
'नंद' कहत यह जिय जनि धरौ, अमृत-पान कोउ कैसैं करौ।
बहुरि कहत यह गुनमय देह, पाप-पुन्य, प्रारब्ध के गेह।
भुगते बिन न घाटि ह्वै जाही, कब भुगतै यह मो मन माही।
दुसह बिरह जु कमल-नैन कौ, अनेक भाँति के दुक्ख दैन कौ।
४० सो दुख आनि पर्यौ जब इन मैं, कोटि नरक-दुख भुगये छिन मैं।
ता करि पापन कौ फल जितौ, जरि बरि मरि सरि गयौ है तितौ।
पुनि रंचक धरि हिय मैं ध्यान, कीनें परिरंभन, रस-पान।
कोटि सुरग सुख छिनक मैं लिये, मंगल सकल बिदा करि दिये।
तब यह प्रश्न परीच्छित करी, हो प्रभु ! मो मन संका परी।
४५ नंदकिसोरहि सुंदर जानि, भजति भई न ब्रह्म पहिचानि।
गुन प्रवाह ऊपर भयौ कैसें, यह हौं नाहिन समझत तैसें।
श्री सुक कही कि हम तौ पाछे, कहि आये नृप तो सौ आछे।
दुष्टन कौ नृप, नृप सिसुपाल, निंदत ही बीत्यौ सब काल।
पूछ्यौ-गन्यौ न ताकौ हियौ, लै बैकुंठ पारषद कियौ।
५० ये हरि-प्रिया परम रस ओपी, जिनहुँ सबै बिधि इहि बिधि लोपी।
आवृत ब्रह्म जियन मैं मानि, कृष्न अनावृत ब्रह्म है जानि।
नरन के श्रेय करन हित तेही, दिखियत आत्मा परम सनेही।
कौनहि भाँति कोउ अनुसरौ, काम-क्रोध-भय सौं हृद करौ।
हे नृप ! ह्याँ कछु चित्र न मानि, ते सब हरिहि मिलेई जानि।
५५ नूपुर-धुनि जब श्रवननि परी, सब अँग श्रवन भये उहि घरी।

दिष्टि परी जब तब सब अंग, दृगन में भरे, रहे रस-रंग।
कुंजन तैं निकसत मुख लसैं, चहुँ दिसि उदित चंदगन जैसें।
आसपास ठाढ़ी भई आइ, ता छिन की छबि नहिं कहि जाइ।
इकहि बैस, समकंध सुदेस, ऊपर बनैं जु बदन बिसेस।
कंचन कोटि काम जनु करयौ, चंद कौ बृंद कँगूरनि धरयौ। ६०
छबि सौं चितये सबन की ओर, बोले नागर नंदकिसोर।
प्रथमहिं बचन धर्म नेम कौ, कहन लगे जु परम प्रेम कौ।
हे बड़भाग भले ही आई, क्यौं आई कछु संभ्रम पाई।
ब्रज में कुसर-खेम तौ आहि, कारन कवन कहहु किन ताहि।
तब सब मंद परस्पर हँसी, लाज-लपेटी अँखियाँ लसी। ६५
या छबि की कछु उपमा नहीं, लसौ-बसौ नित जहँ की तहीं।
पुनि बोले दिखि तिन की ओर, यह सजनी यह रजनी घोर।
तियन की नहिंन निकसनी बेर, बेग जाहु घर होति अबेर।
मात, तात, पति भ्रात तुम्हारे, ढूँढ़त ह्वैहैं बंधु पियारे।
चटपटी परी होइहैं सब ही, कहिहैं कित गई इत ही अब हीं। ७०
तब कछु प्रनय-कोप-रस-पगी, छुभित ह्वै इत-उत चितवन लगी।
तब बोले तिन सौं मनमोहन, हौ जानौं आई बन जोहन।
देखहु बन कुसमित छबि छयौ, राका ससि करि रंजित भयौ।
अरु इत यह कलिंद-नंदिनी, बहति सरस आनंद-कंदिनी।
इत यह ललित लतन की फूलनि, फूलि फूलि जमुना जल झूलनि। ७५
देख्यौ बन, अब गृह अनुसरौ, हे सति पतिन की सेवा करौ।
अरु जौ बन देखन नहिं आई, मो हित करि आई मोहिं भाई।

जुगति करी, न करी अनरीति, मो सौं सबैं करत है प्रीति।
ऐसैं बहुतै विप्रिय बैन, कहे जु प्रीतम पंकज-नैन।
८० भग्न-मनोरथ चिंता परी, रहि गई जनु कि चित्र है करी।
दृगन तैं अंजन जुत जलधार, धसी सु तन पर इहि आकार।
कनक बरन जनु ढार सुढार, दीने सूत विरह सुत धार।
भरत उसास हुतासन ररे, मुरझत अधर-बिंब मधु भरे।
चरननि धरनि लिखनि इमि गनौ, श्रवनि तैं मारग मांगति मनौ।
८५ सुनि कैं प्रिय के अप्रिय बैन, ज्यौं कोउ इतर कहै दुख दैन।
जल गँभीर नैनन की कोर, पौंछि कै छविले पटन के छोर।
गदगद गरन कहति भई ऐसैं, काँपाजुत सुर पिकगन जैसैं।
अहो अहो सुंदर वर ब्रजनाइक, क्रूर बचन नहि तुम्हरी लाइक।
जिनि बोलहु बलि अति दुख दैन, तुम तरुना करुना-रस-ऐन।
९० सब परिहरि हरि चरननि आई, बलि अब भजौ तजौ निठुराई।
जैसैं आदि पुरुष वह कोई, मुमुखन भजत सुन्यौ हम सोई।
अरु जु अपति पति सुहृद सुभूषन, तियन कौ धरम कह्यौ जु अदूषन।
हे ब्रजभूषन नहि अब इपै, सो सब होत तुम्हारे विषै।
तुम अपने आतमा नित नित के, सुत-पति अति दुखदाइक कित के।
९५ करम-धरम कौ फल जुग जुग ही, निगम कहत जिहि सो तौ तुही।
फल फिरि बहुरि सिखावै धर्म, च्यायें रहौ, दहौ जिनि मर्म।
अरु जे सास्त्र निपुन जन जिते, चरन-कमल-रज वाँछत तिते।
रमा रमनि के चहियतु कहा, तुम करि दियौ उरस्थल महा।
जाकी चितवन हित सुर सब के, ब्रह्मादिक तप करत हैं कब के।

तिग नन कबहूँ नैक न चहैं, चित नौ तुव पद-पंकज रहै । १००
अरु यह तुलसी लसी रस भरी, अनु दिन रहति पगन पर परी ।
यातै तुम्हरे चरन मेइहै, सुख देइहै कछु न लेइहै ।
अरु जो कहत कि जाहु ब्रज माही, जाहि कहाँ अरु कह लै जाही ।
चित तो तुमहि चोरि है लियौ, चरन न चलै कहा धौं कियौ ।
हियौ नही अब हाथ हमारे, करिहैं कहा ब्रज जाइ तिहारे । १०५
हो पिय ! यह कल गीत तिहारौ, महा अनिल के बान अनिवारौ ।
अधर-अमृत करि काहे न सींचत, मुसकि मुसकि बलि क्यौ दृग मीचत ।
जौ न सीचिहौ पिय ब्रजनाथ, तौ इह विरह अगिनि के साथ ।
धरि धरि ध्यानहि जरि बरि अबै, ह्वैहै आनि कै दासी सबै ।
जौ कहौ क्यौ भई दासी हमारी, तजि तजि गृह ठकुराइत भारी । ११०
तहाँ कहत अहो पिय मनमोहन, आवत तुम जब गोगन गोहन ।
बदन-कमल परि घूँघर केस, देखि कै गोरज छुभित सुबेस ।
तैसैई मनि-कुंडल छबि बढ़े, दुहुँ दिसि जात मीन से चढ़े ।
मृदुल मुकुर से लोल कपोल, मद हसनि मिलि करत कलोल ।
अरु अधरन मधि मधु झलमली, दिखि दिखि उपजत हिय कलमली । ११५
अरु यह छबिली छती साँवरी, भुज रावरी रूप बावरी ।
इन करि सुधि बुधि गई हमारी, यातै भई पिय दासी तुम्हारी ।
जौ कहौ उपपति-रस नहिं स्वच्छ, सब कोउ निदत अरु अति तुच्छ ।
तहाँ कहति है ब्रजभामिनी, लहलहाति जनु नव दामिनी ।
तुम्हरी यह कलगी तजि पीय, त्रिभुवन माँझ कवन अस तीय । १२०
सुनतहि आरज-पथ नहिं तजै, सुंदर नंद-सुवन नहि भजै ।

सुनि खग-मृग जु रहैं कौर तैं, जमुना चलि न सकति ठौर तैं।
पुरुषहु चले जु है दृढ़ हिया, हो पिय कवन आहि ये तिया।
जैसैं आदि पुरुष सुर लोक, दूरि करत है तियन कौ सोक।
१२५ तैसै ब्रजजन दुख के हरता, तुम कीने पिय जो कोउ करता।
रंचक कर-पंकज सिर धरौ, जरत है तन-मन सीतल करौ।
ऐसें बिरह बिकल कल बैन, सुनि कै तरुना करुना ऐन।
जोगीस्वरन के ईस्वर स्याम, बहुर्‌यौ जदपि आत्माराम।
रमत भये तिन सौं रस वातैं, केवल एक प्रेम के नातैं।
१३० ग्यान तुलित, बिग्यान पुनि, तुलित तुलित जम-नेम।
सबै बस्तु जग मैं तुलित, अतुलित एकै प्रेम॥
ऐसैं प्रभु बस होत जिहिं, सुनहु प्रेम की बात।
तप करि प्रेरे मुनिन के, मन जहँ लगि नहि जात॥
विहरत विपिन विहार उदार, ब्रजरमनी ब्रजराज-कुमार।
१३५ पियहि पाइ तिय के मुख लसैं, सरद मैं सरसिज होत न असैं।
बीरी खात, दिये गरबाँही, डोलत फूली कुजन माँही।
तिन मधि बने कुँवर नँद-नंद, बडे उड़न सौ ज्यौं घन चंद।
बिलुलित उर बैजंती माल, लटकत चलत सु मंद गज चाल।
इहि परकार कुँवर रस भरे, छबि सौं जमुन पुलिन अनुसरे।
१४० कोमल उज्जल बालुका जहाँ, मलय समीर धीर नित तहाँ।
सु कर तरंगन करि कैं जमुना, रच्यौ रुचिर जहँ और की गमु ना।
सीतल मंद सुगंध बयारि, पंखा करति बनिता बपु धारि।
भृंगन सहित भृंगन की घरनी, बीन सी बजति महा सुखकरनी।

कमल अमोद, कुमुद आमोद, सब परिमल जहँ देत बिनोद।
तहाँ बैठि भुज भुज गरमेलनि, परिरंभन, चुंबन, कल केलनि। १४५
कच-लट गहि बदनन की चूमनि, नख नाराचन घायल घूमनि।
कुचन की परसनि, नीबी करसनि, सुखन की बरसनि मन की सरसनि।
ताही के सरन मैन जब हत्यौ, दुखित भयौ घूमत जिमि मत्यौ।
भस्म करहि जिनि इह डर डरचौ, तब उठि प्रभु के पाइनि परचौ।
कोटि अनंग अंग के भौन, इक अनंग जीतिबौ सु कौन। १५०
सिव से जीतत कैसेंहुँ कैसें, दृढ़ वैराग्य जोग बल तैसें।
ऐसें बिस्व-बिमोहन कामहि, को जीतहि बिन मोहन स्यामहि।
अपने रस बस देखि साँवरे, ह्वै गये तियन के मन बावरे।
कहति भई भरि हिय अभिमान, हम सम तिय न तिहूँ पुर आन।
यहै मान बढ़ि सैल समान, ओट परि गये पिय भगवान। १५५

सुनै जो कोउ मन-क्रम-बचन, उनतीसौ अध्याइ।
ध्वंसनि कलि-मल-बंस कहुँ, 'नंद' न अवर उपाइ॥

पदावली

बधाई

बधाई माई आज बधाई।
आज बधाई सब ब्रज छाई, ब्रज की नारि सबै जुरि आई।
सुदर नंद महर जू के मंदिर, प्रगट्यौ है पूत सकल सुख कंदर।
होत ही ढोटा ब्रज की सोभा, देखि सखी कछु और ही ओभा।
५ मालिन सी जहँ लछिमी डोलै, बंदनमाला बाँधति लोलै।
बगर बुहारति फिरति अष्टसिधि, कोरन सथिया चीतति नवनिधि।
गृह गृह तैं गोपी गमनी जब, गली रँगीलिन भीर भई तब।
बीथी प्रेम-नदी छबि पावैं, नंद-सुवन-सागर कौं धावैं।
हाथनि कंचन-थार रहे लसि, कमलनि चढि आये मानौ ससि।
१० मंगल कलस जगमगे नग के, भागे सकल अमंगल जग के।
फूले ग्वाल मनौ रन जीते, भये सबन के मन के चीते।
कामधेनु तैं नैंक न हीनी, द्वै लख गाइ द्विजन कौं दीनी।
नंदराइ तहँ अति रस भीने, पर्वत सात रतन के दीने।
नंदराइ गृह माँगन आये, ते बहुरचौ माँगन न कहाये।
१५ घर के ठाकुर के सुत जायौ, 'नंददास' तहँ सब सुख पायौ।

जुरि चली है बधाये नंद महर घर, चंचल ब्रज की बाला।
कंचन-थार, हार चंचल, छबि कहि न परत तिहि काला॥

डहडहे मुख, कुंकुम-रँग-रंजित, राजत रस के ऐना।
कंजन पर खेलत मानौ खंजन, अंजनजुत बने नैना ॥
दमकत कंठ पदिक मनि कुंडल, नवल प्रेम-रँग बोरी। २०
आतुर गति, मानौ चंद उदय भयौ, धावति तृषित चकोरी ॥
खसि खसि परत सुमन सीसन तैं, उपमा कौन बखानौं।
चरन-चलन पर रीझि चिकुर वर, बरषत फूलन मानौ ॥
गावति गीत, पुनीत करति जग, जसुमति-मंदिर आई।
बदन बिलोकि, बलैया लै लै, देत असीस सुहाई ॥ २५
ता पाछे गन गोप ओप सौं, आये अतिसय सोहैं।
परमानंद-कंद रस भीने, निकर पुरंदर को है ॥
मंगल कलस निकट दीपावलि, ठाँ ठाँ देखि मन भूल्यौ।
मानौं आगम नंद-सुवन के, सुवन फूल व्रज फूल्यौ ॥
आनँद-घन ज्यौं गाजत, राजत, बाजत दुंदुभि भेरी। ३०
राग-रागिनी गावत हरषत, बरषत सुख की ढेरी ॥
परम धाम, जगधाम, स्याम अभिराम श्री गोकुल आये।
मिटि गये द्वंद 'नंददासन' के भये मनोरथ भाये ॥

श्री गोपाल लाल गोकुल चले, हौं बलि बलि तिहि काल।
मोद भरे बसुदेव गोद लै, अखिल लोक प्रतिपाल ॥ ३५
तरनि तेज जैसै तम फूटत, खुलि गये कुटिल कपाट।
महा बेग बल छाँड़ि आपनौ, दीनी श्री जमुना बाट ॥
भोर भये कुमुदिन ज्यौ मूँदत, कंसादिक भये मोहे।
संत जनन के मन अंबुज बनि, फूल डहडहे सोहे ॥

४०　बार बार फुही फूल सी बरषत, अंबुद अंबर छायौ।
अपनौ निज बपु जानि सेस तहँ, बूँद बचावन आयौ॥
परम धाम, जगधाम, स्याम अभिराम श्री गोकुल आये।
'नंददास' आनंद भयौ ब्रज हर्षित मंगल गाये॥

माई आज गोकुल गाम, कैसौ रह्यौ फूलि कै।
४५　गृह फूले दीसैं, जैसे संपति समूल कै॥
फूली फूली घटा आई, घरहर घूमि कै।
फूली फूली बर्षा होति, झर लायौ झूमि कै॥
फूलौ फूलौ पुत्र देखि, लियौ उर लूमि कै।
फूली है जसोदा माइ, ढोटा मुख चूमि कै॥
५०　देवता अगिनि फूले, घृत-खाँड़ होमि कै।
फूल्यौ दीसै दधिकाँदौ, ऊपर सो भूमि कै॥
मालिन बाँधै बंदनमाल, घर घर डोलि कै।
पाटंबर पहिराइ (राइ?), अविकै अमोल कै॥
फूले है भँडार सब, द्वारे दिये खोलि कै।
५५　नंद दान देत फूले, 'नंददास' बोलि कै॥

श्री वृषभान नृपति के आँगन, बाजत आज बधाई।
कीरति जू रानी हुलसानी, सुता सुलच्छन जाई॥
सक्ति सबै दासी है जाकी, याहू तैं अधिक सुहाई।
निरवधि नेह, अवधि रसमूरति, प्रगटी सब सुखदाई॥
६०　ब्रह्मादिक, सनकादिक, नारद, आनँद उर न समाई।
'नंददास' प्रभु पलना पौढ़े, किलकत कुँवर कन्हाई॥

बालकृष्ण

चिरैया चुहचुहानी, सुनि चकई की बानी,
कहति जसोदा रानी, जागौ मेरे लाला।
रबि की किरन जानी, कुमुदिनी सकुचानी,
कमलन बिकसानी, दधि मथै बाला॥ ६५
सुबल श्रीदामा, तोक उज्जल बसन पहिरें,
द्वारे ठाढ़े हेरत है बाल गोपाला।
'नंददास' बलिहारी, उठि बैठौ गिरिधारी,
सब कोउ देख्यौ चाहै लोचन बिसाला॥

आज सिंगार स्यामसुंदर कौ देखे ही बनि आवै। ७०
स्याम पाग अरु स्वेत चोलना छूटे बंद सुहावै॥
मोतिन माल हार उर ऊपर, कर मुरली जु बजावै।
'नंददास' प्रभु रसिक कुँवर कौं लै उछंग हुलरावै॥

बाल गोपाल ललन कौ, मोद भरी जसुमति हुलरावति।
मुख चूमति, देखति सुदर तन, आनँद भरि भरि गावति॥ ७५
कबहुँक पलना मेलि झुलावति, कबहुँक अस्तन पान करावति।
'नंददास' प्रभु गिरिधर कौं रानी निरखि निरखि सुख पावति॥

अहो तो सौं नँद-लाड़िले झगरूँगी।
मेरे संग की दूरि जाति हैं, मटुकी पटकि डगरूँगी।
भोर ही ठाढ़ी, कत करी मो कौं, तुम्हैं जानि कछु कानि न करूँगी। ८०
तुम्हरे संग सखान के देखन, अबहीं लाड़ उतारि धरूँगी।

सूधे दान लेहु किन मो पै, और कहा कछु पाइ परूँगी।
'नंददास' प्रभु कछु न रहैगी, जब बातन उघरूँगी।

बन तैं आवत गावत गौरी।
८५ हाथ लकुट गैयन के पाछे ढोटा जसुमति कौ री॥
मुरली अधर धरे नँद-नंदन, मानौ लगी ठगौरी।
याही तैं कुलकानि हरी है, ओढ़े पीत पिछौरी॥
अटन चढ़ी ब्रजबधू निहारति, रूप निरखि भई बौरी।
'नंददास' जिन हरि मुख निरख्यौ तिन कौ भाग बड़ौ री॥

हनूमान्

९० जब कूद्यौ हनुमान उदधि जानकी सुधि लेन कौं।
देखन कौं दसमाथ, अपने नाथ कौं सुख देन कौं॥
जा गिरि पर चढ़ि कुलाँच लीनी उचकैयाँ।
सो गिरि दस जोजन धसि गयौ है धरनी महियाँ॥
धरनी धसि गई पताल, भार परे जाग्यौं।
९५ सेसहु कौ सीस जाइ, कमठ पीठ लाग्यौ॥
अरुन बदन तेज सदन, बड़ौ पीन गात है।
उत्तर तैं दच्छिन मानौ मेरु उड़्यौ जात है॥
जा प्रभु कौ नाम लेत, भव-जल तरि जात है।
सत जोजन सिंधु कूद्यौ, तौ केतिक यह बात है॥
१०० रामचंद्र-पद-प्रताप, जगत मैं जस जाकौ।
'नंददास' सुर-नर-मुनि, कौतुक भूले ताकौ॥

रास

देखौ देखौ री नागर नट, निर्तत कालिंदी तट,
गोपिन के मध्य राजै मुकट लटक।
काछिनी किंकिनी कटि, पीतांबर की चटक,
कुंडल किरन रवि-रथ की अटक। १०५
ततथेई ताताथेई सब्द सकल उघट,
उरप तिरप गति परै पग की पटक।
रास मैं राधे राधे, मुरली मे एक रट,
'नंददास' गावै तहँ निपट निकट(?)।

बृंदावन बंसी बट, कुंज जमुना के तट, ११०
रास मैं रसिक प्यारौ खेल रच्यौ वन मैं।
राधा-माधौ कर जोरे, रबि-ससि होत भोरे,
मंडल मैं निर्तत दोऊ सरस सघन मैं।
मधुर मृदंग बाजै, मुरली की धुनि गाजै,
सुधि न रही री कछू सुर मुनि जन मैं। ११५
'नंददास' प्रभु प्यारौ, रूप उजियारौ कृष्न,
क्रीड़ा देखि थकित सब जन मन मैं॥

निर्तत कुंजन की परछाहीं।
नंद नंद वृषभान नंदिनी श्री बृंदावन माहीं॥
गावति गीत बजावति हस्तक, याही तैं कुँवर सराहीं। १२०
'नंददास' सहचरी भाग बिन, औरन इह सुख नाहीं॥

दीपमालिका

गाइ खिलावत सोभा भारी ।
गोरज रंजित बदन-कमल पर, अलक झलक घुँघुरारी ।।
नख-सिख अंग सुभग बहु भूषन, पहिरत सदा दिवारी ।
१२५ खेलि रही है खरिक सभा पर, नग रंगन उजियारी ।।
श्रमकन राजै भाल-गंड-भुज, या छवि पर बलिहारी ।
श्रवत हेरि चंचल अंचल सब चढ़ती है अटन अटारी ।।
भीर बहुत अति अहिर बृंद की, मड़हन पर ब्रजनारी ।
सैनन मैं समझावत सगरी, धनि धनि निरखनहारी ।।
१३० रहे खिलाइ धूमरी, धौरी, धगुरनि, काजर कारी ।
'नंददास' प्रभु चले सदन जब एक बार हुंकारी ।।

दीपदान दै हटरी बैठे नंद बबा के साथ ।
नाना विधि की मेवा मँगाई, बाँटत अपने हाथ ।।
विविध सिंगार पहिरि पट-भूषन और चंदन दिये माथ ।
१३५ 'नंददास' प्रभु सगरनि आगे, गिरि गोवर्धन नाथ ।।

हटरी बैठे श्री ब्रजनाथ ।
अपने संग सखा सब लीने, बाँटत मेवा हाथ ।।
भाँति भाँति पकवान मिठाई, विधि सौ धरे बनाइ ।
चलौ सखी देखन कौं जैयै, सुख सोभा अधिकाइ ।।
१४० आरति करति देति न्यौछावर मन आनंद बढ़ाइ ।
'नंददास' कुसुमन सुर बरषत, जै जै सब्द कराइ ।।

गोवर्द्धन-धारण

अब नैक हमहिं देहु कान्ह गिरिवर ।
तुम्हें लिये बड़ी बार भई है, दूखि चल्यौ ह्वैहै कोमल कर ।।
मति डिग परै, दबै सब ब्रजजन, भयौ है हाथ पर अति भर ।
तब कैसैं यह बदन देखिहै, तातैं जीय मैं बड़ौ यहै डर ।। १४५
जानि सखन कौ हेत मनोहर, दियौ नवाइ नैक अपनौ कर ।
'नंददास' प्रभु भुजा लटकि गई, तब हँसे नागर नगधर बर ।।

झूला

हिँडोरे माई झूलत गिरिधर लाल ।
सँग राजत बृषभान नंदिनी, अँग अँग रूप रसाल ।।
मोरमुकट मकराकृत कुंडल, उर मुक्ता बनमाल । १५०
रमकि रमकि झूलत पिय प्यारी, सुख बरसत तिहि काल ।।
हँसत परस्पर इत-उत चितवत, चंचल नैन बिसाल ।
'नंददास' प्रभु की छबि निरखत, बिबस भई ब्रजबाल ।।

झूलत मोहन रंग भरे, गोपबधू चहुँ ओर ।
जमुना पुलिन सुहावनौ, वृंदाबन सुभ ठौर ।। १५५
राधा जू करैं किलकारी, ज्यौं गरजत घनघोर ।
ता पाछे सब गोप-सुदरी, मिलि जु करति हैं सोर ।।
तैसैंई रटत पपैया, चातक, बोलत दादुर मोर ।
'नंददास' आनँद भरे निरखत, जै जै जुगलकिसोर ।।

१६० रंग भरी झूलति स्याम संग राधिका प्यारी ।
मधुरे सुर गावति उपजावे, आछी आछी तानन मनुहारी ॥
कबहुंक मंद मंद मुसकात मनोहर, कबहुँक रीझि देत कर तारी ।
निरखि निरखि या मुख ऊपर तहाँ 'नंददास' बलिहारी ॥

डोल झूलत हैं गिरिवरन झुलावत बाला ।
१६५ निरखि निरखि फूलत ललितादिक राधा बर नँदलाला ॥
चोवा-चंदन छिरकत भामिनि उड़त अबीर-गुलाला ।
कमल-नयन कौं पान खवावत पहिरावत मनिमाला ॥
बाजत ताल मृदंग अवौटी बिच बिच कूजत बेनु रसाला ।
'नंददास' जुवती जन गावति रिझवति श्री गोपाला ॥

होली

१७० अरी चलि बेगि छबीली हरि सँग खेलन जाइ ।
निकसे हैं मोहन साँवरे री, फाग खेलन ब्रज माँझ ।
घुमड़्यौ है अबीर गुलाल गगन मैं, मानौं फूली साँझ ॥
बाजत ताल, मृदंग, मुरज, डफ, कहि न परति कछु बात ।
रँग रँग भीने ग्वाल बाल सब, मानौ मदन बरात ॥
१७५ उत तैं सब सुंदरि जुरि आईं, करि करि अपनौ ठाट ।
खेलति नहि कोउ कान्ह कुवर सौं चाहति तेरी बाट ॥
बिन राजा दल कौंन काज कौ, उठि छाँड़ियै ऐंड ।
उमग्यौ निधि लौं नवल नंद कौ, रोकत रावरी मैंड़ ॥
उठि बिहसी बृषभान कुँवरि बर, कर पिचकारी लेत ।
१८० सहि न सकत कोउ महासुभट बर, सुनत समर संकेत ॥

आई रूप अगाधा राधा, छबि बरनी नहिं जाइ।
नवल किसोर अमल चंदै मानौ मिली है चंद्रिका आइ ॥
खेल मच्यौ ब्रज बीथिनि बीथिनि, बरषत परम अनंद।
दमकत भाल गुलाल भरे, मानौं चदन भुरकौ चंद ॥
और रंग पिचकारिन भरि भरि,छिरकत हरि तन तीय। १८५
कुटिल कटाच्छ प्रेम रँग भरि भरि, भरति पीय कौ हीय ॥
दुरि दुरि भरनि, बचावनि छबि सौं, बाढ़्यौ रंग अपार।
मैन मुनी सी बोलति डोलति, पग नूपुर झनकार ॥
सिव सनकादिक नारद सारद बोलत जै जै जै।
'नंददास' अपने ठाकुर की जीवै बलैया लै ॥ १९०

हो हो हो हो होरी बोलै, नंद-कुँवर ब्रज बीथिन डोलै।
नवल रँगीली सखा सँग लीनें, राजत अँग अँग सब रँग भीने।
रँगीली भाँति रँगीलौ निकस्यौ जहाँ, चोवा-चंदन कीच मचै तहाँ।
ताल, मृदग मुरज, डफ बाजै, ढोल टनक नव घन ज्यौ गाजै।
सुनि ब्रज-बधू आनँद अति बाढ़ी, निकसि निकसि सब पौरिन ठाढ़ी। १९५
अँजुरी अबीर छुटत छबि पावै, पंकज मनौ पराग उड़ावै।
पिचकारिन रँग उछटत भारी, उड़ि गुलाल रँगे अटा-अटारी।
जब लगि लाल तकत पिचकारी, तब लगि भामिनि भाँति भरी।
जो कोउ नवल बधू भरि भागै, रँगीलौ लाल ताके गोहन लागै।
तिनहिं धाइ धाइ भरत छबीलौ, जैसै जाहि बनै तैसैं रंग रँगीलौ। २००
जाइ परत ललना-मंडल जब, घेरि लेत, कर तारी देत तब।

अँग भरि भुज भरि हिये भरि लालै, छाँड़ति छबिली नहिं मदन गोपालै।
कहत न बनै, बढ़्यौ रँग भारी, 'नंददास' नहँ बलि बलि ह्वारी।

कान्हर खेलियै हो बाढ़्यौ श्री गोकुल मैं अनुराग।
२०५ जान्यौ नहीं बहुरि कब ऐहै परम भावति फाग॥
बाजत ताल, मृदंग, झाँझ डफ, सहनाई अरु ढोल।
तुम हूँ खेलौ सखा संग लै, करहुँ आपनी ओल॥
उत तैं सबै सखी जुरि आईं, प्रबल मदन के जोर।
खेल मच्यौ है नंद जू की पौरी, प्यारी राधा नंदकिसोर॥
२१० नव वृषभान नंदिनी आई, लीनी सखी बुलाई।
ऐसौ मतौ करौ मेरी सजनी मोहन पकरौ जाई॥
मुरली लेहु स्याम के कर तैं, मृगमद बदन लगाई।
हलधर की पिचकारी छीनौ, कान्हर देहु बनाई॥
चोवा, चंदन, मृगमद, केसरि, झोरिन भरहु अबीर।
२१५ लयें अरगजा छिरकत डोलत, ब्रज जुवतिन के बीर॥
हलधर की पिचकारी छूटै, कोऊ न बाँधै धीर।
ब्रज बीथिन मैं खेलत डोलत, सखा बने सब लाल॥
गोपी-ग्वाल करत कौतूहल, गावत गीत रसाल।
खेलत खेल सब आनँद बाढ़्यौ, रीझे मदनगोपाल।
२२० 'नंददास' सँग लागी डोलत, छबि निरखत ब्रजबाल॥

हो हो होरी खेलैं नंद कौ नवरंगी लाला।
अबीर भरि भरि झोरी, हाथन पिचकारी
रंगन बोरी, तैसिय रँगीली ब्रज की बाला॥

नृत्ति धरे अनंग, गावत तान-तरंग,
ताल मृदंग मिलि बजावैं बीन-बेनु रसाला । २२५
'नंददास' प्रभु-प्यारी के खेलन रंग रह्यो,
छबि बाढ़ी, छूटी हैं अलक, टूटी हैं माला ॥

ए री सखी निकसे मोहनलाल, खेलन ब्रज में फाग री ।
उमड्यौ है अबीर गुलाल, मानौ उनयौ अनुराग री ॥
सोभित मदनगोपाल, कटि बाँधे पट सोहनौ । २३०
काछिनि काछे लाल, लाल तिचोय रँगी मनौ ॥
मोरमुकुट छबि देत, बंक दृगन हँसि देखनौ ।
सब ही को हियौ हरि लेत, ऐन मैन मानौं पेखनौ ॥
घट आवज सुर बीन, अनाघात गति गाजहीं ।
ताल, मृदंग, उपंग, रुज, मुरज, डफ बाजहीं ॥ २३५
घिरि आईं व्रजनारि, मृगनयनी, गजगामिनी ।
छेके हैं मदनगोपाल, घन घेरयौ मानौं दामिनी ॥
छिरकत पिय नँदनंद, तिय पट-ओट बचावहीं ।
मानौं घन फून्यो चंद, दुरे निकसि पुनि आवहीं ॥
बने हैं तियन के अंग, छिरकि छींट छबि छैल की । २४०
मानौं फूली रँग रंग, ललित लता जनु प्रेम की ॥
बढ्यौ है परस्पर रंग, उमगि उमगि रस भरन मैं ।
निरखि भई मति पंग, पीतांबर फहरनि मैं ॥
जब गहि रंगन भरे, मोहन मूरति साँवरे ।
हरै हरै हरि हँसि परे, मुनि-मन ह्वै गये बावरे ॥ २४५

भई सरस्वति मति बौर, और खेल कहँ लौं कहै।
रस भरे साँवल-गौर, 'नंददास' के हिय रहै॥

आज बनि-ठनि फाग खेलन निकस्यौ नंददुलारौ।
फब्यौ है ललित भाल लाल के जटित लाल टिपारौ॥
२५० वड़रे बंक बिसाल, नयन छबि भरे इतराहीं।
बन्यौ है मंजुल मोरमुकट, चलत देखत परछाहीं॥
उत बनी ब्रज नव किसोरी, गोरी रूप भोरी।
बोरी प्रेम रंग मैं, मानौं एक ही डार की तोरी॥
ब्रज की बाल लिये गुलाल, मोहनलाल छाये।
२५५ मानौं नीलघन के ऊपर, अरुन अबुद आये॥
ताही धूँधरि मध्य मत्त भ्रमर भ्रमत ऐसै।
बनी है छबि बिसाल, प्रेम जाल गोलक जैसै॥
बन्यौ है जल-जंत्र-खेल, छुटत रंग की धारै।
जानौं धनुधर सरन लखत, धार सुधारि मारै॥
२६० और कहाँ लगि कहियै, खेल परम रस की मूली।
गावत सुक, सारद, नारद, संभु समाधि भूली॥
जिहि जिहि हरिचरित अमृत सिंधु सौं रति मानी।
'नंददास' ताहि मुकति लौन कौ सौ पानी॥

रक्षा

राखी नंदलाल कर सोहै।
२६५ पचरँग पाट के फुँदना राजत, देखत मनमथ मोहै॥

आभूषन हीरा के पहिरे लाल पाट के पोहे।
'नंददास' वारन तन-मन-धन गिरिधर श्रीमुख जोहे ॥

नाम-महिमा

कृष्न-नाम जब तें श्रवन सुन्यौ री आली,
भूली री भवन हौ तौ बावरी भई री।
भरि भरि आवै नैन, चित हू न परै चैन, २७०
तन की दसा कछु औरै भई री ॥
जेतिक नेम-धर्म-व्रत कीने री मैं बहु बिधि,
अँग अँग भई मैं तौ श्रवनमई री।
'नंददास' जाके श्रवन सुने ऐसी गति,
माधुरी मूरति कैधौं कैसी दई री ॥ २७५

गुरु

प्रात समै श्री वल्लभ सुत कौ उठतहि रसना लीजै नाम।
आनँदकारी, मंगलकारी, असुभहरन, जन पूरन काम ॥
इह लोक परलोक के बंधु, को कहि सकै तिहारे गुन-ग्राम।
'नंददास' प्रभु रसिकसिरोमनि, राज करौ गोकुल सुखधाम ॥

प्रात समै श्री वल्लभ-सुत के बदन-कमल कौ दरसन कीजै। २८०
तीनि लोक बंदित पुरुषोत्तम, उपमा कौ पटतर कौ दीजै ॥
श्रीबल्लभ-कुल उदित चंद्रमा, यह छबि नैन-चकोरन पीजै।
'नंददास' श्रीबल्लभसुत पर तन-मन-धन न्यौछावर कीजै ॥

जयति रुक्मिनीनाथ, पद्मावतिपति, विप्र-कुल-छत्र, आनंदकारी।
२८५ दीप-वल्लभ-वंस, जगत निस्तम करन, कोटि उडुराज सम तापहारी॥
जयति भक्ति-पति, पतित-पावन-करन, कामीजन-कामना पूर्नचारी।
मुक्ति-कांक्षीय-जन, भक्ति-दाइक-पभू, सकल सामर्थ गुनगनन भारी॥
जयति सकल तीरथ फलै, नाम सुमिरन मात्र, बास ब्रज नित्य गोकुल बिहारी।
'नंददासन' नाथ पिता गिरिधर आदि, प्रगट अवतार गिरिराज धारी॥

२९० श्री गोकुल जुग जुग राज करौ।
यह सुख भजन प्रताप तें कबहूँ छिन इत उत न टरौ॥
बावन रूप दिखाइ महाप्रभु, पतितन पाप हरौ।
बिस्व बिदित दीनी गति प्रेतन, क्यौं न जगत उद्धरौ॥
श्रीबल्लभ-कुल-कमल इही बर जस-मकरंद भरौ।
२९५ 'नंददास' प्रभु पट गुन संपन श्री बिट्ठलेस बरौ॥

प्रकटित सकल सृष्टि आधार, श्रीमदबल्लभ राजकुमार।
धेय सदा पद-अंबुज-सार, अगनित गुन महिमा जु अपार॥
धर्मादिक द्वारे प्रतिहार, पुष्टि भक्ति कौ अगीकार।
श्री बिट्ठल गिरिधर अवतार, 'नंददास' कीनी बलिहार॥

परिशिष्ट
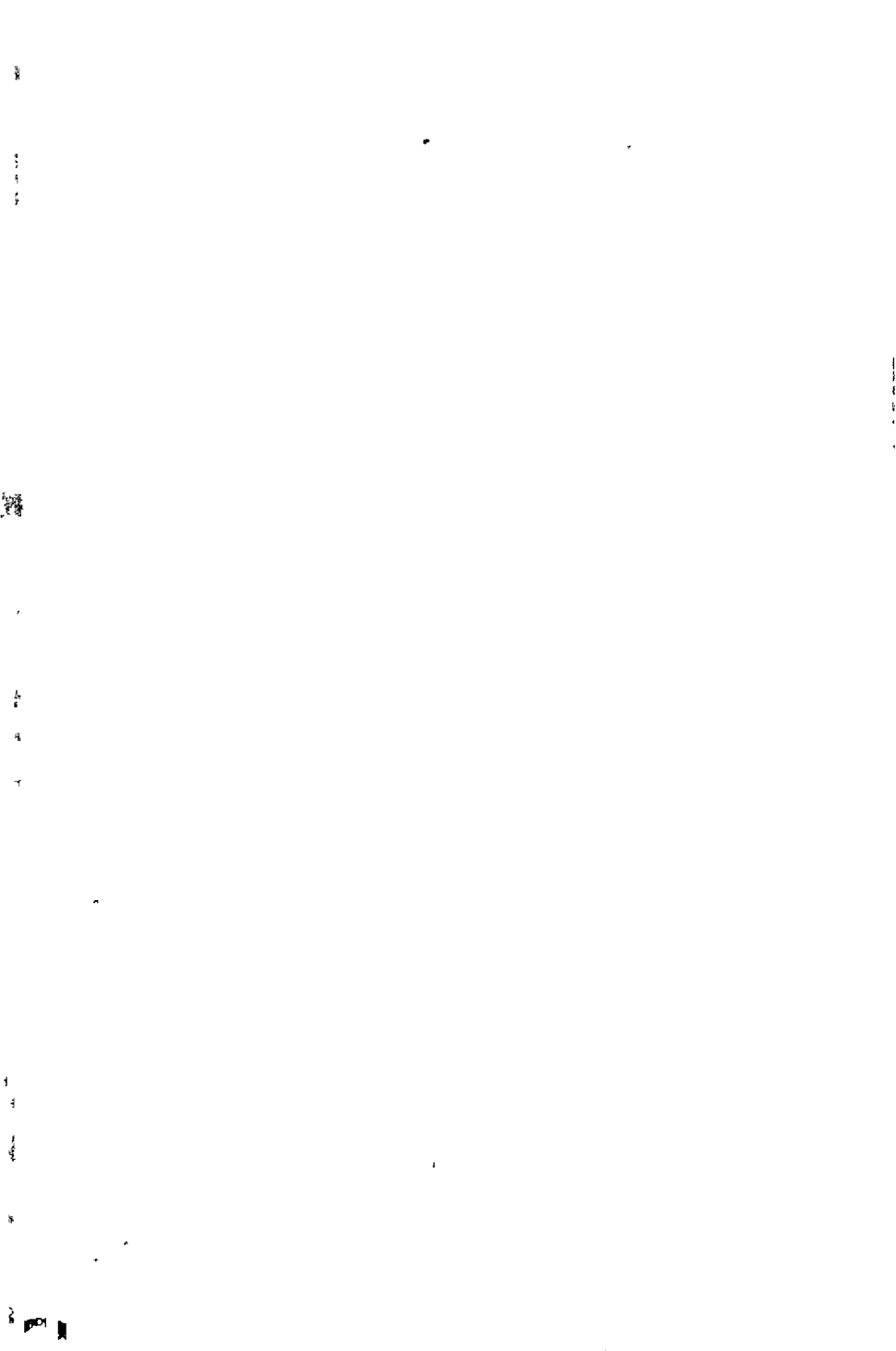
१ संदिग्ध तथा असंपादित सामग्री

(क) 'मानमंजरी नाममाला' के संदिग्ध दोहे

'अ' प्रति से उद्धृत

नाम रूप गुन भेद के सो प्रगटित सब ठौर।
ता बिन तत्व जु आन कछु कहै सो अति बड़ बौर ॥१॥

अन्तर्धान

गुप्त तिरोहित अंतर्गित गूढ दुरूह निलीय।
लोकांजन में लुकि सखी देखी इह बिधि तीय ॥२॥

अरुन

अरुन श्रोन आरक्त पुनि लोहित राते गात।
तुव आगम आनंद तें जनु अनुराग चुचात ॥३॥

इंद्र

सहस्राक्ष वृद्धश्रवा आखंडल सुरपत्त।
सुनासीर लेखर्षभरु सतमन्युर दिविपत्त ॥४॥
सुत्रामा सूदन वृषा जूंभभेदि हरि होइ।
बलाराति हरिवाहनो मेघबाहनो सोइ ॥५॥

उर

बत्स बक्ष उर पीय के निरषि आपनी झाँय।
मान गह्यो निज जीय मे आन तिया के भाँय ॥६॥

कंचन

जातरूप कलधौत पुनि चामीकर तपनीय।
रुक्म रुद्र रोचन कनक महा रजत रमनीय ॥७॥

काम

काम अनन्यज मकरधुज बिस्व बिमोहन नाँउ।
पति सौं रति जिमि रूठि रहि इमि देखन बलि जाँउ ॥८॥

कुंद

माधवी कुंदलता ललित पगनि परति चहुं भाँति।
जाकी कलियन में कछू तुव दसनन की काँति ॥९॥

गनिका

दासी दार निलज्जिका खला पुंश्चली होइ।
रूपाजीवा कामकी पुन्यजोषिता सोइ ॥१०॥
बारबधू जग बल्लभा कहत संभली जाहि।
मुह संभार किन बोलिये ह्याँ कोउ गनिका नाहि ॥११॥

चंद्रमा

कुमुदबंधु श्रीबंधु बिधु रोहिनिधव सुर पेय।
उडगनपति द्विजराज हरि ग्लौ मृगांक आत्रेय ॥१२॥

जन्म

भव उद्भव उद्गम जलम जन उतपति है भाम।
जन्म सफल जानै तबहि भजिये सुंदर स्याम ॥१३॥

धन

द्रविन द्रव्य वसु बित्त बल राय अर्थ सुख-ओक।
धन जेतो बृजनंद के तेतो नहिं तिहुं लोक ॥१४॥

धनुष

धनु कोदंड इष्वास पुनि कार्मुक रिपु संताप।
चाप बिना नहि पनच कछु पनच बिना नहिं चाप ॥१५॥

धाम

सदन सद्म आगार गृह गेह बेस्म सकेत।
अयन बिस्न पुनि आसपद आलय निलय निकेत ॥१६॥

मंदिर मंडप आयतन बसति निकाय अस्थान ।
भवन भूप वृषभान के गई सहचरी जान ॥१७॥

पतिव्रता

साध्वी सती मनस्विनी सुचरित्रा सुचि हीय ।
पतिव्रता तुव नाम लै होत जगत में तीय ॥१८॥

पान

ताम्बूल अहिवेलिदल द्विज मुख मंडन पान ।
नहिन खाति अनखाति अति भर जो रही मन मान ॥१९॥

मनोहर

मंजुल मंजु मनोज्ञ मधु मधुर चारु सुकुमार ।
लन्वित उदार सुनंद को सब वृज को आधार ॥२०॥

महादेव

उग्र कपर्दी भूतपति पसुपति मृड ईसान ।
नीलकंठ सितकंठ सिव मृत्युंजय कल्यान ॥२१॥

मेघ

धाराधर जलधर जलद जगजीवन जीमूत ।
मुदिर बलाहक तडितपति कामुक धूम-सपूत ॥२२॥
नीरद छीरद अंबुवह वारिद जलमुक नाँउ ।
घन बिछुरी बिजुरी मनौ इमि देखत बलि जाँउ ॥२३॥

रस

सारध मधु पुनि पुष्प-रस कुसुम-सार मकरंद ।
रस के जानन हार जन सुनि पैहै सुख कंद ॥२४॥

रोमावली

राजी अवली आललति रोम पाँति इहि भाइ ।
मानहु उत ते भलमलत बेनी नीकी भाइ ॥२५॥

लघुभ्राता

अनुज अवर्ज सनाभि पुनि क्ष्ठि कनिस्ट कनीय ।
लघु सोदर की का सकुचि सखा स्याम को नीय ।।२६।।

समूह

समुदय व्यूह समूह घन प्रकर निकर निकुरंब ।
पूर पुग व्रज पटल चय संचय निचय कदंब ।।२७।।
बिसरत ग्राह संदोह उघ जूथ व्रात गन जात ।
चक्र अनंत समाज बहु तोम जाम संघात ।।२८।।
कंदल जाल कलाप कुल कूट अनेक सुबृंद ।
बहुत कही मैं बात पै भई तवे की बुंद ।।२९।।

सीघ्र

आसु तरस सहसा झटित तुरित तूर्न द्रुत होइ ।
छिप्र सु सत्वर तुच्छ लघु राज्ञा रंभा सोइ ।।३०।।
बाज बेग जब रभस रभ अवलंबित उत्ताल ।
चपल चली चातुर अली आतुर लखि नँदलाल ।।३१।।

सुदर

सौम्य बामवर मुग्ध पुनि सुष्ट अपीच प्रसस्त ।
सुंदर नंदकिसोर पर बलि बलि विस्व समस्त ।।३२।।

सूर्य

चित्रभानु बृहभानु रवि विवस्वान दुतिवान ।
अंसुमान हरिभान हरि जगतचच्छु भगवान ।।३३।।

नीचे

निम्न नीच तरु कुम्भ अध अवच अजस्र की थान ।
नीचे नैन न डार बलि नैक कह्यौ तौ मान ।।३४।।

(ख) 'रासपंचाध्यायी' के संदिग्ध छंद

'ग' प्रति से उद्धृत

(पंक्ति ७२ के बाद)

जिन सौरभ ते मत्त मुदित अलि धाये आवत।
सुक सारिका रतनमयी गोबिंद गुन गावत ॥१॥

(पंक्ति ७८ के बाद)

श्री वृंदावन की छबि अमित बरनी बुधि अनुसार।
अब सुंदर नागर नवल बरनु नंद कुवार ॥२॥

(पंक्ति १७२ के बाद)

अहो तिय कहा जीय जानि कानि तजि कानन डगरी।
अर्ध गरी सर्वरी कहु न उर डरी न सगरी ॥३॥
अनुचित धर्माचर्न निगम नित निंदत करी अति।
निज पीय तजि चित धुन आन पत्ति रति जु करत मति ॥४॥

'घ' प्रति से उद्धृत

(पंक्ति ४६६ के बाद)

मिलि जु भई एक धुनि अद्भुत तिहिं सुनि मुनि मोहैं।
सुर नर गन गंधर्व कछू न जानैं हम को हैं ॥५॥

(पंक्ति ४७२ के बाद)

ललना अद्भुत राग लैत लागत सोभा अस।
सुभग अटा पर छटा छबीली थिरक रहत जस ॥६॥

(पंक्ति ४८६ के बाद)

कोउ तिन हू तैं अधिक जु गावत सुर अति नाई।
सुघर सिरोमनि पिय के संग संग अति छबि पाई ॥७॥

(पंक्ति ५०४ के बाद)

अद्भुत रस रह्यौ रास देखि कछु कहत न आवै ।
ज्यौं मूक लै रस कौ चसकौ मन ही मन भावै ॥८॥

(पंक्ति ५३२ के बाद)

अन अधिकारी जिते तितै तहाँ मुनि मुरझाये ।
अद्भुत रास बिलास रोसि नहि देखन पाये ॥९॥

(पंक्ति ५४२ के बाद)

जहां काहू की गमना तहा जमुना सुप्र दैनी ।
जगमगात तट घाट महा मनि जटित नसैनी ॥१०॥

(पंक्ति ५६४ के बाद)

तिन मैं कितक अग्थानयौंबना छबि पावत नव ।
रोमावलि सी बाल जांनि पौछे डारति जब ॥११॥
तहँ अद्भुत कल केलि बनी छबि गनी न परई ।
तिहिं चित धरि चितत रचि पचि तिनि कलिमल हरई ॥१२॥

(पंक्ति ५८६ के बाद)

परै न समझि महेस सेस पै गुरु गनेश पै ।
चकित सरस्वति भई जु रति मति कहा सुरेस पै ॥१३॥

'ङ' प्रति से उद्धृत

(पंक्ति ४६ के बाद)

वन है आन अनेक अमित फल फूलन माहीं ।
जुगल चंद सुख कंद रवन ब्रज इह सुख नाहीं ॥१४॥

(पक्ति १०८ के बाद)

बिदति रजनि सुनि अहो तपति अति प्रभा अपारा ।
तव ग्रीषम पीड़ित हिम सब हरति बिकारा ॥१५॥

उत के उत जे नारि धारि हमरी जिय आसा ।
हम सब कियो प्रका (स ?) रास हरि संग बिलासा ।।१६।।
निरखि रजनि कमनीय जु निरवचनीय निकाई ।
रीझि सामरे रसिक रास खेलन मनु आई ।।१७।।

(पंक्ति १६४ के बाद)

जिनकी बुधि श्री कृष्ण विषै सो शुक मुनि बरनी ।
अवधि प्रेम आवेश मोहनी कौ बस करनी ।।१८।।

(पंक्ति १६८ के बाद)

मानहुं मनसिज कोटि पुरट रस भरयो सुहायो ।
बदन कागरे चंद लाल गोपिन बिच आयो ।।१९।।
मोहन मूरति एक झरी सी प्रेम लगाई ।
जानि पूछ कै धर्म कथा सामरे चलाई ।।२०।।

(पंक्ति १७४ के बाद)

कुशल छेम व्रज रवन गवन संभ्रम सी पाई ।
कारन कौन जु भौन तजि कैसै तुम आई ।।२१।।

(पंक्ति १७६ के बाद)

पुनि बोले तिहि ओर चाहि गोविंद रसाला ।
हो सजनी रजनी मऽहा नहि निकसन काला ।।२२।।
अब ग्रह जावौ मन भायौ पैहै दुख सब प्यारे ।
मात तात सुत बंध कंत ढूढनु जु तुम्हारे ।।२३।।
परी होइहै चटपटी अटपटी सब के मन मै ।
कहां गई अब ही सब हुती सदन मै ।।२४।।
वचन व्यंग सुनि श्री गुनि पुनि मन मै छुभित भई सब ।
प्रणय कोके (?) पि रस कोप पगी चितवनि जु लगी तब ।।२५।।

पुनि बोले श्री नंदलाल तिनि सनमुख सोहन।
जौ आई मन भाई भलै बंसी धुनि गोहन ॥२६॥
दिखि वन सोभा लोभा कुसमित छवि छाई।
छिटक रही चांदनी भली फूलनि कग भाई ॥२७॥
अरु इह इन बहै जमुना सव सुखदाई।
पुलिन मनोहर त्रिबिधि वात बहै ताप नसाई ॥२८॥
देखी वन सोभा सबै अब निज निज ग्रह जायौ।
अहो सती निज पतिन की सेवा मैं चित लावौ ॥२९॥
बधिर गुग कपटी लंपट आदिक जौ पति होई।
तौउ तिय नहि तजै भजै बड़भागिन सोई ॥३०॥
अरु जौ बन देखन नहि आई मो परसन हित आई।
तौ तुम नीकी अति करी अनुचित नहि काई ॥३१॥

(पंक्ति २०८ के बाद)

इही हेत हम देत सदा कमलज है गारी।
पलकान्तर बिच परत मरत हम कुंज बिहारी ॥३२॥

(पंक्ति २१६ के बाद)

अब तुम मधुर अधर अमृत कह धौ कबहि प्याऊगे।
बहुत पुण्य ह्वै मित्र परत जौ हमहि ज्याऊगे ॥३३॥
पुनि कानन भयभीत कोटि जुग बीतत है छिन।
अहो निसा इहि भांति हमै जानै को तुम बिन ॥३४॥
पारधी हू तै कठिन महा जसुधा नंदन पिय।
वेन बजाय बुलाय म्रगी सी मोहि लैइ तिय ॥३५॥
मातु पिता पति बंधु सिंधु तरि तुम ढिग आई।
जानि बूझ अधरात गहर बन मै बगराई ॥३६॥

(पंक्ति २३८ के बाद)

इतहिं कुंद केवरा केतकी गंध बंध हित।
राय बेलि इत अरल बेलि मृग मदका बेलि हित ॥३७॥

(पंक्ति ३०६ के बाद)

कोऊ श्रीदामा ह्वै बाम चढ़ति कान्हर के कांधै।
कोऊ जसुमति ह्वै ललित लाल ऊखल सौं बांधै ॥३८॥

(पंक्ति ३१२ के बाद)

जमलार्जुन भंजन फनी फन गंजन सब कौं।
कोऊ कहै मूंदौ लोचन हौं मोचौं दावानल कौं ॥३९॥

जदपि परम सुखधाम स्याम सुंदर लीला रस।
तदपि तिनहिं अवलोकनि बिन अकुलाय अस ॥४०॥

ज्यौं चंदन औ चंद तप्त कौं सीतल करहीं।
विरही जन जे लोग तिनहिं लगि अग्नि वितरहीं ॥४१॥

(पंक्ति ३२२ के बाद)

पुनि जगमग खोज मनोज के चोज बढ़ावनि।
कहन लगीं रस पगीं जगीं छबि अति मन भामिनि ॥४२॥

एक भयो रज गरल परत नहीं अकथ कहांनी।
तब इक सखी लखी जिय की सो बोली मृदु बानी ॥४३॥

निरखि सुवन बर ऊंच नूच पिय मन मैं ठानी ॥
तिय पिय कंध चढ़ाय सु छबि नहीं परत बखानी ॥४४॥

भयो भार तें बाम कंध लयो रस मल्हकंती।
तातैं नीचौं परयौ अवनि उतरी ढलकंती ॥४५॥

यह बिधि अति आनंद पाय मन ही मन फूली ।
तहां सखी सौ अनुराग भाग बड़ कहि अनुकूली ॥४६॥

(पंक्ति ३५४ के बाद)

केहें गोरी भोरी पिय मुख चंद चकोरी ।
पिय बहु भांति निहोरी रस रास मै झकझोरी ॥८७॥
लज्जित रही नही कही सब सखियनि बातै ।
पिय कौ प्रेम उरझि रह्यौ सुरझ्यौ नही तातै ॥८८॥

(पंक्ति ३७२ के बाद)

तुम सौ कोऊ न भयौ न कौऊ आगै ह्वैहै ।
अब ह्वै ऐसौ न कोऊ सुलभ हम सौ नहि पैहै ॥४९॥

(पंक्ति ३९० के बाद)

गति बिलास मृदु हास प्रेम वांछित तुमरौ पिय ।
मारत मननि ससूमैं रूमै निकसत है जिय ॥५०॥
अज हूँ कछु नहि बिगरचौ बंचक रंचक आवहु ।
जो मुरली कौ झूठौ अधरामृत हमहि पियावहु ॥५१॥

(पंक्ति ४१४ के बाद)

कृष्न भौह के भंग काल आदिक थरहरही ।
गोपिन रिस भरि भौह तै मोहन आपुन डरही ॥५२॥

(पंक्ति ४४२ के बाद)

कौटिक रसना हौहि तुम्हारे रस जस ही गावै ।
हे बड़भागिन अनुरागनि तऊ कोऊ पार नि पावै ॥५३॥

(पंक्ति ४९६ के बाद)

बरसति मंजुल अंजुल सुर तिय ऊ ल सी नी ।
निंदति अमृति पान ध्यांन दंपति उर आंनी ॥५४॥

दुंदभि सरस बजावैं गावैं तानिनि लावैं।
गोपन की गति जति अति रति करत ऊ भ्रमावै ॥५५॥
जगमग जगमग करत रगबगी मंडल सोभा।
कोऊ थकित स्म छकित लाल मुष निरषन लोभा ॥५६॥
सनमुष निरषत लाल लाडली प्रेम बढ़ावै।
कवि छवि उपमा दैन उरझि सुरझनि नहि पावै ॥५७॥

(पंक्ति ५१२ के बाद)

मुघर राग रागनी मंडल ढिग गुन गन गावन।
अपने अपने गुन गनहि सब प्रघट दिखावत ॥५८॥

(छंद १२ के बाद[1])

कोई आपन तै थकी लगी पिय अति रति मानी।
कोऊ पट गहि कटि गहि छवि सू पानी मै आनी ॥५९॥

(पंक्ति ५७६ के बाद)

इह लीला गोपाल लाल की परम बास विधि।
शिव सुक सारद नारद तिन कीन महा निधि ॥६०॥

(पंक्ति ५९४ के बाद)

यह वृंदावन रंग महल गिरधर प्यारी कौ।
पंचाध्याई रास रजनि अति उजियारी कौ ॥६१॥
जिन के हिय बसै दंपति संपति जंपति सोई।
सब ससार असार छार करि डारै सोई ॥६२॥

---

[1] दे. पृष्ठ २५०

'छ' प्रति से उद्धृत

(पंक्ति २८ के बाद)

राजत अंग विभूति अनेक विवेक प्रकासक।
नख सिख रूप अनूप सकल जनु अघ के नासक ॥६३॥

(पंक्ति १८० के बाद)

कुल तिय को यह धरम, स्रुतिन मिलि आगम गावै।
आरति सों निज पतिहि सेय, पति लोकहि पावै ॥६४॥

(पंक्ति २०० के बाद)

बिस्व बिमोहन रूप सुघर, यह पिया तिहारौ।
धरमन हू को धरम, मिलन ब्रजराज दुलारौ ॥६५॥

(पंक्ति २४० के बाद)

जुही चमेली चारु कुंद नव पल्लव बेली।
सुक पिक मोर चकोर कोकिला करि रही केली ॥६६॥

(पंक्ति २८८ के बाद)

अहो चम्पक अहो कुसुम तिहारी छबि है न्यारी।
नेक बतावहु जहाँ हिय हरि कुंजविहारी ॥६७॥

(पंक्ति २९० के बाद)

अहो बंस! बर बंस, कहूं देखे हैं हरि! तुम।
गोप बंस, अवतंस, बिना सब दीन हीन हम ॥६८॥

(पंक्ति २९४ के बाद)

हे जमुना सब जानि पूछि तुम हठहि गहति हौ।
जो जल जग उद्धार, ताहि तुम प्रगट करत हौ ॥६९॥

(छंद २६ के बाद[1])

छिन बैठन छिन उठन लोटते तिहि रज माही।
थोरे जल ज्यौं मीन दीन आतुर अकुलाहीं ॥७०॥

सन्तन भय ते अभय करन कर-कमल तिहारे।
कह घट जैहै नाथ तनक सिर छुवत हमारे ॥७१॥

स्रवन मात्र मंगलदायक अस और न होई।
मोहन मुख निरखे बिन और सहाय न कोई ॥७२॥

(पंक्ति ४४६ के बाद)

एक एक ही देह मधुर मूरति रंग भीने।
कोटि जूथ व्रज जुवति मनोरथ पूरन कीने ॥७३॥

(पंक्ति ५४० के बाद)

सब विटपन सँग लता लिपटि फूलीं झूली जल।
कूँजन सारस हंस बास बिगलित अंबुज दल ॥७४॥

(पंक्ति ५६० के बाद)

नैन हीन जो नायक ताको नव नागरि जस।
मंद हसन सु कटाक्ष लसनि कहा वह जाने रस ॥७५॥

'ज' प्रति से उद्धृत

(पंक्ति ८० के बाद)

श्री सुक रूप अनूप हो, क्यों बरने कबि नन्द।
अब वृन्दाबन बरनिहौं जहँ बृंदावन चन्द ॥७६॥

---

[1] दे. पृष्ठ ३५२

(पंक्ति १८४ के बाद)

सों हँसि हँसि ऐसे कह्यो, सुन्दर मब को राउ।
हमरो परस तुमै भयौ, अपने घर को जाउ ॥७७॥

(पंक्ति २०४ के बाद)

अरु तुमरे कर कमल महा दूती यह मुरली।
राखे सब के धर्म प्रेम अधरन रस जुरली ॥७८॥

(पंक्ति २७० के बाद)

कुञ्ज कुञ्ज ढूढ़त फिरी, खोजत दीनदयाल।
प्राणनाथ पाये नहीं बिकल भयी ब्रज बाल ॥७९॥

(पंक्ति ३३६ के बाद)

पिया संग एकात रस, विलसत राधा नारि।
कंध चढन हरि सों कह्यो, या ते तजी मुरारि[1] ॥८०॥

(पंक्ति ४३६ के बाद)

जे भजते को भजै आपने स्वार्थ के हित।
जैसे पसू परस्पर चाटत सुख मानत चित ॥८१॥
जे अनभजते भजे वहै धर्म्मी सुख कारी।
जैसे मात पिता जु करे सुत की रखवारी ॥८२॥
जे दोउन को तजै तिन्है ज्ञानी जानों तिय।
आत्म काम अथवा गुरुद्रोही अकृतज्ञ हिय ॥८३॥

---

[1] पंक्ति ३३६ के बाद 'सिद्धांतपंचाध्यायी' का रोला ८६ देकर 'ज' ने इस दोहे को दिया है।

(ग) पदावली

'क' प्रति से प्राप्त पद

वर्षोत्सव

(१).

भादों की अष्टमी आधी रात्र में कान्ह भयो सब के मन भायो ।
जोरि बटोरि धरयो धन सोंरी में सोरी जसोदा जु लुटायो ॥
मोद सों गोद लिये हुलरावत प्रान पियारे कों प्रान सो पायो ।
रोहनी में भयो मोहनी मूरति नंददास लखि हियो सिरायो ॥१॥

(२)

पुत्र भयो है आज श्री ब्रजराज के ।
प्रथम यथामति बरन हीं हो पुष्टि मारग रस रूप ।
भूतल प्रगट भये आय के हो श्री गोकुल के भूप ॥
श्री ब्रजराज को दूर गये दुख भाज ॥ श्री ब्रजराज के ॥
ब्रजवासी सब सुनतही हो आवत चहुँ दिश धाय ।
ले कावर दधि दूध की हो तन की सुधि बिसराय ॥ श्री ॥
जिन छाड दिये घर काज ॥ श्री ॥
हरद दूध दधि अक्षत कुमकुम देत परस्पर सींच ।
भीर भई नंद द्वार में हो, आंगन माची कीच ॥ श्री ॥
तिन तजी लोक की लाज ॥ श्री ॥
नद भूप कर नचावही हो देह दशा गये भूल ।
मगल स्नान करावही मन पुत्र जन्म की फूल ॥
सुत सबहिन के शीरताज ॥ श्री ॥

गर्ग परासर बोल के हो जात कर्म कर नंद ।
श्रुति पुरान गुन गावही हो प्रगटे आनंद कंद ।।
करत वेद धुनि गाज ।। श्री ।।

चंदन भवन लिपावही हो धरत साथिये चीन्ति ।
मोतिन चोक पुरावही हो करी वेद विधि रीत ।।
कलश लिये सब साज ।। श्री ।।

दुंदुभी देव बजावही हो चहुँ दिश घुरे निशान ।
बोहो विध बाजे बाजही हो करत सप्त सुर गान ।।
गावत सहज समाज ।। श्री ।।

देत असीस सबे व्रजनारी जसुमति कुख सिराय ।
मंगल साज सिंगार सुभग तन सेर धरत ले आय ।।
चरन नूपुर धुनि राज ।। श्री ।।

जाचक जन मनिमाल पेहेराइ विप्रन दीनी गाय ।
सोना मोती हीरा पन्ना दीये भंडार लुटाय ।।
देत दान व्रजराज ।। श्री ।।

श्री वृषभान आदि गोपन को बोहोत कर्‌यौ सनमान ।
प्रकट्यो नंददास को ठाकुर देत अभय पद दान ।। श्री ।।२।।

(३)

प्रगट्यो आनंद कंद गोकुल गोपाल भयो
आइ निधि नंद के गृह अखिल भवन की ।।
सजल जलद स्याम बरन सोभित अति
चरन कमल उपमा को नांहिन कोउ देउं कवन की ।।
छिरकत दधि हरद बाल फूले फिरत ग्वाल
सबे लें चली सब दूध दह्यो भवन भवन की ।।

नंददास बंदी जन द्वार रह्यो ठाडो गावे महिमा
कछु उग्र रचिनर माखन की ॥३॥

(८)

ए री सखी प्रकटे कृष्ण मुरारि,
ब्रज घर घर आनंद भयो दधिकादो आंगन नंद के ।
ए री सखी बाजत ताल मृदंग और बाजे सब साजि कें ।
भवन भीर ब्रजनारि पूत भयो ब्रजराज के ॥
घोश घोप ते बाम बसनन सजि सजि कें गई ।
रोहिनी महा बड भागि आदर दे भीतर लई ॥
बिछूवन के झनकार गलिन गलिन प्रति ह्वै रहे ।
हाथन कंचन थार उर पर श्रमकन च्वे रहे ॥
ग्वाल गोपिका जात रावरो सगरो भरि रह्यौ ।
फूले अंग न मात सबन को भागि उघरि रह्यो ॥
जहां ब्रजरानी आप सेन कीयो ढोटा भयें ।
तहा कुतूहल होत मिलि जुवती जूथन गयें ॥
निरखि कमल मुख चारु आनंद मय मूरति भई ।
लये अंचल पट छोर मन भाई असीसे दई ॥
राय चोक में घेरि छिरकत दधि हरदी मेलि ।
पकरि पकरि के ग्वाल बोल लेत भुज भुजन पेलि ॥
कावरि मथना माट अगनित गिने नही जात हें ।
धरे भरे सब ठोर कहां लो सदन समात हें ॥
होत परस्पर मार माखन के गेंदुक करे ।
एक एक कू ताकि बदन अंग लेपत खरे ॥
ऊपर ते दधि दूध शीश सीसन गागरि ढरे ।
घोटुन लों भई कीच रपटि रपटि सगरे परे ॥

व्रज गोपिन के चीर भीज लगे अग अंग सो।
गावत हैं जुरि झुंड अपने अपने रंग सो॥
हो हो बोले ग्वाल हेरी दे दे गावही।
जोरि जोरि सब बांह बाबा नंद नचावही॥
नंदराय वड भाग नाचत में देखत बने।
फिरत मंडलाकार अंग अंग सुख में सने॥
चिबुक केश सब स्वेत उर पर सगरे छै रहे।
रंग कुमकुमा रंग दधि दूधन उरझे रहे॥
भाल विशाल रसाल फेटा शीस सुहावनों।
थोदि थलक और चाल नाचे मृदंग मिलावनों॥
गहि गहि के भुज मूल रहे गोप सुख मानि कें।
रपटि परे जिन नंद सावधान यह जानि के॥
आगन उदधि आनंद पंक चढ्यो कटि लो भयो।
दई पनारी खुलाइ सरिता ज्यों वीथनि गयो॥
भानु सुता में जाइ मिल्यो रंग आनंद मे।
कलिंद नंदिनी आप सुख लूटत यह फंद में॥
यह ओसर सब साधि घोष नृपति जू न्हाइयो।
जो वरसोंदी खात ते सब विप्र बुलाइयो॥
पूजा पितर कराय दान करत बहु भाय सों।
घर के मागध सूत झगरत हे व्रजराय सो॥
मैटत सगरी रारि मन धन देत अघाइ कें।
करत बहुत सनमान भूषन पट पहराय के॥
विधि सों गाइ सिंगारि दई द्विजन के ठाठ सों।
जो मांगो सो देहुं कहत नंद विप्र भाट सो॥

अभरन अंबर छाय सहस्र पांच दश आइयो ।
हँसि हँसि रोहिनी आप ब्रज तरुनी पहराइयो ॥
घर घर घुरत निसान कही न जात कछूये जिय की ।
मंगलमय ब्रजदेश फिरत दुहाई राज की ॥
ब्रज दशा को रूप कहा कहूं सखी या समैं ।
निरखि निरखि नंददास नृत्य करत हैं ता समे ॥४॥

(५)

बधाई री बाजत आज सुहाई श्री गोकुलराज के धाम ।
रानी जसुमति ढोटा जायो है मोहन सुंदर स्याम ॥
सुनि सब गोप घोष के बासी चले वर बसन बनाय ।
तापुर की मंगल ब्रज वीथनि भीर न निकस्यो जाय ॥
आई सब गोप वधू मिलि सायन हाथन कंचन थार ।
कमल वदन सब बनी कमला सी झलकत कुंडल हार ॥
नाचत ग्वाल करत कुतूहल दधि घृत खोरें गात ।
देत मगाय बसन पट भूषण फूले अंग न समात ॥
जो जाके मन हुती कामना सो पुजाई नंदराय ।
नंददास कों दई कृपा करि अपने लल्लन की बलाय ॥५॥

(६)

श्री ब्रजराज के आंगन बाजत रंग बधाइ,
श्रवन सुनत सब गोपिका आतुर देखन आई ॥
वद भादों आठैं दिना अर्धनीशा बुधवारी,
कौलव कर्ण रोहीणी जन्मे हे नंद कुमार ॥
गोप श्रोप सो राजत आये हे तीहीं काल,
नाचत करत कोलाहल वारत मुक्ता माल ॥

बाजन दुदभी भेरी पटह नीशान सोहाय,
दधी हरदी मील छिरकत आनंद मंगल गाय ।।
ध्वजा पताका तोरन द्वारे द्वारे बंधाय,
कनक कलश शुभ मंगल भुवन भुवन धराय ।।
जाचक जुरी मिल्न आवत शब्द उच्चार,
पुष्प बृष्टि सुरपति करे बोले जयजयकार ।।
देत अशीश सबे मिलि मन मे मोद अपार,
जसोमती सुत पर तन मन नंददास बलहार ।।६।।

(७)

नंद को लाल ब्रज पालने झूले ।
कुटिल अलकावली तिलक गोरोचना चरण अंगुष्ठ मुख किलकि फूले ।
नेन अंजन रेख भेख अभिराम सुठि कंठ केहरि किकिनी कटि मूले ।
नंददासनि नाथ नंद नंदन कुवरि निरखि नागरि देह गेह भूले ।।७।।

(८)

सुदर श्याम पालने झूले ।
जसुमति माय निकट अति बेठी निरखि निरखि मन फूले ।
झुनझुना लेके बजावत रुचि सों लाल ही के अनुकूले ।।
बदन चारु पर छूटी अलक रही देखी मिटत उर सुले ।
अंबुज पर मानहु अलि छोनां धिरि आये वहु टुले ।।
दसन दोउ उधरत जब हरि के कहा कहुं सम तूले ।
नंददास घन में ज्यो दामिनी चमकी डुरत कछु खूले ।।८।।

(९)

रंग भिनि ढाढनि अति रुचि सो चारु मगलरा गावे हो ।
लाल जन्म सुनी नाचत आइ झांझ मृदंग बजावे हो ।।

उघटन मुख संगीत ललित गति देमी करी दीखरावे हो ।
चिरंजीवो जसोदा तेरो सुत यो कही मोद बढावे हो ॥
सुनि सुनि रीझि रीझि ब्रजपति अति आनंद उर न समावे हो ।
अपने लाल पर करि न्योछावर ढाढनि को पहेरावे हो ॥
देत असिस चली मंदिर ब्रजरानी नेग चुकावे हो ।
वारंबार बिलोकी ललन मुख नंददास मन भावे हो ॥९॥

(१०)

कृष्ण जन्म सुनि अपने पति सो ढाढिन यों बोली जु ।
जाउ जाउ तुम नंद नृपति के दान कोठरी खोली जु ॥
तुमको मिलेगो वागो बीड़ा और दक्षणा भरि झोरी ।
हमको लैयो नख शिप गहनो जेहरि सहित एक जोरी ॥
लैयो कंत जुगति सों लैयो हम चढिबे कों डोली ।
छोटी सी भेस सुवन मीगन की टहल करन कों गोली ॥
साज सहित एक घुडिला लैयो गैया दुध अतोली ।
सुंदर सो एक हस्ती लैयो हस्तिन संग अमोली ॥
सिज्या सहित एक टुलिया लैयो और पानन की ढोरी ।
बीरी करि करि मोहि खवावै लैयो संग तमोली ॥
जन्म जन्म काही नही जाच्यो फिरि नही माडो झोली ।
नंददास नंदराय कों ढाढी भयो अजाच्चिक ढोली ॥१०॥

(११)

माधो जु तनक सो वदन सदन शोभा को तनक भृकुटी पर तनक दिठोना ।
तनक लटूरी सोहे मुनिन के मन मोहे मानों कमल ढिग बेठे अलि छोना ॥
तनक सी रज लागी निरखत बड भागी कंठ कठुला सोहे नख बघना ।
नंददास प्रभु यशोदा के आंगन खेले जाको जस गाय गाय मुनि भये मगना ॥११॥

(१२)

निरंजन अंजन दिये सोहे नंद के आंगन माई ।
सब के नैन प्रान प्रकासिक ताके ढिग रच्यो चखोडा छाजे छबि न कही जाई ॥
निगम अगम जाकों बोलैं सो अलखल कल कछू कहत बनाई ।
नंददास जाकी माया जगत भूल्यो सो भूल्यो अपनी परछाई ॥१२॥

(१३)

मो भोरी को मन भोरचो है मन भावन बिन ही गुन मन दोरचो है ।
जुरि जुरि आय व्रज की अथाइ चितवत ही चीत चोरचो है ॥
आये चतुर मोही भोराबन औरन देख अकोरचो है ।
नंददास प्रभु की चतुराई इत जोरचो इत तोरचो है ॥१३॥

(१४)

छोटो सो कन्हैया एक मुरली मधुर छोटी ।
छोटे छोटे ग्वाल बाल छोटी पाग सिर की ॥
छोटे से कुंडल कान मुनिन के छूटे ध्यान
छूटे पट छूटी लट छूटी अलकन की ॥
छोटी सी लकुट हाथ छोटे बच्छ लियें साथ
छोटे से बने री कान्ह गोपी देखन आई घर घर की ॥
नंददास प्रभु छोटे भेद भाव मोटे मोटे
खायो है माखन शोभा देखो ये बदन की ॥१४॥

(१५)

छगन मगन बारे कन्हैया नेंकु उरे धों आउ रे लाला ।
वन में खेलन जात लाल व्हे रहे सब मलीन गात
अपने लाल की लेहुं बलाय रे लाला ॥

संग के लरिका सब बनि ठनि आये यों कहेंगे केसी हे तेरी माय रे लाला ॥
यशोदा गहत बाय वैयां मोहन करत न्हैयां न्हैयां
नंददास वलि जाय रे लाला ॥१५॥

(१६)

एसो को है जो छुवे मेरी मटुकी अछूती दहेडी जमी ।
विन मागे दियो न जाय मागे ले गारी खाइ केतेई करो उपाय
डराये डरत नहिं मेरे तें गोरस की कहा धों कमी ॥
ओर को दह्यो छिलछिलो लागत में ओट जमायो भर के तमी ।
नंददास प्रभु वडेई खवैया मेरे तो गोरस में बहुत अमी ॥ ॥१६॥

(१७)

लाल तुम परे हमारे ख्याल, स्याम लाल दान ही दान भइ नकवानी ।
जब हम यहि व्योपार छाडी देहे दूध दहीं को तब ह्वे हे काहे के दानी ॥
तिहारी चितवनी सुनी हो लाडीले नीके हम पहीचानी ।
नंददास प्रभु एसे तुम व्योसेयो जेसी हम व्योसानी ॥१७॥

(१८)

कहो जू दान लेहो केसें हम तो देव गोवर्द्धन पूजन आई ।
कोउ दह्यो कोऊ मह्यो मांखन जोरि जोरि आछो अछूतो लाई ॥
तुम्हें पहलें कैसें दीजे कान्हर जू तुम तो सबे फवी करत मन भाई ।
नंददास प्रभु तुमही परमेश्वर भये अव कछू नई ये चाल चलाई ॥१८॥

(१९)

काहे न आय आप देखो रानी जु अपने सुत के कर्म ।
भवन में भाजन एक न रह्यो कहे ते हंसि परी को को जाने वाको मर्म ॥

दिन दिन कछु कानि न राखत काहु की हानि कहो जु बसिबे को कोन धर्म ।
नंददास प्रभु मैया के आगे साधु होय बेठे चोर को कहे न मर्म ।।१६।।

(२०)

गिरिधर रोकत पनघट घाट ।
जमुना जल जो भरि नीकसे डारि कांकरी फोरत माट ।।
नख सिख ते सब अंग भीजत तब कहेत बचन के साट ।
नंददास प्रभु भले पठे हो यह विधि को आवे या बाट ।।२०।।

(२१)

एसे केसे कहीयतु ब्रज वधुवन सोइ ते आये धों पिछोडी ।
बरवट रोकत मो को करिहो कहा ग्माय कोहे बाबा की लोंडी ।।
दिन दिन को पेडोगी माइ नहीं जानत कछू बातरी ओडी ।
नंददास प्रभु वे त्रिय और जोन चाय सब तुम कीनी कनोडी ।।२१।।

(२२)

दान देउ ठहेरो इक ठैया ।
श्रमजल बिंदु परत मुख पर तें बेठो आय कदम की छैयां ।।
कुचकलशन कों ढांक धरे क्यो चाखन देउ पलोटों पैयां ।
यह रस तुम को नाही मिलेगो छांडो लाल हमारी बैयां ।।
बहुत अवार भई घर जैहों मो को आज लडेगी मैया ।
मांडो ओक प्याउं दधि मीठो बेग करो आवत बल भैया ।।
प्यारी दधि प्यावत करि हित सों श्याम सुदर पीवत न अघैयां ।
सुनो स्वाद कछु कहत न आवत नंददास आनंद न समैया ।।२२।।

(२३)

कपि चल्यो सीय सुधि कों पुनि पायन तन लटकि के।
रिपु को कटक विकट ताको चोथौ अंस पटकि कें।।
रथ सों रथ भटन सों भट चटपटी सी चटक कें।
जारि कें गढ लंक विकट रावण मुकुट झटक कें।।
कितेक छेल तंदुल से छरे ले ले मूशल मटक के।
गिरि सो गज गेंद सी गहि डार्यो भूमि भटक कें।।
सुरपुर आनंद उमग उर सों आट अटक कें।
नंददास बहुर्यो नट ज्यों उलट काछो समुद्र सटक कें।।२३।।

(२४)

यह विधि पार पोहोंच्यो पवन पूत दूत श्री रघुनाथ को।
छूट्यो जनो धनुष ते सर परम सुभट हाथ को।।
धर धर जहां करत मीच एसी राजधानी।
पेठत तिहिं लंक बंक कपि न शंका मानी।।
पुर मंदिर गिरि कंदर सुदर मणिराई।
रावण रणवास ढूंढ्यो कहुं न सीय पाइ।।
तब कह्यो यह जेतिक नगरी सगरी उचक लीजे।
उहांई ले जाय रामहि जानकी ढूढ दीजे।।
केधों दशकंध अंध इहांई ले मारों।
केधों रघुबीर आगे बांध रिपुहि डारो।।
यह बिधि बल अपनों कपि सोचत जिय मांह।
नंददास प्रभु की मोहि एसी आज्ञा नांही।।२४।।

(२५)

राजत रंग भिनी भामिनी सावरे प्रीतम संग ।
निर्तत चंचल गति कहीं न परत द्रुति
　　　　लहलहान सांखी नव घन जहां दामिनी ।।
जुवति मंडल में मध्य रूप गुन की अवधि
　　　　ताते पावे संगीत की स्वामिनी ।
राग रंगनी की रानी ततथेइ की कल बानी
　　　　कछुक सीखी कोकिला की कामिनी ।
नंददास रीझे तहां अपने पोवार्यो
　　　　जहां रवन रमा अभिरामनी ।।२५।।

(२६)

चटकीलो पट लपटानो कटि, बंसीवट जमुना के तट ठाडो नागर नट ।
मुकुट लटक ओर कुडल चटक भ्रकुटी बिकट तामें अटक्यो री मेरो मन ।।
चरण लपेटे आछे कनक लकुट चटकीली बनमाल ।।
कर टेके द्रुम डाल टेडे ठाडे नंदलाल छब छांई घटपट ।।
नंददास प्रभु प्यारी बिन देखे गोपी ग्वाल टारी न टरत याते
　　　　निपट निकट आवे सोंधे की लपट ।।२६।।

(२७)

आय क्यों न देखो लाल अपनी प्यारी की छबि
　　　　चांदनी में पोडे याते चंदहु रह्यो लजाय ।
मंडप पहोप माल नीलांबर अंबर
　　　　नासिका को देख उडुगन सकुचाय ।।

आये हे निकट लाल रीझ रहे ललचाय
बार बार देख देख मुस्की लेत बलाय।
नंददास प्रभु पिय अधरन बीरी लाय
रसिक बिहारिन प्यारी चौंक परी मुसकाय ॥२७॥

(२८)

केलि करे प्यारी पिय पोढे लख चादन में
नेह सो लग गये जोबन के जोस के।
अंगिया दरक गइ मानो प्रान देखवे को
चौंच काढि चक्रवाक काम नर रोस मे ॥
आरस सों मोरी बाँह दोउ कुच गहे
पिय रति के खीलोना मानों ढापि दीये ओस मे।
रूप के सरोवर में नंददास देख अली
चकइ के छोना बेठे कंचन के कोस मे ॥२८॥

(२९)

रेन रीझी हो प्यारे हरि को रास देख
याही तें अधिक बढ गई गेंन।
चल न सकत हरि रूप विमोही रही
एकटक आछे नक्षत्र नयन ॥
छवि सों छूटत मानो बिच बिच तारे हीरा के
आभूषण पर वार डारों जग एन।
चंदा हू थकित भयो देख के लालच
रह्यो है देख कें परम चेन ॥

जो त्यों इच्छा भई तोलों नांचे हैं गोपी गोपाल
अद्भुत गति सोपें कही न परत बेन।
नंददास प्रभु को विलास रास देखवे कु
मन्मथ हू को मन मथ्योरी मेन ॥२९॥

(३०)

खेलत रास रसिक रस नागर।
मंडित नव नागरी निकर वर रूप को आगर॥
विकसत वन वनिता राजत जानों शरद अमल।
राका सुभग सरोवर मानों फूले हे कमल॥
नवल किशोर सुदर सावल अंग कंचन तन व्रज बाला।
मानों कचन मणि मरकत मणि वृंदावन पहेरी माला॥
या छवि की उपमा कहिवे कों एसो कवि कोन पढ्यो हे।
नंददास प्रभु को कौतुक लख काम को काम बढ्यो हे॥३०॥

(३१)

बड़े खिरक में धूमरि खेलत।
मोहन लाल खिलावत रंग भर गगन गरज घंटा ध्वनि पेलत॥
उसर जात व्रजराज लाडिले धेनु डाढ जब मेलत।
नंददास प्रभु मुदित नंदरानी ही ही रस सागर मे झेलत॥३१॥

(३२)

कान्ह कुंवर के कर पल्लव पर मानों गोबर्द्धन नृत्य करे।
ज्यों ज्यों तान उठत मुरली की त्यों त्यों लालन अधर धरे॥
मेघ मृदंगी मृदग बजावत दामिनि दमक मानों दीप जरें।
ग्वाल ताल दे नीके गावत गायन के संग सुर जो भरें॥

देत असीस सकल गोपीजन बरखा कों जल अमित झरे।
अति अद्भुत अवसर गिरिधर को नंददास के दुःख हरें ॥३२॥

(३३)

गाजे गिरिराज आज गाय गोप जाके तर
नेक सो बानिक बने धरे भेख नटवर।
लियो हे उठाय व्रजराज के कुवर कर
अरग थरग राख्यो मुरली की फूक पर ॥
बरखे प्रलय के पानी न जात काहू पें बखानी
वज्र हू ते अति भारी टूटत हे तर तर।
नागर के खग मृग चातक चकोर मोर
बूंद न काहू कों लागि भयो हे कौतुक भर ॥
प्रभु जु की प्रभुताई इंद्रहु की जडताई
सुनि हसे हेर हेर हरि हसे हर हर।
नंददास प्रभु गिरिधारी जू की हासी खेल
इंद्र को गर्व गयो भये हे दूर घर ॥३३॥

(३४)

कैसे कैसे गाय चराइ गिरिधर।
गोरज मुखते झार जसोदा लेत बलैया फेर कर ॥
कहां रहे तुम घाम छांह मध्य बन बरख्यो बल समेत सुंदर बर ॥
नंददास प्रभु कहत जननी सों हम न डरे देखी बादर ॥३४॥

(३५)

सजनी आनंद उर न समाऊं।
बरसाने वृषभान लगन लिखी पठई हे नंद गांऊं ॥

धौरी धूमरी धेनू विविध रंग शोभित ठाऊं ठाऊं ।
भूषण मणि गण पार नाहिनें मो धन देख लुभाऊ ।।
नंददास लाल गिरवर की दुलहनि पर बल जाऊ ।।३५।।

(३६)

अरी चल दूलहे देखन जाय ।
सुंदर श्याम माधुरी मूरति अँखियां निरख सिराय ।।
जुरि आंई ब्रजनारि नवेली मोहन दिसि मुसिक्याय ।
मोर बन्यों सिर कानन कुंडल मरुवटि मुर्खाह सुहाय ।।
पहेरे जरकसी पट आभूषण, अंग अंग मन अरुझाय ।
तेसीयें बनी बरात छबीली जगमग रंग चुचाय ।।
गोप सभा सरवर में फूले कमल परस झपटाय ।
नंददास गोपिन के दृग अलि लपटन कों अकुलाय ।।३६।।

(३७)

दूलह गिरिधर लाल छबीलो दुलहिन राधा गोरी जू ।
जिन देखत मन मे जिय लाजत एसी बनी है यह जोरी ।।
रत्नजटि को बन्यो सेहरो उर मोतिन की माला ।
देखत बदन श्याम सुंदर को मोहि रही ब्रज बाला ।।
मदनमोहन राजत घोरा पर और बराती संगा ।
बाजत ढोल दमामा चहूं दिश ताल मृदंग उपंगा ।।
जाय जुरे वृषभान की पौरी उत तें सब मिल आए ।
टीको करी आरती उतारी मंडप में पधराए ।।
पढन वेद चहूं दिश विप्र जन भये सबन मन भाये ।
हथलेवा करि हरि राधासों मंगल चार पढाये ।।

ब्याह भयो मोहन को जबही यशोमति देत बधाई ।
चिरजीयो भूतल यह जोरी नंददास बलि जाई ॥३७॥

(३८)

लाल बने रंग भीने गिरिवर लाल बने रंग भीने ॥ ध्रु० ॥
पिय के पाग केशरी सोहे । देखत रति पति को मन मोहे ॥
तापर येक चंद्रिका धारी । प्यारी जू अपने हाथ संवारी ॥
पिय के अरुण नयन मन भाये । प्यारी बहु विधि लाड लडाये ॥
पिय की पीक कपोल बिराजे । अधरन अंजन रेखा छाजे ॥
पिय के उरसी मगरजी माला । बोलत शिथिल वचन नंद लाला ॥
छवि पर नंददास बलहारी । अंग अंग रचे कुंज विहारी ॥३८॥

(३९)

लाडिली न माने लाल आप पाउ धारो ।
जेसे हठ तजे प्यारी सो यतन विचारो ॥
बातें तो बनाय कही जेती मति मेरी ।
एकहु न माने लाल एसी प्रिय तेरी ॥
अपनी चोप के काजे सखी भेख कीनो ।
भूषन बसन साज बीना कर लीनो ॥
उतनें आवत देख चकृत निहारी ।
कोन गाम बसत हो रूप की उजारी ॥
गाम तो हे नंदगाम तहां की हों प्यारी ।
नाम तो हे श्यामा सखी तेरे हितकारी ॥
कर सों कर जोरे श्यामा निकट बैठाइ री ।
सप्त सुरन साज मिल सुलप बजाइ री ॥

रीझ के मोती माल उर पहरावे।
एमोइ हमारो पिय सामरो बजावे ॥
जोइ चाहे प्यारी सोइ माग लीजे।
एसें मनमोहन सों मान नहीं कीजे ॥
मुख सों मुख जोर श्याम दरपन दिखावे।
निरखि छबीली छबी प्रति बिंब डुलावे ॥
छिद्र तो उघर आयो हरि पीठ दीनी।
नंददास प्रभु प्यारो आंको भर लीनी ॥३९॥

(४०)

श्री विट्ठल मंगल रूप निधान।
कोटि अमृत सम हँस मृदु बोलन सब के जीवन प्रान ॥
करुणा सिंधु उदार कल्पतरु देत अभय पद दान।
शरण आये की लाज चहूं दिश बाजे प्रकट निशान।
तुमारे चरण कमल के मकरंद मन मधूकर लपटान।
नंददास प्रभु द्वारे रटत हें रुचत नाहि कछु आन ॥४०॥

(४१)

भजो श्री वल्लभ सुत के चरणं।
नंद कुमार भजन सुखदायक पतितन पावन करणं ॥
दूरि किये कलि कपट बेद विधि मत प्रचंड विस्तरणं।
अति प्रताप महिमा समाज यश शोक ताप भय अघहरणं ॥
पुष्टि मर्यादा भजन रस सेवा निज जन पोषण भरणं।
नंददास प्रभु प्रकट रूप धर श्री विट्ठलेश गिरिवर धरणं ॥४१॥

(४२)

भोर भये भोगी रस विलस भयो ठाडो ।
जागे जामिनी जगाय भामिनि अंग अंग समाय
स्याम शिथिलनी उर देत आलिगन गाढो ।
घुमत रस मत्त गमन सुधेहु न डग परत वचन
पगन छिनु छिनु दिन चोप मोजन मोजन मानो बाढो ॥
अति रस भरे रसिक राय शोभा वरनी न जाय
बलि बलि विहारी नंददास प्रेम रंग काढो ॥४२॥

(४३)

कान्ह अटा चढ चंग उडावत में अपने आगनहू ते हेर्यो ।
लोचन चार भये नदनंदन काम कटाच्छ कियो भटु मेरो ॥
किधों रही समझाय सखी री अटक न मानत यह मन मेरो ।
नददास प्रभु कब धों मिलेगे खीचत दोर किधों मन मेरो ॥४३।

(४४)

फुलन को मुकुट बन्यो फूलन को पिछोरा
तन शोभित अति प्यारो वर फूलन को शृंगार ।
कंठ फूल बागो फेंटा फूल फूल गादी गेंडुवा
फूल हॅस बैठे हैं श्यामा श्याम शोभा को नहीं पार ॥
फुलन को आभूपण वसन विराजत
फूलन के फोंदा फूल उरहार ।
नददास प्रभु फुल निरखत सुधि भूले ।
शुकदेव नारद शारद रटत वारंवार ॥४४॥

(४५)

फुलन के महेल बने फुलन बितान तने
फुलन के छाजे झरोखा फूलन के किंवार हे।
फुलन की गादी गुर्थी तकिया फुलन के
बैठे श्यामा श्याम शोभित अपार हैं॥
फूलन के वसन आभूषण विराजें
फुलन के फोंदा फुल उरहार हे।
नंददास प्रभु फुले निरखत सुधि बुधि भूले
शुकदेव नारद शारद रटत वारंवार हैं॥४५॥

(४६)

फुलनसों बेनी गुही फुलन की अंगिया
फुलन की सारी मानों फुली फुलवारी।
फुलन की दुलरी हमेल हार
फुलन की चोली चारु ओर गजरारी॥
फूलन के तरोंना कुंडल फुलन की किंकिणी सरस सँवारी।
फूल महल में फुली सी राधा प्यारी फुले नंददास जाय बलहारी॥४६॥

(४७)

छबीली राधे पूज लेनी गन गोर।
ललिता बिसाखा सब मिलि नीकसी आइ वृषभान की पोर॥
सघन कुंज गहवर वन नीको मिल्यो नंद किशोर।
नंददास प्रभु आये अचानक घेर लीयो चहुं ओर॥४७॥

(४८)

लक्ष्मण घर बाजत आज बधाई ।
पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम श्री वल्लभ सुखदाई ।।
नाचत तरुण वृद्ध और बालक उर आनंद न समाई ।
जय जय यश वंदीजन बोलत विप्रन बेद पढ़ाई ।।
हरद दूब अक्षत दधि कुंकुम आंगन कीच मचाई ।
वंदन माला सांथिन बांधन मोतिन चौकु पुराई ।।
फूले द्विज वरदान देत हे पट भूषण पहराई ।
मिट गये द्वंद नंददास के मन वांछित फल पाई ।।४८।।

(४९)

चंदन भवन मध करत व्यारु परोस धरी हे कंचन थारी ।
हस हंस जात देत मोहन कर बहु बिंजन जसुमति महतारी ।।
चंदन अंग अंग लेप कीए तन लागत हे सुखकारी ।
नंददास चरन रज सेवक तन मन डारत वारी ।।४९।।

(५०)

अक्षय तृतीया अक्षय सुख निधि पिय को पीव चढावे चंदन ।
तब ही प्रीया सिगारी नारी अरगजा घोरि सुबर नंद नंदन ।।
ले दरपन निरखे जु परस्पर रीझ रीझ रही जो वंदन ।
नंददास प्रभु पिय रस भीजे जुवतिन मुख विरह दुख कंदन ।।५०।।

(५१)

चंदन पहर नाव हरि बैठे संग वृषभान दुलारी हो ।
यमुना पुलीन शोभित तहां खेलत लाल विहारी हो ।।

त्रिविध पवन वहत सुखदायक सितल मंद सुगंध हो ।
कमल प्रकाश कुसुम बहु फुले जहाँ राजत नंद नंदा हो ।।
अक्षय तृतीया अक्षय लीला संग राधिका प्यारी हो ।
करत विहार नव सखी सों नंददास बलहारी हो ।।५१।।

(५२)

बल वामन हो जग पावन करण ।
कही न परत शोभा नील मणिन की सी शोभा गगन गयो जब सुंदर चरण ।।
बन्यो हे भेद अति उतते गंगा की धार धसी हे धरनि उज्ज्वल वरण ।
इतते पद की जोति मानों कालिंदी की धार चढी हे अमरपुर पाप हरण ।।
रहे हे चकत चाहि सुर नर मुनिवर दुहूं दिस नेह प्रान किये वरण ।
नंददास जाके चरित्र दुरित दवन रंचक श्रवण मिटे जन्म मरण ।।५२।।

(५३)

देखो माई नंद नंदन रथ ही विराजे ।
संग सोहे वृषभान नंदनी देखत मन्मथ लाजे ।।
व्रज जन सब मिल रथ खेंचत हे शोभा अदभुत छावे ।
सीतल भोगधर करत आरती नंददास गुण गावे ।।५३।।

(५४)

बेठी अटा मानों चंद छटा सी सोच करत दृग बारन बोरे ।
जाय कहो कोउ मेरे भैया सों इते भूपनि काहेन जोरे ।।
नंद नंदन ब्रज चंद विराजे ते देखे ते ते गोरे ।
नंददास प्रभु सजलताई सीतलताई हार काम न आवत ओरे ।।५४।।

(५५)

घुमड रहे दादर लगरी निशा के अहो महेरि लाले दीजे जगाय।
वर्षा रितु कहुं वरसें अचानक वालक जाय डराय॥
चिरैयन के चुह चहात जसोदा कर अपुनो निरवरि घर काज।
दधि मंथन बेठि लाबो दुध दही धोस वटत व्रजराज॥
बछरा छोर वलभद्र जगाउं दुहि दुहि लावत हे सब गाय।
नंददास लाल जगाय तिहि छिन लीनो अंक जसोदा माय॥५५॥

(५६)

आगन उजारे बैठ करोहो कलेउ लाल भवन अंधेरो हे रे दोउ भैया।
घुमडी घन घटा आइ चहु दिश ते छाइ हसत खडे खडे दोउ घैया॥
माखन मिश्री और ओटयो पय प्यावत मथ मथ दुधकी बैया।
एसो सुख देख नंददास प्रभु की पुन पुन लेत बलैया॥५६॥

(५७)

जहां तहां बोलत मोर सुहाये।
श्रवण रमण भवन वृंदाबन घोर घोर घन आये॥
नेन्ही नेन्ही बूंदन बरषन लाग्यो व्रज मंडल में छाये।
नंददास प्रभु संग सखा लिये कुंजन मुरलि बजाये॥५७॥

(५८)

नीकसी ठाडी भई री चढ नवल धवल महेल रंगीली आली मनमाझ।
तेसी उनये तेसीये बुंदन तेसीये कुसुभी सारी तेसीये फुली हे साज॥
कोउ प्रबीन सो बीन बजावत कोउ स्वर झीने झनकावत झांझ।
नंददास लटकत पिय प्यारी छबी रची विरंची मानो निपुणता भई बाँझ॥५८॥

(५९)

नयो नेह नयो मेह नई भूमि हरियारी नवल दुल्हो प्यारो नवल दुल्हैया ।
नवल चातक मोर कोकिल करत रोर नवल युगल भोर नवल उलैया ।।
नवल कसुभी सारी पहेरे श्रीराधा प्यारी ओढनी के अंग मंग सरस सुलैया ।
नंददास बलहारी छबि पर वारि डारी नवल हो पाग बनी नवल कुन्हैया ।।५९।।

(६०)

आगम गहेर गहेर गरज सुन औचक बाल सलोनी ।
प्यारी के अंक मे दुर रही एसें जेसे केहरि कंदर मंदिर ध्वनि सुन
मृगी अंक मृग छोनी ।।
नेक न धीरज धरे हीयो थरथर करे सोचत मन ही मन जेसे मुख मोनी ।
नंददास प्रभु वेग चलो क्यों न भई जो कहा आगे होनी ।।६०।।

(६१)

आयो आगम नरेश देश देश में आनंद भयो
मन्मथ अपनो सहाय कु बुलायो ।
मोरन की टेर सुन कोकिला कुलाहल
तेसोई दादुर हिलमिल सुर गायो ।।
चढयो घन मत्त हाथी पवन महावत साथी
अंकुश बंकुश दे दे चपला चलायो ।
दामिनी ध्वजा पताका फरहरात सोभा बाढ़ी
गरज गरज धो धो दमामा बजायो ।।
आगे आगे धाय धाय बादर बर्षत आय
ब्यारन की बहुकन ठोर ठोर छिरकायो ।

हरी हरी भूमि पर बूदन की शोभा बाढी
बरण रंग बिछोना बिछायो ।।
बाधेहे बिरही चोर कीनीहे जतन रोर
संजोगी सावन सों मिल अति सचुपायो ।
नंददास प्रभु नंदनद को आज्ञाकारी
अति सुखकारी ब्रजबासी मन भायो ।।६१।।

(६२)

रंग महेल रंग राग तहा बेठे दूल्हे लाल तू चल चतुर रंगीली राधे ।
अति विचित्र कियो साज तो सों रंग रहेगो आज
तमेंडे दादुर मोर पपैया फूले फूल द्रुम बाग ।।
नव सत अंग साजे पेहेर कसुभी सारी
ता पर रीझ लाल बीच बीच सोवे दाग ।
दूती के बचन सुन उठ चलि पिय पें
यह छबि निरख गाये नंददास बड भाग ।।६२।।

(६३)

अपने हाथ पातन को छतना कोउ ढांप डला पर दीजे हो ।
सुन बलराम श्याम जित चली हों तित आगे ह्वे लीजे हो ।।
पवन झकोर बुदे लागी टपकन अब अबार क्यों कीजे हो ।
नंददास प्रभु फिर न स्वाद कछु जो व्यंजन रस भीजे हो ।।६३।।

(६४)

श्याम चल कुंजन मे आये दोर ।
ऊँचे चढि टेरत ग्वालन को आवो सबे मेरि ओर ।।

गायन टेर दइ वलदाउन चौंकि चमकि आइ इक टोर।
नंददास प्रभु भोजन करवे को वेठी सखा मडली जोर ॥६४॥

(६५)

आई जु श्याम घटा घन घोर
चहुं दिश ते वरखन आवत बड़ी बड़ी बुदन।
वोही प्रकार बीजन पठये नाना विध संवार
बेठे ही फेलाय के से लागे हो अब दोना पातर गुदन ॥
प्रवल प्रकाश आकाश भये आय भाल्यो
चमचमात बीज लगत डरपावन उडगन।
नंददास प्रभु सकेत पत वडबान दीये
लाल डला भाजन भर आतुर के लागे मुदन ॥६५॥

(६६)

चहुं दीश टपकन लागी बुंदे।
बहो छारन बिजन भीजेंगे द्वार पिछोर मुदे ॥
भोजन करत शीश धर छतना याही सुख हित गुंदे।
वहे सुचेत नंददास प्रभु कोन कीच अब खुंदे ॥६६॥

(६७)

मोहन जेंमत छाक ग्वाल मंडली मांह।
लुमझुम रही देखी राधा सब कदंब की छांह ॥
व्यंजन देत निहारे कर कर कोउ लेत कोउ करत जु नाह।
नंददास आस जुठन की फुले अंग न समाह ॥६७॥

(६८)

भोजन भयो लाल नीकी विधि सों सदन कुंज की माह् ।
गरज गरज घन वरस्यो प्रबल अति कछु हम जान्यो नांह् ।।
का अचवन अब देखो व्रज शोभा कदंब खंड वन माह् ।
नंददास प्रभु तुम चिरजीयो हम नित्य जुठन खाह् ।।६८।।

(६९)

दूल्हे दुलहिन सुरंग हिंडोरे झूले प्रथम समागम अहो गठ जोरे ।
चरण खंभ भुज करिमयार डांडी चारु कमलकर रमक हुलसे दोउ ओरे ।।
सुभग सेज पटुली सुख बाढ्यो मरुवा बेलन प्राची ओरे ।
नंददास प्रभु रस बरखत जहां नवघन दामिनि के अनुहोरे ।।६९।।

(७०)

झुलत प्रीतम संग जान न परत दीन जामीनी ।
गोपी सब चहुं ओर झुलावत थोरे थोरे रस बरखत मानो घन दामीनी ।।
नवल मच्यो नेहेरा सोहत शिश सेहेरा कसोटी वसन
प्रीतम संग कनक कामीनी ।
सब हरत पिय प्यारी जहां नंददास वारो तहा
गरब गोपाल संग श्यामा गजगामीनी ।।७०।।

(७१)

झुलावत पचरंग डोरी व्रज वधु ।
नंद नदन मुख अवलोकित त्रीय संग राधिका गोरी ।।
गुलाबी सारी कंचुकी उपर गुलाबी सीगर कीसोरी ।
गुलाबी लाल उपरना लाल अंग चमकत दामिनी ओर ।।

गुलाबी झुम छाय रहो रंगना बरखत बुंदन थोरी ।
नंददास नंद नंदन संग क्रीडत गोपी जन लखी कोरी ।।७१।।

(७२)

गुलाबी कुंजन छबि छाई झुलत दोउ ।
गुलाबी फूल वीकसित द्रुम गुलावी लता उरझाई ।।
गुलाबी बसन उपरना पाघ अरु केकी पीछ सुहाई ।
गुलाबी माल उर पर लहिरति गुलाबी वदन झुक आई ।।
गुलाबी अरुन मुख दरपन नीहारत परस्पर मुसकाई ।
नंददास जुवती सब वारत तन मन धनि सरसाई ।।७२।।

(७३)

हिंडोरें झूलत बंसी बाला ।
मधुवन सघन कदंब की डारे झुलत झुकत गोपाला ।।
कंचन खंभ सुभग चहुं डांडी पटली परम रसाला ।
श्वेत विछोना विछायो तापर बैठे मदन गोपाला ।।
झुलन को आइ व्रज बनिता बोलत वचन रसाला ।
नंददास नंदनंदन मुरली सुन मग्न होत व्रज वाला ।।७३।।

(७४)

झूलत राधा मोहन कालिंदी के कूल ।
सघन लता सुहावनी चहुं दिश फुले फुल ।।
सखी जुरी चहुं दिश ते कमल नयन की ओर ।
बोलत बचन अमृत मय नंददास चित चोर ।।७४।।

(७५)

माई आज तो हिंडोरें झूलें छैंया कदम की।
गोपी सब ठाडी मानों चित्र के सदन की ॥
देखत रंगीले नयन बोलन मधुरे बेन
मोहे सब कोटि काम छबीले बदन की।
गावत मधुर ध्वनि मोहे सुर नर मुनि
शंकर से महायोगी तारी छूटी तिनकी ॥
त्रिबिध समीर जहां बंसीवट झूलें तहां
मंद मंद गावे सखी राधा के रवन की।
नंददास प्रभु जहां ललिता झुलावे तहां
भई मग्न सिंधु शोभा देख स्याम घन की ॥७५॥

(७६)

माई झूलत नवल लाल झुलावत व्रज बाल
कालिंदी के तीर माई रच्यो है हिंडोरनां।
तैसेई बोलें री मोर क्रीडा करें चहूं ओर
तैसोई मधुर ध्वनि लाग्यो घन घोरनां ॥
तैसेई फूले री फूल हरत मन के सूल
अलि गण गुंजे माई मन के सलोलनां।
नंददास प्रभु प्यारी जोरी अद्भुत भारी
देखवोई कीजे जैसे चंद्र को चकोरनां ॥७६॥

(७७)

माई फूल को हिंडोरो बन्यो फूल रही यमुना।
फूलन के खंभ दोउ डांडी चार फूलन की
फूलन बनी मयार फूल रहे वेलना ॥

तामे झूले नंदलाल सखी सब गावे ख्याल
बायें अंग राधा प्यारी फूल भई मगना ।
फूले पशु पंछी सब देख ताप कटे तब
फूले सब ग्वाल कटे दुख द्वंदना ॥
फूले घन घटा घोर कोकिला करत रोर
छबि पर वार डारो कोटि अनंगना ।
फूले सब देव मुनि ब्रह्मा करें वेद ध्वनि
नंददास फूले तहा करे बहुरंगना ॥७७॥

(७८)

माई फूलन को हिंडोरो बन्यो फूल रही यमुना
फूलन के खंभ दोउ फूलन की डाडी चार
फूलन की चौकी बनी हीरा जगमगना ॥
फूले अनि वंसीवट फूले हे यमुना तट
सब सखी मिल गावे मन भयो मगना ।
फूल सखी चहूँ ओरे झुलवत थोरे थोरे
नंददास फूले जहां मन भयो मगना ॥७८॥

(७९)

आली श्रावन की पून्यो हरि हरियारी भूमि सोहत पिया संग
झूलूगी हो नवल हिंडोरे ।
बरसत मेह भटू लागत प्यारो मोहे सखी
आपुने प्रीतम को हो प्रेम रंग बोरे ॥
पीत कुल्ही राजे चूनरी पीत सारी ल्हेगा
पीत कंचुकि सोहे तन गोरे ।

झोटन मे लोटपोट जूलन दोउ रंग भरे
निरखी छवि नंददास बल तृन तोरे ॥७६॥

(८०)

राखी बांधत गर्ग श्याम कर।
हीरा रत्न बिच बिच मानिक बिच बिच मुक्तन भर॥
दक्षिणा देत नंद पायलागत असीस देत गुरुजन सब द्विजवर।
नंददास प्रभु जियो तहाँ लों ज्यो लों चंद्र सूरज मारुतधर॥८०॥

(८१)

सब अंग छीटे लागी नीको वन्यो वान।
गोरा अगर अरगजा छिरकत खेलत गोपी कान्ह॥
हाथ भरे कनक पिचकाई भरि भरि देत सुजान।
सुर नर मुनि जन कौतुक भूल जय जय जदुकुल भान॥
ताल पखावज बेन बासुरी राग रागिनी तान।
नंददास विमलावलि वंदित नहीं उपमा कों आन॥८१॥

(८२)

कुज कुटीर मिलि यमुना तीर खेलत होरी रस भरे अहीर।
एक ओर बलबीर धीर हरि एक ओर युवतिन की भीर॥
केकी कीर कल गुन गंभीर पिक डफ मृदंग धुनि करत मंजीर।
पग मंजीर कर ले अबीर केसरि के नीर छिरकत हैं चीर॥
भये अधीर रतिपथ के तीर आनंद समीर परसत सरीर।
नंददास प्रभु पहरे हीर नग मिटत पीर गह्यो सुख को सीर॥८२॥

(८३)

तुम कौन के बस खेलो हो रंगीले हो हो होरियां ।
अंजन अधरन पीक महावर नैन रंगे रंग रोरियां ॥
बारबार जृंभात परस्पर निकसीं आईं सब चोरियां ।
नंददास प्रभु उहांई बसौ किन जहां बसे वे गोरियां ॥८३॥

(८४)

निकस कुंवर खेलन चले रंग हो हो होरी
मोहन नंद के लाल रंगन रंग हो हो हो होरी ।
संग लीने रंग भीने ग्वाल बाल वे गुन रूप रसाल ॥
कंचन माट भराय सोंधे भरी है कमोरी ।
रत्न जटित पिचकाई करन अबीर भरे झोरी ॥
सुर मंडल डफ झांझ ताल बाजत मधुर मृदंग ।
तिन में परम सुहावनी महुवरी बांसुरी चंग ॥
खेलत खेल जब रंगीलो लाल गये वृषभान की पोरि ।
जो हुती नवल किशोरी भोरि ते आई आगे दोरि ॥
सुनि निकसी नव लाडिली श्रीराधा राज किशोरी ।
ओलिन पोहोप पराग भरे रूप अनूपम गोरी ॥
संग अली रंगरली मोहे करन कनक पिचकारी ।
मोहन मन की मोहनी देत रंगीली गारी ॥
तिनकों छिरकत छबीलो लाल राजत रूप गहेली ।
मानों चंद सींचत सुधा अपने प्रेम की बेली ॥
नवल वधून के रंगीले वदन अबीर घुमड़ में डोले ।
छूटहि निसंक अरुण घन मे हिमकरनि कर कलोलें ॥
इतने मांझ छिपि छबीली कुँवरि पकरे हे मोहन आन ।
छबि सों परस्पर झक झकोरत कापें परति बखान ॥

गुप्त प्रीति प्रगटित भई लाज तनक सी तोरी।
ज्यों मदमाते चोर भोर झलकत निकसी चोरी॥
सखियन सुख देखन के काज गाठ दुहुन की जोरी।
निरख बलैयां ले सबे छवि न बढ़ी कछु थोरी॥
कोउ छैल छबीले लाल्ने छिरकत रंग अमोल।
कोउ कमल कर ले पराग परसत रुचिकर कपोल॥
बने हे पिया के कमल लोचन जब गहि आजे अंजन।
जानों अकुलात कमल मंडल में फंदन फँदे युग खंजन॥
देखि विवस वृपभान बरनि हँसत हँसत तहां आई।
बरजी आन नवल वधू भुज भरि लिये कन्हाई॥
पोंछत सुख अपने अंचल पुनि पुनि लेत बलाय।
मुसकि मुसकि छोरत सुगाँठ छवि बरनी नहीं जाय॥
छोडन न देंही नवल वधू माँगे कुवर पें फाग।
जो पें फगुवा दियो न जाय प्यारी राधा के पाय लाग॥
और कहा लगि बरनिये वढ्यो सुख सिंधु अपार।
प्रेम कलोल हलोलन मे किनहूं रही न संभार॥
रंग रंगीली ब्रज वधू रंगीले गिरिधर पीय।
यह रंग भीने नित बसो नंददास के हीय॥८४॥

(८५)

ब्रज में खेले री धमार मोहन प्यारो री नंद को।
संग बनी रस ओपी गोपी कह्यो न परत कछू
वाढ्यो या सुख सिंधु उडुचंद को॥
बाजत ताल मृदंग किन्नरी उपर बाढ्यो सुख आनंद को।
नंददास प्रभु प्यारे कौतुक देखत और
शोभा गिरिधर मेन फंद को॥८५॥

(८६)

डोल झुलावत सब ब्रज सुदरी झूलत मदन गोपाल ।
गावत फाग धमार हरख भर हलधर ओर सब ग्वाल ।।
फूले कमल केतकी कुंजो गुजन मधुप रसाल ।
चंदन बंदन चोवा छिरकत उडत अबीर गुलाल ।।
बाजत वेणु विषाण बांसुरी डफ मृदंग ओर ताल ।
नंददास प्रभु के सग विलसत पुण्य पुज ब्रज बाल ।।८६।।

(८७)

पीतांबर काजर कहां लाग्यो हो ।। लनना कोन के पोछे हें नयन ।।ध्रु०।।
कोन के गेह नेह रस पागे वे गोरी कछु ओर ।
देहु बताय कान राखति हों एसे भये चित चोर ।।
अधरन अंजन लिलाट महावर राजत पीक कपोल ।
घूमि रहे रजनी जागे से दुरत न काम कलोल ।।
नख निसान राजत छतियन पर निरखो नयन निहार ।
झूम रही अलकें अलबेली पाग के पेंच सवार ।।
हम डरपे जसुदा के आसन नागर नंद किशोर ।
पाय परे फगुवा प्रभु देहो मुरली देहु अकोर ।।
धन्य धन्य गोकुल की गोपी जिन हरि लीने हराय ।
नंददास प्रभु किये कनोंडे हें छांडे नाच नचाय ।।८७।।

(८८)

बरसाने की सीम खेलत रंग रह्यो हे ।
छलबल बानिक बान ललिता नें लाल गह्यो हे ।।
सखा श्रीदामा आदि हलधर भाज गये हें ।
गही पिचकारी हाथ जुरी चहुं कोद भये हें ।।

कोउ न आवे पास उत बल बहुत भये हे।
अधिक भई अंधियारी गगन गुलाल छयो हे॥
ता मधि दमकत अग व्रज जन रूप छटा री।
सारी भरी सुरंग मोहे कनक किनारी॥
जोरी बंदन धूर अबीर मिलाय लियो हे।
छिरक छिरक घनश्याम सबे एक रंग कियो हे॥
लपट परी विह बाल तरुन तमाले हेली।
पोहोप लता सिरताज कोंचन उपर बेली॥
करत मनोरथ वेर गिरिधर सुघर सलोनो।
लाग्यो अरगजा गाल श्रीमुख लसत रिझोनो॥
पाग उतारत आप श्री वृषभान कुमारी।
केस खोल निरवार बेनी सरस संवारी॥
झबी जराउ जोर अग्रनि ग्रथ संवारी।
मांग भरी मोतिन की पटियन ही ले पारी॥
सीस फूल सीमंत किशोरी आपुन दीनों।
समझवार समझावत नयनन अंजन कीनों॥
मृगमद आड सुदेस करी चंद्रावलि नीकी।
चंद्रभगा ले बीच लगावत पिय को टीकी॥
पहरावत झकझोर बेसर निरमोली हे।
चारु छपेरी साज पचरंग उर चोली हे॥
जेहर नेहर पाय बिछुवन छबि उपजायल।
अनवट नूपुर चूरा रत्न खचित हे पायल॥
नख सिख लों यह भात अभरन भीर भई हे।
निरख निरख यह कांति व्रज आनंद मई हे॥
बाजन लगे ढोल ओर डफ ताल मृदगा।
गोमुख किन्नरि झांझ बीच बिच मधुर उपगा॥

सहचरी भई आनंद गावत गारि सुहाई ।
दिस दिस मोहन ओर चलत निकर पिचकाई ॥
एक सखी बीच आइ अरगजा डार गई है ।
देख पलक पर रेल पिय जु गारी दई है ॥
लै लै अंचल आय पोंछत अंगुरिन दल सों ।
मुठियन चलत गुलाल आगे पाछें छल सों ॥
तेई घातन मधु पाय प्रानपिया कों पोखत ।
प्रेम विवशता हरि भर अकवारी भोखत ॥
हो हो होरी बोलत ललिता आंगन नाचत ।
करे प्रेम की टोक चोख एको नहीं बांचत ॥
नंददास खिलवार खिलारी खेलनहारो ।
भयो नेह मद माद टोल दुहुं दिस मतवारो ॥८८॥

(८९)

आज हरी खेलन फाग बनी ।
इत गोरी रोरी भर भोरी उत गोकुल को धनी ॥
चोवा को ढोवा कर राख्यो केसर कीच घनी ।
नंददास प्रभु संग होरी खेलत मुर मुर जात अनी ॥८९॥

(९०)

अरी होरी खेलन जैये सांवरे सलोने सों ।
बड़े बड़े माट भराय केसर सों पिचकाइन छिरकैये ॥
खेलत खेलत रंग रह्यो अबीर गुलाल उड़ैये ।
नंददास प्रभु होरी खेलत आनंद सिंधु बढ़ैये ॥९०॥

(९१)

अरी एसी नव यामिनी देखे भामिनी तोहि क्यों भवनसुहाय ।
जहा व्रजवर नर नारिन के यूथ जुरे हे आय ॥
श्री नंदनंदन पुनि तहां आए रंगीले रसिक मणिराय ।
आली तिन ने तु नहि देखी तव रहि गये नयना नाय ॥
तव इत उत तक मोहन पिय मोतन तक अरगाय ।
तव नयनन ही मे कह्यो कहां मैं कह्यो ग्रीव ढुराय ॥
अव रंगीले कुवर तोहि पैयां मेनन दई हो पठाय ।
तु न कर गहर नागरि त्रिय आन भनो बन्यो दाय ।
यह सुन नवल नवेली सहचरी मुसकी नयन ढुराय ॥
इतनेइ परम निपुण सखी जिन प्यारी भुज भरि लई उठाय ।
गहि नव कंचुकी सोंधे वोरी बीरी दई वनाय ॥
पुनि पटपीत पटोरन पोंछि के आगे धरी समुहाय ।
चली नवसत सज स्वामिनी कामिनी सखी के अंस भुज नाय ॥
जानों कनक धातु परवत पर तड़ित लता चमकाय ।
नव गुण नवल रूप नव यौवन नवल नेहु हुलसाय ॥
झूमक सारी प्यारी पहरे चलत ललित लरकाय ।
जनो नव रूप जोति जगमग सो पवन लगें झुकराय ॥
कमल फिरावत कर वर वाला माला उर मिरु नाय ।
ललितादिक सखियन में सुंदर शोभित हें यह भाय ॥
जानों नव कुमुदिन के मंडल मे इंदु पगन चल्यो जाय ।
कवहूँ वदन उघारत पुन हँस लेत ढुराय ॥
मंजुल मुकुर मरीचिन सी मानों छिन छिन छवि अधिकाय ।
पुनि एक लट जो छवीली की छवि सों वेसर रही अरुझाय ॥
जानों प्रीतम मन मीन की वडसी भख मुक्ता लटकाय ।
ओर एसे नव मत्त गयंदन सलकत बहां ढुराय ॥

शोभित श्रवणन स्वेद सुदित के मानों पटे चुचाय।
चंचल अंचल छोर विराजत नेक चलत जब धाय॥
नीवी बंधन फुदना घंटा किंकिणी घन घघराय।
नूपुर उपर चुरा रूरा जनु श्रृंखल झनकाय॥
सखियन के कर कुसुम छरिन ते अगड बने चहुं धाय।
मदन महाबल को बल नाहीं अंकुश देत डराय॥
सखियन मे हितू विशेष विसाखा जानो तन की परछाय।
सो नंद नंदन नेरे जान के सहज उठी कछु गाय॥
सबहिन जान्यों श्री राधा जू आई भये चौगुने चाय।
जे हुती नवल किशोरी की साथिन ते दोरी समुहाय॥
तिन संग मोहन धाये आये जानों रंक महानिधि पाय।
प्रथम ही लाल जुहार कियो मृदु मुरली माझ बजाय॥
इत ते कुटिल कटाक्षन पिय तन चितई मृदु मुसिकाय।
चाचर देन लगी ब्रज वीथन रंगीलो रंग उपजाय॥
गावन लागी ग्वालिनि गारी सुंदर ललही लगाय।
राधा जू गारिन सुन सुन हस हस हरि तन हेर लजाय॥
ललन अबीर भरत गोरी ग्वालिनि प्राण पियाहि बचाय।
सो सुख पिय नयना पहचानें सो मन में न समाय॥
और जो प्रेम विवश रस को सुख कहत कह्यो नहि जाय।
यह सुख कहिवे को सरस्वती की कोटिक सुमति हराय॥
शेष महेश सुरेश न जाने अज अजहूं पछिताय।
यह सुख रमा तनक नही पायो यद्यपि पलोटत पाय॥
श्री वृषभान सुता पद अंबुज जिन के सदा सहाय।
यह रस मगन रहत जे तिन पर नंददास बल जाय॥६१॥

(९२)

खेले नंद को नदन होरी अपने रंगीले ब्रज पे ।।ध्रु०।।
वने हे ग्वाल वाल संग जनु अनेक मेन ।
आपन मदन मोहन सोहन कह कहू छवि अेन ।।
उतते आई युवती वृंद चंद मुखी एक दाई ।
चंचल तन की दमक जनु दामिनि पट झांई ।।
जुरे हे कंचन चोहटे अपने अपने टोल ।
आनंद घन ज्यों गाजत राजत दुदुभी ढोल ।।
सुर मडल किन्नरी डफ बाजत रंग भीने ।
बीच बीच बँसुरिया वस कीनेहे मन दीने ।।
वजत चट सो पटनार ग्वार गावत संग ।
नाचत हे मधु मंगल संगीत वढयो हे अति रंग ।।
कुकुम चंदन वंदन साख मृगमद मथि घोरी ।
छवि सों छवीलो भरन डोलत बोलत हो हो होरी ।।
रग रंग की छींटन भरी सोहत त्रिय नवेली ।
वरन वरन फूलन मानों फूली आनंद वेली ।।
घुमड कर गुलाल को तामे दुर दुर आवे ।
भर भागत हरि को भामिनि दामिनि सी छबि पावे ।।
घेर लिये हें नवल त्रियन सांवरे सिरमोर ।
यह छवी सों भ्रमत जेसे कमल कोश भोर ।।
पकरे हें छबि सों आन मोहन राधिका वरजोरी ।
कही न परे प्रेम की छवि छाई झकझोरा झकझोरी ।।
व्हे ठाडे विवश सबे काहू न रही संभार ।
छूटी हे छवि सों अलक लर टूटे हें मुक्ताहार ।।
क्यो ही लुकत लाज पे अति प्रेम की उरेड ।
नददास निधि न रुकत वारू की मेड ।।९२।।

(६३)

राधा बनी रंग-भरी रंग होरी खेलें अपने प्रीतम के संग ।
एक पहले ही रंगमगो पुनि भी रंग रंग ।।
रंग रंग की सहचरी बनी छबीली के साथ ।
पहरें विविध बसन रंग रंग के रंग भरे भाजन हाथ ।।
रंग रंग की कर पिचकाई शोभित एक समान ।
मानों मन शिर पै सज्यो शोभित रूप कपान ।।
काहू पै कुसुमन गूथी छरी काहू पै नये नये नोर ।
काहू पै कुसुम गेंदुक चलें काहु पें न्यूतन मोर ।।
काहू पै अरगजा रंग को काहू पै केसर को रंग ।
कोउ गोरा मृगमद लियें होत भ्रमर जहां पंग ।।
तिन में मुकुट मणि लाडिली सोहत अति सुकुमार ।
लटक चलत ज्यों पवन तें कोमल कचन डार ।।
पिय कर पिचकाई देख के त्रिय नयना छवि सो ढराय ।
खंजन से मानो उडहि चलेंगे ठरक मीन व्हे जाय ।।
छिरकत पिय जब त्रियन को जो मन उपजे अनंद ।
मानों इदु सुधाकर सींचत जों कुमुदिन को वृंद ।।
भीजे बसन तन तन लपटाने वरणत वरण्यो न जाय ।
उपमा देन न देत नयन राखे हाहा खाय ।।
रंग रंगीली राधिका रंग रंगीलो पीय ।
यह रंगभीने नित्य बसो नंददास के हीय ।।६३।।

(६४)

चली हैं कुंवरि राधे खेलन होरी । पंकज पराग भर लीने हे झोरी ।।
रंग रंगीली सग सोहे अनगण अली । सुफल करी हे सब गोकुल की गली ।।

सरस स्वर आछी मीठी ध्वनि । हर जो जार्यो मनोज जीयो जाहि सुनि॥
बाजे डफ ताल मृदंग सुहाये । मदन सबल मानो मंगल बधाये ॥
सोहे मुख कछू कछू अंबरन दुराए । आधे आधे विधु मानो बदरन छाए ॥
अबीर धूंधर मध्य राजे रंग भीनों । मानो डीठ डर मार सार ढांक लीनो ॥
उतते आए हैं मोहन भीने रंग रगा । चरण पलोटत आवे अनंगा ॥
रंगोली गलिन बिच खेल मच्यो भारी । इत हरि उत वृषभान दुलारी ॥
कनक यंत्रन मिल शोभा भई भारी । छवि सो छूटत मानो मेन फुलवारी ॥
छिरकि छबीले आय प्यारी त्रिया गान। रंग बरसे मानो नौतन घन ॥
त्रियन के अंग रंग कण गण सोहे । कचन छरी जराय जरी छवि को हें ॥
इतते रंग की धारे सांवरे की मेली । आतुर उलहीं मानो प्रेम नवेली ॥
अबीर गुलाल मध्य मंडित गगन । मानो प्रेमरवि अब चाहत उगन ॥
कामिनी वृंदन स्याम घेर लिये एसे । दामिनी निकर मानो नवघन जेसे ॥
लपटी सांवरे अंग सोहे सब ऐसी । सिंगार कलपतरु छविलता जैसी ॥
हँसत हँसत चंद्रावलि उत गई । लाल सों कहत हों तिहारी दिशभई ॥
मुरली छिनाय लई छल सो किशोरी । तारीदेदे हँसीहे सब बोले हो हो होरी॥
राधा जु अधर धरी बांसुरी विराजी । ऐसी कबहू सांवरे पिय पे न बाजी ॥
बंसीदेन मिस प्यारी राधिका बुलाये । हँसत हँसत लाल अकेले ही आये ॥
गावत व्रज की वधू कीरति तिहारी । चिरजीयो प्यारो लाल अटल बिहारी॥
फगुवा कुँवर कान्ह बहुत जो दीनो । सब सखी प्रेम प्रीत माथे मान लीनों ॥
नंददास यह सुख कहां लो बखाने। विधिहू कह्यो हे ऐसे जाने सोई जाने ॥६४॥

(६५)

एक दिस वर व्रज बाला एक दिस मोहन मदन गोपाला ।
चाचर देत परस्पर छवि जों कही न परत तिहिं काला ॥
कुसुम धूर धूंधर मध्य चांदनी चंद किरण रही छाय ।
तेसोहि बन्यो गुलाल गगन कछु वरणत वरण्यो न जाय ॥

सुर मंडल डफ बीना झीना बाजन रस के ऐना।
चाचर में चाचर सी चितवत छबीली निरखत के नयना ॥
बज्यो है चटक कठताल तार और मृदंग मुरज टकार।
तिन संग रंग रंगीली मुरली बीच अमृत की धार ॥
बढ्यो है दुहुं दिश गुण विततान रसगान सुनत रसमूले।
मंद मंद आवन उलटन मानों प्रेम हिंडोरे झूले ॥
लटक लटक आवत छबी पावत भावन नार नवेली।
प्रेम पवन वश डोलत मानों रूप अनूपम बेली ॥
चारु चलन में मणिमय नूपुर किंकिणी कलरव राजे।
मानो भेद गति पाछे आछे मधुर ध्वनि छाजे ॥
चमक चमक दशनावलि द्युति फिर बदरन मांझ समाई।
दमक दमक दामिनी छवि पावत चंद्रन में दुर जाई ॥
अनेक भांत राग रागिणी अनुराग भरे उपजावे।
सुन विथके शिव नारद तेहू पार न पावे ॥
रस कदंब में बोरी होरी नित उठ खेलन आवे।
नंददास जाके भूरि भाग्य जे विसल विमल यश गावे ॥९५॥

नित्य कीर्त्तन

(९६)

आगे आगे भाज्यो जात भगीरथ को रथ पाछें पाछे आवत तरंग भरी गंग।
झलमलात अति उज्वल जलजोति अव निरखत मानों सीसभर मोतिन संग ॥
जहा परे हैं भूप कबके भस्म रूप ठोर ठोर जाग उठे होत सलिल संग।
नंददास मानो अग्नि के यंत्र छूटे ऐसे सुरपुर चले धरे दिव्य अंग ॥१॥

(९७)

फूलन की माला हाथ फूलि सब सखी साथ
झांकत झरोखा ठाडी नंदनी जनक की।
देखत पिया की शोभा सीया के लोचन लोभा
एकटक ठाडी मानो पुतरी कनक की ॥
पितासों कहत बात कमल कोमल गात
राख हो प्रतिज्ञा शिव के धनक की।
नंददास हरि जान्यो तृण कर तोर्यो ताही
बांस के धनैया जैसे बालक के करकी ॥२॥

(९८)

ढीले ढीले पग धरत ढीली पाग ढरक रही
ढये सेहि फिरत ऐसे कोन पें जु ढहे हो।
गाढे तो हीय के पीय ऐसी गाढी कोन तीय
गाढे गाढे भुजन बीच गाढे कर गहे ॥
लाल लाल लोयन में उनींदे लाग लाग जात
सांची कहो प्राणपति में तो लाल लहे।
नंददास प्रभु पिय निश के उनींदे आये
भये प्रात कहो लाल रात कहां रहे ॥३॥

(९९)

जागे हो रेन तुम सब नयना अरुण हमारे।
तुम कियो मधुपान घूमत हमारो मन काहेते जु नंद दुलारे ॥
उर नख चिन्ह तुम्हारें पीर हमारे कारण कोन पियारे।
नंददास प्रभु न्याय स्यामघन बरपे अनिनत जाय हम पर झूम झुमारे ॥४॥

(१००)

जानन लागे री लालन मिल विछुरन की वेदन ।
दृग भर आये री मैं कही री कछुक तेरी प्रीति कि रीति ।
आनाकानी भई घुमराई में गये एते दिन ॥
नेह कनावडे की रूप माधुरी अंग अंग लागी सरस हियो वेदन ।
नंददास प्रभु रसिक मुकुटमणि कर पर धर कपोल रहेरी
ध्यान धर ररकत ढरकत है री तिलक मृगमेदन ॥५॥

(१०१)

उपरना वाही के जु रह्यो ।
जाही के उर वसे श्यामघन निश को जो सुख रह्यो ॥
छबि तरंग अंग अंग दृग भेद न जात कह्यो ।
नंददास प्रभु चले सेनदे जब दावन दौर गह्यो ॥६॥

(१०२)

ए आज अरुन अरुन डोरे दृगन लाल के लागत है अति भले ।
बंदन भरे पगन अलि मानो कुंज दलन पर चले ॥
लाल की पगिया में न समात कुटिल अलक आलस झलमले ।
नंददास प्रभु पोहोपन मध्य मानों मधुप गुंज सोवत ते कलमले ॥७॥

(१०३)

लहेकन लागी वसंत वहार सखि त्यों त्यो बनवारी लाग्यो बहेकन ।
फूले पलास नखनाहार के से तेसें कानन लाग्यो महकेन ॥
कोकिल मोर शुक मारस हंस खंजन मीन भ्रमर अखियां देख अति ललकन ।
नंददास प्रभु प्यारी अगवानी गिरधर पिय को देखत भयो श्रमकन ॥८॥

(१०४)

नंदमदन गुरुजन की भीर तामे मोहन वदन न नीके देखन पाऊं।
बिन देखे जिय अकुलाय जाय दुख पाय यद्यपि बडरे छिन छिन उठ धाऊं ॥
ले चलि री सखी मोहि यमुना के तीर जहां होहें बलवीर देख दृगन सिराऊं।
नंददास प्यारे को नागरी मिलाय के जिवाय ले जीय की जानत हो
तोसों कहां लों जनाऊं ॥९॥

(१०५)

नंद गाम नीको लागत री।
प्रात समें दधि मथत ग्वालिनी सुनत मधुर ध्वनि गाजत री ॥
धन्य गोपी धन्य ये ग्वाल जिनके मोहन उर लागत री।
हलधर संग ग्वाल सब राजत गिरिधर ले ले दधि भागत री ॥
जहां बसत सुरदेव महामुनि एको पल नही त्यागत री।
नंददास को यह कृपाफल गिरिधर देखे मन जागत री ॥१०॥

(१०६)

माई री प्रात काल नंदलाल पाग बंधावत
बाल दिखावत दर्पण भल रह्यो लसि।
सुंदर नव करन बीच मंजु मुकुर की छबि रही फबि
मानो गहि आन्यो हे युग कमलन शशि ॥
विच विच चित के चोर मोर चंद्र माथे दिये
तिन डिग रत्न पेच बाधत हैं कस।
नंददास ललितादिक ओट भये
अवलोकन अतुलित छबि कहि न जात फूल झरे हंस ॥११॥

(१०७)

सुंदर मुख पर वारों टोना। बेनी वारन को मृद बेना।
खंजन नयनन अंजन सोहे भौंहन लोचन लोना॥
तिरछी चितवन यों छवि लागे कंजपलन अलि छौना।
जो छवि है वृषभान सुता में सो छवि नाहिन सोना।
नंददास अविचल यह जोरी राधा स्यामसलोना॥१२॥

(१०८)

ये दोऊ नागर ढोटा माई कौन गोप के बेटा।
इनकी बात कहा कहों तोसों गुणन बड़े देखन के छोटा॥
अग्रज अनुज सहोदर जोरी गौर स्याम ग्रथित सिर चोटा।
नंददास बल बल यह मूरति लीला ललित सब ही विद मोटा॥१३॥

(१०९)

नंद भवन को भूषण माई।
यशोदा को लाल बीर हलधर को राधारवन सदा सुखदाई॥
इंद्र को इंद्र देव देवन को ब्रह्म को ब्रह्म अधिक अधिकाई।
काल को काल ईश ईशन को वरण को वरण महावरदाई॥
शिव को धन संतन को सर्वस्व महिमा वेद पुराणन गाई।
नंददास को जीवन गिरिधर गोकुलमंडन कुंवर कन्हाई॥१४॥

(११०)

कौन लई कौन दई इंडुरिया गोपाल मेरी।
गो ग्वाल बाल सखा मांझ तुम ही हसत हो॥

गहे पद सुथे रहो कौन लई कासों कही
लेत कौन देख्यो सखी कहा तुम बसत हो ॥
दई है दुगाय धरत चोस में कहा चोर परत
ऐसी होय कबहु लाल कौन पे रीसत हो ।
नंददास बसत वास ब्रज में गिरिराज पास
टेढ़ो फेंटा आड बंध कौन पें कसत हो ॥१५॥

(१११)

गोकुल की पनिहारी पनिया भरन चलीं
बड़े बड़े नयना तामे खुभ रह्यो कजरा ।
पहिरे कसूंभी सारी अंग अंग छवि भारी
गोरी गोरी बहियन में मोतिन के गजरा ॥
सखी संग लिये जात हँस हँस बूझत बात
तनहुं की सुधि भूली सीस धरे गगरा ।
नंददास बलहारी बीच मिले गिरिधारी
नयन की सेन से भूल गई डगरा ॥१६॥

(११२)

ए वाल आवत डगर डगरी ।
रतन जटील पटकीयेरी ओट शीश विराजत तापर कनक गगरी ॥
भोंहरुर बीदीये छबी सो दसन वसन साजे शोभा राजत सगरी ।
नंददास नंदलाल रीझे पाछे चल आवत बोलत बचन अचगरी ॥१७॥

(११३)

पनियां भरन कैसे जाउंरी भटुरी ।
नट नागर बागर जो डोलत छबि सागर नागर जो नटुरी ॥

मोहे न संभार रहत सारी की, बेन संभारि पीत पटु री।
नंददास प्रभु कहत बने ना मेहि लटु केवो वेहि लटुरी ॥१८॥

(११४)

दंपति रस भरे भोजन करत लाडिली लाल।
बीजनमधुरे चरपरे खाटे खारे रस भरे बनाय जसोदा जी आवत जोरी रसाल॥
पय ओदन अरु दार भात गुजा मठरी जलेबी घेवर फेना रोटी
चंद्रकला रुचि सों जेवत प्यारो मदन गोपाल।
नंददास प्रभु प्रिया प्रीतम परस्पर हसन कोर भरत ललीता
मनुहार करत छबी पर बल बल जात ॥१९॥

(११५)

चित्र सराहत चितवत मुर मुर गोपी बहुत सयानी।
टक झक में झुक बदन निहारत अलक संवारत पलकन मारत जान गई नंदरानी॥
पर गये परदा ललित तिवारी कंचन थार जब आनी।
नंददास प्रभु भोजन घर में उरपर कर धर्यो वे उनते मुसकानी ॥२०॥

(११६)

खंभ की ओझल ठाढो सुबल प्रवीण सखा
कर मे जटित डबा बीरा सों भर्यो जेंवत है री मोहन ॥
परदा परे तिवारी तीनो तामध्य, झलकत अंग अग रंग सोहन।
जाही को देखत रानी ताही को उठत झुक
कोऊ नही पावत सभयो जोहन ॥
नंददास प्रभु भोजन कर बैठे तब मे
दई री सेन पान खाये आवन कह्यो री मोहन ॥२१॥

(११७)

डला भरह्यो लाल केसे के उठावे, पठायो ग्वाल छाक ले आवे ।
गिन देखो गाठ न जानों कोन कोन की सेवा
वसन सुरंग हाहाकार पायन परके पठावे ॥
आप व्रजरानी न विचारे मेरे डला पर
थार ओदन वेला न समावें ।
नंददास प्रेमी स्याम परस पद कह्यो बात
काल्ह तें जु कावर भर किंकर बुलावें ॥२२॥

(११८)

सब व्रज गोपी रही तक ताक ।
कर कर गांठ लसत सबहिन के बन को चलत जब छाक ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई घर घर तें ले निकसी थाक ।
नंददास प्रभु को यह भावत प्रेम प्रीति के पाक ॥२३॥

(११९)

उसीर महल में विराजे मंडल मध्य मोहन छाक खात ।
ओदन रोटी जंघा धरे लाल शाक पाक फल रसाल सीला पर गोरस के पात ॥
चहुं ओर मेघ ज्यों छूटत फुहारे फुही कबहु सुबल गोद हसि ढर जात ।
नंददास प्रभु स्याम ढाकतर आगुन
हसत हसावत ग्वालन सरस बनावत बात ॥२४॥

(१२०)

यमुना तट भोजन करत गोपाल ।
विविध भांत दे पठयो यशोमति व्यंजन बहोत रसाल ॥

ग्वाल मंडली मध्य विराजत हंसत हसावत ग्वाल ।
कमलनयन मुसकाय मंद हस करत परस्पर ख्याल ॥
कोउ ब्यार ढुरावत ठाडी कोउ गावत गीत रसाल ।
नंददास तहां यह सुख निरखत अंखियां होत निहाल ॥२५॥

(१२१)

जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत शंभु रटत शेष रटत
नारद शुक व्यास रटत पावत नही पार री ।
ध्रुव जन प्रह्लाद रटत कुंती के कुंवर रटत
द्रुपद सुता रटत नाथ अनाथन प्रतिपाल री ॥
गणिका गज गीध रटत गौतम की नारि रटत
राजन की रमणी रटत सुतन दे दे प्यार री ।
नंददास श्री गोपाल गिरिवरधर रूप रसाल
यशोदा के कुंवर लाल राधा उर हार री ॥२६॥

(१२२)

सारंग नयनी री काहे को कियो एतो मान ।
गौरी गहेरु छांड मिल लालें मन क्रम वचन यातें होत कल्यान ॥
जिन हठ करे री तू नटनागर सों भैरों ही देव गान ।
मुरली तान कान्हरो गावत सुन ले री कान ॥
रंग रंगीली सुघर नायकी तू जिय में अडान ।
नंददास केदारो करिके यों ही विहाय गयो मान ॥२७॥

(१२३)

आवत ही यमुना भर पानी ।
स्याम रूप काहू को ढोटा वाकी चितवन मेरी गैल भुलानी ॥

मोहन कह्यो तुमको या व्रज हमें नांहि पहिचानी।
ठगी सी रही चेटक सो लाग्यो तब व्याकुल मुख फुरत न बानी॥
जादिन तें चितये री मोहन तादिन तें हरि हाथ बिकानी।
नंददास प्रभु यों मन मिलियो ज्यों सागर में पानी॥२८॥

(१२४)

यमुना तट नव निकुंज द्रुम नव दल पहोप पुंज
तहां रची नागर वर रावटी उसीर की।
कुंकुम घनसार घोर पंकज दल बोर बोर
चरचत चहुं ओर अवनी पंकज पाटीर की॥
शोभित तन गौर स्याम सुखद सहज कुंजधाम
परसत सीतल सुगंध मंदगति समीर की।
नंददास पिय प्यारी निरख सखी ललिता ओट
श्रवन धुनि सुन किंकिणी मंजीर की॥२९॥

(१२५)

रच्यो खसखानो आज अति तामें राजे
रावटी उसीर नीर छीरक छबीली।
छुटत फुहारे चार जल गुलाब भरि
अपार निरख थकित छवि जोबन खीली॥
अरगजा चर्चित चंदमुखी चहुं ओर ठाडी
चतुर चमेली बेला राय बेली मालती कर सोहे।
श्वेत वसन अति सुवास बरनत छवि नंददास
निपट निकट कोटि मन्मथ मोहे॥३०॥

(१२६)

चंदन सुगंध अंग लगाय आय मेरे ग्रह हमही मग जोवत लाल तिहारो हे ।
ढीले ढीले पग धरत घाम के सताये लाल
बोलहु न आवे बैन कौन के बचन पारे हो ॥
बैठो लाल सीतल छांह श्रमहू को निवारन होय
सीतल जल जमुना को अनेक भांति पीजिये ।
नंददास प्रभु प्रिय हम तो दरस की प्यासी
ऐसी नीकी करो कृपा मोहि दरस दीजिये ॥३१॥

(१२७)

सुरंग दुरंग हांत पाग कुरंग लाल कैसे लोयन लोने ।
कपोल विलोलन मे झलके कल कुंडल कानन कोने ॥
रंग रंगीले के अंग सबे नवरंग रंगे ऐसे पाछें भये न आगे होने ।
नंददास सखी मेरी कहा बचले काम के आये टटावक टोने ॥३२॥

(१२८)

हांके हटक हटक गाय ठठक ठठक रही
गोकुल की गली सब सांकरी ।
जारी अटारी झरोखन मोखन झांकत
दुर दुर ठोर ठोर तें परत कांकरी ॥
चंपकली कुंदकली बरखत रसभरी
तामे पुन देखियत लिखे हे आंकरी ।
नंददास प्रभु जहीं जही द्वारे ठाढे होत तहीं तही बचन मांगत
लटक लटक जात काहू सों हांकरी काहू सों नाकरी ॥३३॥

(१२९)

धरे टेढी पाग टेढी चंद्रिका टेढे त्रीभंगी लाल।
कुडल किरण मानों कोटि रवि उदय होत उर राजत बनमाल ॥
सावरे वदन पीतांवर ओढे बजावत मुरली मधुर रसाल।
नंददास बन तें ब्रज आवत संग लिये ब्रजबाल ॥३४॥

(१३०)

धरे बांकी पाग बांकी चंद्रिका बांके बिहारीलाल।
बांकी चाल चलत बांकी गति बांके वचन रसाल ॥
बांको तिलक बांकी भृगरेखा बांकी पहिरें गुंजमाल।
गोबरधन अपने कर धरके बांके भये हे गोपाल ॥
बांकी खोर सांकरी बांकी हम सूधी हे गिरिधर लाल।
नंददास सूधे किन बोलो हे बरसाने की ग्वाल ॥३५॥

(१३१)

केलि कला कमनीय किशोर उभयरस पुंजन कुंजके नेरे।
हास विनोद कियो बल आली केतो सुख होत है हेरे ॥
बेली के फूल प्रियाले पिय पर डारे को उपमा होत मन मेरे।
नंददास मानो सांझ समय बगमाल तमाल कों जात बसेरे ॥३६॥

(१३२)

चंद्रमा नटवारी मानों सांझ समें वनते ब्रज आवत नृत्य करण।
उडुगण मानो पहोप अंगुली अंबर अरुण वरण ॥
नंदीमुख सनमुख व्हे वामदेव मनावत विघ्न हरण।
नंददास प्रभु गोपिन के हित बंसि धरी गिरिधरण ॥३७॥

(१३३)

देखन देन न बैरिन पलकें ।
निरखत बदन लाल गिरिधर को बीच परत मानों बज्र की सलकें ॥
बन ते जु आवत बेणु बजावत गोरज मंडित राजत अलकें ।
माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल ललित कपोलन झांई झलकें ॥
ऐसे मुख देखन कों सजनी कहा कियो यह पुन कमल कें ।
नंददास सब जडन की यह गति मीन मगन भायें नहिं जलके ॥३८॥

(१३४)

ये आछी तनक कनक की दोहनी, सोहनी गढाय दे री मैया ।
जाय कहोंगो बाबा नंद सों आछे पाट की नोइ दुहन सीखोंगो गैयां ॥
मेरी दाई के ढोटा सब छोटे तेऊ सीखेरी करत बन धैया ।
नंददास कान्हहृसत लोटत अरु भरत नयन जल यशुमति लेत बलैया ॥३९॥

(१३५)

घर नंदमहर के मिष ही मिष आवें गोकुल की नार ।
सुंदर बदन बिन देखे कल न परत भुल्यो धाम काम आछो बदन निहार ॥
दीपक ले चली बाहिर बाट में बडो करडार फिर आय छबि सों बयार को देत गार।
नंददास नंदलाल सों लागें हैं नयन पलक की ओट मानो बीते युग चार ॥४०॥

(१३६)

आज अटारी पर उसीर महल रचि दंपति व्यारु करत ।
खोवा मलाइ और बासोंधी पय हसि हसि घूंट भरत ॥
चहुं ओर खसखाने छूटत फुहारे फुही बीजना व्यार सीयरी मन कों हरत ।
नंददास प्रभु प्रिया प्रीतम परस्पर हसि हसि कौर लेत
सहचरी कनक डबा बीरा सों भरत ॥४१॥

(१३७)

बन ठन कहाँ चले ऐसी को मन भाई साँवरे से कुवर कन्हाई ।
मुख सोहे जैसे दूज को चंदा छिप छिप देत दिखाई ।।
चले ही जाऊ नेक ठाडे रहोगे किन एसी सीख सीखाई ।
नंददास प्रभु अब न बनेगी निकस जायगी ठकुराई ।।४२।।

(१३८)

लालन अनत रतिमान आयेहोजमेरेगेह रगीले नयन बेन तुतरात ।
अंजन अधर धरे पीक लीक सोहे तोहे काहे कों दुरात झूठी सोहे खात ।।
बातेहु बनावत बातहु न आवत एते पर
रति के चिह्न दुरात तिरछी चितवत गात ।
नंददास प्रभु प्यारी के वचन सुन भुले नाम वही को निसर जात ।।४३।।

(१३९)

मेरे री बगर ते आवत छबि सो कमल फिरावत ।
औरन सों बतरात मोतन चितवत चतुर परोसन देख देख मुसकात ।।
नयनन मनुहार करत बेनन समझावत नेह जनावत भौंह चढावत ।
नंददास प्रभु सो स्नेह लोक लाज बाढ़ी कैसे रे धीरज आवत ।।४४।।

(१४०)

भले जु भले आये मो मन भाये प्यारे रति के चिन्ह दुराये ।
सब रस दे आये अजन लीक लाये अधरन रंग पाये कहा जाय ठगाये ।।
होंही जानत और कोई नही जानत घड छोल बतिया बनाय तुम लाये ।
नंददास प्रभु तुम बहु नायक हम गँवार तुम चतुर कहाये ।।४५।।

(१४१)

प्यारे पैया परन न दीनी ।
जोइ जोइ व्यथा हुती मेरे मन में छिन एक में दूर कीनी ।।
जो सोतिन मोसों अनख करत ही सोइ आनंद भीनी ।
नंददास प्रभु चतुर शिरोमणि प्रीत छाप कर लीनी ।।४६।।

(१४२)

आवरी बावरी उजरी पाग में मेल के बाध्यो मंजुल चोटा ।
चंचल लोचन चारु मनोहर अबही गहि आन्यो है खंजन जोटा ।।
देखत रूप ठगोरी सी लागत नयनन सेन निमेष की ओटा ।
नंददास रतिराज कोटि वारों आज बन्यो व्रजराज को ढोटा ।।४७।।

(१४३)

सिर सोने के सूतन सोहत पाग पेंचन ऊपर नग लगे ।
रतनारे भारे ढरारे नयनन देखत मूर्छित मैन जगे ।।
मुख की मंजुलताई बरनी न जाई चंचलता देखि दूर भगे ।
नंददास नंदरानी छबी निरखत वार पीवत पानी जिन काहु की दृष्ट लगे ।।४८

(१४४)

चिबुक कूप मध्य पिय मन पर्यो अधर सुधारस आस ।
कुटिल अलक लटकत ऊपर काढन कों कंटक डार्यो बाध प्रेम के पास ।।
चचल लोचन ऊपर ठाडे है ग्रेचन कों मानो मधुर हास ।
नंददास प्रभु प्यारी छबि देखें बढिहैं अधिक पियास ।।४९।।

(१४५)

जल कों गई सुघट नेह भर लाई परी है चटपटी दरस की ।
इत मोहन गास उन गुरुजन त्रास
चित्र लिखी ठाढी नाम धरन सखी परस की ।।
टूटे हार फाटे चीर नयनन बहेत नीर
पनघट भई भीर सुध न कलश की ।
नंददास प्रभु सों ऐसी प्रीत गाढी
बाढी फेल परी आयन सरस की ।।५०।।

(१४६)

जर जाओ री लाज मेरे ऐसी कोन काज आवे
कमल नयन नीके देखन न दीनें ।
वनते आवत मारग में भेट भई
सकुच रही इन लोगन के लीनें ।।
कोटि यतन कर रही री निहारवे कू
अंचरा की ओट दे दे कोटि श्रम कीनें ।
नंददास प्रभु प्यारी ता दिन ते मेरे नयना
उनही के अंग अंग रंग रस भीनें ।।५१।।

(१४७)

तेरी भोंह की मरोरन ते ललित त्रीभंगी भये
अंजन दे चितयो भये जू स्याम वाम ।
तेरी मुसकान देख दामिनी सी कोंध जात
दीन ह्वे याचत प्यारी लेत राधे आधो नाम ।।

ज्यों ज्यों नचायो चाहो तैसे हरि नाचत बल
अब तो मया कीजे चलिये निकुंज धाम ।
नंददास प्रभु बोलो तो बुलाय लाऊं
उनको तो कलप बीतें तेरी घरी याम ।।५

(१४८)

स्याम सलूने गात हे काहु को ढोटा ।
आई हूं देख खिरक मुख ठाढो न कछू कहेन की बात ।।
कमल फिरावत नयन नचावत मोतन्न सुर मुसकात ।
छवि के बल जग जीति गर्ब भर्यो मेन मानों इतरात ।।
नख सिख रूप अनूपरूप छबि कवि पे बरन्यो न जात ।
नंददास चात्रक की चोंच पुट सब घन कैसे समात ।।५३।।

(१४९)

तेरे री नव जोवन के अंग रंग से लागत परम सुहाए ।
जगमग जगमग होत मनो मृदु कनक डंड पर ललित नग लगाये ।।
तामे तू कुवरि कर उरजन की प्रीति निरख याते मो मन भाये ।
नंददास प्रभु प्यारी के अंतर ठौर दे बाहिर निकस आये ।।५४।।

(१५०)

बेसर कौन की अति नीकी ।
होड परी प्रीतम अरु प्यारी अपने अपने जी की ।।
न्याय पर्यो ललिता के आगे कौन सरस कौन फीकी ।
नंददास बिलग जिन मानों कछु एक सरस लली की ।।५५।।

(१५१)

बनी आज श्वेत पाग लाल सिर चलो सखी देखन जाय ।
उसीर महल में कुसुम रावटी छिरक्यो गुलाव नीर नैनन को फल पाय ।।
मजुल चोटा ता मधि बांध्यो बने हे मदन रूप कदम की छांय ।
नददासप्रभु प्रियाप्रीतम परस्पर कबहुक करत केलि
कबहुक हसि ढर जाय ।।५६।।

(१५२)

रुचिर चित्रसारी सघन कुंज के मधि कुसुम रावटी राजे ।
चदन के चहुं ओर छवि छाय रही
फुलन के आभूखन सब फुलन सिगार सब साजे ।।
सीयरे त्हेखाने मे त्रिविध समीर सीयरी
चंदन के बाग मधि चंदन महल छाजे ।
नददास प्रिया प्रितम नवल जोरी
बिधना रची बनाय श्री ब्रजराज बिराजे ।।५७।।

(१५३)

अद्भुत बाग बन्यो नव निकुज मध्य
विविध पक्षी तहां गुजार करत री ।
उसीर महल रचि बैठे प्रिया प्रितम
चहुं ओर सहचरी होदन भरत री ।।
छूटन फुहारे फुही मेघ ज्यों बरखत
उमगि घटा नीकी मदन अनुसरत री ।
कदली खंभ लपटचो श्याम तमाल सों
नंददास प्रभु कोटि मेन परहरत री ।।५८।।

(१५४)

चढ बढ बिडर गई अंग अंग मानवेली तेरे सयानी ।
हृदय आलवाल मध्य प्रकट भई री आली
प्रीति पाली नीके कर छिन छिन रूसबो भयो पानी
कोन कोन अंगन तें निरवारो री आली
अलक तिलक नयन बेन भोह मो लपटानी ।
नंददास प्रभु प्यारी दूती के वचन सुन
छबीली राधे मंद मंद मुर मुसकानी ॥

(१५५)

ये मन मान मेरो कह्यो काहे को रुसानी
प्यारे स्याम सों सुधो क्यो न चितवे री मोतन ।
जे जे हुती सोंती तेरी तिनहु की जीत होनि सुघराई क्यों न
करत बडहंसि तेरी होति तू कर बिचार नायका क्यों न होत तू नट ॥
जिन आडन पट दीजे री मेरी आली काफी के बचन सुनत
ललित कहै रस लैये जु कैसे के रिझैये ईन को मन ।
अरी धन ह्वै जु आशावरि रहिये तेरे उन आगे कैसे दिन भरो री
कहेत नंददास देशाख कहत बचन सुन कान्हर सो आय पायन
परे कर आभरन उठि अक मिल माल वन ठन ॥६०॥

(१५६)

तुम पहिले तो देखो आय मानिनी की शोभा लाल
पाछे तो मनाय लीजे प्यारे हो गोविंदा ।
कर पर धरे कपोल रहे री नैनन मूद
कमल बिछाय मानों सोयो सुखचंदा ॥

रिसपरी भौंह तापे भ्रमर बैठे अरबरात
इंदुतर आयो मकरंद अरविंदा।
नंददास प्रभु ऐसी काहे को रूसैये बल
जाको मुख देखे ते मिटत दुख द्वंदा ॥६१॥

(१५७)

तेरे री मनावे तें मान नीको लागत
जोलो रही आली तो लो लाल ले आऊं।
तेरी तो रुखाई प्यारी और को हसनो
मोर मुख नोखेहू कला को पून्यो चंद बल जाऊं॥
चल न सकत इत पग न परत उत
ऐसी शोभा फिर पाऊं के न पाऊं।
नंददास द्वय दिश कठिन भई
देखबो करूं कैधों लाल ले आऊं॥६२॥

(१५८)

आपन चलिये लालन कीजिये न लाज।
मोसी जो तुम कोटिक पठावो प्यारी न मानत आज॥
हों तो तिहारी आज्ञाकारी मोसों कहा कहेत महाराज।
नंददास प्रभु बडरे बन्हे गये आप काज महाकाज॥६३॥

(१५९)

तूं न मानन देत आली री मन नेरो मानवे को करत।
पिय की आरत देख मेरे जिय दया होत तेरी दृष्टि देख देख डरत॥
मो सों कहत कहा मेरो न दोष कछू
निपट हठीली धाय क्यों अंक भरत।

नंददास प्रभु दूती के वचन सुन
ऐसे अंग ढर्यो जेसे आंच के लगे ते राग ढरत ॥

(१६०)

काहे कु तुम प्यारे सषी भेष कीनो ।
भूषण वसन साजे बीना कर लीनो ॥
मोतिन माग गुही तुम कैसे ही प्यारे ।
हम नहि जाने पहचाने कोन के दुलारे ॥
हंसवे को नेम नित्य प्यारी तुम लीनो ।
ताही के कारण हम सषी भेष कीनो ॥
सब सखी दुर दुर देखी कुंजन की गलियां ।
नंददास प्रभु प्यारे मान लीनी रलियां ॥६५॥

(१६१)

मान न घट्यो आली तेरो घट जु गई सब रेन ।
बोलन लागे तमचुर ठोर ठोर तू अजहूं न बोली री पिक बेन ॥
कमल कली बिकसी तू न नेक हसी कौन टेव परी मृगशावक नयन ।
नंददास प्रभु को नेह देख हांसी आवत वे बैठे हें रचि रचि सेन ॥६६

(१६२)

रेन तो घटन्ती जाती सुनरी सयानी बाते
मेरो कह्यो माने नाही तोहि न सुहात री ।
सुख के सुहाग भरी ऐसी कैसी टेव परी
घटत ना मान तेरो दया न आत री ॥
जाके दरश को सब जग तरसत
सोई तेरे रूप बिन रह्यो न जात री ।

नंददास नंदलाल बैठे अतिशय बिहाल
मुरली की ध्वनि सुन तेरो नाम गात री ॥६७॥

(१६३)

प्यारी पग हरे हरे धर।
जैसें तेरे नूपुर न बाजही जागत व्रज को लोग
नाही सुनायबे योग हाहा री हठीली नेक मेरो कह्यो कर ॥
जो लों वन वीथिन मांहि सघन कुंज की परछांहि
तो लों मुख ढांप चल कुंवर रसिक वर।
नददास प्रभु प्यारी छिनहु न होय न्यारी
शरद उजियारी जामेंजेहोंकहुंरर ॥६८॥

(१६४)

आज आये मेरे धाम श्याम माई नागर नंद किशोर।
चंदा रे तू थिर ह्यो रहियो होंन न पावे भोर ॥
दादुर चकोर पपैया बोलो और बोलो बन के सब मोर।
नददास प्रभु वे जिन बोलो बारो तमचर चोर ॥६९॥

(१६५)

चापत चरण मोहनलाल।
पलका पोढी कुंवरि राधे सुदरी नव बाल ॥
कबहुं कर गहि नयन मिलवत कबहुं छुवावत भाल।
नददास प्रभु छवि निहारत प्रीत के प्रतिपाल ॥७०॥

(१६६)

पिय प्यारी के चरन पलोटत ।
ललितादिक बीजना ले आई ताही देख के घूंघट ओटत ।।
चंदन लेप करत दोउ अंगन आलिंगन अधरन रस घोटत ।
नंददास स्याम स्यामा दोऊ पौढे नव निकुंज कालिंदी के तट ।।७१।।

(१६७)

कुसुम सेज पोढे दंपति करत हे रस बतियां ।
त्रिविध समीर सीयरी उसीर रावटी मध
खसखाने सींचे सुभग जुडावत हे पिय छतियां ।।
कपोल सों कपोल दीये भुज सों भुज भीढे
कुच उतंग पिय राजत हे भतियां ।
नंददास प्रभु कनक पर्यंक पर सब सुख विलस
केलि करत मोहन एक गत मतियां ।।७२।।

(१६८)

दंपति पोढेई पोढे रसबतियां करन लागे दोउ नयना लाग गये ।
सेज ऊजरी चंदा हु ते निर्मल तापर कमल छये ।।
फूकत दृग वृषभान नंदिनी झपत खुलत मुरझात नये ।
मानों कमल मध्य अलि सुत बैठे साझ समय मानो सकुच गये ।।
आलस जान आप संग पोढी पिय हिये उर लाय लये ।
नंददास प्रभु मिली श्याम तमाल ढिग कनक लता उलहये ।।७३।।

(१६९)

चलिये कुंवर कान्ह सखी बेष कीजे ।
देखो चाहो लाडिली कों अबही देख लीजे ।।

ठाडी हे मंजन किये आंगन अपने।
देखि न सुनि न एसी संपति सपने॥
बडे वडे वार पाछे छूटे अति छाजे।
मानहुं मकरध्वज चमर विराजें॥
बदन सलिल कण जगमग जोती।
मानों इंदु सुवा तासे अमीमय मोती॥
आधो मोती हार चारु उर रह्यो लसी।
कनक लता तें मानों उदय होत ससी॥
पुन सुरसरी सम मोतिन के हारा।
रोमावलि मिली मानों यमुना की धारा॥
पीक झलकन सोहे सरस्वती ऐनी।
परम पावन देखी मदन त्रवेनी॥
अंचल उडन छवि कहिये कवन।
रूप दीप शिखा मानों परसी पवन॥
शिव मोहे जिन वह मोहनी जे कोई।
प्यारी के पायंन आज आन परे सोई॥
नंददास और छवि कहां लों कहीजे।
देखे ही बने हो लाल चल्योंहि चहीजे॥७४॥

(१७०)

वाके तो नयन मने चाहे पें वे प्यारी नहीं मानत।
दृगन ते रस की हासी औहें करत उदासी बेनन आन आन वानत॥
वो तो तिहारे रस रूप की अधीनताई दरपण ले दरबराय आपवश आनत।
नंददास प्रभु जाके तन भेद भयो टूटेगो मानगढयों जानत॥७५॥

(१७१)

दोरी दोरी आवत मोहि मनावत दाम खरच कछु मोल लई री।
अचरा पसार के मोहि खिजावत हों तेरे बाबा की चेरी भई री॥
जा री जा सखी भवन आपनें लख बातन की एक कही री।
नंददास वे क्यों नहीं आवत उनके पायन कछु मेंदी दई री॥७६॥

(१७२)

पोढे माई प्रीतम प्यारी संग।
रंग महल की ललित तिबारी परदा परे सुरंग॥
जगमगात पावक अंगीठी धरी रति रस रंग।
नंददास प्रभु प्यारी जीत हे मुदित अनंग॥७७॥

(१७३)

बिलसत रंग महल रंग लाल।
रस रस की करत बतियां संग पोढी बाल॥
खचित परदा परे चहुं दिश मुदे झरोखा जाल।
जगमगात पावक अंगीठी गान तान रसाल॥
नवल नारी निहारी प्रीतम व्हे रही उर माल।
नंददास प्रभु युगल छबि पर डारों सर्वस्व वार॥७८॥

(१७४)

माई री लाल आए री मेरे ही महल तन मन धन सब वारों।
हों बल गई सखी आज की आवन पर पलकन सों मग झारों॥
अति सुकुमार पद करन सरी कंकर गुन सब टारों।
नंददास प्रभु नंद नंदन सों ऐसी प्रीत नित धारों॥७९॥

(१७५)

लाल संग रितुमानी में जानी कहे देत नैना रंग भोंए ।
चंचल अचल में न समात ईतरात रूप उदधि मानो मीन महावर धोंए ॥
पलक पीक झगमगात द्रग मानिक मानों जराय लीये प्रेम पाट पोए ।
नंददास प्रभु सुख के लोभ लालचि जानत हों निश नेक न सोए ॥८०॥

(१७६)

रुखरी मधुवन की मोहन संग निस दिन रहत खरी ।
जबते परस भयो मोहन को नबतें रहेत हरी ॥
सीतल जल जमुना को सींचत प्रफुलित द्रुम लता सगरी ।
नंददास प्रभु के शरन जाए तें जीवन मुक्ति करी ॥८१॥

(१७७)

जो तु दरपन ले निरख निरख हसत सो तो में जानी री माई ।
के तेरे ईन रंगीले नेनन प्राण प्यारे कि माधुरी मुरत ताकी बझांई ॥
हों तो रही रीझ रीझ मो पें कछु कहे न आवे रुप को लोंनाई ।
नंददास प्रभु की प्यारी अब कछु मोहि दिजीये जु देखो धो केसी बन आई ॥८२॥

(१७८)

हो तो वार डारी तन मन धन लालन पर ।
लाल सिर पाग ढरक रही रतन पेंच सिर सुभग संवारी ॥
भाल विशाल तिलक गोरोचन अलक सोहत घुघरारी ।
नंददास प्रभु की छबि निरखत अखियां पलक न परत संवारी ॥८३॥

(१७९)

धन धन प्रभावती जिन जाई ऐसी बेटी
धन धन हो वृषभान पीता ।
सुर बुननि की बानी सो तो तिहुं लोक जानी
उपज परी मानो कनक लता ॥
चरन पर गंगा वारों मुख पर शशि वारों
ऐसी त्रिभुवन में नाहिन बनिता ।
नंददास स्याम बस करवे को राधा जु के
तोले नांहि सिंधु सुता ॥८४॥

(१८०)

कौन दान दानी को ।
करन लगे नई रीति अनोखे दुध दही को मही को अजहु हम जानी को ॥
करत हो विचित्र चाल सुबल तोक पे चलाय काहु सों
कहत गाढो जमायो काहु सों कहत पानी को ।
नंददास आसपास लटक रही कनक बेलि
मोहन की अमेठन में सबही अरुझानी को ॥८५॥

(१८१)

मोहे बोलबो न चालबो बुलायबो न बोलबो
जसोदा जु तिहारे कान्ह ऐसी गारी दीनी ।
दधि में लगायो दान दिये बिन न देत जान
ऐसी अटपटी वाल तिहारे कान्ह कीनी ॥

खोर में मरोरी बांह मटुकी झटक लीनी
जानों कहा कीनी पाट इंडुरी नवीली।
अकथ कहानी बरजो न मानी व्रजपति
रानी मे निहारो कान कीनी ॥८६॥

(१८२)

लाल तुम मांगन दान कैसो।
छांडो बाट हम जेहे मोहन रोकत हो मग अैसो॥
दूध दही को दान सुन्यो कहीं देहो कहा कहो जु तैसो।
नंददास प्रभु गिरिधर सुत क्यों बोलत बोल अनेसो॥८७॥

(१८३)

अरे तेरी याही मे बन आई।
यह मारग तुम रोके रहेत हो छीन छीन दधि खाई॥
तुम जानत हो घेरी हमने रही अपनी समदाई।
नंददास प्रभु तनक छाछ मे निकस जात ठकुराई॥८८॥

'ख' प्रति से प्राप्त पद

(१८४)

योगी रे बसो तो बसो गोबर्द्धन नगर बसो तो मथुरा धाम।
सरिता बसो तो बसो यमुना तट रसना रटो तो जपो कृष्ण नाम॥
नंद के नंदन पति है हमारे पुष्ट लीला मारग है हे घनश्याम।
नंददास यदुनाथ आस एक चरण कमल लह्यो विश्राम॥१॥

(१८५)

एरी तेरी सेज की मुसक्यान मोहन मोह लीनो।
जाको यश रटत सुनि सजनी सो तेरे आधीनो॥
और की संवार के घर किये रहत है आपुनपो तज दीनो।
नंददास वाको चितवन मे टोना सो कछु कीनो॥२॥

(१८६)

तू तो नेक कान दे सुदर बांसुरी में बजावे तुव नाम।
पुनि पुनि राधे राधे प्राणेश्वरी वह गावै घनश्याम॥
तुव तन परसी जो पन जात ताकों उठ परिरंभन सुख को धाम।
नंददास ऐसे पिय सों क्यों रूठिएरी चल पूरिए मधुरिपु काम॥३॥

(१८७)

आज मेरे धाम आए री नागर नंदकिशोर।
धन दिवस धन रात री सजनी धन भाग सखी मोर॥
मंगल गावो चौक पुरावो वंदनवार धावो पौर।
नंददास प्रभु संग रस वस कर जागत करहूं भोर॥४॥

(१८८)

एरी इन बांसुरिया माई मेरो सरवस चोरायो
हरि तो चोरायो हतो अकेलो चीर।
अरुन बसन अरु नयन श्रवण सुख लोक लाज कुल धरम धीर॥
अधर सुधा सर्व्वस जु हमारो ताहे निधरक पीवत रह गंभीर।
नंददास प्रभु को हियो कहा कहूं यह प्रेम बीर॥५॥

(१८९)

राम कृष्ण कहिए निशि भोर।
वे अवधेश धनुष धरे वे ब्रज जीवन माखन चोर ॥
उनके छत्र चमर सिंहासन भरत शत्रुहन लक्ष्मन जोर।
उनके लकुट मुकट पीताम्बर गायन के संग नंदकिशोर ॥
उन सागर में शिला तराई उन राख्यो गिरधर नख कोर।
नंददास प्रभु प्रपंच तजि भजिये जैसे निरत चन्दु चकोर ॥६॥

(१९०)

भक्त पर करि कृपा यमुना ऐसी।
छांड़ि निज धाम विश्राम भूतल कियो न प्रकट लीला दिखाई जो तैसी ॥
परस परमार्थ करण है पवनि को रूप अद्‌भुत देत आप जैसी।
नंददास जो जानि दृढ़ चरण गहे एक रसना कहा कहूं वैसी ॥७॥

(१९१)

नेह कारण यमुना प्रथम आई।
भक्त की चित्त वृत्ति सब जानही ताहिते अति ही आतुर जो धाई ॥
जैसी जाके मन हती मन इच्छा ताहि तैसी साध जो पुजाई।
नंददास प्रभु नाथ ताहि पर रीझत यमुना जू के गुण जो गाई ॥८॥

(१९२)

यमुने यमुने यमुने जो गावो।
शेष सहस्र मुख गावत निश दिन पार नहीं पावत ताहि पावो ॥
सकल सुख देनहार ताते करो उच्चार कहत हों वार वार भूलि जिनि जावो।
नंददास की आशा यमुना पूरण करी ताते कहूं घरी घरी चित्त लावो ॥९॥

(१६३)

भाग्य सौभाग्य यमुना जो दे री ।
बारा लौकिक तजे पुष्टि यमुना भजे लाल गिरिधरण को ताहि वर मिले री ॥
भगवदी संग करि बात उनकी ले सदा सानिद्धय रहे केलि मे री ।
नंददास जो जाहि वल्लभ कृपा करे ताके यमुने सदा वश जो रहे री ॥१०॥

(१६४)

जगावति अपने सुत को रानी ।
उठो मेरे लाल मनोहर सुंदर कहि कहि मधुरी बानी ॥
माखन मिश्री और मिठाई दूध मलाई आनी ।
छगन मगन तुम करहु कलेऊ मेरे सब सुखदानी ॥
जननी-वचन सुनि तुरत उठे हरि कहत बात तुतरानी ।
नंददास कीन्हों बलिहारी यशुमति मन हर्षानी ॥११॥

(१६५)

यमुना पुलिन सुभग वृंदावन नवल लाल गोबर्द्धनधारी ।
नवल निकुंज नवल कुसुमित दल नवल नवल वृषभानु दुलारी ॥
नवल हास नव नव छवि क्रीड़त नवल विलास करत सुखकारी ।
नवल श्री विट्ठलनाथ कृपाबल नंददास निरखत बलिहारी ॥१२॥

(१६६)

चंचल ले चली री चितचोर ।
मोहन को मन यों वश कर लियो ज्यों चकरी संग डोर ॥
जो लो न देखत तव मूर्ति तो लो पलक न लागत निमिष न भोर

(१९७)

प्रात समय श्री वल्लभ सुत को पुण्य पवित्र विमल यश गाऊं।
सुदर शुभग वदन गिरिधर को निरखि निरखि दृग दृगन सिराऊं ॥
मोहन मधुर वचन श्रीमुख के श्रवण सुनि सुनि हृदय बसाऊं।
तन मन प्राण निवेदि वेद विधि यह अपुनपो हों सुभल कराऊं ॥
रहों सदा चरणन के आगे महाप्रसाद उच्छिष्ट पाऊं।
नंददास यह मागत हो श्री वल्लभकुल को दास कहाऊ ॥१४॥

(१९८)

आलस उनीदे नयन लाल तिहारे कहां तुम रैन विताए।
पीक कपोल देखियत है प्रिय अधरनि अंजन लखाए॥
जावक भाल उर विन गुण माल हृदय नख चिन्ह दिखाए।
नंददास प्रभु बोल निबाहे भोर होत उठि धाए ॥१५॥

(१९९)

नंदराय जू के द्वारे भोरहि उठि पहाउ।
निरवधि आनंद सूरनि निरखि नैन सिराउ॥
उज्वल तन थोरी थोदि राता अम्बर सोहे।
अरुण घनते निकसि पूरण चंद की छबि को हे॥
ब्रह्म घनीभूत पूत कर अंगुरिया लायो।
मद मंद चलन सिखवति लोचन फल पायो॥
रिद्धि सिद्धि निद्धि सहित रमा टहल करति फिरे।
अर्थ धर्म काम मोक्ष भीख भिखारिन परे॥
नद जू कहत कहा मागत हों टेरि सुनाउ।
नददास नंदलाल को नेकु उत्तीरन पाउ ॥१६॥

'अ' प्रति से प्राप्त पद

(२००)

बोली मदन गुपाल लाल सुनि मानिनी ।
जिनि करि इतौ सयान अहो सुनि मानिनी ।
आयो सरस वसंत समय । सु० । काहू को रहिहै न मान । अहो ।।
उतर घरनि कें घर चल्यौ । सु० । सुदर दिनमनि पीय । अहो ।।
छांडियै कछु इक मान जानि । सु० । दछिन वि×छन तीय । अहो ।।
मलय पवन की आजु ही । सु० । ह्वै गई ताती वासु । अहो ।।
जनु दक्षिण दिस विरहिनी । सु० । लीनी विरह उसासु । अहो ।।
वह सुनि कानन कान्त दै । सु० । कोकी की कुहकानि । अहो ।।
आनक मनो रितुराज कौ । सु० । सिर पर वाज्यौ आनि । अहो ।।
जिहिं डर वृल्लिन मान छांडि । सु० । उलही है आनकपटि । अहो ।।
नाइक द्रुमनि के कंठ सों । सु० । कैसी गई है लपटि । अहो ।।
काम भई रजनी भई । सु० । गई रवि मंडल छाइ । अहो ।।
थिर चर लिय सव रहसि के । सु० । मिली पियनि सों जाइ । अहो ।।
ठोर ठोर मिलि मधुप पुंज । सु० । गुंजन सौरभ छाइ । अहो ।।
मनो विहरति छवि मधु वधू । सु० । नूपुर वाज पाइ । अहो ।।
मिलि कूजहिं कल कोकिला । सु० । कोमल कंठ सुजात । अहो ।।
अटनि चढी मानों मधु वधु । सु० । करनि परुसपर वात । अहो ।।
और विहंगम रंग भरे । सु० । करत जु कानन रौरि । अहो ।।
मनों मनमथ कुंजर छुओ । सु० । परचौ मधु नगरी सोर । अहो ।।
त्रिगुन पवन चंचल तुरंग । सु० । चढयौ रतिराज विदेह । अहो ।।
उडी जु पोहप पराग तहा । सु० । वढी मनो धुर षेह । अहो ।।
षग वंदीजन वदल विरद । सु० । मदन जहां सिरमौर । अहो ।।

निनि मैं कपोती कहति यहै। सु०। एकै तू नहि और। अहो ॥
कुसुम मरासन कर धरै। सु०। विषम विष भरे बांन। अहो ॥
को सहिहै तीछन परे। सु०। चढे चंद पर सांन। अहो ॥
बृंदावन मिनि रम्य भयौ। सु०। नव कुसुमाकर चारु। अहो ॥
ज्यौं कुच मंडल जुवनि के। सु०। मंडित मंजुल हार। अहो ॥
तरुनि मुकुट मनि बाल तू। सु०। लाल रसिक मनि राय। अहो ॥
कीजै सफल बसंत समै। सु०। पहलै पिय सों जाइ। अहो ॥
मिलहु न लाल गुपाल कौं। सु०। छुवत तिहारे पाइ। अहो ॥
मांन छांडि मोहन मिनी। नंददास बलि जाइ ॥१॥

(२०१)

बराजोरी होरी मचावै री।
अरी मेरी चूनरि झटके सावरो बराजोरी ॥
ग चा (?) कष्न कन्हैया कर गहि लीनी जु व ना औ दस्त चलावे।
सोहनी सुरति मोहनी मुरति रंग भरी धुम मचावै।
नंददास प्रभु तुम वह नायक हिलिमिलि कंठ लगावै री ॥२॥

'इ' प्रति से प्राप्त पद

(२०२)

सखि नव नंद नंदन रुचिर रूप। नवल नागरी गुन अनूप।
नव नेह नइ रुचिर न बिलास। नवरूप मोहर मंद हास।
नव पीत वसन पहरे त्रिभंग। नीलांबर सारी गौर अंग।
नव पुस्पित बल्लि कुंज धाम। नव वृंदावन सुष अभिराम।

नव नूत मंजरी अति विलास (विसाल ?) नव पल्लव दल मानो प्रवाल।
नव कोकिल कूजति अति सुहाइ। तहां नव मलया तिविधि बाइ।
तहां नव मंडली सी आसपास। तहां नव सुप निरपत नंददास ॥१॥

'ई' प्रति से प्राप्त पद

(२०३)

कन्हैया माई पनघट बाट रोके रहतु।
कबहूं धाई मेरो अंचल गहे कबही नेन जोरि आन की आंन कहतु।
सखिय मनाय लाई आपुही आपु आई एतो हठ सठ मेरो कोंन धो सहेगो।
नंददास क्यो समाय एक गाव को बसिवो सखी एसोवौ कैसे निवहेगो ॥१॥

(२०४)

नाचत रस रंग भरी निज भुज हरि अंग धरी
तरनि तनया तीर बनी गोप बधू मंडली।
कूंजित मंजीर नूपुर कटि तटि मनि मेखला
कर बलय सब्य बाजत धुनि मुरलिका भली ॥
श्रमित स्वेद विंदुका मुखारविंद पर विराजे
सिथिल कुसुम ग्रथित कंचन विथुरित अलकावली।
नंददास रास विलास रिझवत मुख मधुर हास
गिरिवरधर रूप देखि मनसा चली ॥२॥

(२०५)

आली री मंद मंद मुरली धुनि बाजत नृत्यत कुवर कन्हैया।
तेसीए सरद चांदनी निर्मल तेसी एक बनी है दुल्हैया ॥

चंदन की खोर किये उर बनमाल हिये कंचन की बेलि मानौं उरहैया ।
नंददास प्रभु की छवि नि(र)खत दुहू करत कन्हैया ।।३।।

(२०६)

रास में रसिक दोऊ नाचत आनंद भरि
ततात्रिता तत ततथेई थेई गति बोले ।
अंग अंग विचित्र किए लाल काछनी सुदेस
कुंडल झलकत कपोल सीस मुकुट डोले ।।
जुवति जूथ निर्त्त करत ग्यान ग्रीव भुजा धरे
स्यामा गति न्सनाहि सम तोले ।
नंददास पिय प्यारी की छवि पर
त्रिभुवन की शोभा वारों बिनु मोले ।।४।।

(२०७)

वृंदावन रास रच्यो बनवारी ।
वेणु बीणा नुपुर धुनि मिलवत बजत एक कर तारी ।।
बनि ठनि रसिक रसाल लाल निधि माथे मुकुट संवारी ।
श्रवणनि कुंडल उर पीतांबर गहे रे माल मुकता री ।।
षोड(स) साजि सिंगार आभूषन नवल राधिका प्यारी ।
लेति उरप धुल लेति मुलप गति घुघरुन की छवि न्यारी ।।
सुख सागर नागर अति दंपति भक्तन के हितकारी ।
विहसि विहसि विहरत रंग भीने निरखि मदन गयो वारी ।।
लीला ललित अपार लाल की वरने को कवि हारी ।
सिंघासन आरति करि बैठे नंददास बलिहारी ।।५।।

(२०८)

बरसाने ते दौरि नारि एक नंद भवन में आई जू ।
आजु सखी मंगल में मंगल कीरति कन्या जाई जू ।।
सुनि जसुमति मन हर्ष भयो अति बोलि लई व्रजबाला जू ।
मुक्ता मणिमाला भूषण वर मढई साज रसाला जू ।।
चली गज गामिनि साथन हाथन कंचन थार सुहाये जू ।
इह इहे मुख छवि छाजत राजत उपमा अधिक विराजे जू ।।
हार सुढार उरन पर सोहत निरखि सची छवि लाजे जू ।।
× × × × × × × × × लाजन कोटिक मेना जू ।
कंजन पर खेलत मानो खंजन अंजन रंजित नैना जू ।।
कुंडल मंडित नैन अलिराजन उपमा अधिक विराजे जू ।
हार सुढार उरन पर सोहत निरखि सची छवि लाजे जू ।।
गावत गीत करत जग पावन भामिनि मंदिर आई जू ।
आनंद के आगन मानो आनंद सानद बटत बधाई जू ।।
देखि मुदित वृषभान भये अति भेंट रोच सो लीनी जू ।
गदगद कंठ सबनि सों बोलत बीथिनि पावन कीनी जू ।।
कीरति ढिग निरखि सुठि कन्या धन्या अधिक अपारा जू ।
कौतिक में कौतिक रस भीने बरखत सीसन धारा जू ।।
भव जग धाम फुनि जाने सो सुधाम जाने जू ।
नंददास सुख को सुखसागर प्रकटे हे बरसाने जू ।।६।।

(२०९)

चलिहैं भरत गिरिधरन लाल को बनि बनि अनगन गोपी ।
उबटि उबटनो नवल चपल तन मनहु दामिनी ओपी ।।
पहिरे विविध वसन संग भूषण करनि कनक पिचकारी ।
चंचल बंक बडे डी अँखिया मनहु मृगी गतवारी ।।

छिरकत चली गली गोकुल की कहि न परै छवि भारी ।
उडि उडि केसर भूका बंदन रंगि गये अटा अटारी ॥
सखनि सहित सजि साँवरे सुदर अति आतुर के आये ।
मानो अंबुज बनवास बिबस ह्वै अलि लंपट उठि धाये ॥
पहिले कान्ह कुवर मनमोहन पिचका उन पर मेली ।
मानहु सोम सुधा करि सीची नवल प्रेम की बेली ॥
दुरि मुरि भरनि बचावनि छवि सों आवनि उलटनि सोहै ।
घुमड्यो अबीर गुलाल गगन में जो देखै सो मोहै ॥
हरि कर पिचका निरखि त्रियन के नैना छवि सों डराही ।
खजन से उडि चले मनहुं पुनि डरकि मीन ह्वै जाही ॥
पिय के अंग त्रियनि के लोचन लपटे छवि लोभा ।
मानहु हरि कमलनि करि पूजे भई है अनोपम सोभा ॥
बिच बिच छूटत कटाछ कुटिल सर उचटि उलटि कहुं लागी ।
मुरछित परचो तहां सेन महाभट रति भुज भरि ले भागी ॥
और कहां लौं कहि आवे छवि जो कछु बढी तिहि काला ।
नंददास प्रभु सब सुख बरषत ब्रजजन पर नंदलाला ॥७॥

(२१०)

रथ चढि चलत श्री गिरधर लाल ।
बाम भाग कीरत जू की कन्या सोहन परम रसाल ॥
रचि पचि रचि रच्यो विश्वकर्मा तुरंग अर्द्धरंग भाल ।
ता रथ कों खेंचति ब्रज सुदरी चल नव नव गति चाल ॥
अपने घर पधराइ भोग धरि इहि विधि सब ब्रज बाल ।
नंददास आरती उतारत निरखत होत निहाल ॥८॥

(२११)

अखियां मेरी लालन संग अकी ।
वह मूरति मो चित में चुभि रही छूटत नहीं मो भटकी ।।
भौंह मरोरि डारि पिक बानी पिय हिय ऐसी वटकी ।
नंददास प्रभु की प्यारी लाज तजि डरी चलि निकट की ।।६।।

(२१२)

घोरि घन सन सोहें सोहे भूमि हरियारी
बरषे थोरे थोरे बूंदे रंग भरी ।
रंग भरी बूंदन में रंग भरे मोर मधुर सुर गावे ।
गुंजे अलिगन कूजें कोकिल मूर्छे मदन जगावे ।
तहां रच्यो नंद नंदन हिंडोरो मंजु कुंज के घोरे ।
हेम को रुचिर हिंडोरो जाहि नव नग लागे ।
वलिक वरनि न जाइ देखि सबे अनुरागे ।

छंद

देखि सबे अनुरागे नव नग लागे अरु उज्वल गज मोती ।
ससि ते सहज गुण एक एक लगि रहे जगमग जोती ।
ऊपर सुरंग बिनान विराजे मानो उनयो घन प्रेम को ।
वलि न दे परमानंद बरषे रुचिर हिंडोरो×स को ।।
झूले मदन गोपाल कहि न परति तन सोभा ।
संग बनि वर बाल जानो रूप की गोभा ।
रूप की गोभा अद्‌भुत सोभा कहत नही कछु आवे ।
ठौर ठौर प्रतिविंब झलमले चखन को चौंध जनावे ।।
जुगल किसोर माई सुरंग हिंडोरो निरखि जन फूले ।
वलि नंद संग बनी वृषभान वाला मदन गोपाल झूले ।।

सोहे झूल की फूल मे जलमे नग झलके ।
अरुझे नेन कटाछें अरु कुंडल की लल्कें ॥
कुंडल झलके अरुझी अलके मंद हसनि चित चोरे ।
रंगनि लपटे अरु सुघ दपटे परिमल पवन झकोरे ।
छबीली दूरनि हसि घूरत परस्पर कोटि मदन मन मोहे ।
बलि नंददास जीवन ब्रज की दोऊ झूल फूल में मोहें ॥१०॥

(२१३)

प्यारी झूलनि नवल लाल के संग । ध्रुव ।
सावन सुहावन हरित भूमि वारि नर आनंद ।
बिचित्र भाति सों कामिनी बहु किए सिगार सुछंद ।
बनि केलि करती कंत मन की मुरी अलके फंद ।
सारी कसूंभी सबुज अंगिया लाल तोई बंद ।
ताहां उमगी घहराय वरषे न्मे दादुर मोर ।
शीतल मंद पवन झकोरें पछी करे अति सोर ॥
चंद बदनी हुलसि गावे नील मधुर सुर घोर ।
श्याम बादर दामिनी दुति श्याम श्यामा जोर ॥
चहुं ओर सखी मिलि जूथनि अपने अपने सुभाय ।
हसति किलकति मान मोहति लेंनि तान बनाय ॥
कर कमल तारी देति झुकि मुरि उमगि चोप झुलाय ।
गहि लपकि लागति कठ भामिनि लेति पिय उर लाय ॥
अगर चंदन ब(न्यो) (हि)डोरो लखि रह्यो चकि मेन ।
रवि हेरन न हिडोर पाइल कर चढन सुख देन ॥
नददास कहा कहूं उपाय × × अनंग की सेन ।
प्रभु की लीला सोइ (जाने) निरमल नेंन ॥११॥

(२१४)

हिंडोरे झूले नवल लाल गिरिधारी ।
बैठी अंस पर भुज दे अरु वृषभान दुलारी ॥
कंचन के द्वै खंभ मनोहर डांडी सरस सिंगारी ।
विविध भात के बने फोंदना विद्रुम भोंमि संवारी ॥
करत विलास हास मन भावन रसिक राधिका प्यारी ।
दरपन में मुख निरखि मनोहर दे(त परस्पर गा)री ॥
ललितादिक × × × गावति नारी सुढारी ।
(यह) छवि निरखि निरखि सचु पावति नंददास बलिहारी ॥१२॥

(२१५)

आजु झूली सुरंग हिंडोरे प्यारी पिय के संग ।
गौर तन बनि सुरंग चूनरी पीत बसन सोहें सुभग सांवरे अंग ॥
तैसेई बादर ऊलि आए तैसोई गावत ललितादिक भीने रंग ।
नंददास प्रभु प्यारी सी छवि पर वारो कोटि अनंग ॥१३॥

(२१६)

रंगीले हिंडोरे झूले रंग भरे अति ।
नंद कुवर वृषभांन कुवरि वरपि छबीली भांति भूली रति पति ।
श्याम बरन पिय गौर बरन त्रिय झलमलाति झाई अंग अंग अति ।
छिनु छिनु बाढे छबि कोउ कैसे कहे कवि तिनके छिलन ले किये हेमरति ।
गुण रूप छों बाढी तेई ढिग ढिग ठाढी गावति झुलावति सुमंद मंद गति ।
नंददास प्रभु दृष्टि उ(र)ति त्रिलोकी तरुणी वारति आरति ॥१४॥

'ऊ' प्रति से प्राप्त पद

(२१७)

प्रात समें पंछी बोलन है, छाँडौ हरि ! अंचल घर जाऊँ।
ऐसी करो जो कोउ न बूझै निस-ई-निस वहुरयौ फिर आऊँ।
हठ करें होइ उजियारौ पंथ में, गमन सरें लोगन की लाज।
तुम तौ अपने भमन बिराजौ, मोहि कठिन लोगन सों काज।
चतुराई चतुरन से सीखौ, पर नारिन सों नाहिन जोर।
नेह बिना कोउ पास न आवै, तनक विचारौ नंदकिसोर।
रसिक रसीले रस की ठानो विरस किए कछु रहै न स्वाद।
नंददास प्रभु दुरजन वैरी, बिना विचारें मिथ्याँ बाद ॥१॥

(२१८)

तुम कब तें सीखे हो लालन या लगन कों जानन।
सोबत नाहिं रैन दिन लगी रहै आसरे, कबहूँ हँस बोलत नाहि आनन।
ध्यान धरत पुनि अंक भरत हौ, गाइ उठत कभों वाके गुन ग्रामन।
साँची कहत हो बदन बिलोक्यौ भामिनी—
भेद जनायौ, कटाच्छन, नंददास पाँइन परे त्रिन लै पानन ॥२॥

(२१९)

स्याम अचानक आए सजनी, फिर पाछे कहुँ भागे।
चोंक परी सपने मे देखे विमल बसन तन त्यागे।
जरौ नेह यह नैना खुल गए , पाए न ढिंग, दुख पागे।
नंददास बिरहिन कैसे जीऐं, पंच बान उर लागे ॥३॥

(२२०)

उँनींदी आँखें लागत प्यारी, कजरारी कोर बारी।
सगरी रैन जगी पिअ के सँग तातें भई रतनारी॥
घरी घरी, पल पल झपकत मानों करखत कंज पँवारी।
नंददास प्यारी छवि निरखत सोहे कुञ्ज बिहारी॥४॥

(२२१)

भलें भोर आए नैना लाल।
अपनों पटपीत छांड नीलाम्बर लै बिलसे,
उर लाइ लई रसिक रसीली बाल॥
रति–जै–पत्र लिखित दीनों उर, सोहत बिन गुन माल।
नंददास प्रभु साँची कहिए, फिरि फिरि प्यारे हमारे नँदलाल॥५॥

(२२२)

तमचुर अबलन कों दुखदाई।
बिछुरत जनम भरें तोहि बीते, हों नाकें वहु आई।
हाइ दई कहा कीजिऐ, एक न बोल उपाइ।
अरध रात कूकन लगै, सोवत देत उठाइ॥
सुख सोवत नर नारि नगर में, अपने अपने धाम।
काम बियोगिनि बिरह के अरध करत बिस्राम॥
लिपटि पिआ के अंग सों, करत दुक्ख को नास।
तम्चुर पापी बोल तहँ, करत सुक्ख कौ ह्रास॥
छतियाँ सों छतियाँ मिली, अधर अधर रस लेत।
नींद भरे नैना नएँ, यै बोल बोल दुख देत॥
सीत समें सोवत पिआ, मन ही मन अकुलात।
प्यारी के संजोग में, धुन सुन ग्रीव डुलात॥

लोक लाज डर मान के, मात पिता की कॉन ।
मो मैहलन ते उठि चले, भोर भयौ जिअ आन ।।
बहुत कही पिअ रैन है, करत जु तमचुर रोर ।
गाइ दुहन समयौ भयौ, रही रैन अब थोर ।।
नैन मूंद, कर जोर के, दिनवों ओली ओट ।
अबलन की यह टेर है, परियो तमचुर चोट ।।
तमचुर तू मर जाइयो, बिधना को कर दोस ।
सीस काल सिर पर छयौ, कातिक, मगसिर, पोस ।।
गोपी जन मन कलप करि, छिन न वियोग सुहाइ ।
दोत चबासे, का करे, मल मन देव मनाइ ।।
कोकिल और पपीहरा, वरु बोलौ बन मोर ।
नंददास क्यों बाज न बोलै, कहियतु है चितचोर ।।६।।

(२२२)

ठाढ़ो री खिरक माई कौन को किसोर ।
सावरे बरन, मन हरन, बंसीधरन, काम करन कैसी मति जोर ।।
पवन परसि जात चपल होत देखि पिअरे पट को चटकीलो छोर ।
सुभ साँवरी छोटी घटा तें निकसि आई,
वे छबीली छटा को जैसो छबीलो ओर ।।
पूँछति पाँहुनी ग्वारि हाहा हो मोरी
कहा नाउँ को है चित वित चोर ।
नंददास जाहि चाहि चक चौंधी आइ जाइ,
भूल्यो री गमन-गमन भूल्यौ रजनी भोर ।।७।।

(२२८)

लाल सिर पाग लहैरिया मोहै ।
तापर सुभग चंद्रिका राजत निरख सखी मन मोहै ।।

तैसौई चीर सु बन्यौ लैहैरिया पैहरे राधा प्यारी।
तैसौई घन उमड्यो चहुँ दिस ते नंददास बलिहारी ॥८॥

(२२५)

पनिआँ न जाउँ-री आली, नंद नँदन मेरी—
झटकी पटकि कें हों झटकी।
ठीक दुपैहरी में अटकी कुजन लों,
कोऊ न जानें मो घट की॥
कहा-री करो कछु वस नहि मेरौ,
नटनागर सों अटकी।
नंददास प्रभु की छवि निरखत,
सुधि न रही पनघट की॥९॥

(२२६)

पिछौरा केसर रंग रँगायौ।
मेघ-गँभीर-स्याम-तन सुदर, लागत परम सुहायौ॥
रोकै आइ घाट जमुना के गोपी जन मन भायौ।
भरि गागरि नागरि के सिर धर, कुच कर कमल फिरायौ॥
आगे चलत कछुक मिस करके, बातन रस बरखायौ।
नंददास ब्रजवास सदाँ बसि, नेह नयौ दरसायौ॥१०॥

(२२७)

जेंमत है-री मोहन, जिन जाओ तिबारी।
सिंघ पौरि तें फिर फिर आवत, बरजी हो सौ वारी॥
रोहिनि आइ निकसि ठाढ़ी भई दै दै ओट मुख-सारी।
तुम तरुनी जोबन मद माँती, देखी देखन हारी॥

कोउ कछु कहति, कोऊ कछु गावति, कोऊ बजावति तारी ।
नंददास प्रभु भोजन-घर में, अब ही बैठे थारी ॥११॥

(२२८)

तपन लाग्यौ तरनि परत अत घाँम भैया, कहूँ छाँह सीतल किन देखौ ।
भोजन को भई अवार, लागी है भूख भारी, मेरी ओर तुम पेखौ ॥
बर की छैयाँ दुपहैर की बिरियाँ, गैयाँ सिमिटि इहाँ आवै ।
नंददास प्रभु कहत सखन सौं, यहै ठौर मेरे जिअ भावै ॥१२॥

(२२९)

अहो हरि भोजन कीजै, आई छाक इक बार ।
यै बैठी छकिहारी कदमतर , रूप रसिक सुकुमार ॥
उँमगी घटा, घटा चहुँ दिस ते, लागीं परन फुहार ।
उलटि चली नदि तीर ग्वालिनी, करति नमनि बलिहार ॥
कर, कर ऊँची बाँह बुलावत, चल आए सब ग्वार ।
नंददास प्रभु जो मंडली, बैठे नंदकुमार ॥१३॥

(२३०)

आज वृंदा विपिन कुंज अदभुत नई ।
परम सीतल सुखद, स्याम सोभित तहाँ,
माधुरी मधुर अति पीत फूलन छई ॥
बिबिध कदली खंभ झूमका झुक रहे,
मधुप गुंजार, सुर कोकिला धुनि ठई ।
तहँ राजत श्री वृषभाँनु की लाड़िली मनों—,
घनस्याम ढिंग उलही सोभा नई ॥

तरनि तनया तीर धीर समीर जहाँ
लखि व्रज बधू अति हरखित भई।
नंददासनि नाथ और छवि को कहै,
निरखि सोभा नैन पंगु गति ह्वै गई ॥१४॥

(२३१)

प्यारी, तेरे लोयन-लोने जिन मोहे स्याम-सलोने ।
रस के आल-वाल रँगीले बिसाल, ऐसे पाछें भए न आगे होने ॥
रूप रिझोने जब मुसकि चलत कोने, काम-केहरी टटावकटोने ।
नंददास नंद-नंदन के नैना तोसे नेक नाहिंने होने ॥१५॥

(२३२)

गोधन धूरि में हरि आवत, कैसे नीके लागत मोर मुकट की ढरकन ।
मुरली बजावत, कमल फिरावत, मनों गयंद की मलकन ॥
नैन कमल मकराकृत कुंडल, ज्यों घन में-री मीन चढ़ि किलकन ।
नंददास प्रभु की छबि निरखत, नेक न लागें पलकन ॥१६॥

(२३३)

मो सो क्यों बोले रे नँद के लाल, तेरो कहा लिये जात ।
छाँड़ दै अंचल न कर गैहरु, जानत हों तेरे मन की बात ॥
बन ते आवत कमल फिरावत, ता पर गावत तान रसाल ।
नंददास सूधें किन वोलै मै बरसाँने की बाल ॥१७॥

(२३४)

ऊसीर के मैहैल व्यारू करत दोऊ भैया ।
विंजन मधुरे, खाटे, खारे, परसत रोहिनि मैया ॥

कर मनुहार जिमावत सुत कों, परिपूरन कर प्रेम अघैया ।
नंददास ऊपर पै वारों, बीरी लेहु कन्हैया ॥१८॥

(२३५)

ब्यारू करत भाँमते जिअके ।
खट रस बिजन मीठे खारे, अंचल ब्यार करत प्रिअ पिअ के ॥
कबहुँक कोर देति श्री मुख में ताप समोवत अपने हिअ के ।
नंददास प्रभु रंग महैल में प्रान पिआरी अपने पिअ के ॥१९॥

(२३६)

आली री सघन कुंज पुहुप पुंज उसीर की रावटी,
तामधि राजत पीतम प्यारी ।
कंचन थार साजि लाँई ब्रज बाम,
जिमावत प्रान प्रिआहि गूंथत हार निवारी ॥
कोऊ बिजना कर गहें, कोऊ परसत पिअ कों,
कोऊ अरगजा घसि लावत, फलन की कंचुकि सारी ।
जेमत स्यामा स्याम, देखि लजाने कोट काम,
नंददास तहाँ पै जाइ बलिहारी ॥२०॥

(२३७)

ब्यारू करत बलराम स्याम जैसी घटा स्याम मुख स्याम देखत मन ।
पलक ओट अकुलात, आरत अत तज न सकत एकौ घरी पल छन ॥
लाखन अभिलाख लाख छक छकि भूरि भाग, धनि धनि कहें गोपीजन ।
नंददास प्रभु के ऐसे सुख ऊपर वार फेरों अपनो-री तन मन धन ॥२१॥

(२३८)

अधरन रँग राखौ अरुन अत प्रेम-प्रीति के पान हरित तन बीरा ।
यें मुख-रास ब्रज-बास लाल-सँग, नित गौ चारन नित बन कीरा ॥
यें बरखा रित सुभग हरित अत, बृंदावन जमुना के तीरा ।
नंददास प्रभु ब्रजबासिन हँस गोपी जन दियौ झुकि झुकि बीरा ॥२२॥

(२३९)

चटकाव-री पावरी पगन, झगन, पैंहर निकसे नंदलाल पिआ ।
कटि तट पट चटकीलौ रँगीलौ, छबीलौ, चपल काम-रस बिलोवत हिया ॥
जब मुसिकाइ चितए री मो-तन निठुर, मुरझन, झपकन,
मन पलकन मनु पवन कलावत प्रान दिआ ।
नंददास प्रभु ता दिन ते मेरो गति-हौं जानौं कै जाने मो जिआ ॥२३॥

(२४०)

सैन दै बुलावौ लाल, बैठी है—झरोखे बाल, बन ठन कें छिप री ।
सिंघ द्वार ठाढ़े ललन रसिक बर किए विचित्र भेख, अंग रहे दिप री ।
रूप रिझवार ब्रजराज कौ कुँमर आली,
द्रिग अँकबार भर लिए पलक न झिप री ।
नंददास दोऊ ओर प्रेम की झकोरनि में प्रीत की ललित गत,
चित चितेरे ने लई कठिन लिप री ॥२४॥

(२४१)

प्यारी तेरे मुख-सम करिबे को चंदा बहु तपयौ ।
उड़गन कौ ईस पुनि ओषधीस भयौ ईस सीस लों गयौ ॥

सुधा मै सरीर कियौ, बाँट बाँट सुरन दियौ,
मर मर के फेरि जियौ तन धर कें नयौ।
नंददास प्रभु प्यारी, तदपि न कछु अरथ सर्‌यौ,
फेरि जाइ समुद्र पर्‌यौ, बिधि बूड़न न दयौ ॥२५॥

(२४२)

आली तेरौ बदन चंद देखत, वस भए कुंजबिहारी।
उसीर मैहैल में तो मग निखत (निरखत?) बारंबार सँभारी॥
तो बिन रहि न सकत नवल प्रान प्यारौ,
ऐसी निठुराई तू सुनि री कुमारी।
नंददास प्रभु प्यारी रूप गुन उजियारी,
ऐसे अजावीस सो मांन करत, तू चल लाज निवारी ॥२६॥

(२४३)

सुनति खसानी दूती, चलि पीतम पै गई है लजाइ।
वे तौ नहि माननि, कोट जतनन किएँ,
हो पचिहारी बहौत मनाइ॥
आपु ही मँनाइ लीजै, मो सों ऐसे कही,
सुनौ अब कहा कीजै लाल दूसरौ उपाइ।
नददास प्रभु ऐसी सुन आपुही पधारे,
तब पौढे अपनी प्यारी कों उर लाइ ॥२७॥

'ए' प्रति से प्राप्त पद

(२४४)

जितें जितें माई सभा अथाई भर द्विज बेठे वरसोडी पात।
विजें दसहरा परसन कों सब प्रमुदित मन अकुलात॥

लीयें गोद गिरधर को राजत ब्रजराज मन फूलि न समात ।
कनक थाल मंगल समाज सों एक आवत एक जात ।।
आगे ढेंर लाग्यो है धन कों देत नंद क्योंहू न अघात ।
गाइक चहु दिस गान करत हे जोरि जोरि ब्रज दात ।।
परदा परे झरोषा रिझवत बाल लाल मुसिकात ।
नंददास प्रभू कहा कहू कुवर छबि झलकि रह्यों सब गात ।।१।।

(२४५)

माई बावरी सो जों वासुरी सो लरे ।
जेसी जाकी प्रीति तेंसी तुम्हारे कहा हें
याही तें गिरधारी लाल अधर ले लें धरें ।
जो ही लो मधु पीवत रहे तों ही लो
जीवत रहे नेकु विछुरे ते मुरझि धर परे ।।
नंददास प्रभू जाकी एसी प्रीति
ताकी आली रस भर को करें ।।२।।

(२४६)

मुरली रस वाजे राजें जोवन वन आली अति आनंद अरगजी धुनि ।
जब ते तनक भनक परी कान तव ते मोहि सब बिसरयौ
जों न पत्याई तो री तुही धों सुनि ।।
जो ही लों तू सीष देत ही तो ही लों ना सुनी री मोहन की मीठी तान
याही मे अधर मधुर की पुट आई पुनि ।
नंददास प्रभू एसी तरूनी कों धीरज धरें
सुनि धुनि मुनिन के हीये गये धुनि ।।३।।

(२८७)

तेरें री वदन कमल पर नंद नंदन आली मुरली नाद करत गुंजार।
ललित त्रभंगी तेरे रोंम रोंम रसि रहे करि राधे उर हार॥
जिनकी चरन रज ब्रह्मादिक दुर्ल्लभ सों अब पाछल परत मुरारि।
नंददास प्रभु कमलापति बस करिवे को किन हू न पायों पार॥४॥

(२८८)

आली री सासरी मूरति तेरे जीय में बसति
काहू को दुराव करत न दुरत।
नैनन बेन प्रगट देषियत श्याम धर्रानिधि
जैसे लिलाट लसत॥
मुष की रुपाई तों छिपाई न छिपत आली
आनन को जोति ससि जोति हरति।
नंददास प्रभू प्यारी एसी सकुच कोन की वलि
जाको मुष देषे उर को तिमर नसत॥५॥

(घ) सुदामा चरित

जदुवर एकु सुदामा नामा, पुरी द्वारिका ढिग विसरामा।
जामें बसै जु अलि-पति एसै, सरवर में सरसीरुह जैसै।
परम अकिंचन कछु नहि चहै, जथा लाभ संतोषित रहै।
दीन, कृष्णचरननि रति सरसे, इहि संसार बयार न परसे।
जानै जिय सब विषय-वगर सो, देखन कों गंधर्व-नगर सों।
अह-ममता सपनों सों लागै, माया सन सपनों सों जागै।

नेहि न देह, गेह सन कबहूँ, उपसम चिंतन समता सबहूँ।
सखा आपुने श्री जदुनाथा, गुरु-कुल पढ़े एक ही साथा।
तातैं निसा-अनी न बिचारै, बिषयन दीन देह प्रति-पारै।
तातैं दुरबलता तनु ताकैं, नाँहिन कछूक दरिद्रता जाकैं।
तिय ताकी पतिबरता अहै, पति ही तोख्यों, पोख्यो चहै।
जानत सब सेवा के धरमैं, औरु बिभूति नहीं कछु घर मैं।
निपटहि लटचौं देख कै गातैं, कहन लगी कत सौं बातैं।
इत तैं निकट जदुपुरी आँही, तनक चाह ह्वै आओं नाँही।
जहाँ प्रभु-कमला-कंत पियारे, तुम जु कहत, है सखा हमारे।
कीजै दरस, अरस नहि कीजै, जीवन सकल सफल करि लीजै।
बिप्र कहत, नहि घर कछु साजा, तिन्है मिलत मोहि आवत लाजा।
तीय कहै वे त्रिभुवन-स्वामी, अखिल लोक के अंतरजामी।
रीझति देरि कछू नहि आनै, केवल प्रीति रीति पहिचानै।
कहत जदपि, जदुपति है ऐसे, चक्र-पानि प्रभु परसहु कैसे।
तब तिय उठी चलत पिय जाने, माँगि मूँठि द्वै चिरवा आने।
चीर लपेटि सु पिय पकराए, नीकै लिएं सु द्विज उठि धाए।
दृष्टि परी जदुपुरी सुहाई, जगमगात छबि बरनि न जाई।
बन उपबन फल फूल सुहाई, सब रितु रहति समान सुछाई।
सरबर की छबि बरनि न जाई, मलिन होत सु मलिनता आई।
ऊँचे कनक-भवन जगमगही, चखन माँहि चकचौधा लगही।
लगे जु नग जगमग रहे ऐना, मानहु सरस भवन के नैना।
ता पर चपल पताका चमकैं, बिनु घन जनु दामिनि सी दमकैं।
सुंदर सुथरी डगर जो पुर की, चोबा, चंदन, बंदन बुरकी।
हाथी, हय, रथ गहै सुसंबर, निकसि न सकत अटनि तनु अंबर।
महा बिभूति कछु सुधि नहि परही, झमझम द्विज बर मग अनुसरहीं।
पहुँचे पौरि, रौरि तहँ छबि की, बरनि न सकै महा-मति कवि की।

जहँ संकर नारद मुनि ठाढ़े, औ सुर-पति, नरपति अति बाढ़े।
समय स्याम को नाँहिन अबही, रोकैं रहति पौरिया सब ही।
ठाड़ों भयो द्वारि पै द्विज-वर, एकु पौरिया आइ गह्यों कर।
लै गयों जहँ रुकमिनि कों मंदिर, बैठे तहँ जदुनायक सुन्दर।
चँवर चारु ढोरत है ठाड़ी, पिय मुख निरखति अति रति बाढ़ी।
जदपि सहस-दस दासी आहीं, प्रेम-बिबस रस देति न काहीं।
दृष्टि परे द्विज वर तहँ जबहीं, अरबराइ हरि दौरे तबही।
भरे मिले, कहि अति मृदु बानी, भेंटति भरि आए दृग पानी।
अपुने आसन द्विज बैठारे, निज कर-कंजनि चरन पखारे।
पोंछत रुचिकर पग जग-नायक, अपुने पियरे पट सुखदायक।
चरन माँहि पट अटक रहत जब, रमा सुन्दरी मुसकि परत तब।
सुन्दर भोजन विविधि प्रकारी, आनि धरे भरि कंचन थारी।
जो सपने कबहूँ नहिं दरसे, श्रीपति ललना निज कर परसे।
ताहि पाइ द्विज सुख नहिं मान्यों, परमानंद कंद रस सान्यों।
लै बैठे पुनि श्री जदुनाथा, सुधि कीनी गुरुकुल की गाथा।
अहो मित्र ! जब ईंधन आनन, गुरु पतनी पठए तब कानन।
तोरत ईंधन घन घिरि आए, अमित जोरि सों जल बरसाए।
बरसत बरसत पर गई रजनी, कितहु नगर की डगर सु न जनी।
भूले फिरे रैन तहँ सगरी, तऊ न गुरु की पाई नगरी।
भयो प्रभात तब गुरु पै आए, धरि ईंधन तहँ शीस नवाए।
वे दिन भले हुते अहो तब तों, बट गयो ठौर ठौर चित अब तों।
भली भई फिरि मिलहे तुमको, भाभी कछू दियों हैं हमकों।
चिरवा छोरि चीर तैं लीने, भर मूँठी निज-मुख में दीने।
तिसरी बेरु बहुरि मन कीने, तब उठि रमा ! रमन गहि लीने।
करत बात पौढ़े द्विज राती, खान पान करि नाना भाँती।
प्रात होत निज धाम सिधारे, रहे नाँहि बहुतक पचि हारे।

करत चबाव जात निज घर कों, मन सें कहत कहा कहों हर कों।
पुनि पुनि कहैं अति ही भल कीनो, जो हरि हमकों कछु नहिं दीनो।
राखि लयों, अपुनो करि जान्यौ, परम अनुग्रह इतनों हम मान्यौ।
सब मद तैं धन मद दुखदाइक, नहिं पायो भये पुत्र सहायक।
अँधरों करै, बधिर पुनि करही, उतपथ चलन विचार न टरही।
दिन न चैन निसि नींद न परही, मोद मुदित मन अति सुख भरही।
मन सों करत बात चलि आए, चकित भए निज ठौर न पाए।
कहन लगे इहि भवन कौन के, ऐसे है वहाँ रमा-रमन के।
अब लों इहाँ हुतो नहि ऐसौ, अबही इहाँ भयौ है जैसौ।
कहन लगे पुनि संभ्रम पायो, कै हौ बहुरि द्वारिका आयो।
देखति इन्हैं सुसेवक धाए, अमरनि तैं वे अधिक सुहाए।
अटा चढ़ी अवलोकत तिरीया, ठिकत धाम वाम दिय भरिया।
आतुर तिय, लखि पिया सु चमकी, जनु सुमेर तैं दामिनि दमकी।
मुदित बदन छवि कौन बखानै, अवनी उतरति उडगनि जानै।
सहस अली लिऐ संग सुन्दरी, उडगनमध राजत ज्यौं चन्दरी।
करि आरति निज भवन सुलीने, सबै मनोरथ पूरन कीने।
बहु विभूति हरि द्विज कों दीनी, दया भक्ति पतनी सुभ कीनी।
ऐसै जो कोऊ हरि कों भजै, हरि उदारता तैं सुख सजै।
दीनन कौ वरदायक नित हीं, रहत अधीन भक्त के हित ही।
चरित स्याम कों इहि है ऐसों, बरन्यौं नंद जथामति जैसौ।
दसम सकध विमल सुख वानी, सुनत परीछित अति रति मानी।
परम चरित्र सुदामा नित सुनि, हृदय कमल में राखों गुनि गुनि।
नंददास की कृति संपूरन, भक्ति मुक्ति पावै सोई तूरन।

(ङ) नासिकेत पुराण (उद्धरण)

(१)

"× × × बानारसी विषै रह्यौ है। सो एक दिन सरब नगरा का अस्त्री विरहा पांचैं को दिन नाग की बंबई पूजिबे कू चली है। जब पुंडरीक नाग एक ब्राह्मन की कंन्या कू पूछित भयौ। तुम कहा जात हौ। जब कन्या बोली है। गुसांई जी नाग पूजिबे कुं जात है। जब पुंडरीक नाग बोल्यौ है। अहो ब्रह्म कन्या हुं तोसु एक गुभ की वात कहूं। जौ तो कहूं नै कहे तौब हूं कहूं नाही। तदि ब्राह्मन को कन्या कह्यौ। गुसाई जी हूं। कहूं तुम्हारी बारना कहूं तौ मो कु सोहहै। मेरौ बडौ भागि जु तुम मो कु आपना गुभ की बात कहत हो। त (दि ?) पुंडरीक बोल्यौ है। पुंडरीक उवाच। तू हमारी दासी है अरु बहुत प्यारी है। तेरे घर हूं नाग की देही धरै हूं आऊंगौ। तू डरपै मति। घर ही विषै नाग होइ तौ बाबी काहे कू जइयै। पुडरीक नाग ब्राह्मान के घर आयौ है। अपनौ सरूप नाग कौ धरयौ है। मस्तिक मनी है। अरु कमल कौ पौहोप है। अरु सुरह गाइ कौ षोज है। जब वह कंन्या। नाग को पूजा करी है। जिवि संजुगति करी है। तब दाही की माता देषि के अचरज भई है। हे देव कहा बनायौ है। नाग कौ सरुप देषी जब वह कन्या पूजि करि परक्रमा करी आपनी माता सु कह्यौ। यह नाग मेरो भरतार है। तब माता कह्यौ यह तौ नाग है। तू मनिष देह है। तोहिर याहि जोगि नाही। जब कन्या कह्यौ यह औतार है तू जानै नाही। मनिष रूप भी धारै। अरु नाग रूप भी धारै तब पुंडरीक ए बचन सुनि करि मन मै सोच करत भयौ। कहतौ भयौ आपनी बात अस्त्री कू कहिये नाहि। अस्त्री कुं सराप है। राजा जुधिष्टिर नै दीयौ है। जा समए करन मारयौ है। तब कौता नै सराप दीयौ है। तब यही ब्राह्मनी आपना भरतार सु कही। जा विधि पूजा

की कंन्या की मत्र कही। सो ब्राह्मन सुरग वानी पंडित हौ कंन्या पुंडरीक नाग कुं परनारी। जब सारी कासी मै घर घर बारता भई। अरु पुंडरीक नाग प्रगट भयौ। तव यह वात चल्ती चली राजा की जग्य विषै गई। जब राजा जनमेजय वोल्यौ है। अैसौ कोइ होय पुडरीक नाग कूं जगि मैं लावै। जब राजा कौ मंत्री सुवधिक नाम बोल्यौ है। महाराज लावै समरथ और तो कोई नाहि। गरुड जी आवै तौ नाग कू जगि मै लावै। जब गरुड़ की अस्तुति करी है जी अरु बेद मत्र कौ उचार कीनौ है। जब गरुड़ देवता प्रसन्न भयौ है। गरुड़ कौ वेग अैसौ है। मन को वेग ताते दस गुनौ है। गरुड को बेग चलतु है। जब गरुड़ जी आए है। जब पुंडरीक की कालदृष्टि सौ मन मै डरप्यौ है। तव राजा की जगि मैं गरुड आयौ है। राजा गरुड की पूजा करी है। अरु सव बारता कही हैगी। जव गरुड नै आग्या दई है। कह्यौ गरुड जी पुडरीक नाग बानारसी बिषै आयौ है। सो तुम जाय कै पुडरीक नाग कू जगि लावौ जब गरुड जी बाना-रसी मै आयौ है। मन मैं विचार करत भयौ। अरु सोच करत भयौ है। मन मैं कह्यौ बानारसी को उपारो तो दोपारथी कहुंउ पीछे महादेव जी सराप दैही। तव पीछे विचारि करि छोटी देह चिरीया की धारी है। अरु पनहट बिषै आयौ है। जब वा नाग की अस्त्री पानी कू आई है। अरु जब वातै एक अस्त्री बोली है। वाई तुम्हारौ भरतार सरप की देह धरि। अरु मनिष की भी देह धारै। अैसौ हम काहू कौ भर-तार देष्यो नही। जब अैसे बचन गरुड जी सुन्यौ। तब नाग की अस्त्री अपने घर कुं आवत भई जब घरा उपर गरुड जी चढि वैठ्यौ है। एते मै नाग पतिनी घर आई है। नाग की दिष्टि चिरा परचौ तब पुडरीक नाग तारी दीन्ही है। जब गरुड बोल्यौ कह्यौ पंचायन संष मो ऊपर बाजत है। अरु मेरो पराक्रम तै त्रिलोकी का जीव कांपत है। अरु मेरी पाप का वेग ते हाथी उडत है। जब पुडरीक कह्यौ तु कौन है। जब गरुड जी बोले है कहत है। हूं तो कू लेवे कु आयौ हूँ। जब पुंडरीक डरप्यौ है। अरु सोच

करत भयो है। जब गरुड जी पुंडरीक नै अस्त्री सहित लै चल्यौ एता मही दीन अस्त भयौ है। जब विश्राम कियौ है जब गरुड जी बोल्यौ है। अहो पुडरीक कोई कथा श्री रांम चरचा कहौ। काल्हि तुम्हारौ काल है।. जब पुडरीक भय कंपत भयौ है। अरु बोल्यो है। गुसाई जी आपनें गुझ की बात अस्त्री को कहियै नहीं। तव ब्राह्मन की कन्या। नागपतिनी वौहौत पढि हीं। अर सुरवान हीं। कन्या ब्राह्मन की नागपतिनी मन मै कह्यौ। गरुड जी आपना मुख सु पुंडरीक गुर कीयौ है। अबै नाग पतिनी गुर धरम की कथा कहत भई है। अर ग्यान की चार्क्त (चर्चा ?) कही हैगी। गरुड जी अश्लोक करि कै कहत है। श्लोक। एकाक्षर प्रदातारं यो गुरुं नाभिमन्यते। श्वानजन्म शतंगत्वा चाडोलेष्वभिजायते॥ वारता। जब गरुड जी कहत है मेरे तुम गुरु हौ। तुम वचन करि मन मॉहि सोचु मति करौ। निरभै रहौ। तुम जग्य मै ब्राह्मन कौ सरुप धरि करि वेद कौ उचार कीजियौ राजा तुम कु छोडैगो। अर हूं सापी भरुगौ। अर तब एक ब्राह्मन राजा कौ जग्यमुनि जगि कु चाल्यौ है। भूपौ महाराज की आसा करि राजा पै चाल्यौ है। दोनो एक नगर मै भिछा करत भए है। भिछा काहू नै घाली नाही तब ए दोनौ के प्रान छूटन लागै। अस्त्री पुरीष के अंन विना। तब एक हाथी के थान महावत के पास आए हैं। जब महावत हस्ती का जूठा चना दीना है। तब दोनौ झूठे चना चाब्यौ है। उबरयौ सो ब्राह्मनी गाँठि बांधि लाई है। असे मै प्रात भयौ है। ए दोनौ जगि कु चले है। तब अस्त्री पुरीष क बचन कहत है महाराज एतौ राम चना है। जब ब्राह्मन बोल्यो है चना डारि देह ए चना चबाय नरक कु प्रापति होत है। ए महाकुधान है। जब अस्त्री बोली है गुसाई कालि तौ नरक गया नही आज कैसे नरक जात है। जब ब्राह्मन बोल्यौ है। अपघाती महापापी। जो आपनो प्रान घात करीयै तौ वज्र पापी कहियै। अगति कू प्रापति करीयै। ताते कालि चना चाबे है..."

(२)

"नासकेन उवाच । अर नासकेन कहत हैं । समस्त रपीसुरन सू कहत है । गुसाई जी हूं वार वार कहा कहूं पै जम की त्रास बहौत दृष्टि देखी है । सो मेरा रोम रोम उभै होत है । रिषि पूछत है । अहो नासकेत पापी पाप करता कौन कौन कहौ । नासकेत कहत है । पापीन के ए लछिन है । पर द्रवि कौ वाछित । पर अस्त्री कौ वंछित । पर निद्रा के करन हारे । अर यौंही परायौ बुरौ करत हैं । अर पाप करते पाछौं देपै नाही । अरु विना अपराध करहू सेती द्रोह करत है । अर झूठी साखी भरत है । अर अंतर पापी होत है । अर अछिर की वकता बिपै कमावत है । असे सौ पापातमा । महा उग्र सासना । भांति भाति के नरक विषै लै लै त्रास देत है । अरु बिस्वासघाती अरु कृतघ्नी । अरु गुरु द्रोही । अरु गौ द्रोही । अर अस्त्री घाती वालघाती । असे असे वज्र पापीन कू जमदूत नरक के मंदिर विषै डारि डारि देत है । अर ऊपर महा बज्र मार मुगदर की देत है । अरु वज्र आगि लोह की तिनकरि महामार करत है । अर ह्वा हाहाकार होतु हैं । अरु वज्र पापी कौन कौन अगिन दाहक । अरु बिप दाहक । अरु गुर मात पिता के मारिवे वारे । अर पुन्य करत अगिलें कुं वरजत हैं । अर पतिग्रह छेत्र विपै लेत है । अर वज्र दान लेत है । अरु सदा अस्त भाषत है अर निरदई है । अर कुसंगी अरु असुची । अरु दिवस विपै अस्त्री भोग करत है । अरु आल सारगी अरु अस्नान विना भोजन करत है । अरु गुर मंत्र विना पानी पीवत है । अर पराई व्रत के हरन हार । अरु बाट के विघनी । अरु वेद सास्त्र धर्म नेम नै मानत नाही । असे असे पुरिप महा नरक के मंदिर मैं लै लै जमदूत त्रास । वज्रमान देत है । अर जे प्रानी अहो रापत है । अरु जो दान करत है । जगि होम करता कथा माही । परमेसुर कौ कीरतन करत भोजन मैं । इतनी ठौर जो बिघन करत है । ते पुरिष जडरूप जोनि बार बार । वृछ की जोनि

पावत है। ताकू बार बार काटत है। नासकेत उवाच। नासकेत सर्व रिषी सुरनै कहत है। गुसाई जी सुक्राती जीव सुभ आचार। सुभ कर्म के करिबे वारे। बबेकि पुरिष मै। दिव्य दिव्य बिमान चढि चढि सुर्ग कूं जात है। अर कैसे देपे है। जिनके आगै अनेक बाजित्र बाजत देपे है। अर नाना प्रकार के। पौहोपन की वर्षा होत है। अर अपछरा नृत्य करत है। सुकती जीव है। सो सुर्ग बिपै बिलास करत करत देपे है। सुकती जीव कौन कौन कहीयै। प्रथम तौ नाम बिपै रहत होत है। ऐसे प्रानी सुर्ग बिपै जात देपे है। जीव कैसे जानीयै। एक ब्रह्म बिषै ध्यान करत है। सो ध्यान कौन कौन कहीयै। भवित योग तपस्या। अहो राति ब्रह्म सौ ल्यौ लगावत है। जो महापुरिप है। तत्त्व के जानन हारे सुमिरन नाभि कमल बिपै। सासा सुमिरन ल्यौ लगावत है। सो ऐसे महापुरिप परम पद कूं प्रापति होत है। अर जो सुकती जीव है। तिनकौ शुभ करम। जु धर्म्म नेम के जानिबे हारे। सुर्ग लोक कु प्रापति होत है। सुकती जीव कौन कहीये। नासकेत कहत है। तिनके सेवा श्री परमेसुर की। अर अगिन होत्र होत है। तिनके बेद उचार होत है। अर गुरदेव साध की। आह्मन भगति आराधन करत है। ऐसे जीव सुक्रती है। तिनकू सुर्ग बिषै देवता आदर करत है। अर जे परमारथ करत है। अर जे पराई पीर बिपै जाय परत है। अर बेद शास्त्र की सत्य मानत है। अर नित्य अस्नान करत है। अर माता पीता को मानत है। अर धर्म नैम तीर्थ ब्रत आदि करत है। ऐसे प्रानिन कु। सुर्ग बिपै देवता आदर करत है। नासकेत हाथ जोरि नमस्कार करत है। कहत है धन्य मेरे पीता कू। धन्य मेरी माता कू। तिनकरि हू उतपनि भयौ। अर मोकूं सासना देत है। पिता मो कू श्राप दीयौ हो। तौ हू कृतार्थ भयौ। अरु श्राप निप्ट सुर्ग लोक देख्यौ। नर्क कुंड देषे अर मै नाना प्रकार की सासना पी। अर मैं धर्मराज की पुरी बिपै। बडे बडे ग्यान सुनत भयौ। नासकेत कहत है। गुसांई जी तुम मेरे सर्व पिता समान हौ। मेरे तुम गुरु हौ।

गुसाईं जी मो कू पिता सराप न देतो नौ। तुम्हारौ दरसन कहां होनौ। ए बचन कहि करि। समस्त रिषीसुर नैं डडौत परिक्रमा करत भयौ। अरु सबही कौ दासातन कीयौ। जब रिषीसुर समस्त हैं करि नासकेत कु आसीर्बचन कह्यौ है। रषीसुर सर्व आपनैं आपनैं आश्रम ठीकानै जाइ प्रापति भये। अर आपनैं मन विषै ब्रह्म मुं ल्यौ लगावत भये। अब नासकेत तपस्या कुं जात भयौ। अैसे नासकेत की उतपति भिन भिन राजा जनमेजय कौ सुर्ग के बिमान आये है। अर सर्पन कौ दोष दूरि भयौ है। अर सर्व पाप दूरि भए है। अर कृतार्थ भयौ है। वैसंपायन रिषि कहत हैं। एक समै नारद अरु जम सू संवाद भयौ है। नारद रिषी जम कूं पूछत है। ए पापातमा जीव हैं। पाप के करता महावज्र पापी महा सो क्यौं करि तिरेंगे। जदि नारद कू जम कहत हैं। गुसाई जी जो महा पापी जीव है। अर दुष्ट तिनकी बुधी है। अैसे पापी नाम मु तिरेंगी। अर जो प्रानि नासकेत पुरान पढे हैंगे। अरु सुनेगे सो गति कू प्रापति होहिगे अर जम कहत है नारद कु। जहा नाम कौ उच्चार होत है। अर जहां नासकेत पुरान की कथा होत है। तहा हमारी पौहोच नाही होत है। अर जहा परमेस्वर की पूजा करत है। सेवा करत है। अर जाकै गीता सहस्र नाम बेद धुनि होत है। अरु जाकै सत्ति बचन होतु है। तहां महारी पहुच नाही। इतनौ संवाद नारद सू जम करत भयौ। यह नासकेत पुरान कैसो है। या पुरान सुने ते महागति कु प्रापति होतु है। राजा जनमेजय सुनत पुरान। गति कू प्रापति भयौ है। जब सवरी कथा संपूरन भई है। जदि राजा जनमेजय बैसंपायन रिषि की पूजा करी है। बहुत अस्तुति करी है अरु बहौत दासातन कीयौ है। जब राजा नै रिषि आसीरवाद कीयौ है। सुभ वचन कीयौ है। अैसे बचन कहे है। राजा कौ सरब पाप दूरि भयौ है॥ इति श्री नासकेत महा पुराने रिषि नासकेत संवादे अष्टादशोध्यायः ॥१८॥

यह कथा रिषि राजा जनमेजय नैं सहंसक्रती करि कही है। अर भाषा करी स्वामी नंददास अपनै सिष्य सू कहि है। इति श्री नासकेत कथा संपूरण ॥शुभं॥"

(३)

"।।श्री राम जी।। श्री गणेशायनम. ।। अथ नासकेत पुराण लिप्यते ।। आदि सहंसकृत महाभाषा करि विस्तरी छै ।। नासकेत पुराण भाषा करि नंददास जी आपण सिप्य नैं कहत है। सो याह कथा कैसी है ।। या कथा सहसकृत पुराण वैसंपायन रिषि राजा परीछित को पुत्र जनमेजय को कथा कही है ।। और जनमेजय या कथा सुणी परम गति कौं प्रापति भयौ है। और सर्ब पाप कटे है। और स्वामी नंददास जी आपण मित्रनैं भाषा करि कहतु है। सिप्य पूछत है गुसाइ जी मेरै अभिलाषा नासकेत पुराण सुणिबा की ईछा बहौत है मोनैं भाषा बारता कहौ। सहंसकृत मैं समझौ नही। अबै नंददास जी कहत है सिष्य कौ और बैसंपायनि रिषि राजा जनमेजय कौ कही है। रिषि कहत है राजा परीछित कौ सराप भयौ है पहोप की कली माहि तछिक सर्प डस्यो सीगी रिषि का पुत्र कौ सराप भयो है सम्यक रषिसुर कौ जब राजा जनमेजय पिता का बैर निमति जग्य रच्यो है सरप होमि बाकै नित्य जग्य को आरंभ कीयौ है। जग्य पुर कै बिषै रच्यो है और बेद मंत्र की सकति तै सरप आवत भयौ है तब तापो नाग भाग्यौ है जाय करि भुगर को सरूप धरचौ है नाग की भी देह धरै अर सरप की भी देह धरै। सरप है सो बिष को जीव है नोकुली नाग है और सेस नाग भागे है सो इन्द्र के सरनै जाय रह्यौ है जीह समय प्रथी को भार कूरम ही धरचौ है। जै बिराम्हण यती कहै इंद्राय स्वाहा तौ इद्र आदि अगनि मै आय परहि ।। पणि बेद मत्र इतनू लिगया। और पुंडरीक नाग भागो है। सो बाराणसी बिषै जाय परचौ है। और पुडरीक नर देही धरी है ।। और महाबुधिवान है और बेदात अंग सहत पढ्यो और सरब बारता मैं परबीण है। इह प्रकार पुडरीक नाग बाराणसी बिषै रह्यौ है। एक दिन सरब नगरी की असत्री त्रिरहा पाचै कौ दिन नाग की बंबइ पूजिबा चली है तब पुडरीक नाग एक ब्राह्मण की कन्या. . . . ।"

२ प्रक्षिप्त सामग्री

(क) 'मानमंजरी' के प्रक्षिप्त दोहे

'अ' प्रति से उद्धृत

खरग

गोकुल गोथल घोप ब्रज खरग कहत पुनि नाम ।
तहँ नित प्रति विहरत प्रभू कोटि काम अभिराम ।।१।।

गोप

बल्लव गोदुह गोप पुनि कहि अभीर गोपाल ।
गोसंख्यक बरनत सुमति चरवाहे नर जाल ।।२।।

तरकस

उपासंग तूनीर पुनि इपुधी तून निपंग ।
भाथ मनो मनमत्थ की पिंड्री भरी सुरंग ।।३।।

श्री कृस्न

बिघन हरन सब सुख करन सुंदर रस के धाम ।
प्रथम मंगलाचरन हित श्री नँद नंदन नाम ।।४।।

कृस्न बिस्नु बावन बिमल बासुदेव भगवंत ।
बिस्वरूप परमातमा कमलाकांत अनंत ।।५।।

श्रीधर गिरिधर मुरलिधर पीताम्बर नँद नंद ।
हरि मुकुन्द गोबिन्द प्रभु पावन परमानंद ।।६।।

रिखीकेस जगदीस कह गोपालक जोगीस ।
मोहन मधु-अरि मुष्टि-अरि दामोदर जदु-ईस ।।७।।

माधव वनमाली कहत बलभाई जसमाल ।
है मुकुन्द पारथ सखा गरुड़ध्वुज जो बिसाल ॥८॥

अँगुली

अँगुली कर पल्लव करज करसाषा पंचाप ।
नखनप कोनी कर्प अपि अरु पुनि कहीअै काप ॥९॥

आँगन

आँगन चातुर अजर कहु बरनत सुकवि प्रबीन ।
जसुदा आँगन मध्य प्रभु माँगत माखन दीन ॥१०॥

ऊँच

उपर उर्ध उत्तान नभ बनी बितान सुवानि ।
चंद उयो ऊँचो मनो ऊपर राखो तानि ॥११॥

कपोल

गड कपोल सुगाल तें क ऽरुहं तो करई तीय ।
स्याम जु लट छूटी मनो लखि सकात मो हीय ॥१२॥

जग्य

सप्ततन्त्र मख जग्य क्रत बैसन्धर कह जाग ।
बड़ भागिन तव नृप या जग्य पूर्ख बड भाग ॥१३॥

जाल

कहत जाल आनाय पुनि मीन-निरोधा सोय ।
कोसन की उनमान ते कह कोविद सब कोय ॥१४॥

ढिल्या

कहत कुबेनी सकल कहि बमसा धारी नाह ।
ढिल्या कोविद बरनही कविता महँ निरवाह ॥१५॥

तरकिया

मुखी खुली कंचन मई जटित लाल मनि हीर ।
जिमि निज रूप कमल कली देखियत ससि के तीर ॥१६॥

दीप्ति

भास तेज अरु रुचि त्वखा दीप्ति जु अर्चि प्रकास ।
भा अरु प्रभा जु दीप्ति के नाम करहु बिस्वास ॥१७॥

बखतर

दनमन कहृ तिशरान पुनि बखतर दसन जो नाम ।
बम्र सरम-रच्छक कवच तनुत्रान औ धाम ॥१८॥

राहु

सिहकेय स्वभान तनु राड (हु ?) विधुतुद भाइ ।
बन्दन चन्द सुभ्रम मनहु राहु रह्यो ढिग आइ ॥१९॥

रूखे वचन

उदासीन काहल परुप तुछ अस्ति अस्थील ।
ग्राव वचन ते क्यों कहै जिनके सुंदर सील ॥२०॥

लेषन

लेषन रदनी मिस मुषी कंठी कलम कहाय ।
लिषत लिषत कै हाथ की किलक लूप ह्वै जाय ॥२१॥

सीस

उत्तमांग कं सीश सिर मोती मांग सु ढार ।
राह दुधा करि उदित मनु सोहत चंद लिलार ॥२२॥

(ख) 'अनेकार्थमंजरी' के प्रक्षिप्त दोहे

'अ' प्रति से उद्धृत

सब्द एक नाना अरथ, मोतिन कैसी दाम ।
जो नर करिहैं कंठ यह, ह्वैहै छबि को धाम ॥१॥

अनमिष

अनमिष कहिये देवता, अनमिष मीन कहंत ।
अनमिष काल कराल यह, जाको कहूं न अंत ॥२॥

अहि

अहि बासर अहि राहु पुनि, अहि इक दानव नाम ।
अहि काली सिर पर नचै, नटवर वपु घनस्याम ॥३॥

कांतार

कांतार कानन कह्यो, पुनि कारन कांतार ।
कांतार दुरभिच्छ पुनि, स्रुति कहिये कांतार ॥४॥

काष्ट

काष्टा काल विशेष इक, काष्ट दिशा जो आठ ।
काष्ट बहुरि वामुधरा, बुद्धहीन नर काठ ॥५॥

कुंत

कुंत सलिल औ कुन कुस, कुंत अनल नभ काल ।
कुन कहत कवि कमल सों, कुन जु खड्ग कराल ॥६॥

कुंतल

सूत्रधार कुतल कह्यौ, कुंतल कपटी बेस ।
खड्ग पानि कुतल बहुरि, कुंतल कहिये केस ॥७॥

कुथ

कुथ कंथा कुथ कीट पुनि, दर्भ बहुरि कुथ होइ ।
प्रातस्नाई बिप्र कुथ, कुथ करि कंवल होइ ॥८॥

कृस्ना

कृस्ना कालिंदी नदी, कृस्ना पीपलि होइ ।
कृस्ना बहुरचौ द्रोपदी, हरि रखि अंबर गोइ ॥९॥

केतुकी

केतुकि नभ केतुकि कुसुम, केतुकि सूरज चंद ।
केतुकि कहत मनोज सों, केतुकि बहुरो छंद ॥१०॥

खर्जूर

गर्भ जरा खर्जूर है, बहुरि रजत खर्जूर ।
छुद्र जाति खर्जूर पुनि, अरु ताली खर्जूर ॥११॥

गुरु

गुरु नृप गुरु माता पिता, गुरु जो परो हित छंद ।
गुरु बीफै गुरु ऊँख रस, सबके गुरु गोबिंद ॥१२॥

गौरी

गौरी अप्रसूता तिया, गौरी हरदी होइ ।
गौरी गिरिजा सुंदरी, शिव अर्धंगी सोइ ॥१३॥

चक्र

चक्र चरन रथ चक्र गन, चक्र देस पुनि होइ ।
चक्रवाक खग चक्र पुनि, चक्र सुदरसन सोइ ॥१४॥

छन

छन उत्सव छन नेम पुनि, छन मुहूर्त कहियंत ।
छन यह समय न पाइये, भजि ले मन भगवंत ॥१५॥

छुद्रा

वेस्या नटी कटी हरी, मधुमाखी अरु लाख ।
इनकों कवि छुद्रा कहत, छुद्रा कहिये दाख ॥१६॥

तंत्र

तंत्र शास्त्र सुख तंत्र पुनि, सिद्ध औषधी तंत्र ।
तंत्र कहत संतान को, सिद्ध मंत्र पुनि तंत्र ॥१७॥

द्रोन

द्रोन महिप दिस द्रोन पुनि, द्रोन कहै गूह कौन ।
द्रोन काक अरु द्रोन गिरि, कुरु आचारज द्रोन ॥१८॥

नंदन

नंदन चंदन को कहत, नंदन कहिये तात ।
नंदन वन पुनि इंद्र को, नँदनंदन विख्यात ॥१९॥

नेत्र

नेत्र नयन पुनि नेत्र पट, मृग मद नेत्र कहंत ।
नेत्र ज्ञान जब जगमगै, तब सूझै भगवंत ॥२०॥

परिघ

परिघ पवन जल रथ नदी, परिघ सूर ससि सेष ।
परिघ वज्र पर्वत परिघ, परिघ जो सस्त्र बिसेष ॥२१॥

पलास

हरित वर्न पालास पुनि, राछस बहुरि पलास ।
द्रुम दल सकल पलास है, बहुरो ढाख पलास ॥२२॥

पुण्डरीक

पुंडरीक सायक कहैं, पुंडरीक आकास ।
पुंडरीक पुनि कमल जहं, कमला को नित वास ॥२३॥

बला

बला सैन्य बसुधा बला, बला ओषधी होइ ।
बला चंचला लच्छिमी, जेहि जाचे सब कोइ ॥२४॥

बलि

बलि पूजा बलि असुर पुनि, बलि निय को मधि भाग ।
बलि कहिये पुनि लच्छिमी, जाके सदा सुहाग ॥२५॥

वारुनी

गजगति कहिये बारुनी, सुरा वारुनी नाउ।
पच्छिम दिसि पुनि वारुनी, बरुन वसै जेहि गांउ ॥२६॥

मान

मान कहावै पूजिबो, गर्ब कह्यो पुनि मान।
नाप दंड को मान कहि, जेहि नापे परिमान ॥२७॥

सित

सित रूपा सित जश पुनि, सित पर लोय कहंत।
सित तीछन सित शुक्र पुनि, सित उज्वल भगवंत ॥२८॥

सिव

सिव हर सिव वसु सुक्र सिव, सिव कहिये कल्यान।
सिव सुखदायक सबन के, हरि ईस्वर भगवान ॥२९॥

सीता

सीता निधि सीता क्षमा, सीता गंगा होइ।
सीता कृषि की देवता, जेहि जीवै सब कोइ ॥३०॥

सुधा

सुधा दुग्ध बिजुरी सुधा, सुधा धवल जो धाम।
सुधा बधू धात्री सुधा, सुधा अमृत को नाम ॥३१॥

सुभा

सुभा सुधा सोभा सुभा, सुभा सुभग बरनारि।
बहुरों सुभा हरीतकी, उदर रोग की वारि ॥३२॥

स्यामा

स्यामा जुवती रज बिना, स्यामा रजनी होइ।
स्यामा प्यारी को कहैं, स्यामा रति पुनि सोइ ॥३३॥

हरिद्रा

कहत हरिद्रा वन थली, निसा हरिद्रा होइ।
बहुरि हरिद्रा मंगली, हरद हरिद्रा सोइ ॥३४॥

हार

हार मुक्त को फूल को, हार छेत्र बिस्तार।
हार बिरह को बोलिबो, मारग कहियत हार ॥३५॥

चंपक

चंपक बिप वितान नन, रितु बसंत छवि चीर।
ये सारग सब परम पद, परम रंग रघुबीर ॥३६॥

चित्र

चित्र कहत रवि अमीर सों, चित्र जो प्रीतम होइ।
चित्र कहत आचार्य कों, चित्र लिखत जो लोइ ॥३७॥

जुवती

जुवती वनिता पवन पी, घन तड़ि ताड़ सबूज।
पावक त्रिन घन अनुग निसि, मृग संग्राम अरूज ॥३८॥

---

३ पाठांतर

रूपमंजरी

७ इंदु—चंद (क)।

८ जु कछु....झाँई—जो कछु मानस रस की झांई (क) (ख) (ग) (ङ); इसके पहले 'ङ' ने यह अस्पष्ट पंक्ति दी है—इहन कह इहा अस इहा ऐसै, जैसी ये वस्तु प्रकास्मक जैसै।

९ फटिक मांझि—झटक माहि (क) (ख)।

१० बूँद—उदक (क)।

११ सो कुरूप....दुरावै—सो एक रूप ढिग वदन दुरावे (क), अवर जु एकु हि वदन दिरावै (ख)।

१८ हौ तिहि.. .चहै—तै वल जो यह चलयो चहे (क) (ख)।

२१ निरवारि पियै जो—निरवारे जोई (क) (ख); इहि मग.. सो—यह मग प्रभु पद पावे सोई (क) (ख)।

२२ खोज....सोई—खोज कर पावे सोई (क)।

२५ सरसुति—रसिकन (क) (ख) (ग) (घ)।

२६ अति—रस (क) (ख), जस (घ)।

२९ जौ—जे (ङ); फिरि—सुनि (क) (ख)।

३० स्मित—सुमति (क), सुहृत (ग)।

३८ सठ कठपुतरी सग गह सोये को फल ताहि (ग)।

४० का कहि—कह करि (ख)।

४१ सु वास—सुपास (ङ)।

४५ बिमल—व्योम (क) (ख)।

४६ फूलत तो फुलवारी—फूलत फूलन बारी (क)।
४७ उन ही फूल मालन छबि भरी (क) (ख) (ग)।
४९ अस—यह (क)।
५१ का कहियै....निकाई—कहा कहिये यह सार निकाई (क) (ख); छाई—पाई (क) (ख)।
५३ राजीव, कुसेसे—राजीवकु जैसे (क) (ख)।
५६ जनु ननकारति—जानेन कारत (क), जनु ना करति (ख)।
५९ धर्मधीर तहँ कर—धर्मधीर करत (क), धर्महि राज करत (ख), धर्मधीर तिह कर (ग)।
६२ सर आवहि....दुआरा—सुनि आवे सब राज दुवारा (क)।
६३ नित—दिन (ङ)।
६६ शोभित ऐसे वेश सुकुमारी, हिम गिरिवर जनु ही मतवारी (क)।
६७ भूषन पाई—भूषण ताई (क)।
६८ औनी—रौनी (क) (ग)।
७१ दीप न....साँझ—उदय न बारे सांज (क)।
७४ ब्याल...बखानैं—बार वार सम बाल बखाने (क) (ग)।
७६ छूटी—छुट्टी; काम-कलभ....उगी—काम कला जानो दुतिया उगी (क)।
९३ कुरूप—कुपूत (क) (ख) (ग)।
९४ मूरख....अहित—मूरख हित अहि हेत (क)।
९५ इस के बाद 'क' ने यह पंक्ति दी है—

काह करे रूप अनूप कोई, मुख पर श्वेत कुष्ठ जो होई।

१०० पुर—पर (क); वन—तब (क), तर (ख)।
१०७ इंदुबदनि....पावै—इंदु वदन तब देखन पावे (क) (ख)।
१०८ पौंछे—पाछे (क)।
११३ बरनौं....छय-कारा—वरणो जगपती को अविकार (क)।

११४ ती कौ—नीकौ (क) (ख) (ग)।

११७ ताही–पाई (क) (ख); आही—आई (क) (ख)।

११८ साँपिनि आही—सपनि सुहाई (ङ)।

११९ भाल भाग-मनि—वाल भाल मणि (क)।

१२३ चहनि-चलनि—चलत चहत (क)।

१२५ खजन भजे—खंजन लजे (क); कंज लजे—कज लई (ग)।

१२९ मधि—रस (क) (ग); अरुन पाट... पवारी—अरुण पाट जनु परी पनारी (क)।

१३० लसत जु हँसत—दमकत लसत (क); दाडिम—दामिनि (क) (ख)।

१३२ छवि—मध्य (क)।

१३४ कराही—कहाँही (ग); अस क्यौ....नाही—अस क्यों कहे कित बुद्धी नाही (क)।

१३५ इह—ये (क) (ङ)।

१३७ परसन बाढ़्यौ—परसन बैठो (क) (ग); नभसि—बिहसि (ग)।

१३९ दै—ह्वै (क)।

१४० सम माने—सनमाने (ङ); परमाने—परवाने (ङ)।

१४१ तब कही—तब की (ङ), तब गहि (ग); विधि—विच (ग)।

१४७ अरुन होत सो—अस न होत जो (क)।

१५० जे गाई—जिगाई (क)।

१५१ जस—सी (क)।

१५४ तन—तिन (ग)।

१५५ छिति—छवि (ग)।

१५८ मिले—सु मिल (ङ); सुठौन—सुठौर (ग)।

१६४ मूसति मन....करतारै—मो मति को कर सत करतारै (क), कर मीडै भरि भरि सितकारै (ख)।

१६६ कोऊ कहै—को कहुं कहे (क), का कहु अहै (ख)।

१७१ देखत—देखन (क)।

१७३ वसै—वनै (क)।

१८३ सो सूच्छम....पैयै—सो सुख में तब ही लखि पावै (क)।

१८४ ये तौ वर—ये नव (क) (ख), ये तौव (ङ)।

१८६ करता हू के तुम—करता के तुम ही (क)।

१८९ तिय—तो (क) (ख)।

१९४ सखिहि घुरि—सखी दुर (क)।

२०५ सखिन बूझनी—सखी यों बूझन (क); गोद लुठि—दूर दुर (क)।

२०६ कछु—को (क)।

२०९ ठाँउ—गाम (क) (ख)।

२१२ रूखन—रूपन (क)।

२१५ बान अस बानें—तान अस तानें (ग)।

२१६ बेली—बेलि की (ङ)।

२१८ इक—जनु (ङ)।

२२९ लगि—सुनि (क)।

२३५ पैयत—पाई (ङ); या—हे (क); सपन—प्रेम (क)।

२३६ काके—काहे (ङ)।

२४० हू—सो (क) (ग)।

२४१ इक....अली—इक हुती कुवरि टखा मेरी आली (ग)।

२४६ बूझि बूझि—पूछि पूछि (क)।

२५६ मरकत रस....कीनौ—मरकत मणि निचोय रस लीनों (क)।

२५७ टटावक—टटवारक (क), टटवारिक (ख)।

२६१ कहत जु मो मति—कहतौ तौ मति (ङ)।

२६६ सबै—और (क) (ख)।

२६७ आनँद भरी—आनंद सहित (क)।

२६९ यह—वह (ग), इह (ङ)।

२७१ तौ वह—तोऊ वे (क)।

२७३ पिय सौं मिलि—मैं पिय मिल (क)।

२७४ तासैं—तातैं (ङ)।

२८१ तव—तौ (ङ)।

२८२ तन—तप (ङ)।

२८६ ठकुराइत....ताकी—सुरपति रवनी कौन वराकी (क) (ख)।

२९२ प्रीतम....परसि—प्रीतम रवि की किरन लगि (क) (ख); जागि—लागि (ङ); तन—तिहि (ङ)।

२९३ हिय मैं सपने—जिय में अपने (क); अपने—सपने (क)।

२९५ अपनौ आलय—अपनो आपे (ग)।

२९८ मंद हिलौर—मंदहि डोर (ङ)।

३१० खाइ—लाज (ख)।

३११ डारा—नारा (क); मन की....ढारा—मन की गति पै हीये अधारा (ग)।

३१५ पै—की (क) (ख); विरियाँ—वरिआ (ङ); तृपति न आवै—तपत ह्वै आवे (क)।

३२६ सु निकट न—सु निकटहिं (क)।

३२७ बूझै—सूझै (ङ)।

३२८ उड़त....जिमि—अर्नव नाव विहंग जिम (ङ)।

३३० रेनु—रैंन (ङ)।

३३१ पावस—आगम (क) (ख)।

३३५ छुटन छोह—छुटन सों भय (क)।

३३६ छोर—छोरि (क) (ङ)।

३४८ दहै रे—दहरे (ङ); रहै रे—रहिरे (ङ)।

३४५ सो तौ. . .ये ही—सु तौ सठ चातक पातक ये ही (ङ) ।
३४८ ऐ परि. . . .जौं—ऐ परि याको नेम सुलीजे (क) (ख) ; लाड़िली . . .रहै तौ—लाडिली लागि अचरज गहीजे (क), अचरज लाडिली लागि गहीजे (ख) ; लागि—लाड (ङ) ।
३४६ जब कब तब घन स्वातिल बरसै, तब भलै जाय चंचु जल परसै (ङ) ।
३५२ सुपनहि—सपन ही (ङ) ।
३५४ बन—जल (क) ; सुधि नहि—समझ न (क) ।
३५५ अभ्यास—अभ्यस (ङ) ।
३६४ जबहि. . . .जानी—जबई सरद उदानी जानी (ङ) ।
३६८ पत्रन—रचि रचि (क) (ख) ।
३७१ बिहाला—बिशाला (क) (ख) ।
३७३ कहूँ—कहा (क) ।
३७५ सब इकसार—कमल की सार (ङ) ।
३७८ टूटहि तार कि—टूट तारक (क) (ख) ।
३८५ खंडन—खडनि (ख) ; साई—साही (क) ; जरा आनि . . . .जुराई—जरचा आहि कित लेहि जराही (क) ।
३९० अलि—अति (ङ); साँवरे. . .चहै—साँवरे उदर धर सोयो चहै (क) ।
४०० चुबक—चुभत (क) ; यह—है (ङ) ।
४०२ तू क्यौहुँ—तू कहू (ङ) ।
४०६ पुन सहचरी को वचन उचारा, बोली मुग्धा सुधा की धारा (क) (ख) ।
४१० जग—होय (क) ।
४१५ फाग. . .आयौ—फाग मानो यह पटिया आयो (क) ।
४१७ होरी. . . .साई—होरी खेलन खेल उमाही (ङ) ।
४१८ नवीन—नव नवल (क) ; हौ—हो (ङ) ।

४२४ जानौ....रहसि—जनु रति व्याहन रहस भरि (ङ) ।

४३२ सखी तन कुँवरी ताहि क्षण चहे, मन मन बूझे अरु इम कहे (क) ।

४३५ दुरि—हँसि (क) (ख) ।

४३७ हैं—बल (क) (ख) ।

४४२ कहहि—कहे (क) ।

४४४ माई—जाई (ङ) : तव भलें....दिपराई—तव भली दृष्टि देखे दिखराई (क) ।

४४५ ऐं परि—तापर (क) ; जाकी वलि ये—तहाँ की बलि यह (क) ।

४४८ सो सखि मुख—जो सखी मुख (क) ; सुनि—सुनी (ङ) ।

४४९ किहि विध राखें क्यों रहे, रुई लपेटी आगि (क) ।

४५७ बैर—गहर (क), तहँ तैं (ख) ; घर हू—गर हूँ (क) ।

४६३ बहेर तर—बहेरत उत (क), बहिरत उत (ख) ।

४६५ नाथ—राज (क) (ख) ।

४६६ इक पहिले यौं—एक पहलिये (ङ) ।

४६८ बहुरि....लई—बहुरि नारि नौहरि सी लई (ङ) ।

४७० किन आनौ—किहि आनै (ङ) ।

४७६ सुभायौ—सुहायौ (ङ) ।

४८१ अँग न लगाऊँ—अग न लाऊं (क) (ख) ।

४८४ कोउ तीर न जाई—न तीर ह्वै जाई (ङ) ।

४८५ जनु हिय घुरि—जननी दुर (क), जननी ढिग (ख) ; याही—इनही (क) ।

४८९ ता मैं—जा मे (क) (ख) ।

४९० नह—नख (ख) ; नह रे—नहुरै (ङ) ।

४९४ छुट—छुर (क) ।

४९५ तर—रहत (क), रहति (ख) ।

४९६ एक राउ—राउ वसंत (ख) ।

५०६ क्यौं....विना—चढ़े जाइ पिय प्यारे बिला (ङ)।
५०८ चहै—लहै (ङ)।
५१७ दोस विधाता—वान बिधाता (क)।
५१८ सु करहि री माई—सो करो उपाई (क)।
५१९ डसनि—वसन (क)।
५२० चदन....उगवाई—चदन पर चंदन चरचाई (क) (ख)।
५२३ भोई—गोई (ङ)।
५२६ बुडि—भूड (ङ)।
५३७ सखि—हेत (क) ; लपटनि—लपटत (क)।
५४६ रु—× (ङ) ; कौ यह—के इक (ङ)।
५५० उरसि रसाला—उर मरि माला (ग)।
५५१ भोजन भूख मिले जिम अहे, ए पर इन तब परत न कहे (क)।
५५२ अकुर—अंतर (ङ)।
५५५ कौ मनौ—पीय पँ (क) (ङ) ; पिय की—मानो (क) (ङ)।
इसके पश्चात् 'ङ' में यह छंद पाया जाता है—
गुणि गण गुणाण गणियं मद्दा मगा बिहंग मारे हा।
लिय रस पेम पमाणं जाणं जीयणं जपियं जीहा॥
५५७ सियरे—सीतल (ङ)।
५५९ लीने....विसाला—लेनि उसास दुसास बिसाला (क)।
५६५ हरि प्रीतम—प्रीतम के (क) (ग)।
५६८ तै—ते (ङ) ; हौनौ—औनौ (ङ)।
५६९–५८० इन पंक्तियों के स्थान पर 'ख' ने निम्नांकित पद्यांश दिया है—

सब ही सोभित परम उदारा। प्रिया मिली नव प्रेम अधारा॥
मधुरि मधुरि धुनि नूपुर बाजै। घुमरि नैन रस-भरे बिराजैं॥
रागहि मग ह्वै पिय पै जाइ। कोउ जानै इहि बैठी गाइ॥

औरै प्रेम के लच्छिन कहै। तेऊ तरुनि सु-तन में लहैं ॥
तिनके नाम भेद हौं कहौं। जा तैं रस परिपाटी लहौ ॥
उत्तम-सँग उत्तम-छबि पावै। मध्यम-सँग मध्यम दिखरावै ॥

जैसैं सुन्दर-मुकुर मे, मुख पानिप अधिकाइ।
बुरे मुकुर मे मुकर तें, भलेई सुपानिप जाइ ॥

लीला छबि-विलास सभ्रमा। मोटाइत, कुटमित क्रम क्रमा ॥
ललित, विहित, बिब्बोक किल किंचित। स्थाई सखी सु-पिय-हिय संचित ॥
जब रंचकि पिय अंतर होई। अति अंतर सहि सकति न सोई ॥
पीतम कों सखि भेष बनावै। पीतम ज्यौं हँसि चलि छबि पावै ॥
प्रेम बिबसि पिय-मुख ही रहै। ताकौं कबि लीला छबि कहै ॥
पिय सुमिरैं, तन तोरि जँभाई। मोट्टाइत-छबि की अधिकाई ॥
बरनति बैठि रहसि की बातैं। ए ललना की रहसि सुघातैं ॥
पिय सौं नव हित गरबित होइ। सो बिबोक-छबि कहियै सोइ ॥
इक दिन मुदित सेज पै सोई। सुन्दर स्याम पिया रस भोई ॥
भोर भएं जो सहचरि लहै। सूनी-सेज कुँवरि नहि अहै ॥
सोच भरी सहचरि कहै दई। कुँवरि हाँ तैं किहिं ठा गई ॥
ढूढति भवन, भवन चित्रसारी। फिरिफिरि ढूढि फिरी फुलवारी ॥
इहि का करो सुजान-पियारी। मो कों कित छांड़ी करि न्यारी ॥
जल तै बिछुरि मीन जस होई। दुखित भई अस सहचरि सोई ॥

तिय-दुख सखि करतल भयौं, रूपमंजरी हीन।
जल तें बिछुरित मीन जस, होत सुदेखी दीन ॥

थकि आसन बैठी सहचरी। रूपमंजरी उर मैं धरी ॥
तजत भई तृन सम तन सोई। ज्यों जीरन पट त्यागत कोई ॥
ज्यों रबि औ रबि की गरमाई। किरन माँझ ह्वै रबि पै जाई ॥
सखी जबै वृंदावन ढिग गई। बिपिन बिलोक चकित अति भई ॥
धरनी चिंता मनि मन हरै। बंछित अन बंछित सब अरै ॥

सब ऋतु बसति बसंत सम जहाँ । पात पुरातन होति नहिं तहाँ ।।
कुसुम धूरि धूँधरि तहाँ रहै । सीतल, सुभग, पवन जहँ बहै ।।
गुंजत पुंज-भँवर छवि-छाजैं । ठौंर ठौंर जनु बीनहि बाजैं ।।
सुधि न रही एही छवि गोहन । राग मई कै प्रेम मई बन ।।
निकट बहै जमुना सुख दैनी । कनक-किनारी रतन निसैनी ।।
जो रस कहियै प्रेम उदारा । सो सब बहति कलिंदी धारा ।।

जो मुख होंहि अनंत सखि, रसना ताहि अनंत ।
बृन्दावन गुन कथन कौं, तोऊ न पहुँचै अंत ।।

नव बृन्दावन कुंजन छाँही । देखी जीवन-मूरि सुठाँही ।।
सहस सखिन सँग तहँ अति सोहै । रमा, उमा की हू छबि को है ।।
न्दुमती प्रनाम तब कीन्हों । वे हू हँसि करि कर गहि लीन्हो ।।
कहति मुसकि तू तों में लखी । रूपमंजरी की जनु सखी ।।
इन्दुमती जब इहि कछु सुनी । उपजि परी सिखा सत-गुनी ।।
का कहियै तब भाग बड़ाई । जानै तू बृन्दावन आई ।।

इहि बन दुरलभ आइबों, इन्दुमती सुनि बात ।
जाकी रंचक रज-गरज, अज से मर, पचि जात ।।

पूँछति अति आतुर सहचरी । कित है देव ! रूप-मंजरी ।।
तब इकु दीनी अपनी अली । सो लिवाइ लै तिहि ठाँ चली ।।
परचों पुहुप-इकु तहँ तै लीनो । वह लै इन्दुमती कर दीनो ।।
ताहि सूँघि सखि अतिसुख लह्यौ । सो रस मो पै जात न कह्यौ ।।
तब क्रम क्रम वह सखी सुहाई । बिहँसि रास मंडल मे लाई ।।
मृदु कंचन मनिमय तहँ धरनी । मनहरनी छवि परत न बरनी ।।
जगमग जगमग अस कछु करै । दिवस कै रजनी समभ्क ना परै ।।
प्रेम-सई इकु ढिग तहँ केला । तापै अति रस चक्र सुमेला ।।
ठाढी तहाँ नवल ब्रज बाला । मूरति धरै मनोहर माला ।।
ठाडे नंद-सुवन तिन माँही । दै बृषभानु सुता गलबाँही ।।

कहति सखी मन मृदु मुसिक्याई। देख्यों इन्दुमती हू आई ॥
कुँवरि अनूप रूपमंजरी। इन्दुमती ताको सहचरी ॥
सुरस सुभाइ, भाइ अनुसरी। नंददास इहि लीला करी ॥
जो कोउ सुनै गुनै मन धरै। सो सहजहि मोहन बस करै ॥
जो प्रभु पद-पंकज की धूली। नित बाँछित कमलासन सूली ॥
जो रज ब्रज बृंदावन माँही। सो बैकुंठहि-लोक में नाहीं ॥
जो अधिकारी होइ सु पावै। बिनु अधिकारी भए न आवै ॥
जदपि दूरि तैं दूरि प्रभु, निगम कहति हैं ताहि।
तदपि प्रेम, मन, बच गहैं, निपट निकट हैं आहि ॥

बिरहमंजरी

१ उच्छलन कौ---उछलत इक (ग), उछलन इकु (ङ) (च)।
इस दोहे के पहले 'च' ने निम्नलिखित पद्यांश दिया है---
चलन कह्यो पिय प्रात ही श्रवन सुनी तिय बात।
बिरह बिहंगम विषम बिष छाय गयौ सब गात ॥
पीय पयानौ जिय सुन्यौ मुखहु न आवत बोल।
बीरी तौ अधरन रही पियरे परे कपोल ॥
अति व्याकुल मुरझाय कैं बढी लहरि असरार।
परी कनक के दंड लौं पट भूषन न सँभार ॥
चरन पलोटत लाल ज त न न बोरौ जीव।
मिली अंक नैनन भरि देखे कब आये तुम पीय ॥
३ रस-कंद---सुखकंद (क) (ङ)।
८ प्रसंन्न भये किधौ सुन्दर स्याम, सदा बसौ ब्रन्दाबन धाम (छ),
भई---करी (घ), भए (च)।
९ याके---वाके (क) ; नंद---चंद (ग) ; कारन---करनौ (च)।

१६ चकित होत—थकित भऐ (च) ।
१७ नव—वन (ङ) ; बिहरति—बिरहत (ग) (च) ; बिहरति.. ..अबाधा—विहरति पिय सँग रूप अगाधा (क) ।
१८ कछु इक....आई—कछु इक लहर प्रेम की आई (क), कछु जु प्रेम लहरी कोऊ आई (ङ)।
२७ कें—कौ (ङ) (च) ; रची—रचे (घ), परै (च) ।
३० पलक—अल्प (क) (ग) ।
३१ तनक प्रान—प्राण मात्र (क) ।
३५ बिती—भती (क) (छ), तिती (घ) (च) ।
३८ मिले हे—मिलैगे (ग) ।
३६ हिय—इक (क) (घ) (च) ।
५५ तिहिं—तिनि (ङ) ।
५६ पाँचवान—पाँच प्राण (क) ।
६१ नीर तैं—तीर में (क) ।
७६ चंदन चरचत जिनकौ सियरे, तिनकौ नंद सुवन पद नियरे (च) ।
८१ मो दुख तन—मो दुखित न (क) ।
८३ विपिन—त्रियन (क) ।
८६ कह्यौ—करै (क), रटै (च) ।
६३ बदरा बने—वदर बनैत (छ) ।
६४ जैसैं—अलि (छ) ।
६७ परौरत—मरोरति (ख) ; वाहि—जाहि (क) ।
६६ आये नहिं....भवन—आये नहि कारन कवन (च) ।
१०० सभी पोथियों ने "मदन की ढाला" पाठ दिया है। केवल 'क' तथा 'ख' में इसके स्थान पर "मदन के ब्याला" पाठ पाया जाता है।
१०५ पिय के—तियनि के (क) ।
११३ घन हर—घन अरु (क) (ख) ।

१२० जव—वय (क)।
१२१ झर—डर (छ)।
१३६ जैसैं....सुहाइ—जेसे वलि बलि उनही सुहाइ (क)।
१३७ बेलि—बलित (छ); बेलि, मल्लिका—मल्लि बल्लिका (ग)।
१३८ उहै—भयौ (क)।
१४२ ता करि—ता सुर (च)।
१४६ जोग वनि—योग जोबन (क)।
१५६ सोये—सूने (छ)।
१६७ सदन—सुवन (ग)।
१७० लै—लौं (ग), ज्यौं (च)।
१७१ जात नहिं—जान बिन (क), जान मनि (छ)।
१७८ पवन—अगिनि (क) (घ)।
१८० मास मास—महा मास (क); कदन—बिरह (च), दिवस (छ);
१८१ लपटि कै—पलटि कै (ग)।
१८२ न खेलौं—न खेलहि (ग) (ङ)।
१८३ कोउक....आइहै—पिय तुमहीं पें आय हे (क)।
१८७ घरिक—घरीक (क), घरी इक (छ); बात....अटपटी—प्रेम की रीति निपट अटपटी (क), उपजी विरह प्रीति अटपटी (च)।
१९२ निसि—भाल (छ)।
१९४ आलस....नैंन—सालस रस भरे चंचल नयन (क)।
२००–२०१ और भांत ब्रज को विरह, बने न काहू अंग।
पूरनता हरि वृंद की, परत तास में भंग ॥ (क)।

रसमंजरी

३ कछुक—कछू (ग); संसार—संसारा (क) (ख); आधार—आधारा (क) (ख)।

५ बरनौं—बरने (क), करनौ (घ)।
७ बरें—बहें (ग); सब तामैं—सब तिन में (क) (ख) (घ), सविता मैं (ग); ररैं—रहैं (ग)।
८ तुम तैं....सोहैं—तुम्हरी माया सब जग मोहै (ग)।
१३ रति समेत—रति मु समैं (ग)।
१४ जानैं—जानैं (ग) (घ); प्रेम न तत्व—प्रेम तत्व न (ग); पिछानैं—पिछानैं (ग) (घ)।
१६ मधुलिह—मधुप (क)।
१६ देख्यौ—चाह्यौ (ग)।
२० अब—नव (ग), तब (ङ); मोहब—मोहित (क) (ख) (ङ)।
२३ ता कहुँ कर—ताहि कलह (क), ताही करि (ङ)।
२७ इस के स्थान पर 'ग' ने यह दोहा दिया है—

तू सुनि लै रस मंजरी, भरी प्रेम प्रमोद।
वृद्ध जनम अलिगन रसिक, सरसे सरद बिनोद॥

२८ अनुसारि कै—अनुसार के (क) (ख) (ग)।
३१ पुनि—बहुरि (क) (ख)।
३२ पुनि—सब (ग)।
३३ मुग्धा....गनी—तहां मुग्ध दुबिधा करि गनी (ग); उत्तर उत्तर ज्यौं—ज्यौं उत्तर उत्तर (क) (ख) (ङ)।
३५ लाज....संकुरै—मिल्यो न पिय हिय परसति डरै (ग); इस पंक्ति के बाद 'ग' ने यह पंक्ति दी है—आखें आफार सम सूधी, बंक बिलोकनि मैं नहिं लूधी।
३६ भूषन....ताकी—भोरी निपट अवस्था ताकी (ग)।
३७ पंकज—कर (ग); सेज—सैंन (ग)।
३८ बह—उर (क) (ख)।
४५ प्रेम भाउ—भाव प्रेम (क) (ख)।

४६ अनुरागी—अनुरँगी (ग) ; मुसकि....लागी—मुसकि सखी कूँ चाहन लागी (क) ।

४७ नवल—सु नव (ग) ।

४९ मुक्ता फल—मुक्ता सै (ग) ; इस के बाद 'ग' ने निम्नांकित अतिरिक्त पंक्तियाँ दी है—

बचन सुधा समुद्र की लहरी, उमजति लागी अति रस गहरी ।
क्रिया मनोहर हिया मनोहर, कछु कछु ऊँचे भये पयोधर ।
पिय समीप जब पौढै बाल, का कहिये छवि निपट रसाल ।

५१ उरज....करै—उर जुग मद्धि बांधि इक करै (ग) ; बाँधि इक—बांधी एक (क) ।

५५ सौं—को (क) ।

५६ डरति—अरति (ख) (ग) ; होइ—कोय (घ) ।

६१ स के बाद 'ग' ने ये अतिरिक्त पक्तियाँ दी है—

नवला निकसति तीर जब, नीर चुवत बर चीर ।
जनु असुवनि रोवत वसन, तन बिछुरन की पीर ।।
जिमिजिमिविविकुचउच्च छविलहैं, तिमि तिमि नैन बंकता गहैं ।
ज्यौ कोपिय सुन पर उद्दो चाहि, कुटिल होइ न सकै तन ताहि ।
अज हूँ उरज उतंग सु नाहि, मेर धिग छवि फिरि फिरि जाहि ।

६३ इक ठाँ बिवि—इकठे भये (क), इकठे भय (घ) ।

६८ मोहन—सोहन (घ) ।

६९ ग्रहन—रहत (क) (ख) ; रम्यौ ....संग—रम्यो चहे नव रस नव रंग (क) ।

७१ छूट हिय हार विहार सब, सूंघ्यो करे कच हार (क) ।

७२ मध्या—मध्यम (क) ; परी सु—परिमल (क) ; अधार—अपार (ग) ।

७३ तिहि—जिय (क) ।

७४ कलाप—कलानि (क) ; चहै—बहै (ग) ।

७७ रस ऐनी—गज गवनी (ग), रस रैनी (घ); सो....दैनी —सा रस बोढ़ा प्रौढ़ा रवनी (ग) ।

८३ पल्लव—कमल (ग) ।

८५ भ्रमत—बसत (क), जगत (घ) ; श्रमित—भ्रमित (क) ।

९१ मिलि—बनि (घ) ।

९२ अविंग कहै—व्यंग करै (क) ; रिस—रस (क) (ग) ।

९३–९५ विंगि अविंगि वचन रिस साने, कहै पीय सौं सागस जानैं। रवाकंत अहो कंत पियारे, मोहन सोहन नाथ हमारे। नव अनुराग चतुर नंदलाला, नव किसोर चित चोर रसाला (ग) ।

९६ जोई—जो है (ग) ; सोई—सो है (ग) ।

९८ अनुनय—विनय जु (घ) ।

९९ सुधा सी—सुधा की (क) ; रूप की—रूप सी (घ) ।

१०० सेज न....भोरी—सेज नवसि लाज जिय थोरी (क), सेज मांन लजसि क्यों भोरी (घ) ।

१०१ भ्रकुटि....लहियै—सखि तन कोप करति ज्यौं लहियै (ग) । स के बाद 'ग' ने यह पंक्ति दी है—सुदर पिय कौहु सागस जानि, कनखै अनखै भौंहनि तानि ।

१०४ पुनि....निवारै—पुनि पंकज लै कोपु निवारै (ख) (ग) ।

१०६ रसीले—सलोने (क), रसीलौ (ग) ।

१०८ रिस-रस—रस रिस (क) (ग) ।

१०९ इहि....लहियै—कछु प्रन दिढ़ कछु अदिढ़ लहीये (घ) ।

११७ इक जहां—है तहां (घ) ।

११८ पय—रस (घ) ; मारग—सारंग (ग) ।

१२० लच्छन....पाई—लक्षण चिह्न कर जो लखि पाई (क) ।

१३१ निज—सब (क) (ख) (घ) ।

१३२ पौढ़ि—सोइ (क) ।

१३४ जामिनि—भामिनी (क) ।

१३५ पिय बिनु पति विरहानल दहै, कछूक कहै कछू नहि कहै (ग) ।

१३७ सोइ—लेय (क), तेई (घ) ; कटि—पट (क) । इसके बाद 'ग' ने यह पंक्ति दी है—चंदन तन चितयौ नहि जाइ, आगि रुचै पै वह न सुहाइ ।

१३८ इसके बाद 'ग' ने यह पंक्ति दी है—भली करहि जौ न दिन माही, प्रांन पियारे आँवैं नाही ।

१४२ कर—मुर (क) ।

१४७ परकिय बिरहिनि—बाल बिरहिनी (क) ।

१४८ सखि जब—सासु जु (ग) (घ) ।

१५१ मिटै—बुझै (घ) । 'ग' ने इस दोहे के स्थान पर निम्नांकित पद्यांश दिया है—

उघरि पिया कौं बिरहु जनावै, भीतर कहइ कि क ब द बुलावै ।
मरिच मेलि लोचन जल नावै, द्वार देस ठाढी दिखरावै ।
इहि परकार जुवति जो लहिये, सो सामांन्य प्रोषितपतिका कहिये ।
रसाभास जस जान्यौ जाइ, सो सामांन्य प्रोषितपतिका लहिये ।
अरु या करि समुझे ए लोइ, प्रेंम बिडंब करौ जिनि कोइ ।
नंद निपट कपटहि तजै, तन मन बिरही होइ ।
उहि रस भीनैं विरह विनु, पियहि न पावै कोइ ।।

१५६ ते प्रीतम . . . . चहै—प्रीतम तें पूछौं नहि चहै (ख) ।

१५८ कछुवै नहिं—कछु बैन न (घ) ।

१६० दुरावै—मिलावै (घ) ।

१६१ इहि प्रकार तिया प्रीति जनावै, सा मध्या खंडिता कहावै (घ) ।

१६५ ढकहु छती नख—कहुं कहुं नख क्षत (क) ।

१६६ ऐं परि—ऊपर (क) ।

१६८ गर—कर (घ) ; गंडनि श्रम-कन—गंडन श्रम के कण (क) ।

१७० दूती....तरेरै—दूती तन करि नैनन तारै (घ) ।

१७७ जो—जव (घ) ।

१७९ घुरि—धरि (क) ।

१८५ मैं—मो (घ) ।

१८७ अली अदिष्ट—अलिक दृष्ट (क) (ख) ।

१८९ गरुये गुर—गुरु वे जे (क) ।

१९० नीति....बिरराई—त्यों त्यो सहचरी सों चिर राई (क) (ख) ।

१९१ सम—सरि (घ) ।

१९२ अपमाने—अनमाने (घ) ; बिकूलयै—प्रतिकूलहि (क) (ख) ।

१९४ काउ—काय (क) (ख) ।

१९७ आरति करि—अरति कंप (घ) ; जुड़ाई—जनाई (क) (ख) ।

१९८ सु है—वहै (क) (ख) ।

१९९ अज हूँ—पिय जु (घ) ।

२०० मन ही मन—मन ई मन (घ) ; सूझै—सूझै (क), खूझै (ख) ।

२०५ परचौ—परे (क); घूम....सयानी—घूमति फिरै कछु कहलि न आनी (ख) ।

२०८ बहिन—मनहि (क) (ख) ।

२१२ बारिद....लियौ—बारिद बाहिर रहिबो लियो (क) ।

२१३ दिढ़—इम (क) (ख) ।

२१७ परै—लरै (क) ।

२२३ लहै—चहै (घ) ।

२३५ इसके बाद 'क' ने यह पंक्ति दी है—दूती कुसुम बीजना वीजै, ता पर सतर ओह कर खीजे ।

२३७ सज्जन सघन बन मांझ तहां, गुरु गहेवर वन वेलि (क) (ख) ।

२४२ दीप सँवारि—दीपहि बारि (घ) ।

२५३ सास कौं स्वावै—स्वास कूं खावे (क), अलसान दिखावैं (ख)।

२६२ कहत....बार—कहत सुभग घन वन की बार (क), कहति सुभग घन वनहि बहार (ख)।

२६५ जाहि—ताहि (घ)।

२७३ जिमि—तिहि (घ)।

२७५ काकौ—की को (घ)।

२७६ मंजु कुंज—कुंज सदन (घ)।

२८० सुकुमारा—सुकुमारी (ख) ; वारिधर-धारा—बांह धरि प्यारी (ख)।

२८२ इसके बाद 'ङ' ने यह दोहा दिया है—

जो कछु निरवधि प्रेम रस, गुणी गुणत जग माहि।
सो परकिय तिय में वसे, बिलसे सुकृती तांहि ॥

२८३ पार्स्व—पास (क), पारिस (घ)।

२८६ कछु अति नहिं—नहिं अतिशय (क) (ख)।

२८७ गरिमता—गरमता (क), उरूजता (ख)।

२८८ नहिं चलनि—कछु भई (क) (ख) (घ) ; वक्रिमा—वक्रता (क) (ख)।

२९१ धरनी धसि परौं—धरणी खिस परे (क), धरनी पर परौ (ख)।

२९४ तौ—तू (क)।

२९५ अरग अरग इमि सखी सों कहै, मध्या स्वाधीन पतिका वहै (क)।

२९९ माहीं....पीया—भरि भरि रही प्रेम रस हीया (क) (ख)।

३०० रैनी—बेनी (क), ऐनी (ख)।

३१७ बियोग—विवोग (घ) ; की—कि (घ) ; इह बियोग.... नहियाँ—यह वियोग ज्वर त्यजत स्वकीया (क), इहि बियोग जुर तजति न करिया (ख)।

३१८ चंपक कुसुम बन भोर परे रे, देत जु गंध मरण कहुं ने रे (क) (ख)।

३१९ परलोकहु—परलोक हो (क)।

३२५ तपन जाचना—तपत यातना (क) (ख); तन कौं—तन के (क)।

३२७ जुगति—युवति (क); तोहि—जो ही (क)।

३३५ इस के बाद 'घ' ने यह पंक्ति दी है—जो पिय कनक कहु करूनावै, पाटी तरै परचो तिहि पावै।

३३७ बाल भाल में तिलक बनावे, गुहि गुहि फूल माल पहिरावे (क) (ख) (घ)।

३४० बल—मिस (क) (ख)।

३४५ भीतर....लहै—सब के मुख सुख अंतर लहे (क)।

३५२ रे नग! मग—रेन गमन (क)।

३५५ जोइ—आही (क), आई (घ); सोइ—ताही (क)।

३७४ तन....जनावै—ह्रिदय कंप वैवर्न जनावै (ग)।

३७५ इस के बाद 'ख' ने निम्नांकित पद्यांश दिया है—

दूती बरनी चारि प्रकारि, तिय पिय प्रेम बढावनि हारि।
प्रथमहि एकु निसृष्ट सु अरथा, पुनि बरनी तातै अमितरथा।
तिसरी पत्र हारनी गुनीं, चौथी स्वयंदूतिका सुनी।
प्रथमहि तन कों भाव बिचारै, बुद्धि आपुनी पुनि अवधारै।
तब अति दुहुन भरोसों देइ, भार सबै अपनें सिर लेइ।
जुलिहि जुलि जु आनि मिलावै, दूति निपृष्टि अर्थिन कहवावै।
जाहि अनेक फुरहि चातुरी, लखि पावहि पिय की आतुरी।
अगम ठौरि तें नाहिन डरै, लुकअंजन दै तहँ संचरै।
अस कछु बातैं कहै बनाई, पिय हि मैन-मय करै सुहाई।
तुरतहि आन मिलावै जोई, अमितार्थी कहावति सोई।
जो कछु पठिवै दैं नँद-नंदन, माला फूल फुलेल, सु चंदन।
दै आवै, तहँ तैं लै आवै, पत्र हारिनी दूति कहावै।

दृष्टि परै जब मोंहन लाल, उठति अनंग सु अंग बिसाल।
धीरज गलित गलित पुनि बीरा, तनकहि मे ह्वै जाति अधीरा।
पिय तन तनक कनखियन झंकै, नाभी कुच प्रगटै वरु ढंकै।
नैन सैन संकेत जनावै, स्वयंदूतिका सु तिय कहावै।
इतने लच्छिन तू सव जानि, तासों परम प्रेम पहिचानि।

मानमंजरी नाममाला

१ पद—श्री (अ)।
२ करुनार्नव—करुना रवन (आ); जिन—जा (अ) (च)।
३ समुझि—उचरि (अ) (ए)।
४ लगि—हित (अ); रची—रचत (अ)।
५ गुंथनि—ग्रंथन (अ); नाम—ग्रंथ (आ); की—के (अ) (ए)।
६ मिलैं—मिले (अ)।
८ करत—कर (अ), करै (आ), करौ (इ)।
१० बृषभान—नंदलाल (इ) (ए) (क) (ख) (घ) (च)।
१३ गिरा—इड़ा (आ) (इ)।
१५ सत्वर—सद्य (ए)।
२० महारजत—भर्म्मरजत (ए)।
२१ जातरूप....देत—हेम सु सौंने के सदन बनै जहां छवि देत (ग)।
२२ तहां—निरखि (ए); निज—मिलि (आ), सव (इ)।
२३ रुक्म—सुकम (आ)।
२८ द्युति—छवि (अ); दिखि—लखि (अ)।
३० रस्मि....होति—पादभांन दीधितिरस्मि रवि ससि जगमग होति (ए)।

३५ व्याघरु हरि जक्ष केसरी घेरी व्याघ्र गजारि (ए)।

३६ द्वीपी—हथी (अ) ; सेर सूर भनि सारदूल पलभक्ष सिंघ मृगारि (ए)।

४३ अनकप—अनगय (अ) (आ) (उ)।

४७ ये जु....करि—अष्टसिद्धि जो कष्ट करि (अ) ; लहैं—लहत (आ)।

४८ सो—ते (आ) (ए)।

५१ या—जे (ए)।

५२ ते सब बल्लभराइ के—तेई श्री बृ भान के (ए)।

५३ मुक्ति—मोक्ष (अ)।

५४ पद—सुख (आ) (उ)।

५६ बृषभान की पौरि झुकि—बृषभान के पौरि पर (अ)।

५७ महीपति—परिब्रढी (आ) (उ) ; प्रभुपति—प्रजापति (ए)।

५८ बनि, बैठे—तहँ बैठी (अ)।

६६ तहँ, जहँ—जहँ तहँ (आ) (उ)।

६६ पुनि—जन (अ)।

८० बिहँसत—बिहँसै (इ) (ए)।

८२ ठाँ ठाँ—ठाढ़े (अ) (आ) (इ) (उ)।

८३ होइ—नाम (इ)।

८४ बने जु गज मोती भवन मनहु सुक्र की दाम (इ)।

६१ करि—कहि (आ) ; बंदन अभिनव प्रनति पति अभिवंदन करि ताहि (इ)।

६२ आगे....अलि—सकुच अली आगे चली (अ) ; बर—बुधि (आ)।

६४ चली—सखी (अ) (आ) (उ)।

६६ कदुक सोइ उछीर—कंडुक सोई छीर (आ) (उ)।

१०० उठँगि—उझकि (अ)।

१०१ कुसुम, सु सुमन—सुमनस सुमन (अ) (ए)।

१०२ कर वर—वर कर (अ); उदगम प्रसव लतांन की फूल गेंद कर भांम (ए)।

१०५ सेखर अलिक रु गोधिका पट वैदीय जराइ (ए); पट—मधि (अ) (क) (च)।

१०७ अक्षन—ईक्षण (ए)।

११२ फूली—खुली न (अ), फूली न (ए)।

११३ वनित—विंबु (अ) (ऊ)।

११४ जिनके—जिन कौ (आ) (उ); जिनके....ही—लिखत लिखक के हाथ की (इ), दसन वसन के लिखत ही (ए)।

११५ रदन....रद—दसन दंत द्विज रदन रद (अ); रस—रँग (अ) (आ) (उ)।

११६ नव....जमे—नव नीरज मधि जनु कमल (अ), ओपि धरे जनु कमल मो (इ); जमे—जमै (आ) (उ); उज्जल—विज्जुल (अ)।

११८ मुहकरि—मुहखर ( ), मुख कर (च), मुख पर (छ); की, मुहकरि—की कहु मुह (आ), की कहूं महूं (उ), महंमोंगहर (ख), के मुकुरित (घ)।

१२३ कर—पुनि (ए); कवहूँ....कपोल—कर पर धरे कपोल (ए)।

१२५ कैन—कून (उ); गल, नल....कैन—गल कंधर ग्रीवा पुनि गल कपोल कोयान (ऊ)।

१२६ सो—सब (ए); सो छबि....ऐन —सब छबि कीनो पान (ऊ)।

१२८ कंचन संपुट देवता पूजत पाये मैंन (आ) (उ)।

१३३ बासन—बासस (ए) ।

१३४ नील बस्त्र मैं दीप जनु दमकत गोर सरीर (अ) ।

१३७ सु दर्पन—सुकर तिय (आ) ।

१३८ पिय-मूरति....देति—नैननि में पिय झलकि लखि बहुर डारि तिहि देत (अ) ।

१४० बहुरचौ—तरजति (अ) ।

१४१ ताम्बूल अहिबेलिदल द्विज मुख मंडन पान (अ) ।

१४२ नहिन खाति अनखाति अति भर जो रही मन मान (अ) ।

१४३ सामय—साँमज (आ) ।

१४४ बड़ी बेर सखि तन चितै रंचक बोली बाल (अ), बड़ी बेर लों सहचरीं देखी बाल रसाल (ख) ।

१४५ अंबु—अंभ (अ) ।

१४६ पापारि—वा पारि (अ) ।

१४८ कपीट—कपीठ (अ), कुपीठ (आ) ।

१४९ कै—मुख (आ) (उ) ।

१५६ परत—मिलत (अ) (ए) ; यौं—त्यौं (अ) ; तिहि दिखि—देखत तोहि (अ), तो दिखि (आ) ।

१५८ छोभ....निरखि—छोभ भरी सुंदरि लखी (अ), छोभ भरी तिय कौं निरखि (ए) ।

१६१ तंद्रा—तन्द्री (ए) ।

१६५ आह्वय—अहवय (आ), आहुव (ए) ; धाम—नाम (आ) (उ) ।

१६६ या दरस जिहि—तुव दरस ते (अ) ; तै—भे (अ) ।

१७१ अज....पिता—पिता स्वयंभू आत्मभू (इ) (क) ; बिधना—वेधा (आ) ।

१७६ पुनि—उस (ए), ऊस (ऊ) ।

१७७ तैसें—तैसी (अ) ; कुँवर—कुँवरि (अ) ।
१७८ बीय—होइ (अ) ।
१८२ तुव—तू (आ) (उ) ; रची....तीय—रची बिरंच न कोइ (अ) ।
१८३ कुरुराउ—कुरुराइ (अ) ।
१८४ तेरे सौति अभाउ—सो तेरे अति भाइ (अ) ; नाम युधिष्ठिर जानिये भजि लीजै जदुराइ (ग) ।
१८५ निगम नदी—निगमपदी (आ) (उ) ।
१८६ भुवनंदा—स्वर्गनदी (अ) ।
१८७ तिहुँ—इहिं (अ) इ) ; सुभकारि—सुखकारि (आ) (उ) ।
१८८ सरित—सरति (ए) ; बिय—सम (ऊ) ।
१८९ तुग—तुंद्र (इ), तंद्र (ए) ।
१९० कहि—हे (अ), यह (ऊ) ।
१९२ अपघन—उपघन (ए) (क) (ङ) (छ) ; सहनन—संग्रहन (अ) ।
२०० अंज—अबुज (आ) (उ) ; ससिधर हिमकर निसाकर कुमुद-बंधु हिमरोम (अ) ।
२०२ कौं—वह (अ), लहि (इ) ।
२०३ मदन मनोभव पंचसर मथन कुसुमसर मार (अ) ; समर—अतन (ए) ।
२०४ अति सुकुमार—बिरह बिदार (अ) (उ) (ऊ) ।
२०५ मनमथ मनसिज आतमभू संबर दलन अनंग (इ) ।
२०६ पुहुप चाप हु छय बितन दिन दूलह नव रग (इ) ।
२१० भवँर नाम जुरि मौरवी होत काम सिरमौर (ए) ।
२१२ बनै—कछू (अ) ; बिद्युत संप बिजाग विज्ज दामिनि घन बिन मोइ (ए) ।

२१६ प्रीतमा—प्रणयनी (इ) (च), प्राणपति (ए)।
२१७ बिष्नी—वल्ली (अ)।
२२० पै—मौ (आ) (उ)।
२२३ पुनि—मृतु (ए)।
२३४ अति—थर (अ)।
२३८ सो तुव पिय पद—हरि पद पंकज (ए) ; नाहिं सु बेर—नाहिन बेर (ए)।
२४६ तंत—तात (आ)।
२४९ बंचक—जिह्न (आ) (उ) (ए)।
२५१ सारँग—कुरंग (अ)।
२५२ मृग, कुरंग सें—मृग सिसु कैसे (अ) ; इतराहि—अनखाहि (आ)।
२५३ मलीन, मसि—अमीव पुनि (ए)।
२५५ दहन-दव—दवन वद (अ) (उ)।
२६१ श्रोनित....पुनि—श्रोनित रक्तककौनि पुनि (आ) (ए), श्रोणित रक्त कोण्यप जु पुनि (ऊ)।
२६४ निसाचरा—निसाचर जु (आ), निसाचर रु (ए)।
२६८ रेनु की—रेनुका (अ)।
२७९ कहत....जाहि—खंडन तम संसार (अ)।
२८० सो कान्हर कपटी कियो जग जाके आवार (अ)।
२८४ हौइ जौ—होत है (अ) (उ)।
२८९ केत नाम जुरि मदन ह्वै सिध चंद ढिग आइ (ए)।
२९२ कौस्तुभ-अवधि—कुस्तभ अब्धि (अ)।
२९३ सुंदर—मोहन (अ) ; पीय—लाल (अ)।
२९४ निहि—हिलि (अ) ; तीय—वल (अ)।
२९९ जमुना भेदी तालधुज प्रलंबघ्न जल बेत (ए)।

३०३ उरवरा—लोर्वरा (ए)।

३०७ सबधर जिहि—राखी धर (अ)।

३०८ आवै—आवत (अ), आलहि (ए) ; कौ—के (ए)।

३१० सर—कण (आ) (उ) (ए)।

३१५ जलजोति—जलजोनि (अ), जल जोन्ह (ग) (घ)।

३१७ फूलत, फल—फल फूल न (ए)।

३१८ जिनके हिये—ते जीव वलि (ए)।

३३६ बस—रस (आ) (ए) ; हुती—हुते (अ)।

३४२ चलहु बलि—छैल अब (अ), छैल चलि (ए) ; जिनि करि इतनौ—छाँडि जीय को (अ), छांडि छिमा करि (ए)।

३४४ मैं इकले दई—माह अकेल है (अ)।

३४६ अवार—विचार (अ)।

३५२ अनखाति—इतराति (अ)।

३६१ संख्य—संक (आ), संग (ए)।

३६३ सुरति....सौ—कदन संकि जुध सुरत पिय (ए)।

३६९ माया—मया (ए) (च) (छ)।

३७२ जितौ तेतौ—जिते ताते (अ)।

३७४ चितवत ह्वै है पीय इमि जिमि ससि उदित चकोर (अ)।

३७६ स्रोतास्वती निम्नगा पगा द्विरेफा सोइ (ए)।

३८२ सांति....नहीं—सात परज जासों भयो (अ), संति पति जु भयो नहि (आ), सात फेरी तौ भइ नहि (घ) ; दुख....नाह —दुख न देत वह नाह (अ)।

३८३ सुरा, बारुनी होइ—मधुर मछनी हेय (आ), बहुरि मधुरनी होइ (उ)।

३८४ हलिप्रिया—मधुवारा (ए)।

३८६ कोउ—को (ए) ; कहति—बकति (अ) (आ) (ए)।

३८९ अंध तिमर अनकाव तम ध्वांत कुहर नीहार (ए)।
३९० तिमिर मिटो मग माँझ को बदन चंद उजियार (अ)।
३९३ तरे—तल (अ)।
३९५ छदन—वहै (ए); तरु—सब (अ)।
३९६ भ्रम—मैं (अ)।
३९७ हरि—मरु (अ)।
४०४ फिरि—वलि (अ); लोग—सोग (अ)।
४०५ अनंत—नितंत (ए)।
४१३ संकट सुदन दहन—अक दून तुद गहन (आ) (ए); पुनि—
अघ (अ)।
४१६ क्यों जैहै बलि मोइ रहु जैहै उठि परभात (अ)।
४१७ वज्र सु तेरे—वज्र सु तुरे (अ), उलका तेरी (ए)।
४१८ परे—परयौ (ए); धाम—सीस (आ), वज्र (ए)।
४२० पियहि मिलि—पीय पे (ए); न—कि (अ)।
४२३ जु तिय—कुँवरि (अ)।
४२४ सोभित....तैं—उज्जल जलधर ते मनों (अ), महल धौर-
हर तें मनो (ए)।
४२६ जौन्ह....तैं—जोन्ह तुल्ल परसत बदन (अ)।
४२९ सोइ—सो (ए), अरु (अ)।
४३० दिखि—लखि (अ)।
४३२ यातै—दिन दिन (अ)।
४३५ रँग—मद (अ)।
४३६ तुव आगम आनंद जनु करत परसपर बात (आ)।
४४० अंबुबास—अंबुवसा (आ) (ए) (ख)।
४४५ गुडफूल—सुरफूल (आ)।
४५० यह कदली बलि पाँ परै तुव जघन उनहार (अ)।

४५३ सहज—यह जु (अ)।

४५४ बैठे....काल्हि—जा तर बैठे काल (अ)।

४५६ जिहि—जह (आ); चढ़ि—कलि (आ)।

४५७ किंसुक—यह लखि (आ)।

४५८ नहन—नहुर (अ)।

४६१ लागूल पुनि—पुनि लागली (अ)।

४६२ अहो नारि वर—आयो फलपति (अ); करत—करन (अ)।

४६४ वारी वारी—वार वार यह (अ); इन—या (अ)।

४६६ कैंछ न छू—कौन छुअै (अ)।

४६९ तदुला—तंडला (आ) (ए)।

४७१ गहैं—गहत (अ); कहति—भाखै (अ)।

४७४ पुनि पूतना—बिजया जया (ए)।

४८१ स्वादी—माध्वी (ए)।

४८२ प्रथाला—प्रवाला (अ)।

४८३ इहि—जिहि (अ)।

४८४ गसीली—गुसीली (ए)।

४८६ केसरि दृग भरि पग धरति कहति कि बलि बलि जाँउ (अ)।

४९० तुमहि देखि फूली जु अति, बलि रंचक इत चाहि (अ)।

४९४ मूरि बलि—पग परति (अ)।

४९६ दुपहरिया....बलि—दुपहर फूलत फूल जे (अ)।

४९९ ताली तृनद्रुम केतकी खर्जूरी यह आहि (अ)।

५०० बलि—तै (अ)।

५०३ बालुका—पुलिकनि (ए)।

५०४ इहिं....मेलि—रंचक मुख मे मेलि (अ)।

५०६ इतहिं....परति—इत माध्वी की पा परति (अ), इत माध-
विका पाँ परति (आ)।

५१० सब....रोध—सब सुख को अवरोध (अ)।
५१६ जनु—बलि (अ); परसति—पकरति (ए)।
५१८ तीर तीर—ढिग ढिग (अ)।
५२० तर—बलि (अ), तहां (ए); जहँ बैठे—बैठे हे (ए)।

अनेकार्थमंजरी

१ जु प्रभु....जगत-मय—जो प्रभु जोति सु जगत मय (इ) (उ)।
२ बिघन—अशुभ (आ); सुभ—सुख (इ) (उ)।
४ तैं—की (अ)।
५ अरु....असमर्थ—समुझन कों असमर्थ (इ), अर्थं ग्यान असमर्थ (आ)।
६ भाख्यौ 'अनेका अर्थ'—भाषानेकाअर्थ (इ), भाखि अनेक जु अर्थ (आ), रचत अनेका अर्थ (छ)।
८ तरु—तर (छ)।
१० सुरभी चारत—सुरभि चरावत (छ); सुरभी चंपक बन कहै जो जग करता कंत (उ)।
११ मधु चैत्र—तरु चैत्र (आ)।
१४ तहँ अवर—ते और (इ), तिहि और (ग) (ङ), महि और (घ)।
१७ कहत कबि—कोस इक (आ)।
१८ अर्जुन....धनंजय—बहुरि धनंजय अर्जुनहि (ग)।
१६ अथ्थ—हथ्थ (अ) (ग)।
२० मद्धिम—केकी (आ)।
२१ रथ—सर (आ)।
२२ उड़ि....मित्त—उड़ि उड़ि मिलिते मित्त (आ)।
२४ पत्री सर....जिमि—पत्री सरवक चित्त जिय (अ)।

२८ घनीभूत—धनीभूत (अ) (च) (छ), घन मूरत (इ) ।

३१ अरु बाम—कुच धनुष (आ); बाम काम—बाम जुवति (आ) ।

३५ कं सुख पथ जल तन अनल, बिधि द्युति सिर सठ काँम (आ) ।

३६ कं कंचन चित प्रीति ज्यौ यों भजिए रे हरि नाम (आ) ।

३७ खं नभ पुर भू द्यौ नखत, ग्यान रंध्र सुख धाम (आ) ।

३६ कोइ—होइ (इ) ।

४२ कर....मन—करज बिखय सम तजि बिखय (अ) ।

४३ कवि—दरि (आ) ।

४४ कुँवरि—कुँवर (ग) (छ) ।

४७ बृख सुरपति गो कर्म बर शूद्र बृखभ वल काँम (आ) ।

५३ कौं कहत कबि—मूरख उडद (आ) ।

५४ गोपिन—सो पल (अ)।

५५ बहुरि—धरम (आ) (ख) (ङ) ।

६४ सरस—अमृत (आ) (इ) (उ) ।

६५ सार बज्र....सार—थिर बल पवि घृतसार (आ) ।

६६ सवन कौ—वित बर (आ) ; मही परचौ—जिनि मोह्यो (उ), सहीपरचो (क), मही धरचो (ख), महिबालो (ग), महिचाल्यौ (च) ।

६७ सावकहि....उत्ताल—साव कौं, कोडी ऊँट उत्ताल (आ) ।

७० रमानिवास—राम निवास (इ) (उ) ।

७१ वन्हि....नीर—वन्हि रवि प्रभा किरनि सिव नीर (आ) ।

७२ वसु धन जग—बसु नृप धन (आ) ।

७६ रस—रँग (अ) (आ) (ज) ।

८१ हंस रबि—धर्म रवि (आ) ; हंस मराल—तपी मराल (आ) ।

८२ हंस जीव....कवि—हंस गेह नृप जीव सिव (आ) ।

८५ कहावै—सुप्क फल (आ) ; आहि पुनि —रु चलनो (आ) ।

९३ आल चिहुर अहिकांस तुर जल सिसु मूक जु वाल (आ) ।

९५ जाल गन—नीप गण (आ) ।

९६ दिखि न. . . .नँद-नंद—निरखि भूलि जनि नंद (इ) ।

१०४ जलज. . . .फिरावते—जलज कमल कर फेरतै (इ) ।

१०८ उर धरि—उर धर (ख) (छ) (ग) ।

१११ जाल—नाम (आ) (घ) ।

११२ आवत मदन गुपाल—बनि आवत घन स्याम (आ) (च) ।

११७ कहावै—गेह अरु (आ) ; पोत जु पत्र—करट पात्र (आ) ।

११८ जग—जल (आ) ।

१२० भयौ—भए (इ) ।

१२१ कहंत कवि— पुनि सतत (आ) ।

१२३ कौं कहत कवि—उपसम कहत (अ) ।

१३८ उड़प चंद उड़पए गरुड़ श्री गरुड़ध्वज वाह (अ) ।

१३९ मंद सतत सनि अल्प खल रोगी पाप स्वच्छंद (आ) ।

१४३ स्यंदन. . . .कवि—स्यंदन सुर जल तरु निगम (आ) ।

१४४ चढ़ि—जिहिं (इ) (छ) ।

१४५ मंथी मदन—मथिवौ मदन (आ) ; मंथी ग्राह—दिनकर ग्राह (आ) ।

१४६ जिहि. . . .खंड—हरि कीने विवि खंड (आ), जो हरि कियो विखंड (इ) ।

१५३ संबर असुर—वातप असुर (आ) ।

१५५ गोगल—गौबल (अ) ; तर—नन (अ) (आ) (ग) (च) ।

१५७ नग. . . .नग रतन—नग कहि अहि द्रुम रबि रतन (आ) ।

१५९ अरु नाग—जीमूत (आ) ; नाग दुष्ट—मखी दुष्ट (आ) ।

१६१ कहत—प्रसभ (आ) ।

१६३ कौं कहत कवि—तांबूल भय (आ)।

१६४ जानहिं भगवंत—जानै श्री कंत (आ)।

१६५ अज कहियै....ईस—अज विल्व रु अज ईस (आ)।

१६६ अज....नर कहत—अज जोवन भर कहत अज (अ), अज जोबन अज कहत नभ (उ), अज जोबन भरि नर कहत (ग)।

१६७ सिव सुख—शुक्र कील (आ); श्रेष्ठ—जेष्ट (आ)।

१६८ सलिल पुनि—वल लियौ (आ); कृष्न-दास—कृष्न-सदा (आ)।

१६९ गात—राति (आ)।

१७१ जूगरी—ऊगरी (क), बल्लरी (ख), ल्हंवरी (ङ), गूजरी (छ)।

१७४ सिव—सव (इ)।

१७८ जहाँ बसे बलबीर—बसे जाइ वलवीर (इ)।

१७९ औ कंबु—अरु वलय (अ); इष्ट—दृष्टि (आ), दुष्ट (ख) (छ)।

१८५ अन्न—अल्प (इ)।

१८९ कहियै—जननी (आ)।

१९३ कहत कबि—मेघ धुनि (आ)।

१९६ जिहि—जिन (इ)।

१९९ तिय इला—तिय वचन (आ); इला उमा—गेऊ उमा (आ)।

२०२ अनंदहि—अलिंदहि (आ)।

२०५ इडा कहत....अभिराम—इडा वचन गो वर्ष जल सुरकाभू अभिराम (आ)।

२१० विधि बिधि जोई—बिधि के विधि जो (इ)।

२१२ घट घट....गूढ़—घट परगट है गूढ़ (अ)।

२१४ नर हीरा—हरि हीरा (आ)।

२१५ कृतांत सिद्धांत—अदिष्ट सिद्धांत (आ)।

२१६ जम कृतांत की—पाप कर्म जम (अ)।

२२२ कुदंड—कुंडल (अ) ।
२३३ अरु—रस (आ) ; अरु रस नीर—रस अरु नीर (इ) ।
२३७ जो....सदा—जो इहि अनेका अर्थ कौं (आ), जोइ अनेका अरथ को (इ) ।
२३८ सो....लहै—ताकौं अनेक अर्थ बुधि (अ) ।

स्यामसगाई

१ नंद—स्याम (अ) ।
३ महरि—राय (ग) (ङ) (च) (छ); कह्यौ—चह्यौ (अ) (ख) ।
४ मो—मेरे (ग) (ङ) (च) (छ) (ज) ; गोबिंद—श्री गोबिंद (घ), जो गोबिंद (ङ) ।
५ सोहनी—सोहती (अ) (ख) (ज) ।
६ एक—रहसि (छ) ; द्विज—ब्रज (क) (ङ) (च) (छ) ।
७ मरम—प्रेम (च) ।
८ करियौ बहु—बहुत करो (क) (च) ।
१० सोहनी—अधिक है (ग) (ज) ।
११ बेगि—पौरि (अ), दौरि (ख), तुरत (छ) ।
१२ तहँ—के (ग) (घ) (च) (छ) ; बैठि... चलाई—मरम की बात चलाई (क) ।
१३ जिन—हौ (अ) (क) (ख), हम (ग), उन (घ) (च), में (ज) ।
१४ बहुतहि करि अरदास—तुम सुनौ बीनती तास (च) ।
१६ मेरौ अति—इत मेरौ (अ) (ख) ।
२१ कीरति—रानी (अ) (क) ; सु हौं नहि करौं—नाहि ने हम करें (ग) । नाहि हम करत (च) ।

२४ कहत सुनत....और—राजनीति जानै नहि करत ओर सूं ओर (च) (छ)।

२६ फिरि—पुनि (अ) (ख) (ग) (ङ)।

३१ मैया लाल सौ कहैं—जसुमति लालहिं कहति (अ)।

३२ जहँ करियत तो—जहँ कहीयत तेरी (ग) (ञ). जहाँ चलै तेरी (च) (ञ)।

३३ तोइ—तोहि (ग) (छ)।

३४ उनहूँ वहि—तिनहूँ बहि (अ), वह रानी (क), उन हमकु (च)।

३६ कहत यौं—कही तव (च)।

४५ मनहि—कुवर (ञ)।

४८ देखि सखी बुझन लगी मुखै चुचावत नीर (च) (ज)।

५४ स्याम स्याम कू कहि उठी कैइक वार अनेक (ज)।

५५ प्रेम की लहरि सों (ञ)।

५६ वतावै—वताऊँ (अ) (ख)।

५८ पूँछै तो—पूछैगी (च)।

५९ मीत गुपाल की—मंत्री स्याम कौ (च)।

६१ कुँवरि—लई (अ) (क) (ख); पकरि....लाई—पकरि कें सुदरि लाई (ग)।

६२ विवस दसा लखि—जब निरखी निज (ग) (च) (ञ)।

६५ कह्यौ—कुंवरि (ग)।

७१ समुझाइ—मुसिक्याय (ग)।

७३ जौ....माइ—पठवै वाकी माइ (अ), जौ पठवै वाकी माइ (ञ)।

७४ गारुड़ी—गारडु (ग) (झ), गाडरू (ञ)।

८६ रहसि—दौरि (अ) (ख) (ञ), हर्ष (क)।

८७ दौरि—चले (अ) (ख), तुरत (छ)।

८८ ग्वालिन....कै—लखि गुपाल झगरन लगे (अ) (ख), देखि सखी बूझन लगे (छ)।

८९ कहौ....आइ—कौन गाँव सों आइ (ख), कौन गाम तैं आय (क) (झ); ए तो नारि गँवारि है, मति बहिकैं तू माइ (अ)।

९० सोझ हमसों कहो (झ)।

९१ तेरी....बलाई—तेरी हौ लैहु बलैया (अ) (ख), मैं तेरी लैहु वलैया (ज)।

९२ ग्वालिनी तित तैं आई—ए तित तैं आई मैया (अ), ए तित तैं आई भैया (ख)।

९५ लाल जस लीजियै (झ)।

९६ सुनैं—कहन (झ), सुनें (ञ); ताहि —कहो (झ); कौन बाइगी....बतायौ—मैया मैं गाररु किनि सुन्यौ कहौ कि मोहि सिखायौ (च), मैया सु मसिक्याय कही जब नंददुलारे (छ)।

९७ परपंचिनि तुम ग्वालि—तुम ग्वालिनि परपंच (च) (ञ); अरी कौने कीए गाररु कौने मंत्र सिखाए (छ)।

१०६ समौ मुकरन कौ नाहीं—साँवरे कुँवर कन्हाई (अ)।

१०७ कुँवरि जीवैगी नाही—कुँवरि जीवन की नाई (अ), कुँवरि वचने की नाही (च)।

१०८ सम—सौ (अ), सिर (च), सरि (छ)।

१०९ वृंदावन मै साँवरे—तुम श्री वृंदावन मैं आगरे (च), मथुरा मैं हरि अवतरे (ज)।

११२ मोहिं राधे—मोइ कुँवरि (अ)।

११८ लीने—लीये (च)।

११९ ततछन—पावन (झ)।

१२१ लाई—ल्याई (अ) (ख)।

१२३ फूँक—मंत्र (ख) (झ) (ञ); निज—हरि (ख) (झ)।

१२४ धन—विधि (अ) (ख) ; है—ए (अ) (क) (ख) (ग)।
१२८ सब अपने घर—सब अपने ढिग (अ) (ख), अंग अंग छवि (च) (छ) (ज)।
१२९ मन दीनौ मुसकाइ—मधुर मधुर मुसकाइ (अ) (ख), मन दीयो मुकलाय (च) (छ), मुख दीयौ मुकलाय (ञ)।
१३१ कौ प्रेम—की रीति (च) (छ) (ज) (झ) (ञ)।
१३४ छ्वाइ—छाइ (अ) (ख) (च) (ञ) ; गर—गहि (अ) (ख) (ञ)।
१३९ बटत—वजत (अ)। 'ज' ने अंतिम छंद इस प्रकार दिया है—

तबई लाल की भई सगाई, फूले ग्वाल अंगनहि माई।
गावत गीत राग रस भरे, सबै मैन से लागत खरे।
समचार जसुमत नै पाये, आंगन सुंदर चौक पुराये।
कुल की वधू बुलायकै, करत आरती माय।
श्री कृष्न चंद्र के चरन पर, तारपान बलि जाय॥

इसी प्रकार के पद्यांश 'च' तथा 'छ' में भी पाए जाते है किंतु उन मे 'तारपान' की छाप नही है।

भँवरगीत

३ रसरूपिनी—सरूपनी (ख), रस रोपिनी (झ) ; उपजावनि—उपजावत (ग) ; सुख—रस (क)।
५ नागरी—बासिनी (ग) (ङ) (च)।
६ कह्यौ—कहौं (ग), कहन (घ) (च) (ज) (ट) (ठ) ; लायौ—आयौ (ख) (घ) (च) (ज) (ट) (ठ)।
१२ भरि—भर्यौ (ग), भरे (झ) ; द्रुम—दृग (क) (ग) (घ) (ङ) (च) (छ) (ज)।

१६ और—बहुरि (ट) (ठ)।

१८ विहसित—विहसत (ख) (ग) (झ) (ट) (ठ)।

२३ आयौ—पठयौ (ख) (घ) (च)।

२४ जिनि जिय—तुम जिनि (क) (घ) (च)।

२७ अलक—कमल (ट) (ठ)।

२८ धरनी—धरती (झ)।

२९ प्रबोधहीं—प्रमोधियो (ख), प्रमोद की (छ) (झ); बात बनाइ—बैन सुनाय (छ) (ठ)।

३२ ब्रह्म सब रूप—रूप सब उनहिं (ट) (ठ); निर्विकार निज रूप आप अपने हृदै पेखौ (च)।

३३ माहिं—महि (ट) (ठ)।

३४ बरतत—पर्वत (क) (ग) (ङ) (छ) (ज) (झ)।

३८ श्रुति, नासिका—मन प्रान मै (ग) (छ); दिखाइ—लखाय (ट) (ठ)।

४१ यह सब सगुन—सरगुन सबे (ख) (घ) (च) (ज)।

४४ है—की (झ), हीं (ट) (ठ)।

४७ को बन बन —बन बन को (क) (च) (ज) (ट) (ठ)।

४९ ह्वै—है (क) (घ) (ङ) (च), है (ट) (ठ)।

५२ तैं—मैं (क) (च) (छ) (ठ), सो (ट)।

५३ गुन—कौ (घ) (च) (ज); अवतारि कै—अवतार है (घ) (च) (ज), अवतार ह्वै (ट) (ठ)।

५४ पुर—पर (क) (ख) (ङ), पद (घ) (ज) (झ)।

५६ पावौ—भावै (घ) (ठ), पावौ (ट)।

५७ गावौ—गामै (घ), गावौ (ट), गावै (ठ)।

६६ धर्म—धूरि (क) (ग) (छ) (ट) (ठ)।

६९ कर्म बंध—कर्म बद्ध (ट) (ठ)।

७१ कर्महि निंदौ कहा—तुम कर्म निंदौ कहा (क), तुम कर्महि कस निन्दत (ठ)।

७८ भोग—नर्क (ट)।

७६ रोग—गर्क (ट)।

८१ कोउ धारैं—कौ धारैं (क) (ख) (ङ) (च)।

८२ द्वार—धारि (ख) (ग) (ठ)।

८३ सिद्धि—सुन्य (घ)।

८४ जोतिहि—जोति मे (क) (ग) (घ) (ङ)।

८८ यह—ये (छ)।

८६ आयौ—आये (ख) (ङ) (छ); पूजही—पूजियै (क) (ख) (ग) (घ) (च)।

६१ वतावै—बखानैं (क) (ट) (ठ)।

६२ रचि—चारि (ख), रुचि (ग), रिचा (क) (घ) (छ) (ज), सब (ट); उपनिषद जु—ऊपर सुख (ठ); जु गावैं—बखानैं (ट); गावैं—सानैं (ठ)।

६३ नहिं पायौ गुन —पायो किनहूँ न (क) (ग) (झ)।

६४ कहौ—कहि (च), कहु (घ), कह (ट) (ठ); टेक—हेत (ख) (च)।

६६ न्यारे भये—न्यारो भयो (ख)।

१०२ वा—उन (ट) (ठ)।

१०४ कौं—कै (क) (ङ), कहि (छ)।

१०६ ही—हो (ट) (ठ)।

१११ प्रेमहि—प्रेम हु (क), ब्रह्म हू (ख) (च) (ज), प्रेम जो (ठ)।

११३ तरनि चंद्र—रतनचन्द्र (क), तरुन चंद्र (ख) (घ) (ङ) (च) (झ), श्रीकृष्णचंद्र (ग)।

११६ तरनि—रतन (क); तरनि अकास प्रकास—तरुनाकार पर-

कास (ख) (घ) (च) (ज), तरुन अकार प्रकास (ग) (ढ) (ण) ; तेजमय—ते जामैं (क) (ग) (घ) (च) (ढ) (ण), मे जामै (ख), ते जमपुर (ज)।

११७ दिब्य दृष्टि ही भलै रूप वह दैखौ जाई (ग) (च) (छ) (ज) (झ)।

१२१ जव—जो (घ); हू—ह्वै (ग) (छ); तामैं—या मैं (ट), जामैं (ठ)।

१२२ तैं—कातैं (ट) (ठ)।

१२३ करम....कियें—करम करम कर ही किये (झ), करम करम ही किये तैं (ट), क्रम क्रम कर्म सबहि किये (ठ)।

१२४ ह्वै—करि (क) (ख) (ङ) (च) (ज) (झ)।

१२६ ह्वै—क्यों (ट) (ठ) ; कर्म....आवै—कर्म क्यों बंदन, आय वे ये (ख)।

१३१ आवैं—आवै (क) (ख) (घ) (ङ) ; नस्वर हैं—नहिं ईस्वर (ट) (ठ)।

१३४ तिन कौं—जिन को (ख)।

१४१ ऐसै मैं—एक समें (ख), यते ही मै (ग)।

१४२ बने बीरे अरु—बनी बीरी अरु (ग), बन्यौ पिथिरे अरु (घ), लसे उर पियरे (ट)।

१४३ कहैं—कहि (ग) (च) ; तिन....बात—कहत जु तासौं बात (घ), करत तिनहिं संग बात (ट), बैठि सकुच कह बात (ठ)।

१४४ चुचात—चुवात (ट) (ठ)।

१५४ बहुत पाइ—बौहौताइति (क) (ग) (झ), बहोत भांति (ख) (घ) (च) (ज) (ठ)।

१५८ सब रस—सब दरस (ग) (च) (छ) (झ), परबस (ट) (ठ)।

१५९ पराधीन जो मीन—प्रेमातुर जो मीन (ज), गहिरे जल की मीन (ट) (ठ)।

१६४ अबला-बध—अबला बधु (क), अबला वुद्धि (ठ) ; डरि गये—दुरि गये (क) (ढ), डर गई (ठ) ; बड़े....माहि—बली बुरे जग माहि (ख), बली डरे जग्य माहि (च) (झ), बली डरैं जग माहिं (ट) (ठ) ।

१६८ लई—लीये (ख) (ग) (घ) (ङ), लये (ट) (ठ) ।

१६९ बिरह....हौ—अब बिरहानल दहेत हो (ख), बिरह अनल अब दाह है (ग), बिरह अनिल अब जारि हो (घ) बिरह अनल तैं दहत हौ (ट) ।

१७४ पय पीवत हीं पूतना मारी बाल चरित्र (ठ) ।

१८२ लच्छ ...धरे—लघु लाघव संधान बान (घ) (च) ; सूरे—रूरे (ट) (ठ) ।

१८४ श्रवन नासिका काटि कै दीयो सुर्य वंश कुल लोप (ज) ।

२०३ ठाढ़ौ—ठाढ़े (ट) (ठ) ; हो—भयो (क) (च) (छ), है (झ), है (ठ) ।

२०६ इहि—यहि (ट) (ठ) ।

२०७ तहाँ कछु—विवस्था (घ) ; तहाँ....लागी—कछू सोचन मन लायो (च), तहाँ ते देखन लागी (ट) (ठ) ।

२११ नेम—भरम (ग) (ङ) (छ) (झ) ।

२२२ पुंज—बृंद (घ) (च) ।

२२४ मन....भयौ—मानहु मन ऊधव कौ भयौ (क), मनु मधुकर ऊधव कौ भयौ (ट) ।

२२६ उत्तर—उत्तम (क) (ख) (ग) ।

२२८ तुम....चोर—तुम मानत हम चोर (ट) (ठ) ।

२३२ मसिहारे—मति हारे (क), मुसन हारे (ख), मुसिहारे (ग) (ज), विष वारे (ट) ।

२५३ हरि भाँति कौ—सब भांति कै (ट) (ठ) ।

२५४ यह....वधू—हसि बोली ब्रजबासनी (घ), ऐसे बौरी ब्रज बासिनी (झ), यह बौरी ब्रजबासिनी (ट) (ठ)।

२७४ निर्गुन भए अतीत के सगुन सकल जग माहिं (क) (ख) (ट) (ठ)।

२७७ कूबरीनाथ—कूबरीदास (ख) (छ) (झ)।

२८० जरन या बोल को (क) (ख) (ङ)।

२८५ कोटि जो ग्यान है (ग) (च) (ज)।

२८६ मोहन....होहि—मोहन निर्गुन होइ गहे (ट), मोहन निर्गुन को गहे (ठ)।

२९६ गीत—कहत (ख) (घ) (ट) (ठ)।

२९८ रोई—रुदित (ग), रोइँ (ट)।

३०१ नैन....धारहि—अंस लै बन की धारनि (क), असु लोचन की धारनि (ख), सिंधु लै तन की धारनि (ट) (ठ)।

३०२ भुज बल अबला जाति कंचुकी भूषन हारहि (ग) (च) (ज), बसननि उलटे गात कंचुकी भूषन धारन (घ); बहुगुन—भूषन (ट) (ठ)।

३०३ प्रेम-पयोधि—प्रेम औ बंध (क), अरु बिंद (ग) (घ) (ज); ऊधौ चले बहाइ—और न कछु सुहाय (ग) (ज)।

३१३ हौं कही—हौं तो कहि (ट); कौ—सौं (ठ); रोपि—रूप (क) (ख) (घ) (ङ)।

३१४ है—है (क) (ख) (ग) (च), ह्वै (ठ)।

३१७ प्रेम-पदवी—प्रेम पद पी (ठ)।

३१८ सब—सत (छ) (झ)।

३२३ उर....बाध—उर मे धरी ही बाध (ख), उर में रह्यो व्याधि (ट), उर मद रह्यो उपाध (ठ); बाध—बाढ़ि (ग) (ज) (झ)।

३२७ लौह-मात्र—लोह तुरत (घ) (ट) (ठ)।

३३३ मारग....धूरि—ह्वै पग मारग धूरि (ठ)।

३४४ का करै—कहा करै (क), कहा करौं (छ), का करौं (ट) (ठ)।

३५२ तब—जब (ट) (ठ); लहै लाख—कहौ लाख (क), नहि लखौ (ट) (ठ)।

३५६ चलौ—स्याम (ट) (ठ)।

३७४ 'नंददास'—जन मुकुद (क) (ख) (ङ) (छ) (ढ) (ण)।

रुक्मिनी मंगल

२ कथा कहूँ—यथा कहूँ (ख), कहों यथा (घ); पावत—पावन (ख)।

३ चित्त—जो चित (घ); सुनै-सुनावै—सुनैं-सुनावैं (ख) (घ)।

४ मिटैं—मिटै (ख) (घ); पावै—पावैं (ख) (घ)।

७ बिछुरि—छुटी (ग)।

८ नाल तैं—माल तै (ग)।

१० अलिन-दल—अलिंदनि (ग)।

११ पूछति—पूछै (ग), बूझै (घ); बात—बाल (ग)।

१४ पूछे सुंदर सुख मूदें तिहि उत्तर देई (ग)।

१५ बदन तैं लहिहै—बदन में लहई (ग)।

१६ बिरहिनि—कन्या (क) (ख); कन्या बिरहनि तासों कासो बा तब कहई (ग)।

१७ के हार, उदार—की माल जोरि (क), की माल सखी (ख), सखी—जब जब (ख)।

१८ सौं—कर (ग); अर सौं—अर सैं (ख) (घ)।

१९ जुर—जरैं (ख)।

२२ भरै—भरैं (ख)।

२३ दुरी....आरति—दुरी रहत क्यौं पिय रत (ग)।

२५ चितत—झंपत (क) (ख), जपत ही (ग)।
२७ छाजत—राजत (घ) ; ह्वै गई कछुक विवरन छीन तन यों छबि छायौ (ग)।
३० कर-कंकन....आहीं—कर कँगना द्रग जलकन ह्वै जाही (ग)।
३१ टप टप....तैं—टपक टपक छबी नेनेन सों (क) टप टप, टप टप टपकि नैन सों (ख)।
३२ दल तैं भल—दल पर ते (क), दल तिन ते (घ)।
३३ कबहुँक—कबहू (ग)।
३४ पीय—कंत (ग)।
३५ अवा-उर—अवा तन (ख), अवा जिम (घ)।
३६ लाल—लाज (ग), लाच (घ)।
३७ अब धौं—दई अब (घ)।
३९ हठ—हट (ख)।
४० भठ—भट (क)।
४५ तिन—जिन (क) (ख); अज से—अजहूँ (क)।
४६ सिव—सुक (घ)।
४८ नाना—रुकमनि (क) (ख)।
४९ वात—लाज (ग) (घ)।
५० पिया—पीय (ग)।
५१ नाथ-हाथ....तुम—नाथ हाथ लै तुम ही (क)।
५२ एती—इतनी (ग) (घ)।
५५ माधुरी—छबि ढुरी (ग), छबि धुरी (घ) ; चाहि कै.... चित—बिप्र है रह्यौ चकित चित (क)।
५६ छबि—जिन (क)।
५८ अमृत फलन सौं फूले फूलैं सुर मुन लेखैं (क), अमृत फलन सों फले फरे सुर वर मन लेखैं (ख)।

६० तिन—जिन (क) ; रव—वर (क) ।

६१ शुक सारिक पिक चातिक मीठी धुनि सों रटई (ग) ।

६२ सुढार—सुधार (ग) ।

६६ सरोवर....तैसैं—सरोवर मिरा जु क जैसो (क) ; प्रफुलित ....तैसैं—प्रफुलित चंद त व र इंद्री जीव कू तैसें (ग) ।

६८ मनो रवि डर तम तजि भज्यौ रोवत ये वारे (ग) ।

७० जोति होति—होति जोति (ग) ।

७१ फरकैं, झरकैं—फरकत झलकत (ग) ; जहँ—जहाँ (क) (ग) ।

७२ घाम न परसत क कबहू नित ही छांह तिनहि तहां (ग) ।

७३ मग—मुख (ग) ।

७५ उड़ी—बनी (ग) ।

७७ जैसैई देव बिमान द्वारका देखन आये (क) ।

७९ हरप भयौ—भयौ हरषि (ग) ।

८९ जदुपति कों लखि द्विजपति मन मे अति सचु पायो (क) जदु परखद मध जदुपत कों लख द्विज सचु पायो (घ) ।

९१ किधौं....मैं—किधो मणि मंडल मैं (क), किधौ कि मनि मंडल मैं (ख) ।

९२ किरन—करण (क), करनन (ख) ; महा—अति (ख) ।

९६ लै....कौं—ल्याय चले गृह द्विज वर कौं (ग) ।

९७ मन—मनौ (ग) ; ऐन—औन (घ) ।

१०६ प्रेम-रस—प्रीति के (ग) ।

११० पुनि—अब (ग) ।

११३ श्रुति-बास—सुख हास (क), सुखदास (ख), श्रुति हास (घ) ।

११४ सुंदर मुनिवर श्री गोविंद तुम सब बरदाइक (क) ।

११७ बिलग....जनियै—बिलगु मानियें नाहि जानियें (ख), अलग नाहिन मनियें गनियें (ग) ।

१२० भाये—भाय (ख) ; अमृत—अमी (ग) ।
१२२ हौ—हम (क) ; नाथ तुम भये—नाथ भये नाथ (ग) (घ) ।
१२३ अब अनहित नाहिन करयौ बरचौ त्रिभुवन मन सुंदर (ग) ।
१२४ नित्य परम अभिराम स्याम सुख धाम पुरंदर (ग) ।
१२५ भरे, वरे—भरै बरै (क), भरे सरे (ग) ।
१२६ कौल—कूटि (क), कूट (ख) ; परे—धरे (ग), मरे (घ) ; छिन ही. . . .तंतर—छिन छिन परतंतर (ग), छिन छिनही निरंतर (घ) ।
१२७ पानिप—पानिय (ख) ; धोरे—ढोरे (ग) (घ) ।
१२८ हार—हरिहि (ख) ।
१२९ सठ—सट (ख) ।
१३० चट तैं मठ—चठ ते मठ (क), चट तै मट (ख) ।
१३१ करत. . . .मरियै—मरियै लाज यहै तो (ग) ।
१३२ वारत वृंदा विदारन बल गोमाय यहै तो (ग) ।
१३३ जू बलहि—निज मनस (ग), निज संस (घ) ; बिचारौ—विचारै (ग) (घ) ।
१३४ विडारौ—जुठारै (ग) (घ) ।
१३५ देखत याकौं—देखि तिया कौं (ख), निरखत याको (ग) (घ) ।
१३६ तुम सब विधि लायक अछित छिपे सिसुपाल छिपा कौ (ख), तुम तौ सब बिधि लाइक अछित छुवौ न छिया कौ (ग) ।
१३७ नागर नगधर नंद कुवर मोहि करिहौ न दासी (क) ।
१३८ परि—घर (क) ; तन की—तन तिन (क), तन तून (घ) ; तौ पर हरि पावक जरहों करहों तन तिन कासी (ग) ।
१४० स्याल. . . .कर—छुये सिसुपाल स्याल कर (क) ।
१४२ तैं—पै (ख) ।
१४५ करत—कहत (क) (ख) ; वात—हसत (क) (ख) ।

१४७ लाऊँ रुकमिनि—दुलहिन लाऊँ (क) (ख)।
१४८ सार, अगिनि-कन—अगिनि सार किनि (क)।
१४९ आरति, हरि अरबर सौं—अरबर दरबर दै इम (ग) (घ)।
१५० मन....करे—मन की सी गति तन की करि हरि (ग)।
१५२ कर तपत करी—के तेज दुखित (क), कर दुखित भई (घ)।
१५४ उदै ज्यौं—उदै बिनु (ख), उदित जैसें (घ)।
१५५ बाम भुजा लगी—बाये अंग लगे (ग) ; फरकन लागी भुजा-वाम कंचुकि-बँध तरकन (ख)।
१५६ हिय सों दुख लाग्यो सरकन उरवर लाग्यो भरकन (ग)।
१५७ ताही....चलि—तिह छिन द्विज वर चल्यौ चल्यौ (क)।
१५९ पूँछि न सकै—पूछ न सकत (क), पुँछ न सकत (ख)।
१६६ ताकी कहा कहियै—ताकी का कहियें (ख), तिहि कू कहा चहियैं (ग)।
१६९ अँग....के—अंग सुख दैन जु हित के (ख)।
१७२ ललित....पगिया—ललित लसैं सिर पागे (क); तकि तकि—तकै तक (ख)।
१७३ कोउ घुघरारी निरखत मौहन भेट भए है (क)।
१७४ दोऊ दृगन छवि गिनत गिनावत ही जुर रहे है (ख)।
१८३ कोऊ....अंग के—कोई यक नेननि अटक गए ते (क), कोऊ इक नैननि अटकि गये ह्वै (ख)।
१८६ चित्र....अलि—चंप माल स स्याम परस अलि (क), चंप-माल सिसुपाल परस अलि (ख), जंत्र कमल संसार नीर पर (घ) ; अलि—डिरि (ग)।
१८७ बर—यह (ग) ; बर नाइक—बड़ नाथ (ख)।
१८८ संठ—सुनहु (क) (ख) ; संठ रुक्मी—सठ जु रुकमि (ग), संठ रुक्मिन (घ)।

१८९ याही बरैहैं—आई बरहै (क), ये ही बरिहैं (ख)।

१९० परैहै—परी है (क), जु परि है (ख)।

१९२ परे—कर (ग); ओज उबारे—ओज उचारे (ख), ज्यों अंगारे (ग)।

१९३ उन—इन (क) (ख); बतायौ—बुलायौ (क)।

१९५ ऊजन—उज्जल (क)।

१९७ मंदर—मंदिर (ख), मंडल (घ); कंदर घन ज्यौं—कंकन नव घन (क), गगन में नभ घन (ख), किंकिनी नव घन (घ)।

१९८ सब—सो (क) (ख), सुर (घ)।

२१२ चलै तिन सौं—झक तिन सों (ग), झखे तीन सौ (घ)।

२१४ बीन—बैन (क) (ख)।

२१५ अवनि....उनमानी—अव परें यों अनुमाने (ग)।

२१६ अपनी—अवनी (ग); जानी—जाने (ग)।

२१७ देखति छबि सौं छली अपन-वर आरत उलही (ख), ये सब छबि छल अपनी हरि को अर्पन उलही (घ)।

२२१ छबि राजत—झिलमिलत (ग), अक्षत छबि (घ)।

२२२ बदल—बदरि (ख); दमकत दामिनि अंकुर अरुन कमल में जैसें (ग)।

२२३ श्रवननि—छुटकी (क) (ख)।

२२५ दिये—लिये (क), लियैं (ख)।

२२७ मुरभि—भुरसि (ख); उरभि उरेभा—उरसि उरेसा (ख)।

२२८ बेभा—बेसा (ख)।

२३३ छबि सों रथहि चलाइ आंन रुकमिन जब आई (ग)।

२३५ कछु—इम (ख)।

२४४ जूप—पूप (ख), लूप (घ); लागे बज मारे—लारे बज-मारे (ग)।

२४५ दै—तै (ख)।
२४६ मागध....पायौ—मग अति दुख पाये (ग)।
२५० आयौ—आये (ग)।
२५१ कर कंगना दुख दूनौ दुख करि रोय जु दीनौ (ग)।
२५२ पुनि—वहि (ख), तिन (घ)।
२६३ चित—हित (क)।
२६५ सो....भावै—सो सब मंगल पावै (क)।

रासपंचाध्यायी

१ करौं—करौ (क) (घ)।
४ नग—मग (छ) (ज) (ञ)।
७ ललित, विसाल सुभाल—सुंदर भाल बिसाल (छ) (ज) (ञ)।
८ प्रतिबिंब—प्रतिबंध (ख) (ञ) (ठ)।
१० रसासव—रसामृत (ज)।
११ भवन—भरन (छ) (ज) (झ) (ञ)।
१२ मिली सु मंद—मिलि तासु मंद (छ) (ज) (ञ); मिली—मिलै (झ)।
१४ बिच—मधि (ङ) (ञ); भाँति—भाति (ठ)।
१५ प्रकासै—प्रकासें (ग) (घ) (छ) (ज) (झ)।
२० हियौ—हिय (छ) (ज) (ञ); भरि—भरी (च) (छ) (ज), पूरि (ञ)।
२१ अस सोभित—सोभित अति (घ) (झ)।
२२ भाति—भाँति (छ) (ज) (ञ) (ठ)।
२७ मुक्ति—मुक्त (ख) (छ) (ज) (झ)।
३६ सुकुमार—सुक-सार (ञ)।

३६ जिन—तिन (ख) (ग) (छ) (ज) (ञ), यह (क) (च)।
४० तातैं मैं—ताही ते (ख) (छ) (ज) (ञ)।
४५ वीरुध—विरुधी (छ) (ज) (झ) ; तून—तन (ख) (छ) (ज) (झ) (ञ)।
४६ प्रभाउ—प्रभा (क) (ख) (घ) (च) ; परत न काल प्रभाव सदा सोभित हैं ते ते (ञ)।
४६ संत वसंत—संतत बसत (क) (च)।
५१ ज्यौं—जो (छ) (ज) (ञ)।
५२ भू—भ्रू (छ) (ज) (ञ) ; जगत—ज्योति (घ) ; तित—कित (ड)।
६५ अति सुही—सुही ज्यौ (छ) (ञ)।
७० घर—घर (छ) (ज) (ञ) (ड)।
७३ तट—नित (ख) (ङ) (ज)।
७४ दौरि जनु—दूरि लौं (छ) (ञ) ; मनि मंडित दोऊ तीर उठै छवि भरि अति लहरी (ङ), मणि मंदिर दोउ तीर उठत छवि अद्भुत भारी (ज)।
७५ तहाँ इक मणिमय सिंह पीठ सोभित सुन्दर अति (छ) (ज)।
८० रुचिर. . . .जस—रुचिर निबिड़ मध्य लागत उड़पति जस (छ), रुचिर निबिड़ उर लागत पति जस (ज)।
८५ आक्रांत—रुचि लिए (ज)।
६० मधुर हँसि—मरुत वस (छ) (ञ), मधुर हरि (ज)।
१०० बिहँसति—बिलसति (छ) (ञ), बहसन (ज)।
१०३ अरुनिमा, बन मैं—अरुन वा बन मे (घ) (झ), अरुन नभ वन मैं (छ) (ञ), अरुन मनो बन व्याप (ज)।
११० चतुर—सु घट (च) ; अधरासव—अधरा सुर (ङ), अधरा रस (ठ)।

११३ अस—जित (क) (च)।

११४ मनहरन होइ जस—के मन मोहन हित (क) (च)।

११५ जु सुन्यौ—कीनौ (छ) (ज) (ञ); हीं—हूँ (छ) (ज) (ञ)।

११६ हीं—हूँ (छ) (ज) (ञ)।

१२१ नाद—अमृत-नाद-ब्रह्म (ञ)।

१२३ पंचभौतिक—पंच-भूतन (छ) (ञ), पंचभूत तिन (ज)।

१२६ तिन—तन (छ) (ज) (ञ)।

१२७ जिन—तन (क) (च) (ञ)।

१३० छीन—छिनक (ङ) (ञ), छिनहिं (ज); कीने मंगल—मंगल कीनो (ज), मंगल भुगते (ञ)।

१३१ पितल-पात्र—धातु पात्र (ख) (ज), लोह-पात्र (ञ)।

१३५ तिन संग-रति सहित (ख) (ज)।

१४० छबि—जुत (ख) (ज), जहां (घ), नव (ञ)।

१४८ करी—कीयो (ख), करयो (ग) (घ) (ञ), कियो (छ) (ज)।

१६३ छबिली भाँति सब—भली भाँति सौं (छ) (ज) (ञ)।

१६४ मिले....तब—रंगीले नयन मिले तब (ङ), मिले है रसिक नैन तब (छ) (ज) (ञ)।

१६६ तम...निकरि—तम के कोन मधि ते निकरि (ख), तमकि कुटिन के मांझ (ङ)।

१६८ बहुत सरद—स्वच्छ सुन्दर (छ) (ज), सुचि सुन्दर (ञ); ह्वै—ह्वै (क) (ख) (च)।

१६९ अनु—अस (घ)।

१७१ वर—गुर (ङ) (ठ)।

१७३ बंकहि—बाँके (क) (च), बाँकी (छ) (ज) (ञ)।

१७८ माटी—मिथ्या (ख) (ग) (ञ)।

१८७ दुख के बोझ—दुख सों दबि (छ) (ज) (ञ); नै—लै (छ) (ज) (ञ)।

१९६ कितहि—कत कौं (क), केतीक (ख), कतक (च) (छ) (ज)।

२०० धरमन कौ तुम धर्म भर्म फिर आगे को है (छ), घर मैं को तिय भरमैं, धरमैं या आगैं कोहै (ञ)।

२०३ नग खग और मृगन को कैसो धर्म्म रह्यो है (ज), नग, खग और मृगन हूँ नाहिन धरम रह्यौ है (ञ)।

२०४ छाने ह्वै रहौ पिया अब न कछु जात कह्यो है (छ) (ज) (ञ)।

२०५ अस—के (ख) (ज)।

२०८ लाल, नैन चंचल जु—चपल नेन मानो मीन (ख), नेंन चपल मनु मधुप (घ), चपल नयन पिया मीन (ज), चपल-नैन ह्वै मींन (ञ)।

२१४ कुदि परि—गिरि परि (ज), परि-परि (ञ)।

२१७ प्रेम-पगे सुनि बचन, आँच-सी लगी आइ जिय (ञ); लागी जिय—लगी तबहि हिय (ङ)।

२१८ नव-नीत मीत नवनीत-सदृस—नवनीत मीत सुन्दर मोहन (छ) (ज) (ञ)।

२२२ तन—नव (ख), है (छ) (ज), चित (झ) (ञ)।

२२६ पुनि—छबि (ञ); लुठति—गिरत (छ) (ज)।

२२७ गन—मन (ख) (छ) (ज) (ञ)।

२२८ घन—संग (क) (ङ)।

२३३ कुंज, छवि पुंजन—कुंज पुंजनि छबि (च)।

२३६ उत— त (क) (ख) (ग) (घ) (ङ) (च)।

२३९ लपटैं—पूटैं (ञ)।

२४० गोद....दपटैं—गोद भरि-भरि सुख लूटैं (छ) (ज) (ञ)।

२४२ सुँघावत—सुधा वर (छ) (ज) (ञ)।

२४३ मृदु—मृदुल (ख) (घ) (च) (छ) (ज)।

२५३ पुनि—पुनि पुनि (क) (घ) (छ) (ज) (ञ); पीयहि—पीय हीय (ग); पीयहिं आलिंगति—पियहि अलिंगति (ज), पिय-अवलोकति (ञ)।

२५८ भगवान—मोहन (ख)।

२६३ जो—जैसैं (क) (ग), जौ (घ) (झ), ज्यौं (च), जे (ञ)।

२७० तबहि....त्यौं—ज्युं जात भयों त्युं (ग), ज्यौं जात भयौ यौं (ङ), बहुरि फिरि जाय भयो त्यों (ज), बहुरि फिरि जाइ खोइ त्यौं (ञ)।

२७६ किधौं—कै (ञ)।

२८१ कंदन—दन्दन (छ) (ज) (ञ)।

२८७ अहो पवन सुभ गवन दैन सुख रह्यौ अचल अलि (घ), अहो पवन! सुभ-गमन, सुगँध सँग थिर जु रही चलि (ञ)।

२९० तुंग—उतंग (ख) (ग) (ज) (ठ)।

२९८ बताइ धौं—बताइ देहु (ख), बता देउ (ज), बतावहु (ञ)।

३०० कहति तू—कहो सखी (ख)।

३०२ तिहि—तिन (क) (च), ता (ग), बन (छ) (ज) (ञ)।

३०५ न हीं— न भल (च), इन ही कौ (ठ)।

३०७ हरि की सी चलनि—पिय हरि की सी चलनि (ङ), हरि की सब चलनि (छ) (ज), हरि की सी सब चलनि (ञ); हरि की सी हेरनि—हरि की हेरनि (छ) (ज), बोलनि हेरनि (ञ),

३०८ वह—× (छ) (ज) (ञ)।

३१६ कुलिस, कमल—कलस कमल (ख) (ङ); अति—धुज (ञ)।

३१८ सिर—उर (क) (च)।

३२४ लै....बैनी—सु हाथ लै गूथी ˆनी (क), सु हथ गुही है बैंनी (ठ); जहँ पिय निज कर कुसुम सुसुम लै गूँथी बेनी (छ) (ज) (ञ)।

३२६ भरयौ—बस (ङ) (ञ)।

३२७ कहौ—अहो (ख) (घ), कहु (छ)।

३२८ तिन मैं तिन के हिय की जानत ऊन उत्तर दीनो (ख), तिन मैं कोऊ तिनके हित की जिनि उत्तर दीनौ (घ), तिन मधि हिय की जानि, कोऊ यह उत्तर दीन्हौ (ञ)।

३४१ माननि-तन—मानो नौतन (ख)।

३४८ ज्यौं, अति—तौ कछु (ग) (घ) (ञ)।

३५९ निहारी—द्रटारी (ख), बिहारी (छ) (ज) (ञ)।

३६० ये—यह (ख)।

३६१ अस्त्र—शास्त्र (क) (ख) (च) ; हाँसी-फाँसी—हाँसी हाँसी (क) (ख) (च) (झ) (ठ) (ड)।

३६२ मोल—मान (ड)।

३६३ विष. . . .अनल तैं—बिष तै, जल तै, व्याल-अनल तैं (ञ)।

३६५ जब. . . .सुवन—जनु जसुधा सुत न (क) (च), जनु तुम जसोदा सुवन (ख) (ग), जसुदा सुत जनु तुम न (ज), जनु जसुधा तैं प्रगट (ञ)।

३६६ बिधि नैं—बिबुध (ङ), विधना (छ) (ज) (ञ), विधिहि (ठ)।

३६८ जौ—को (ख) (घ) (ङ) (छ) (ज) ; मरिहौ—मारिहौ (क), मारि (छ) (ज) (ञ) ; करिहौ—करहु (ञ)।

३७४ खचैं—खैंचि (घ) (ङ)।

३८३ जिहि यह प्रेम सुधाधर मोहन मुख देख्यो पिय (ज), जिन यह प्रेम-सुधाधर-तुम्हरो-मुख निरख्यौ पिय (ञ)।

३८९ तौ—को (ख)।

३९० कूर्प—कूप (ङ), कर्म (ड)।

३९८ उभकत—जागहि (क) (च), जगति (ञ), उजगहि (ठ)।

४०३ चटपटी---करपट (ङ) ; कोउ चटपट सों झपटि कोउ पुनि उर वर लपटी (ज), कोऊ चटपट झपटि जाइ, उर-वर सौं लपटी (ञ) ।

४०५ गहि रही. . . .पटकी---गहि रही करि पर पटकी (क) (च), गर पर कर पटकी (ग) ; गहि रही पियरें पटकी (घ) (ङ) ।

४०६ दामिनि दामिनि---दामिनि दामुन (ज), दामिनी दाँमन (ञ) ।

४०७ लपटी. . . .नवेली---लटकि मटकि रही नारि नवेली (छ) (ज) (ञ) ।

४११ कोऊ पीवत निज रूप नेन मै धरि धरि आवत (ङ), कोऊ पिय को रूप नैन भरि, उर धरि आवत (ज) , कोऊ पिय कौ रूप, नैन-मग उर-धरि ध्यावत (ञ) ।

४१९ एव---एक (च) (छ) (ज) (ञ) ।

४२२ इकहि. . . .मूरति---एक ही बेर एम मूरति (ङ), एक बेर ही एक रूप ह्वै (ञ) ; सव कौ---×× (ञ) ।

४२५ कहुँ छिनक---कछूक छिन तहां (ख), तौऊ तहँ (ञ) ।

४३३ विन-भजते---अन-भजते (घ) (ङ) ।

४३६ तदपि---ते (ञ) ; बिबस---बिबल (ख), बस (ग), अग्र (क) (च) ।

४३८ यह---किन (ख) (छ) (ज) ।

४३९ प्रति-उपकार---हौं उपगार (घ) ।

४४५ सबन रिस---क्रोध सब (छ) (ज) (ञ) ; रिस---गुसौ (क) (ख) (च), गस (ठ) ।

४४८ सबहि---सखे (ख) ।

४५१ तूल. . . .अब---तूल कोउ भयौ न ह्वै अव (ग) , तूल कोउ भयौ न है अब (ठ) ।

४५५ मनि---पुनि (ख) (ग), मनु (ञ) ।

४६० प्रतिबिंब चंद्र जस—वहू प्रतिबिब वधु जस (ख), बहु प्रतिबिंब वधू जस (छ) (ज), वहु प्रतिबिब होइ जस (ञ)।

४६७ तार—ताल (ग) (छ) (ज) (ञ)।

४६८ की—के (ञ)।

४७३ छबिली—चपल (ञ)।

४७७ तिरप—तिर्पं (क) (च), निरषि (ख), चख (ङ); कोउ सखि.... बाँधि—कोउ सखी उरप तिरप बाँधति (घ), कोऊ सखी उरप तिरप करि (ङ), कोउ सखी कर पकरत (ज), कोऊ सखि कर-पकर जु (ञ); छबिली—यों छबिली (ज), या छबि सौं (ञ)।

४७८ मानों करतल फिरत देखि नट लटू होत पिय (छ) (ज)।

४८० गावति....जस—अरु गावति पिय के जस (छ) (ज) (ञ)।

४८१ लव—नव (क) (घ) (च)।

४८२ बिलास—विसाल (क) (च)।

४८४ अवर....रहत—अवर तिहि वन रहत (ग), अंबर तिहि छन बनत (छ) (ज), जहँ के तहँ बनि रहत (ञ)।

४८५ सुर-रली—संग जुरली (ख), सुर लीन (घ), रस बली (ज), सुर जुरली (ञ)।

४८८ दै तँबोल—देत बोर (क) (च), देत बौल (ख), बोर देत (ङ)।

४८९ नृत्य—रीत (ख) (छ) (ज) (ञ)।

४९० निगम—गवन (ख), रमण (घ), गमन (छ) (ज), गान (ञ)।

४९६ बह निर्त्तनि—वर निरतत (ग), मुरि निरतत (छ) (ज) (ञ), कापै....गति—कहि आवै कापै गति (च)।

४९८ मँजुलता....बोलनि—ता ता थेई थेई बोलनि (ङ), मंजुल ता थेई बोलनि (छ) (ज) (ञ)।

४९९ कोउ उत ते अति गावत सुर लय लेत तान नइ (ज), कोउ गावत सुर-लै-सौं लै करि तान नई नई (ञ)।

५०१ जति-गति—जित गाति (ग), जाति पांति (ङ), निज गति (छ) (ज)।

५०३ गंडनि मौ मिलि ललित गंड मंडल मंडित छवि (ङ)।

५०६ रस—जस (घ)।

५०७ सु सुंदर—सु देसनि (ङ), सु देस जु (छ) (ज) (ञ)।

५०९ कहुँ कहुँ—कछू कछू (ख), अति छवि (छ) (ज) (ञ)।

५११ मधि—को (ख) (ग) (छ) (ज) (ञ)।

५१३ उड़त अरुन-अति वसन, सु-मंडल मंडित ऐसें (ञ)।

५१७ कुसुम धूरि धूमरी कुंज मधुकरन पुंज जहां (ग) (छ) (ज)।

५२२ छतियाँ—छाति (ज), छाती (ञ) ; अजहुँ—अज हूँ (ञ) ; जिहि के डर—जिन के डर (ग) (ज), धरि–धरि (ञ)।

५२३ जु सुरत—सुस्तर (ख), सुरतैं (ञ)।

५२७ मिलत—चलत (घ) (ञ)।

५२८ लियें—वर (घ), लटकि (ञ)।

५३० मानौ सुंदर गिरिवर ते सुरसुरी धार धसी धर (घ), मानौ सिंगार वहर तैं सुंदर धारा गंगाधर (ङ), गिरि तें जिमि सुरसरी, गिरी द्वै धार धारि धर (छ) (ज) (ञ)।

५३५ न जनी केतिक—न जनी कितीक (क), सजनी केतिक (ज)

५३७ सुख—नव (ङ)।

५६१ भीजे बसननि तन लपटनि सोभित सोभा अस (घ), तन लपटनि बसननि अद्भुत सोभा सोभित सब (ङ), भीजि बसन तन-असन, निपट-छबि अंकित ह्वै अस (ञ)।

५६२ है—जस (घ) (ञ), तब (ङ)।

५६३ रुचिर निचोलनि चुवत नीर दिखि भये अधीर मनु (घ), रुचि रुचि अंबर चुवत नीर बसि परत भयौ मनु (ङ)।

५६८ जग मैं जे सोंहनी तिनकी मोहनी ब्रज बहूं (घ), जगत-मौहिनी जिती तिती ब्रज-तिय मौंहनि सब (ञ)।

५७२ मानी—जानी (छ) (ज) (ञ)।

५८२ सो तनकहु नहि—सो न नेक हू (ङ)।

सिद्धांत पंचाध्यायी

४ प्रभु की—प्रभुक (क) (ख), प्रभुहि (ग)।

१३ पट....धरन—निर्गुन अर अवतार धर्म (घ)।

१७ कहें—कहैं (क), कहे (ग) ; रहें—रहै (क), रहे (ग)।

१८ अपन निज—आप निज (घ)।

१६ मोहिनी....मोहे—मोहनी मोह रूप धरि मोह्यौ (घ)।

२२ गिरि तैं गिरि—गिरि तौ (घ) ; मूरि—पूरि (घ)।

२४ करचौ—कियौ (ग) (घ)।

२६ निरतास—नितसि (ख), निर्जासि (घ)।

२८ रखवारौ—रस रीति (घ)।

३० तिन मैं—तिन तन (घ)।

३४ कीटांत—की जंत (ग), कीटादि (घ) ; सर्बांतरजामी—सब अन्तर जामी (ग) (घ)।

३६ करुना....नंदन—करुनानिधान प्रगट नंदनंदन (घ)।

४० स्मृति—गन (ख) (घ)।

४२ सब....आजैं—सब रजनी भ्राजै (घ)।

५५ इक पैहिलैई गमन मन सुन्दरि घन मूरति हरि (क), इक पहली जू मग्न मनहिं सुंदर धन मूरति हरि (घ)।

६१ ये—इह (ख) (घ)।

६३ बाढ़त—बाढ़ै (ख) (ग)।

६४ छाँडत—छाड़ै (ख), छाँडै (ग)।

६९ जब—सब (क) (ख) (ग)।

७० तब—सब (क) (ख) (ग)।

७५ यहै....गायौ—मिलै यै पंडित गुन गायौ (क), मिलै इह जु पंडित गण गायौ (ख)।

८३ बांछै—छिछै (क), छाहे (ख), मिछै (ग)।

८८ छन छन—ता छिन (घ); छबि—बुद्धि (क)।

९९ अनाकृष्ट—अनाकृष्ण (क)।

१०५ सुंदर—तुम (क), अत (ग)।

१०८ समल—समझ (क), समझि (ग)।

१११ रति....आवै—रहि सोई आवै (क), रहि होइ आवै (ख), रति सेवन आवै (ग)।

१२२ यह—यै (क) (ग), ये (ख)।

१२८ सौभग—सौभाग (क)।

१३६ कोट—कछू (घ)।

१४२ प्रयाल—प्रवाल (घ)।

१५० कै—किधों (ख), किन (ग)।

१५३ बलित—चरित (घ)।

१५८ इह—ए (ग)।

१५९ ताते जगत गोपी पुनि पुनि शुक मुनि गावै (ख)।

१७९ ताते नि मैं तनक दुरे पुनि दुरयो न भावे (घ)।

१८३ मग—मधु (क) (ख) (ग)

१८८ किन—जनु (घ); चंद तैं—चंदहि ते (ग)।

१९२ लाल—बाल (क) (ग)।

२०८ सक्ति अनेक—अनेक शक्ति (ख)।

२१३ करि—कर (ग)।

२२६ बहुरि का....ते—बहुरि का बहु कानन ते (ग), फिरि बहुरि कहा करते ते (घ)।

दशम स्कंध

प्रथम अध्याय

१ जो—ज्यों (क) (ख) (ग)।
४ कही—कहि (क) (ख), कह्यौ (ग)।
१२ हौ को— को हे (क)।
२५ कार्ज—कारन (क)।
२६ कबि जान—जंजान (क) (ग)।
२७ भक्त—भक्ति (क) (ख)।
३० नृपन—तपनि (क) ; सो ईसान.. .जथा—सोई सात कथा हे जथा (क)।
३४ सो आश्रय हि दशम स्कंध, प्रगटित मोचन लोचन अंध (ख)।
४३ ईस्वरता....ताके—सो ईस्वरता फुरे न ताके (क)।
५१ परीच्छत लह्यौ—परीक्षक लह्यो (क)।
७५ हमरे....देव—हमरे तो हैं हरि कुल देव (ख)।
११९ इहि....कही—इहि बिधि बिबिध बुधन सों कही (क)।
१२२ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी है—
सम्यक शास्त्र दिष्ट जे लहैं, आतम द्वै प्रकार ते कहैं।
एक जीव एक भक्त आतमा, जों नित पाइ पलोटत रमा।
१३० सब....गुन भरी—सर्व देव मय सब गुन भरी (ख)।
१३१ दुति—छबि (ख) (ग)।
१३७ किक्यान—केंकान (क)।

१४६ विमन—बिमल (क)।
१४६ अमै—अनें (क)।

द्वितीय अध्याय

१-२ अब दुतिये अध्याय सुनि, जहां ब्रह्मादि के बेन।
करि स्तुति महा गर्भ की, जहां भक्ति बैभव कौं अँन ॥ (क)।
७ अरगाने—उरगाने (क) (ङ)।
१४ महिम—महिमा (क)।
४० तेजरासि—ते राजसि (क); राजति. . . .बैसी—महा निधूम अग्नि होइ जैसी (ख)।
५५ क्रीटनु के जु—क्रीटनि जु अग्र (ख), क्रीडनि केतु (ग)।
६६ जौ. . . .उवाइ—जो दिन दिनमनि दिन न उवाई (ग)।
६७ करि—ही (क) (ग)।
६६ नाउ—नाम (ग); पार—मार (ग)।
८० तुम्हरे—सुंदर (ख)।

तृतीय अध्याय

१-३ अब सुनि मित्र तृतीय अध्याय,, प्रगट हें हरि पूरण भाय।
तात मात सौं वात वनाय, वर्ष हें सुप व्रज मे आय। (ख)
५ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
जो ग्रह मित्र न ताके रहे, जगत मध्य तब काके कहें।
२३ इस के पश्चात् 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
बड़े लोयन अस कछु लोने, पाछे भए न आगे होने।
४५ कीनी. . . .बनाइ—देवकी बोली अति सुख पाइ (क), कीनी थोरी स्तुति वनाई (ख)।
५३ भागि-जोग—भक्ति जोग (ख)।

५६ जानै—जांनौ (क) ।

६० जथा....तितौ—जथा बकासुर हत है तितौ (क) ।

६७ लै लटि—लै सुत (ग) ।

७४-७७ इन पंक्तियों के स्थान पर 'ख' में केवल दो पंक्तियाँ हैं—

आनंद भरि अंबुद घिरि आए, फुई फूल वरपते सुहाए ।
ते सहि सक्यो न सेवक सेस, करि लियो फननि को छत्र सुदेस ।

७८ जल—सब (क), छवि (ग) ।

चतुर्थ अध्याय

२ चंडिका—चंडिवे (घ) । इस दोहे के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—

अब चतुर्थ अध्याय सुनि मित्र, जामें चंडी बचन विचित्रि ।
सुनि के कंस महा डर डरिहै, उठि कै प्रात बात विस्तरिहै ।

७ उखटत—अखुटत (क), अषुरत (ख) ।

८ छविमई—सुभ मई (क) ।

१२ नीचन....सुभाउ—नीचनि के कैसों हृदभाव (क), नीचनि के कामों हृदभाव (ख) ।

१७ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—

रे रे मंद कछू न विचारत, हम सी कृपननि कत कहु मारत ।
उपजो है तुव मारन हारो, अरे निष्ट जिन करि जिय गारो ।

२५ सौनक—सूनक (क) ।

२६ जिनि....अनुराग—सोच न करो सिसुन के राग (ख) ।

३१ इस के पश्चात् 'ख' ने यह अतिरिक्त सोरठा दिया है—

बुरो करे जो कोइ, साध न तऊ मानें बुरो ।
खरो उजेरो हो , छार लगायें मुकुर जिम ॥

३२ परी संस—परी बंस (घ) ।

३५ ताहि—काहि (क)।

३८ बलान करैं—कबहु न करैं (ग)।

५२ ज्यौं—जो (क) (ख)।

पंचम अध्याय

२ इस दोहे के स्थान में 'ख' ने यह चौपई दी है—
अब सुनि लै पंचम अध्याय, सव प्रपंच बंचत ह्वै जाय।

५ यौं....पेखि—पूत उदय ज्यौं पेनिधि पेखि (क)।

७ स्वच्छ....अन्हवाये—आपुन सुचि सुगंध जल न्हाए (क)।

११ बड़डी—बडबडी (ख)।

१२ बहुरो तेल अरु मुक्ता मिलाय, कीने सप्त शयल बनाय (ख)।

१३ इस के पश्चात् 'ख' ने यह चौपाई दी है—
जाचक जन परिपूरन भये, दारिद हू के दारिद गये।

१७ इत मागध—इक मागध (क)।

२० चले महरि-घर—चले सु बनि बनि (क)।

२४ मुदित वचन चलीं भातिन भली, फूली जनु नव कंजन कली (ख)।
इस पंक्ति के बाद 'ख' ने यह अतिरिक्त पंक्ति दी है—ता पाछे गोपांगन चली, आनंद रली सु लागत भली।

२७-२८ अंजन जुत लोचन छबि बढ़े, खंजन जनु कुमुदनि पर चढ़े।
चंचल गति उपजत रसमूल, खसत जु लसत सिरन ते फूल। (ख)।

३५ चूमे....पाइ—भुमेसकनि सासु के पाइ (क), चूबें सबनि सासु के पाइ (घ)।

३९-४० इन के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी है—
नाचत ग्वाल अनंदनि वोरे, हरद दही माखन तन खोरे।
अंबर वारत कंबर वारत, बहु धन डारत कछु न विचारत।
कहीं न परत अति मंगल भीर, निकसि न जाइ फटत तन चीर।

इत ए राग रागिनी गावत, नृत्तत नटी जटी छवि पावत।
इत मागध वंदी जन रढ़ै, इत ए सूत पुराननि पढ़ै।
तेसेई सुरवर वरपति फूलनि, डारत दिव्य दुकूल अमूलनि।
उपर्युक्त पद्यांश के बाद 'ख' ने पंक्ति ४४, ४५ देकर इस प्रकार पाठ रक्खा है—
ता दिन व्रज छवि कहे वनें न, सबनि के ह्वै गए कंचन अेन।
पक्ति ४१, ४२, तथा ४३
तिन पर चपल पताका चमकै, विनु घन जनु कि दामिनी दमकैं।
जितीक व्रज वछ वाछि गांईं, कंचन माल सबनि पहिराई।
पक्ति ५२

जदपि नित्य किशोर व्रज, राजत अंवुज नेंन।
प्रगट भये पुनि नंद घर, सवै वयस सुप देन॥

पक्ति ५४, ५६

सोवत रेन नंद अकुलाई, उठि कें प्रात पूत ढिग जाई।
बदन उघारे छबिहि निहारै, बार वार आपुनपौ वारै।

पक्ति ५५, ५३
जमुमति के सुष की को कहे, वार ही बार वदन छवि चहे।

दुनिया तिथि भई देवकी, विधु दिषियै जिमि नंद।
पून्यौ सी जसुमति लसी, पूरन जहां व्रजचंद॥

श्री नंदजू के प्रेम की उपमा कहत है—

रंक महानिधि पाइ, ज्यौ रहै छतीपर लाय।
तैसें नंद महर अहिर, सुंदर सुत कों पाय॥
ज्यौं मणि उजियारे मणी, विहरत करत अनंद।
त्यौं सुत सुष कंदहि निरषि, विचरत व्रज में चंद॥

पक्ति ५७ (इस के बाद 'ख' का पाठ मूल पाठ से मिलता जुलता है।)
अस—सब (क) (ख)।

६७ सौं—में (क)।

६६ मिलहिं जे—मिलहिगे (क)

८६-९० 'ख' ने इन का पाठ इस प्रकार दिया है—

कहत कि हो हरि सरन तुम्हारी, वा सिसु की कीजो रपवारी।

नंद कृपन धन लों सचौ, यह पंचम अध्याय।
जहां धरे तहां नैंन मन, प्रान रहें सब जाय॥
मंगल गोकुल नंद के, नंद जथा मति पाय।
वरन्यो नित मंगल करन, इम पंचम अध्याय॥

षष्ठ अध्याय

२ इस दोहे के स्थान पर 'ख' ने यह पंक्ति दी है—अब सुनि छठौं अध्याय विचित्र, जामे बकी चरित्र पवित्र।

१६ तब—सु (ख)।

१७ डुरावति—दुरावति (ख) (घ)।

१८ गोप....जोहे—गोप सबै इहि विधि करि (ख)।

३४ है—ही (क)।

३७ इकलौ—अकिलौ (क) ; ताके—तातें (ग)।

३८ मंद छबि-कंद—मंद ही मंद (ख)।

४१ जनु कि—जननि (ग) (ङ)।

४३ कलमल्यौ, हलमल्यौ—हलहल्यौ थलभल्यौ (ख)।

४६ त्रासहि—विस्मय (ख)।

५५ सुंदर बाल—मोहन लाल (ख)।

६२ रच्छा....डरि कै—रक्षा करी व्रजति अरि डरि के (क) ; गोपी सबै नेह रस भीनी, द्वादश नामनि रक्षा कीनी (ख)।

६३ प्यायौ—पायो (क)।

सप्तम अध्याय

२ अब सप्तम अध्याय सुनि मित्र, जामें अद्भुत बाल चरित्र (ख)।
३ इसके स्थान पर 'ख' ने दो पंक्तियाँ दी हैं—
सकट विकट उच्चाटन करिहै, तृणावर्त्त अघ डारिन दरिहै।
सुनि कै यह पूतना चरित्र बाल भाव रस सिंधु पवित्र।
४ काजा—साजा (ग) ; मगन भयो नृप गदगद गरैं, पुन शुक मुनि सों बिनती करैं (ख)।
१४ चावल—चावरी (ख), चवीर (ग)।
१६ जब—तब (क) ; तब—कछु (क)।
२१ अभिचार—अविचार (ग)।
२३ तनक चरन ऊँचे उचकाई, उड गयो उड़नि में दयो रराई (ख)।
३० कूट—कूल (ङ)।
३७ तब....धर्यो—तब धरती धरनी पर धर्यो (ख)।
४२ कित—किन (ख)।
५० डरपि घुरि—डर्यो लपटि (ख)।
७२ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
माया किधों किधों यह सपनों, किधों बुद्धि भ्रम है यह अपनों।
बहुरि कहत यह सपना न होइ, नहि माया नहि छाया कोइ।
७३ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
विश्वहि करे हरे संहरे, ऊर्न नाभ लों पुनि विस्तरे।

अष्टम अध्याय

११ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
अपनो कछू प्रयोजन आहि, श्री व्रजराज कहति हैं ताहि।
२५ अद्भुत....धाम—पूरनकाम सकल गुनधाम (ख)।
३० बहुत कहा कहियै हो नंद, दै है तुम को परमानंद (ख)।

३६ डोलनि—डोलत (क)।

३७ को है—को हैं (ग)।

४० नाक—नाथ (ख)।

४३ चकि रहें—बहु भूलनि (ख); पकरचौ चहै....लहै—सुष दिष दिप मैयनि की फूलनि (ख), फबि रहे हार कनक छबि लहे (घ)।

५० ब्रजवधू आवति ललहि षिलावति, अंगुरी गहाइ के पगनि चलावति (ख)। इस पंक्ति के बाद निम्नांकित चौपाई देकर 'ख' ने पंक्ति ५२ दी है—

कबहूं नचावति अति गति नई, दोधक दोधक धोदक थेई।

५७ अरग अरग आवहि दुरि जाहि, दूध दह्यो मापन लै खाहि (ख)।

६१ खोरि—पोरि (ख)।

६२-६७ 'ख' ने इन पंक्तियों का पाठ इस प्रकार दिया है—

और सुनहु लरिकनि की बातैं, कित सीपो चोरी की घाते।
किंकिनी पट में लेइ छिपाइ, दुकत दुकत घर भीतर जाइ।
दह्यो मह्यो माषन जो पावै, आपन षाइ लरिकनिहि पवावै।
चोरी को दध हित सों षाइ, जौ हम देहि तौ देइ बगाइ।
जसुमति सुंदर सुत तन चहै, हसि हसि गोप वधुनि सों कहै।

६६ मसिहि—मखिहि (क), मखनि (घ), मिषिहि (ङ)।

६९ ही—हूं (क)।

७६ मुख...भरि—मुख के (क)।

७७ जनु—मनो (ख)।

८० जिनहि क्रिया—जिनहु कृपा (क)।

८६ दुकत दुकत—अरग अरग (ख)।

८९ अवर लरिक—अरु बालक (ख)।

९२ चूमति....बानी—इतनी जन्म सुफलता मानी (ख) (ग)।

९३ इस के बाद 'ख' ने दो अतिरिक्त पंक्तियाँ दी हैं—
अरे पूत पूतना निपातनि, तो सों इक कहि सकत न बातनि।
रहत जु निपट धूरि में सन्यो, पूरब जनम सूकर मे मन्यो।
१०३ हित....मात—आन्यौ पकरि आपनौं तात (क), हित सो पिजी जसोमति मात (ख)।
१०५ अनियाई—अनुपाई (ख)।
१०६ यह....मेरौ—यह न झूठ बोलै बलि मेरौ (ख)।
१११ कहति तौ इतै लाइ धौं, देषौं रदन बदन बाइ धौं (ख)।
११२-१२० 'ख' ने इन पक्तियों का पाठ इस प्रकार दिया है—
जगत मथन मधु मथन मुरारि, डारि कै दीनों बदन पसारि।
जसुमति जहां चितै चकि रही, थिर चर डंबर अंबर मही।
पावक पवन चंद रवि तारक, सत रज तम गुन तिन के धारक।
ज्योति चक्र जल तेज अनंत, इंद्रियगन मन मूरतिवंत।
शब्द स्पर्श रूप रस गंध, काल स्वभाव कर्म जिय बंधु।
जीव बुद्धि अरु लिंग शरीर, महदादिक तत्वनि की भीर।
पुनि तहां ब्रज अपनपे समेति, सांट लियो सिसु कहु सिपि देति।
चाहि चकित भई सब सुधि गई, कहति कि कहा आहि यह दई।
सुपन किधों हरि देव की माया, मो मति भ्रमी किधों कछु छाया।
११३ सरित—सहित (क)।
११९ तब—जब (क)।
१२४ इसके बाद 'ख' में ये दो पंक्तियाँ हैं—
जाकी माया करि सब नचे, दरप अहं ममता मद मचे।
अैसी कुमति परी पग वेरी, सो श्री कृष्ण होहु गति मेरी।
१२६ इस के बाद 'ग' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
कहत कि हम ईश्वर जाँनवै, सुलभ है श्रुति मग पहिचांवै।
अै परि हम सुत करि पाइवै, अति दुरभल हसि हियैं लाइवै।

१३५ इसके पश्चात् 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
वसुदेव वरन्यो निगम सरूप, विद्या ब्रह्म देवकी रूप।
१३७ राख्यौ—माख्यौ (ग)।
१२२-१३८ इन के स्थान पर 'क' ने निम्नलिखित पंक्तियाँ दी हैं—
तौ दर्पन मुख दिखियत जैसें, ह्वैहै कछु इहां यह भ्रम ऐसे।
सो पुनि बने न यों मन गुन्यो, प्रतिबिंब में बिंब नहिं सुन्यौ।
है यह मो सुत को परिभाव, और न कछू भाव अनुभाव।
बहुरयौ हरैं हरे पहिचाने, अपनो सुत परमेसुर जानैं।
बहुरि सनेहमई रसमई, माया जननि उपर फिरि गई।
'घ' तथा 'ङ' ने भी साधारण पाठांतरों के साथ इसी प्रकार का पाठ दिया है।
१३९-१४२ बाल चरित मधुधार, ताके पीवनहार जे।
मुकति जु चारि प्रकार, छुवैं न धरे वारि जिमि।
इहि अष्टम अध्याइ रस, नंद पिवहि जो कोइ।
मात पयोधर रसहि पुनि, नेकु पिवै न सोइ॥ (ख)

नवम अध्याय

११ बिपुल नितंब ललित गति मलकनि, नगनि जरी कबरी की ढरकनि (ख)।
१२ नेत—नेत्र (क), नैन (ङ)।
१३ आनन....बनी—श्रम बन कन सु बदन पर परी (ख), आनन पर श्रम बन कन बनी (घ) (ङ); अस—अति (ग)।
१४ आपनौ—आपनें (ख) (घ)। इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—रज की राजनि भुजनि की भ्राजनि, कंकन किंकिनी की कल बाजनि (ख)।
१७ मीड़त—मीजत (क) (ङ)।

१८ नेत....बढ़ाइ—गही मधुमथन मथानी आइ (क)।

४० बिललाही—बिलखाही (ग)।

४२ सु—सोउ (क)।

४८ नोई—डोरी (ख)।

५१ उहै....आई—सोई जब पूरन नहि भई (क) (ङ)।

५४ वस्तु—बसन (क)।

५७ अवसि—अब (क)।

५८ आवैं—पावे (क)।

६० अस—अवसि (ख) (ग)।

६१ रसना....नई—वत्सल रस रसनादिक नई (ख)।

६२ इस के बाद 'ख' ने यह दोहा दिया है—

ज्ञान अगम निगमहि अगम, निपट अगम जम नेम।
सब विधि दुरगम ब्रजेस सुत, सुगम एक ही प्रेम॥

६४-६५

जदपि विधि शिव सब ही आत्मा, अवरु वहै घर घरनी रमा।
तिनहू कबहूं नाहिन चह्यो, जु सुष नंद की ललना लह्यो।
(ख)।

६७ कहँ सुखद हैं—कहूं सुख लहे (क), कह सुखदै (ग)।

७० गत—गति (ख); माया—माइक (क)।

७५ छीजत इम देषहु तजि मौन, मृदुल मुकुर पर जिमि मुप पौन (ख)।

७८ आपे—सपे (क), सापे (घ), साप (ङ); जु—सु (ग)।

८१ 'ख' ने इस अध्याय के अंत का दूसरा दोहा पहले दिया है तथा पहले के स्थान पर यह दोहा दिया है—

नंद नवम अध्याय को, उर धरि राषो षेलु।
सहजहि उत्तम होइहै, ज्यों तिल तेल फुलेल॥

दशम अध्याय

१ सुत....पाइ—पूछे सुक जु परीछत राइ (क)।

२-३ 'क' ने दूसरी पंक्ति छोड़ दी है और तीसरी का पाठ यों दिया है—हो प्रभु परम भागवत नारद, जाकौ परस सहज भव पारद।

४ जिनहि—मुनि मत्त (ख)।

१३ निर्दय महा विरथ—निर्दई महा अव्रत (ख)।

१५ कौ—करि (क); समै—सबै (क)।

२० हौइ—द्रोह (ख) (ग)।

२२ निर्बल—दुर्बल (ख) (ग)।

२६ तुम—पुनि (ग)।

३६-३९ इन के स्थान पर 'ख' में केवल यह पंक्ति दी है—

अहो हो कृष्ण अमित अनुभाव, नहि कहि परत अचित्य प्रभाव।

४२ तुम ही काल विसाल सु वसुकर, विष्णु व्यापी तुम अव्यय ईसुर (ख)।

४२ तुमही प्रकृति सकति सब तुमही, सत रज तम जे लै लै उमही (क) (घ)।

४५ घट....सब ही—तौ घट पट ज्ञान विषै सब ही (क); घट—तौ धर (ग)।

४५-५१ इन का पाठ 'ख' मे इस प्रकार है—

जो कहोहु कि ऐसें हम सब ही, घट पट ज्ञान भये ते तब ही।
हमरो ज्ञान सबनि किन बनै, तहां कहत कुबेर के तनै।
प्रभु तुम ग्राम वस्तु ते परें, इंद्रिय वाद डरें अरवरे।
जैसें चषि फल रूप ही गहै, फल के रसहि नाहिने लहैं।
निज महिमा मधि छपि रहे ऐसें, अभ्र में रवि दवि रहत है जैसे।
तैसे तुम अग्राह्य स्वच्छंद, ताते नमो नमो व्रजचंद।

नारद परम अनुग्रह करचौ, पायो दुलभ दरस रस भरचो।
बोले नलकूवर मणिग्रीव, अंजुलि जोरि नमित करि ग्रीव।
५३ वाणी तुव गुन कथन में रहो, श्रवन कथा रस में निरबहौं (क)।
५४-५५ इन के स्थान पर 'क' में यह पंक्ति है—
चरन कमल रस बस मन भौर, सपने हूं जिन सूझै और।
५९ प्रीतम—प्रिय तुम (ग) ; हमारौ—हमारे (ख)।
६३ डर—जग (ख)।
६४ पुनि....पाइ—चले नाथ को माथ नवाइ (ख)।
६७ नभ....चले—गवने रगमगे (ख)।
७१ कथित यह—यह कथा (ग)।

एकादश अध्याय

१-२ अब सुनि एकादश अध्याय, जामे श्री वृंदावन आय।
अवर जु अद्भुत अद्भुत केलि, भक्तनि परम अमी रस बेलि (ख)।
४ अति—तहां (ख) (ग)।
५ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
बडे अकाय दोऊ रूपरे, धरनि ते जरनि सहित ऊपरे।
१८ सहज—सबै (ग) ; नाचि—नाच (ख) (ग)।
२१ कबहुँक बहुरि—कबहूँ कहू (क) ; कहैं—करे (क)।
२२ गुहि दै—गुहियै (क)।
२४ कोउ....वे—अहो कान्ह वे (ख) ; मोहिं—नेकु (ख)।
२५ व्रज तिय—निज व्रज (क) (ग)।
२६ सिव कौ सर्वस—सिसु सर्वस सब (क)।
५१ कहन लग्यो हित की सब बात, अब लौ परी आहि कुसरात (ख)।
इसे तथा पंक्ति ५० को 'ख' ने पंक्ति ४६ के पहले दिया है।
५६ करे—करैं (ग) ; भुवि—गिरि (ग)।

६१ गाइ-बछ—गाइ की (क)।

६२ मुठे—गुठे (ख) ; इसे तथा पंक्ति ६३ को 'क' 'घ' तथा 'ङ' ने छोड़ दिया है और यह पंक्ति दी है—

सुनतहि सब आनंद हिलोरे, अपने सकट तुरत ही जोरे।

६९-७२

बाल चरित लालनु के गावति, राग भरी सब राग रिझावति।
रोहनी सहित नंद की घरनी, बैठी सकट परत नहि बरनी।
रमा उमा सी दासी जाकी, सुरपति रवनी कवन वराकी।
ललित ललाहि गोद में किये, चंद जननी जनु चंदहि लिये।
(ख)।

७० सीतल कंठ—रूप अनूप (ग)।

८१ पिक—कपि (क)।

८१-८२ इन के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—

औरें भवर मधुर रव राजैं, परम प्रवीन बीन जनु बाजैं।
जहां तहां नृतत मत्त जु मोर, रीझे हरि लषि उनकी वोर।
बोलत पिक कल कंट सुहाये, जनु मधु वधु मिलि मंगल गाये।

८२ निकसी. . . . सोभा—देखत मन अति उपजति लोभा (घ)।

८७ सब रस—रस में (ख) ; जगमगे—जगमगैं (ख)।

१०१ इस के बाद 'ख' ने यह दोहा दिया है—

कलई के से अंभ जिम, दंभ करो जिन कोइ।
दिन दश की रस की चसक, अति ही विगूचन होइ॥

१०७ गिरि. . . जैसौ—वज्र हत्यो गिरि शृंग है जैसो (ख) (ग)।

११५-११८ इन के स्थान पर 'ख' ने तीन पंक्तियाँ दी हैं—

ऐसे कहि वक उगलन लग्यौ, तिहि छिन अद्भुत कौतुक जग्यौ।
मुष ते निकसत मधुर मुरारि, पकरि कै चोंच फारि दियो डारि।
कट को करन हार नर जैसें, डारत फारि पटेरहि जैसें।

१२० घिरि—घुरि (क)।

द्वादश स्कंध

२-४

गिलि जैहै बछ बालक कोटि, हरिहे हरि ताकौ गल घोटि।
इक दिन पुनि आनी हरि मन में, करिहैं काल्ह कलेऊ वन में।
प्रात काल उठि मोहन लाल, वेनु बजाइ बुलाए ग्लाव (ख)।

७ कनक....नीके—काधन धरि लए लागति नीके (क)।

८ इस के बाद 'ख' ने ये अतिरिक्त पंक्तियाँ दी हैं—

उज्जल उज्जल बछ सुहाए, मृदुल फटक के मनों बनाए।
जिनके तन में बालक जिते, निज प्रतिबिंब विलोकत तिते।

९ नंद....चले—वेनु बजावत गावत चले (ख)।

१० नग....नाइक—जैसे नगनि के मधि मधि नाइक (ख)।

११ इत—तहाँ (ग)।

१५-२८ 'ख' ने इन का पाठ इस प्रकार दिया है—

कैईक ग्वाल ताल ढिग जाइ, आवत बैठे बगन खिजाइ।

पंक्ति १६ [केई मिलि—कैइ शिसु ; कुहुकावत—पिजावत]।

केइ मिलि कल कोकिल कुहूकावत, केइ खगनि छाया गहि धावत।
पुनि पुनि तिनको चोंप दिवावति, हसति हसति बहुरचौ फिरि आवति।

पंक्ति १८

कहूं दिपि नृत्तत मोर किशोर, तैसे ही नृत्तत ए चित चोर।

पंक्ति २२, २१

छवि पुजा गुंजा अति सोहे, ललित लालरी द्रुति तहाँ को है।
तिनके रुचिर हार गुहि लावै, आनि नंद लालहि पहिरावै।

पंक्ति २४, २५

इहि विधि विहरत भरि अनुराग, श्री सुक बरनत तिनको भाग।
इहि सुप पंडित नहिं अनुसरे, रहत है जदपि ब्रह्म सुष ररे।

सेवक पुनि यह सुष नहि लहै, ईश्वर जानि डरत नित रहै।

२९ संबंधी जिते—जु बंधु जन आहि (ख), सबंधी जन जे (घ) (ङ) ; समभत तिते—मानति ताहि (ख), समभत जे (घ), समभत ते (ङ) ।

३० देत....ठौर—विहरत वन माही गर वांही (ख) ; नहि और —कोउ नाही (ख) ।

३१ जाके....कै—दुप भरि चपल चित्त कहु धरे (ख) ; दुख भरि के—तप करे (ख) ।

३२ ता करि जा प्रभु की पद धूरि, ढूढत फिरत तदपि हू दूरि (ख) ।

३३-३४ 'ख' ने इन के स्थान पर ये पंक्तियाँ दी है—

सो हरि जिन के नेननि आगैं, निसि दिन रहत प्रेम रस पागे।
तिन लोगन की भाग वडाई, कहा कहिये कछू बरनी न जाई।
तिहि छिन अघ आयो तकतक्यौ, वाल केलि सुष देपि न सक्यौ।

'ग' ने पंक्ति ३३ के बाद उपर्युक्त पहली दो पंक्तियाँ दी हैं, तीसरी छोड़ दी है।

४५-४६ सो अघ अजगर वपु धर नीच, परयौ आनि मारग कै बीच।
इक जोजन विस्तरि मुष वाइ, रह्यो ग्रसन आसा लव लाइ।
(ख)।

५१ शृंग जु बनें मनहु अहि दंत, निविर तिमिर सु बदन कौ अंत। (क)।

५२ तामें वह मारग की लीह, लपकति जनु अजगर की जीह (ख)।

५७ केबल—सति ही (क)।

६० नंद सुवन असे कछु करिहै, वक लौ यही नीच कोऊ मरिहै (क)।

६१ सुंदर....भरे—नाहिन डरे अतिशय मुद भरे (ख) (ग)।

६६ अब ह्यां बने कवन विधि कियें, अजगर मरे वाल-वछ जियें (ख)।

८० इस के स्थान पर 'ख' ने दो पंक्तियाँ दी हैं—

सुनि हरष स्तुति रस जगमगे, गंधर्बो गुन गावन लगे।

निर्त्तत अपछरा को छवि गनो, लटकति फिरति दामिनी मनो।

८१-८४ कोलाहल सुनि के सुर ओक तें, अज आए जु अपने लोक तें।

नंद नंदन महिमा अवलोकि, बिस्मय करि हिय लीनों रोकि।

अजगरु चरम करम शुभ भरयो, सूक्यो बृंदावन में परयो।

ब्रज के जिते ग्वाल बछ बाल, षेलत रहे तहां बहु काल।

८४ गह्वर—हुंकरत (क)।

८६ सो पौगंड बयस कौ पाइ, कह्यौ तिन लरकनि ब्रज आइ (ख)।

८९-९४ 'ख' ने इन के स्थान पर ये पंक्तियाँ ही दी है—

अरु यह जोति परम द्युति सानी, हम देखी इन मांझ समानी।

अहो मित्र कछू चित्र न आहि, श्री हरि की महिमा तन्न चाहि।

मनो मई मूरति जौ करै, रंचक आनि हिय में धरै।

९२ सुनि....रह्यौ—किन हूं गह्यौ किन हू नहि गह्यौ (ग)।

९३ चित्र—चित्त (ग), चिंत (ङ)।

९६ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

अचरज नयो जु श्री शुक गावै, हरि सारूप्य अघासुर पावै।

९७ हरि—कै (ग) ; सूत कहत द्विज सों रस ढरयो, राजा सुनि अति अचरज भरयौ (ख)।

९९-१०० यह कौमार वयस को करम, कीनों कमल नयन निज धरम।

पुनि पौगंड वयस में आइ, कह्यो लरिकनि यह वन को भाइ (ख)।

१०५-१०७ इन के स्थान पर 'ख' ने दो पंक्तियाँ दी है—

ऐसें जब पूछे मुनि सत्तम, परम भागवत उत्तम उत्तम।

सुमिरि हरि चरित रस रगमगे, हिय डगमगे दृगनि जगमगे।

१०९ नंद....भरि—नंद नेह भरि हेत करि (ग)।

११२ ज्यौं—लौं (ग)।

त्रयोदश अध्याय

४ हौ—हौं (ग)।

५ जिन के—जिन कौ (क) (ग)।

६-७ छिन छिन प्रति नौतन सी सुनै, सुनि सुनि पुनि पुनि मन में गुनै।
सुनत नृपति मानत नहि अैसे, पर तिय बातनि लंपट जैसे (ख)।

१२ की—× (क) (ख)।

१३ कहत....ठौर—अहो मित्र देषहु यह ठौर (ख) ; पाइहौ—पाइये (ख)।

१४ सीतल मृदुल बालुका सच्यौ, जमुना सु कर तरंगनि रच्यो (ख)।

२० तैं—के (ख)।

२८ बने—ठने (क) (ख) (ङ) ; घने—वने (क) (ख) (ङ)।

३१ काख....रेनु—बेत विषान काष में लिये (ख)।

३२ हरि—परि (ख)।

३५ केवल—मनुज (ख)।

३७ सौं—कौ (ग)।

४० तहँ—जहा (ख)।

४२ तदनंतर कमलज तहा आयो, अघ कौतुक दिषि बिस्मय पायो (ख)।

४३ इमि कहैं—हम कहैं (ग); चहैं—चहैं (ग)।

४४ 'ख' ने पंक्ति ४५ को न देकर इस का पाठ यों दिया है—
ले गयो कछु ते वछ चुराइ, इत ते लीने बालक आइ।

५२ बाल—ग्वाल (क) ; याते नंदलाल तिहि काल, आप भये वछ वाछी वाल (ख)।

५६ कंकन किंकिनी नूपुर जितौ, सर्व विष्णुमय है यह तितौ (ख)।

५७ बिदित—बदत (ग)।

५८ अैसे नहिन परत हो पायौ, सो यह अर्थ प्रगट दिखरायौ (क)।

६० 'ख' ने इस के बाद यह पंक्ति दी है—

आप ही अपने बछ निवेरि, लै गए अपने षरकनि घेरि।

६८ बार....हँसनि—परति न कही नेह की घूमनि (क)।

७० कोई—जोई (ग)।

७६ बखरें—वखरै (क), बछरी (ख)।

८३ बल—वर (ख)।

८५ हलधर सौ—बलधर सौ (क)।

८६-८७ संकर्षन तब नीके जान्यो, जब हसि हरि सब भेदु वपान्यो।

बीत्यो वरष हरष भरि धायो, समाचार विधि लैन ही आयो।

(ख)।

९० इस के स्थान पर 'ख' मे दो पक्तियाँ हैं—

इत आवे पुनि उत कौ धावै, पचै विरंचि मरम नही पावै।

पुनि अपने विधि देषनि गयो, पाछे अद्भुत कौतुक भयो।

९४ निरखे चारु—चहे विरंचि (ख)।

९५ सीसनि ललित किरीट सु लोले, कुंडल कलित कपोल विलोलें (ख)।

९७ धरे—लसे (ख); आयुध....करे—निकर बिभाकर दुति कहु हसे (ख)।

१०० पुनि इक इक ब्रह्मांड के नाइक, सब लाइक सुभकरन सुभाइक (ख)।

१०१-१०३ 'क' ने १०१ को छोड़ दिया है और अवशिष्ट पंक्तियों का पाठ यों रक्खा है—

ब्रह्मादिक बिभूति जग जिती, अंड अंड प्रति दिखियत तिती।

काल कर्म महदादिक जिते, मूरति धरै उपासत तिते।

१०४-१०५ 'ख' ने इन्हें इस प्रकार दिया है—

अति अचिरज दिषि विधि सुधि गई, इक नौ हुती और भई नई।

चकित भयो सु थकित अस भयो, हंस कौ अंस पकरि रहि गयो।

१११ दृग....चहै—दुष भरि दृग उघारि जो चहै (ख)।

११२-११३ सुरतरु से सब तरुवर जहां, सब रस भरे अमी रस जहा।
मृग अरु मनुंज मृगाधिप जिते, जहा निर्बैर बिराजत तिते (ख)।
११५ निरखे—निरखे श्री (क)।
११६ ढूँढ़त—तन धरि (क) (ङ)।
११८ उर फुरै—सुधि करै (ख); सो—सिर (ङ); पद-पंकज सो घुरै—पद कमलनि पर परै (ख)।
१२२ कमल....बलबीर—सब नेननि ते बरषत नीर (ख)।

चतुर्दश अध्याय

२-३ पाछै अद्भुत निरखि बिधात, चक्यौ थक्यौ कछु फुरति न बात।
सापराध अति थर थर डरै, हरि महिमा अवगाहन कै।
सुधि न परै तब जैसे चहै, तैसै नमस्कार करि कहै।
(क) (ङ)।
५ नैन....बनमाल—बिलुलित उर बनमाल रसाल (क)।
६ रस—छबि (ख); कवल....बेत्र—वेत्र बिषान कंवल (ख)।
७ इस के बाद 'पूर्व पक्ष' लिखकर केवल 'ग' ने यह पंक्ति दी है—
जो कहहु कि याकौ कहा कह्यौ, बरन्यो रूप जु तै कछु चह्यौ।
११ इक—तुम (ख); ताहि—जाहि (ख)।
१३ पायौ....भेय—जानि परे न रूप रस भेय (ख)।
१४ तौ पै—तौप (क), तो ए (ख)।
१७ संत—संतत (क)।
१९ ठौर—इक ठौर (क); जे....जीवै—जग मे इहि जीवनि ते जीवे (ख)।
२१ अब—सब (ख)।
२६ फल....बिरथ—फल तहां इहि वृथा (ख)।
३१ मर्म—नर्म (ग)।

३५ नित्य—तिन के (ख) ; तनक—ताकौं (ग) ।
३६ तिहि—जिहि (क) ।
४५ ताते तुम्हरी कृपा जु आहि, वंछ्यो करित रयन दिन ताहि (ख) ।
४७ नैक न ललचाइ—चितु अनत न जाइ (ख) ।
५६ रज—जो (ख), जन (ग) ; अग्यानी—अज्ञान (ख) ;
अभिमानी—अभिमान (ख) ।
६२ कहत. . . .की—तह ह्रौं जैसै चिटी हाथ की (ग) ।
६४ हौ—है (क) ।
७२ अब विशेष करि जन्म जु अपनो, कहत बिरचि तयो करि थपनो
(ख) ।
७६-७७ 'ख' ने इन के स्थान पर यह पंक्ति दी है—

तौ तू नारायण सुत आहि, जल मे जाहि चाहि लै ताहि ।

७७ तहां कहत बिधि बुधि अवगाहि, मदस्मित जुत आनन चाहि (क) ।
८० बहुरि नार—बहुरि नारि (क) ।
८२ जल मे तुम्हरी यों मूरति आहि, हसत कहा हरि मो तन चाहि (क) ।
८३-८४ ताते हम ऐसे करि पाये, पानी मे परिछिन्न बताये ।

तहां कहत अंबुज को तात, अहो तात अब सुनिये बात ।

८६ जल—रज (ग) ; कितक. . . .ते—कहाँ ते मो ते (ख) ।
८८ तुम—मो (ख) ।
८९ की गुरझैं—कर उरझै (ग) ; यह सब तुम्हरी माया नाथ, बहुत
अरुझ मुरझे इहि साथ (ख) ।
९१-९२ 'ख' ने पंक्ति ९२ को नहीं दिया है और ९१ का पाठ यों रक्खा
है—

जननी हू कौं नहि दिषरायौ, ह्रौं तुम ह्रीं अब ही बोरायो ।

९९ इस के बाद 'ख' मे यह अतिरिक्त पंक्ति है—

पीत वसन नव घन तन स्याम, सवनि कैं उलसी तुलसी दाम ।

१०८ इहि—इही (ग) ; औंर—अमर (क) (घ) ; नर—नार (ख) ।

१०९ मै—कौ (क) ।

११३ बार बार—पार वार (क) ।

११६ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

सर्व व्यापी ब्रह्म जु आहि, प्रभु की प्रभा कहत कवि नाहि ।

११७ परम—सकल (क) ।

१२०-१२८ इन का पाठ 'ख' ने इस प्रकार दिया है—

पान पत्र ते भये हमारे, पियत सुधासव अंग तुम्हारे ।
हम करि ये कछु नाहिन रचै, पै अभिमान मात्र ही मथै ।
पुनि इक इक इंद्रिय रस रसे, भये कृतार्थ सब द्रुप नसे ।
जे सब ही बिधि तुम ही लागे, डोलत प्रेम पगे रग मगे ।

१३१-१३२ इन के स्थान पर 'क' मे यह पंक्ति है—

मनुज लोक मै जनमु हमारौ, दीजे देव दया बिस्तारौ ।

१५१ जब लगि जन नहि भये तुम्हारे, हे ईस्वर बजराज दुलारे (क) ।

१५३ जानहु. . . चर—ते जानहु म्यानहु जग गोचर (ख) ।

१५९-१६० तब श्री हरि वे बालक वक्ष, बैठे सब पाए उहि कक्ष (क) ।

१६५ आये—पाए (क) ।

१७५ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

बिच बिच सुसम कुसम की डार, जिन पर भंवर करत गुंजार ।

१७७ घेरत—टेरत (ख) ।

पंचदश अध्याय

२ धेनुक मारि ताल फल खाइ, सबनि कौ सुख दैहै ब्रज आइ (क) ।

३ सुदेस—सु बेस (क) ; बढ़त सु बेस—चढत सुदेश (क) ।

४-७ 'ख' ने इन के स्थान मे यह पंक्ति दी है—

प्रथम चले वन चारन गाइ, वा छवि की मुहि लगौ बलाइ ।

७ लगी—सुभ (ङ) ; वन—उत (क) (घ) ; अवरावन—आवरहन (घ), अवराहन (ङ) ।

८-२४ इन पंक्तियों को 'क' ने छोड़ दिया है ।

९ बीच....कवन—तंदुल बीच सु कौ (ख) ।

१० दये—दै (ग) (ङ) ; ब्रज—घर (ख) ।

११ रूप—परम (ख) ; सब के—रूप (ख) ।

१२ घनन....करैं—इहि विधि गोचारन पर वरैं (ङ) ।

१३ वरन—अंग (ग) (ङ) ।

१४ सम—से (ग) (ङ) ।

२१ रंगन भरे—इम मन हरै (ख) ; बात....ढरें—जनु द्रुम आप में बातैं करै (ख) ।

२८ सु रस—सुरमुति (ग) ।

३६ निकरि—निकसि (ङ) ; तुव—भुव (ङ); कौ—के (ग) ।

४० जदपि....पाये—छिपे मनुज गति तुम लहि पाए (ग) ।

४४ कबहूं निरखि मराल सु चाल, तिन संग खेलत लाल गुपाल (क) ।

४५ नंदकिसोर—चित के चोर (क) ।

५३ सघन—जघन (क) ।

६२ जाइ—जान (क) ।

६६ भैया—मईया (क) ।

६८ तछिन—ता छिन (क) ।

७१ कानन—पैठत (क) ।

७२ लिये—जिये (क) ।

७७ ऊँचे—उचै (क), ऊंधो (ख) ; भारयो—भारौ (ग) ।

८७ गडनि—मंडित (ग) ।

९१ दृगन....सिराने—वासर विरह सु ताप सिराने (ख) ।

९२ हँसनि—हसित (ख) ।

षोडश अध्याय

१ कीनी—कीनौ (ग) ।

६ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

बहुरयौं तुमरे मुष ते भरे, अमृत ते अमृत सुष करे ।

१७ कान्ह....हमारी—हमरे वृंदावन की (ख) ; क्यौं....भरी —क्यों विष भरी पूछियै (ख) ।

२६ सुभै—सुरे (ङ) ; मोर मुकट सिर कुंचित केस, मंदस्मित जुत वदन सुवेस (ख) ।

२७ विभु—हरि (ख) ।

३९ इस के बाद 'ख' ने निम्नांकित पंक्तियाँ दी है—

जो जन चरन सरन अनुसरे, तिनके हित ए लच्छिन धरे ।
चक्र चिह्न चरननि झलमले, कामादिक रिपु दल दलमले ।
सोहत सुंदर दरवर लच्छनि, अजहिं तच्छिन करत विचच्छिन ।
मीन चिह्न छिन छिन छवि धरें, जन के मन हीं मीन लों करें ।
रस भरयौ कमल चिह्न इहिभाइ, जन कौ मन अलि अनत न जाइ ।
जब चिह्न सों मन लागै जाकौ, अमल सुजसु जग प्रगटै ताकौ ।
चरन में अंकुस लच्छिन याते, मन मद गज विचलै न ताते ।
कुलिस चिह्न जु चरन राजित नित, पातक पर्वत चूर्न करन हित ।
धुजा चिह्न जिहि हिय जगमगै, ताके सकल अमंगल भगै ।

५१ पकने—पकनै (क), सेकनि (ख) ।

५४ उर—डर (क) ।

५६ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

यों हरि जब दरसे सब सरसे, सुर मुनि सुंदर सुमननि बरसे ।

५८ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

ते सब तहा आये रस लीन, लै लै ताल पषावज वीन ।

६४ पद कूटिनि में अहिफन जिते, भगन भए मणि डारत तिते (ख)।
७४ भार—साज (ख), भांड़ (क)।
७५ जु दंड—निर्दंड (क)।
७८ अमित अंडमय वेप तुम्हारौ, ताकौ भयौ यह भारन हारौ (ख)।
८३-८४ तब तासों बोले बनमाली, रे रे विष जाली अहि काली।
तू अब रमनक दीपहि जाहि, गरुड के डर ते कौन डराहि (ख)।

सप्तदश अध्याय

५ कहा—कौन (ख)।
९ पर्बनि पर्बनि—सर्पनि पर्बनि (क)।
१३ वल—पग (ख)।
१५ तातौ—सातौ (क), सांतौ (ख)।
२३ राउ—नाथ (क)।
३०-३१ अद्भुत अद्भुत नव मनिमाल, अहि जुवतिन पूजे नंदलाल।
बने जो तिहि छिन को छवि गनौ, चंदहि ओप दई है मनौं (ख)।
४१ तिहि—तिन (क), तन (ग)।

अष्टादश अध्याय

१ अष्टादश अध्याय की कथा, बरनि सुनाऊँ मो मति जथा (क) (ङ)।
१० घूमरे—धूमरे (ङ)।
१३ जैसी—ऐसी (ख) (ङ)।
१४ सर—सब (ग) (घ) (ङ)।
१४-१६ सरनि में सरसीरुह रस भरे, मधुकर निकरनि चंचल करे।
कदिलन ते घन सार तुसार, ह्वै रह्यौ दुर्दिन आकार।
सीतल मंद सुगंध समीर, कही न परति अति परिमल भीर।
केकी कोकिल करि जु गावत, सुरपुर के गंधर्व रिझावत।
(ख)।

२० खेलत बेलन—मेलत षेलनि (ग)।

२८ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—श्री हरि करि तब ही वह पायो, तजि वह षेल अवर उपजायो।

३१ अवर.....बीरी—आवहु षेलहिं बटि बटि बीरी (ख); बीरी—भीरी (क)।

३२ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—चढा चढी षेलहि बदि ठाव, धरि धरि आवहु अपने नाँव (ख)।

३४ ललित.....कसे—ललित करनि झपटै पद कसे (ग)।

४१ ओर—आर (ङ); अपनी—अप घनी (क), अप पनी (ङ)।

४३ हरि पर वन्यो श्री दामा ऐसे, सरद चंद ऊपर गुरु जैसे (ख)।

४६ चढ़ि—वढ़ि (क)।

५१ बसंत—वगंत (ग)।

एकोनविंश अध्याय

७ कुज पुज—मंजु कुज (ग)।

१६ जनु.....पग्यौ—जनु सब सुषत निफल रस पग्यौ (ग)।

२५ उमहि—उतहि (ग); नार—भार (ग)।

३५-३६ सुनतही नंद सुवन के बैन, झट दै सबहिन मूदे नैन।
जौ देखौ तौ बट भंडीर, ठाढ़े हैं सब ताके तीर (क)।

३९ इस के बाद 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी है—
ऐसे कहत सषा मुद भरे, तिन तन दिषि मोहन हसि परे।
नद सुवन कौ हसिवो जु है, जगत मोहनी माया सु है।

विंश अध्याय

३ प्रावृट—पावस (ख)।

६ यह—अरु (क)।

१० तपे—तये (ग)।
१६ सुकी—शुष्क (ख), सुद्र (ग)।
२१ वुढ़ी—मुढ़ी ; लुढ़ी—ढुरी (ग)।
३० परसे पै निरसै—सरसे पै निरसे (क)।
३२ विप्र सु—विद्विष (ग)।
३५ घुमड़नि—मंडल (ख)।
४३ घरनि—घरनी (क) (ग) ; विवस—विखइ (क)।
४५ दंत—दंभ (ख)।
५३ ऐनन—श्रोहनि (क)।
६६ नहिं निज—नाहिन (ख), नयन जु (ग)।
७७ ह्वै—कौ (क)।
८५ गगन—अगन (क)।
८६ मन—यौ (क)।

एकविंश अध्याय

८ तरवर. . . .जिते—तरवर सर के खग गन जिते (क)।
१० सुर—धुनि (ख) ; बजवत—बाजत (क) (ख)।
२१ सु—सौ (क)।
२४ तिन. . .फरै—तिन फल प्रियतम दरसत फरे (ङ)।
२७ रागिनि—रागनी (ग)।
४२ मधुन—मधुर (ग)।
४३ निरखि निरखि—हरखि हरखि (ग)।
५७ चित्र—चरित (ख)।
६१ कवरि—कवर (क)।
७३ उमगत—घूँमत (क), रूपत (ग) ; घूमत—ऊँघत (क)।
७५ मुनि पुनि—पुनि पुनि (ख)।

८३ स्याम—राम (क)।

८६ दामिनि—नीबी (ग)।

८७ सखा... कौ—सखा भयौ घन घन सु स्याम कौ (ग)।

८६ हे सखि....रह्यौ—हे सखि मौहन हूं की रह्यौ (ग)।

६२ पये—लए (क)।

६५ हसनि—हम न (क)।

द्वाविंश अध्याय

५ जु—निज (ग)।

१५ सरै—अनुसरै (क)।

२० देबि—भरे (क)।

२६ कै—चख (क)।

३६ ऐड़ सौं—अैसौं (ख), और सौ (ग)।

४३ भाइ—सुभाइ (ख); नंदराइ—कंसराइ (क) (ग)।

४६ हो—है (ग); सब रस—सरबस (क), रस बस (ख)।

५४ ब्रज—करि (ग)।

त्रयोविंश अध्याय

८ प्रहारनि—पहारिनि (क); पापिनि—पावन (घ)।

४० कछु—कहूं (ख)।

४१ अँगन—अवनि (ख)।

४८ चुस, लिह—लिह चोष्य (ख)।

५६ अवस्था—अवस्थ (ख)।

६१ प्रतिबंधक—पत बंधक (क)।

६६ जजन—गृहन (क)।

७६ तुम—गहि (ख) (घ)।

८६ बृद्धि—विरध (ग) (घ)।
९६ जाहि—जाइ (क) जैय (ख), जैंइ (घ)।
१०४ खोहनी—पोहनी (ग)।
१०६ मेव न तत्त्व—वासन आत्म (ख)।
११५ भरी—रीझि (घ)।

चतुर्विंश अध्याय

१ अब सुनि चतुरविस अध्याइ, चतुर सिरोमनि हरि के भाइ (ख)।
३ निर्मद—निर्मल (क) (ग)।
८ चाइ—जाय (ग), आनि (घ)।
२० सब के—केशव (ख)।
२२ डारयो—मारयो (क)।
४२ सबै बिधि—सब छबि (ख)।

पंचविंश अध्याय

४ घाती—खाती (क) (ख)।
१२ मब—अब (क)।
२१ इस के बाद 'ग' ने यह दोहा दिया है—
गाइनि की उह आवनी बनी बनिक इकहि ढार।
जनु हरिसागर मिलनहित गंग भई सत धार॥
५५ ओप की—प्रेम की (ख)।
५६ लोकन लै—ओकन चले (ख)।

षड्विंश अध्याय

११ ऐन लै आइ—आयु पी जाइ (ज)।
२६ निर्मल—निर्विष (ख)।

३० पंछी—अलपमु (क) (ग)।
३८ रीत—पीर्त (क) (ख)।
४५ अति परिभव करि सकै न ऐसे, हरि अनुसरि सुर निर्भय जैसे (ख)।

सप्तविंश अध्याय

९ गर्व—गरभ (ग); जु लोक तिहू कौ—तिलोकी विभु कौ (ख)।
२० गुरु-गुरु—के गुरु (ख)।
२९ मनु अंजन रंजन—मनरंजन अंजन (ख)।
६० बूड़ि गई—बढ़ी गाइ (ख)।

अष्टविंश अध्याय

३ सुख—फल (घ) (ङ)।
३० स्वच्छ मुक्ति जो—सूक्ष्म गति जो (ख)।
३१ बिस्मय—निश्चै (ख)।
३५ बैठे—पठए (ख); पूरन—परम (क) (ख) (घ); किरनमय —करुनामय (ख), कीरतिमय (घ)।
३९ बिषै—वेषे (क); हि....अरे—अहं ब्रह्म करि तामें ररे (ख)।
४० अरु कौतुक—और कीरति (क); गिरिबर....भरे—गिरि उधरन आदि रंग भरे (ख)।
४७ जाकी धूप—जाकौ रूप (घ)।
५० मुक्ति न मन-मानी—मुक्तिहि मन मानी (क), मुक्ति न अन-मानी (घ)।

एकोनत्रिंश अध्याय

२२ दलमली—हलमली (क)।
२५ मन—मत (क)।

२७ धरे---धारे (ग)।
३२ ध्यान....तैसै---धरत भई निज हिय मैं तैसे (ग)।
३५ कहत---कहति (क) (ग)।
३८ घाटि---निकट (क); कब---अव (क)।
४६ ऊपर---उप रस (ग)।
५२ ते ही---देही (क)।
५३ हृद---दूरि (क)।
५६ भरे, रहे---ररे भरे (क)।
५९ समकंध---सम सरस (ग)।
६७ यह सजनी---आये सजनी (क)।
७६ बहुतै बिप्रिय---बहुत बिम्य प्रिय (ग)।
८२ ढार---दार (ग); सुत धार---सुति धार (ग)।
९१ मुमुखन---मनुषन (ग)।
९२ सुभूषन---स्वभूषन (क)।
९६ च्याये---च्याने (क)।
१०५ हियौ---हाथौ (क)।
१०६ महा....अनिवारौ---दयौ जुद्ध छय अनल हमारौ (क)।
१४३ भृंगन....घरनी---भृंगनि तहां भृंगनि की घरनी (ग); बीन सी---बंसी (ग)।
१४५ कल---फल (ग)।
१५० अंग---रग (क)।

पदावली

५ डोलै---लोले (क); बाँधति लोलै---बांधती डोलैं (क)।
६ सथिया---सतिए (ऊ)।
१४ गृह---जं (ऊ)।

१६ अंजनजुत—अंजन द्विति (ए)।

२२ कौन—कहाँ (क)।

२८ ठाँ....भूल्यौ—निरखि निरखि मन भूल्यौ (ऊ)।

२६ आगम—आँगन (ए); सुवन फूल—ठौर ठौर (ऊ)।

३६ तरनि तेज—अरुन उदय (उ) (क)।

४५ जैसै—अति (ए)।

४६ आई—ओंई (उ)।

६६ पहिरे—लिये (ख)।

८० कानि—काज (क)।

६२ चढ़ि....उचकैयाँ—धाय चढ़त लीनी उचकैया (ई), चढ़ि लई कुलांच कीनी उझकहियां (ए), चढ़ि कुलांचल उचकैयाँ (क)।

६६ तेज सदन—श्वेत दशन (क)।

१०६ निकट—निटक (ख)।

१२५ खेलि—फैल (क); नग रंगन—नगन रंग (क)।

१२६ भुज या—भुव यह (क)।

१२६ सैनन मैं—सेनमेन (ई)।

१३० रहे—रहसि (ई); धगुरनि—गुन्न (क)।

१३४ बिबिध....भूपन—शोभित सवे शृंगार बनावत (क)।

१४४ ब्रजजन—ब्रजकुल (ई)।

१४६ अपनौ—थांभ्यो (ई)।

१६७ मनिमाला—उरमाला (क)।

१६६ रिझवति—रिझये (ई)।

१७० जाइ—फाग (ए)।

१७५ उत तैं....आई—आई उत ते जुरि सुंदरि सब (आ)।

१७७ उठि—उठीयै (आ)।

१८० बर—नर (आ)।

१८३ परम अनंद—प्रेमानंद (ई) ।
२०२ भरि लालै—भरि लाजे (ई); नहिं—तब (ई) ।
२२४ मूरति धरे अनंग—सुरत धरे राग रंग (ई) ।
२३४ गति—गहि (क) ।
२३६ घिरि—जुरि (अ) ।
२३७ छेके है मदनगोपाल—रोके हैं सांवरे लाल (क) ।
२४२ रस—रंग (अ) (आ) ।
२४३ मति—गति (अ) ।
२४४ सॉवरे—माधुरी (अ), सांवरी (ई) ।
२५४ लिये—ले (ई) (क) ।
२५५ अंबुद—अंबर (ई) (क) ।
२५७ प्रेम—लाल (ई) ।
२५९ धनुधर—धुरंधर (अ), धनुर्द्धर (ई) ।
२७० चित हू न परै चैन—चित हूं न परे चेन मुख हूं न आवे बेन (क) ।
२७३ श्रवनमई री—भ्रमित मई री (ऊ) ।
२८१ उपमा को—उपमा नाहिं (ऊ), उपमा काहि (क) ।

---

४ पदों की प्रथम पंक्ति की अकारादि-क्रम-सूची

प्रथम पंक्ति

ए री सखी प्रकटे कृष्ण मुरारि ..
ऐसे केसे कहीयतु ब्रज वधुवन सोइ ते आये धों पिछोडी
ऐसो को है जो छुवे मेरी मटुकी अछूती दहेंडी जमी
कन्हैया माई पनघट बाट रोके रहतु .. .
कपि चल्यो सीय सुधि कों पुनि पायन तन लटकि के
कहो जू दान लेहो केसें हम तो देव गोवर्द्धन पूजन आई
कान्ह अटा चढ चंग उड़ावत में अपने आंगनहू ते हेर्यो
कान्ह कुवर के कर पल्लव पर मानों गोबर्द्धन नृत्य करे
कान्हर खेलियै हो बाढ्यौ श्री गोकुल में अनुराग .
काहे कु तुम प्यारे सषी भेष कीनो .. .
काहे न आय आप देखो रानी जु अपने सुत के कर्म
कुज कुटीर मिलि यमुना तीर खेलत होरी रस भरे अहं
कुसुम सेज पोढे दंपति करत हे रस बतियां .
कृष्ण जन्म सुनि अपने पति सों ढाढिन यों बोली जु
कृष्न-नाम जब तें श्रवन सुन्यौ री आली .
केलि करे प्यारी पिय पोढे लख चांदन में .
केलि कला कमनीय किशोर उभयरस पुंजन कुंजके नेरे
केसे केसे गाय चराइ गिरिधर .. ..
कोन लई कौन दई इंडुरिया गोपाल मेरी ..
कौन दान दानी को .. .. ..
खंभ की ओझल ठाढो सुबल प्रवीण सखा ..
खेलत रास रसिक रस नागर .. ..
खेले नंद को नंदन होरी अपने रंगीले ब्रज में ..
गाइ खिलावत सोभा भारी .. .. ..
गिरिधर रोकत पनघट घाट .. .. ..

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या

प्रथम पंक्ति

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या

---

५ शब्दार्थ-कोष

रूपमंजरी

८ छिल्लर—छोटा तालाव ।

४६ अमराइ—आम का बाग़; बरारी—बलिष्ठ, घनी; ती—थी ।

४९ चटसार—पाठशाला ।

५१ कासार—छोटा तालाब ।

५६ ननकारति—अस्वीकार करती है ।

६० पनच—प्रत्यंचा ।

६३ अहेर—शिकार ।

६६ हिमवत—हिमालय; बारी—कन्या ।

६७ लटकि लटकि—बल खाते हुए ।

६९ गोहन—साथ ।

१२७ पासी—पाश, बंधन ।

१५८ सुठौन—सुंदर ।

१७१ ओरे—ओले ।

१९६ मनू—रुद्र ।

२१४ गहबर—दुर्गम ।

२१५ चखौडे—दिठौने ।

२१६ पेसल—कोमल; आलबाल—थाला ।

२५७ टटावक—कदाचित् टुटका ।

३०१ हाउ—"संयोग समय में नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं" (हिंदी-शब्द-सागर) ।

३०५ हेला—"नायक से मिलने के समय नायिका की विविध विलास या विनोद-सूचक मुद्रा" (हिंदी-शब्दसागर); रेला—अधिकता ।

३१२ डभकि दै—डबडबा कर ।

३४१ घन हर घोरैं—बादल मंद-गति से गरज रहा हैं ।

३४२ पटबिजना—जुगनू ।

३६८ परव—परेवा, कबूतर ।

३७२ उखी—देग, वटलोई ।

३७६ चीत्यौ—चैतन्य, बुद्धिमान ।

३७८ बगावै—वेग से जाता है ।

३७९ फरी—एक प्रकार की छोटी चमड़े की ढाल ।

३८५ जरा—मगध देश के किसी श्मशान में रहने वाली एक राक्षसी। ऐसा प्रसिद्ध है कि मगध के बृहद्रथ राजा को भगवान् चंडकौशिक ने प्रसन्न हो कर एक फल दिया था और उस का यह प्रभाव बतलाया था कि जो स्त्री इसे खाएगी उस के केवल एक पुत्र होगा। राजा बृहद्रथ के दो स्त्रियाँ थी अतएव उन्हों ने उस फल के दो समान भाग कर के अपनी दोनों स्त्रियों को खिला दिया। कालांतर में दोनों स्त्रियों के आधे आधे शरीर वाला एक मृत बालक उत्पन्न हुआ। विवश हो कर इस बालक को श्मशान मे फेंक दिया गया। जरा राक्षसी ने बालक के शरीर के दोनों भागों को जोड़ कर उसे जिलाया था इसी से उस का नाम जरासंध पड़ा।

जरा. . .जुराई—रूपमंजरी इंदुमती से कहती है कि जरा राक्षसी को बुला कर राहु के शरीर के दोनों भागों को क्यों नहीं जुड़वा लेती क्योंकि शरीर जुड़ जाने पर जब राहु चंद्रमा को ग्रसेगा तब वह उसे बिलकुल पचा देगा। चंद्रमा उस के उदर से निकल कर पुनः विरहीजनों को कष्ट न दे सकेगा।

३८६ अहरनि—निहाई।

३८७ जब ही. .तहाँ—जब चंद्रमा का प्रतिबिंब शीशे पर पड़े।

३९९ बितन—कामदेव।

४०० नाट—स्वाँग, तमाशा।

४०६ मुलकि—प्रसन्न हो कर।

४१४ चाचर—होली का स्वाँग और हुल्लड़।

४१५ पटतारनि—पटताल, मृदंग में बजाई जाने वाली एक ताल; पहपटिया—शोर-गुल करने वाला।

४१७ बोलन—बुलाने।

४३१ चपरि कै—शीघ्रतापूर्वक।

४४३ कुंभ—घट, शरीर।

४५७ घैर—अपयश।

४६१ रिसिआई—कुपित हो कर।

४६७ मिरा-मत्त—मदिरा पी कर मतवाला व्यक्ति ।

४६८ निवारि सी लई—समाप्त सी कर ली गई, मृत सी जान पड़ने लगी ।

५४० कन्याइ—गोद में बिठलावे, आदर-सत्कार करे ।

५४१ थलराये पै—स्थिर अथवा शांत होने पर; निरपीड़े—कष्ट पहुँचाने पर; निरसाइ—म्लान हो जाती है ।

५५३ बिवधान—विच्छेद ।

५६१ करौत—आरा; चीरि... गात—सूर्योदय ने दोनों को एक दूसरे से पृथक् होने पर विवश किया ।

बिरहमंजरी

१६ रस-बलिता—रस-युक्त ।

६७ परौरत—मंत्र पढ़ कर फूँकता है, मंत्र बल से पीड़ित करता है ।

१०२ धुरवा—बादल; पटे—किरच के आकार की लोहे की फट्टी ।

१५१ बिधुंतुद—राहु ।

रसमंजरी

२३ नक्र-मुख—घड़ियाल का मुख ।

२५ धानी—धान्य, किसी प्रकार का अन्न । (विशेष—कदाचित् इस शब्द के स्थान पर मूल पाठ में 'घानी' रहा होगा क्योंकि अर्थ की दृष्टि से वह बहुत संगत प्रतीत होता है) ।

३५ संकुरैं—संकुचित होती हैं ।

६४ चंदचूड़—शिव ।

७३ गहगहि—प्रफुल्लित ।

७६ चुरकुट—चूर चूर, पूर्णतया शिथिल ।

९३ सागस—द्वेषयुक्त, सापराध ।

९४ चुचात है—टपक रहा है ।

१०४ अवधारैं—विचारपूर्वक निश्चित करती है ।

१२३ पेट...सर—पेट गिराने पर भी सिर न बचेगा ।

१९७ आरति करि—विरक्ति दिखला कर ।

२०० मूझैं—मुरझाती हैं, उदास होती हैं ।

२०५ घूम परचौ—चक्कर आ गया ।

२२९ मृड—शिव; त्राता—रक्षक।
२३६ गैबर—श्रेष्ठ हाथी (गज वर)।
२७७ भंगुर गति—बल खाती हुई चाल; लटी—क्षीण, पतली।
२७९ धम्मिल—बँधी चोटी।
३१४ धोरै—निकट; टकटोरै—टटोलती है।
३१७ जारत की नहियाँ—जलाता है कि नहीं।
३२५ कुंभीपाक—एक नरक विशेष।
३७९ चोप—उत्साह।

मानमंजरी नाममाला

२ करुनार्नव—दया के सागर।
७६ लुकअंजन—"वह कल्पित अंजन जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है" (हिंदी-शब्दसागर)।
१०० उसीसे सौ उठँगि—तकिया की टेक लगा कर।
११८ मुहकरि—कदाचित् आम की चोपी।

१४९ हाँतौ कीय—दूर किया, मिटाया।
३८२ सांति परी...नाह—यह अच्छा ही हुआ कि तेरा विवाह नहीं हुआ, नहीं तो तू अपने पति को दुःख देती।
३९३ तल्प—शय्या।
४६६ कंडु—खुजली।
५२३ असु—प्राण।

अनेकार्थमंजरी

४१ गज-पुष्कर—हाथी की सूँड़।
६० बहिक्रम—आयु।
९६ भगर-विद्या—हाथ की सफ़ाई, जादू।
९९ द्विभुजस्फालन—दोनो हाथों का संघर्ष, ताली।

स्यामसगाई

१४ अरदास—प्रार्थना।
२२ चरबाई—चतुर, चालाक।
२३ लंगर—नटखट।
२५ अचपलौ—अत्यंत चंचल।
४४ अरस-परस—दर्शन।
५४ ब्हैंक—बहँक कर, बेसुध हो कर।
६४ ही—थी।

७४ गारुड़ी—मंत्र द्वारा सर्प का विष उतारने वाला व्यक्ति।

९६ बाइगी—कहने वाला (विशेष—कदाचित् इस शब्द का संबंध हिंदी 'बायक' तथा सं० 'वाचक' से है[1])।

१११ डोल—झूला।

११२ झोटा—झोंका।

भँवरगीत

४१ उपाधि—छल, भ्रम।

५३ अवतारि कै—उत्पन्न कर।

५६ जोग ऊधौ जेहि पावौ—जिसे (योग का) अधिकारी समझो।

८४ सायुज्य—एक प्रकार की मुक्ति जिस मे जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाती है।

१२३ करम. .किये—क्रम क्रम से अथवा क्रमपूर्वक कर्म करने से।

१२६ कर्म बंधन ह्वै आवै—अवतार धारण करने के कारण हरि को कर्म करने पड़ते है।

१३१ नस्वर—नाशवान।

१३३ अधोक्षज—विष्णु।

१४२ बीरे—कान का एक आभूषण; बागे—अंगे की तरह का एक पहनावा, जामा।

१४७ बिडराति फिरति—व्याकुल हो कर इधर उधर भागती फिरती है।

१८२ संधान—निशाना; आयुध—अस्त्र।

१९९ नाहिन कोऊ चित्र—कोई आश्चर्यजनक बात नही है अर्थात् ये (कृष्ण) चाहे जैसा विचित्र कार्य करें उसे साधारण ही समझना चाहिए।

---

[1] श्री विश्वम्भर नाथ मेहरोत्रा इस शब्द का संबंध 'बाई' से जोड़ते हुए लिखते हैं—"बाई वह रोग है जिसके प्रकोप से मनुष्य अपने होश में न रहकर ऊटपटांग बातें बकने लगता है। संभवतः 'ऊटपटांग' बातों के अर्थ में ही 'बाइगी' शब्द का यहाँ प्रयोग हुआ है" ('स्याम-सगाई, और रुक्मिनी-मंगल,' टिप्पणी, पृ० ५)।

२२७ घातैं—प्रहार, आक्षेप।
२३२ मसिहारे—काले।
२५३ हरि भाँति कौ—कृष्ण की रीति अथवा युक्तियों को।
२६५ बादि—व्यर्थ, निष्प्रयोजन।
२६९ संथा—शिक्षा, पाठ।
३२३ बाध—बाधा, रुकावट।
३२८ अवसेसहि—शेष भाग को।
३५२ जबहिं...मूठी—जब तक मनुष्य की मूठ बँधी रहती है अर्थात् जब तक वह वास्तविकता से अनभिज्ञ रहता है।

रुक्मिनी मंगल

१८ अर सौं—हठपूर्वक।
५२ काहू नाहिं पतीजौ—किसी का विश्वास न करना।
६२ सुढार—सुदर; चटा-गन—विद्यार्थियों के समूह।
६७ अनुहारे—समान रंग-रूप वाले।
६८ रोवत हैं बारे—सूर्य के डर से अंधकार भाग जाता है, भ्रमर उसी के छोटे छोटे बालक हैं जो उस के चले जाने के कारण रो रहे हैं।
७१ अरकै—टकराती है; अरक-किरन—सूर्य की किरणें।
७३ जाल-रंध्र-मग...धुरवा—अट्टालिकाओं के झरोखों की जालियों के मार्ग से निकलता हुआ अगर लकड़ी का धुआँ जलपूर्ण मेघ के समान प्रतीत होता है।
७५ बगर बगर—प्रत्येक महल के ऊपर; गुड़ी—पतंग।
८७ छिप्र गति—शीघ्रतापूर्वक।
१०९ सचु—सुख।
१२६ कौल—कौर, ग्रास; तंतर—लाचार, विवश (विशेष—कदाचित् इस शब्द का संबंध सं० 'तंत्र' से है)।
१२७ पानिप—ओप, कांति; धौरे—श्वेत, उज्वल।
१२८ ओरे—ओले।
१३२ गोमाय—शृगाल।
१३५ परेवा—कबूतर।
१३६ छिया—छोकरी, लड़की।
१४४ अरबर मैं—अत्यंत शीघ्रता करने के कारण, हड़बड़ी में।
१४८ दारु...जैसैं—अरणी नामक काठ के बने हुए एक यन्त्र

को तेजी से मथने से अग्नि उत्पन्न होती है।

१७८ चहले दहले—थाले के कीचड़ में।

१८१ श्रीबत्स-बच्छ—विष्णु का वक्षस्थल।

१९२ ओज उबारे—शक्ति का उबाल अथवा जोश, पराक्रम की लंबी चौड़ी बातें।

१९५ ऊजन—सुदृढ़।

२१९ डहडह्यौ—आनंदित।

२२० गहगह्यौ—कांतियुक्त।

२२३ खुभी—कान का एक आभूषण।

२२५ अंस—कंधा।

२२८ बेझा—निशाना, लक्ष्य।

२३३ हरैं हरैं—धीरे धीरे।

२३८ मधुहा—शहद निकालने वाला व्यक्ति।

२४४ जूप—यज्ञ का वह खंभा जिस में बलि का पशु बाँधा जाता है। जूप लागे—यूप से बँधे हुए बलि-पशु के समान विवश; बजमारे—वज्र से मारे (एक प्रकार की गाली)।

२५३ कुलही—टोपी।

रासपंचाध्यायी

५ नीलोत्पल-दल—नीले कमल का पत्र।

२१ कुंडिका—कूँड़ी, पथरी।

२३ सिघ...अस—गरदन पर घने बाल (अयाल) वाले सिंह के समान शोभित।

२३ गार—गहरा गड्ढा।

३८ पंचप्रान—पाँच वायु (प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान)।

४५ बीरुध—बेल।

७० धर मैं—पृथ्वी के भीतर।

७५ इक बितस्ति कौ—एक बालिश्त का; संकु—खंभा।

७७ करनिका—कमल का छत्ता।

७९ कौस्तुभ मनि—समुद्र से निकला हुआ एक रत्न जिसे विष्णु अपने वक्षस्थल पर धारण करते हैं।

८० उड़—नक्षत्र।

१०० छपा—रात्रि।

१०५ कुंज-रंध्रनि—कुंजों के छिद्रों के बीच से (कुंजों की

पत्तियों के बीच के रिक्त स्थान से)।

१०६ बितन—फैला हुआ, विस्तृत; बितान—शामियाना; तनाव—शामियाने को खींचे रहने वाली रस्सियाँ।

१२३ पञ्चभौतिक तैं न्यारी—पंच भूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) द्वारा बने हुए मनुष्यों के साधारण शरीर से भिन्न।

१२६ सच्यौ—एकत्रित।

१३५ चलीं दुकि—शीघ्रतापूर्वक चलीं।

१४० छबि-बिलुलित—सुंदरता से हिलती हुई।

१५० उदर-दरी. . रखवारी—जब परीक्षित अपनी मा उत्तरा के गर्भ में थे तभी द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने उन पर ब्रह्मास्त्र का प्रहार किया था। उस समय गर्भ के भीतर प्रवेश कर के कृष्ण ने उन की रक्षा की थी[1]।

१६६ राका-मयंक—पूर्णिमा का चंद्रमा।

१६६ अनु—समीप।

२०० घर. . .है—स्त्रियो का गृहस्थ धर्म भ्रम है (असत् ज्ञान है), तुम्हारे रूप के सामने उस का कोई महत्त्व नहीं है।

२०४ ते रहे कौर तै—वे एक पंक्ति से (मंत्रमुग्ध की भाँति) खड़े हुए हैं।

२१८ नव-नीत. . हिय—नए प्राप्त किए हुए मित्र का मक्खन के तुल्य (कोमल) हृदय।

२२६ भीर—समूह।

२३३ धूँधरी—धुँधली।

२६० छिलछिल—छिछला।

२६५ पुट—हलका रंग।

२७३ जाति—चमेली की जाति का एक पुष्प। जूथिका—जूही का पुष्प।

---

[1] दे० 'दशम स्कंध', अध्याय १, पंक्ति ८३-८८ तथा 'श्रीमद्भागवत', स्कंध १, अध्याय ८

२७६ करबीर—कनेर।

२८१ दुख-कंदन—दुःख को नष्ट करने वाले।

२८७ नैसुक—थोड़ा।

२६२ पनस—कटहल।

३०२ मुख-चाँदने—मुख के प्रकाश में, मुखचंद्रिका में।

३१३ भृंगी—बिलनी नामक कीड़ा। इस के विषय में यह प्रसिद्ध है कि यह किसी कीड़े को पकड़ कर मिट्टी से ढक देता है और स्वयं उस पर बैठ कर भिन्न भिन्न शब्द करता है। भृंगी के भय से वह कीड़ा भी उसी का सा हो जाता है।

३४१ मानिनि-तन-काछे—मानिनी का शरीर धारण किए हुए।

३४५ क्वासि—कहाँ हो।

३५३ दृगंचल—पलक।

३५५ बहुरि-बहुरि—लौट कर।

३५८ अवधि-भूत इंदिरा—अपने चरम उत्कर्ष को प्राप्त लक्ष्मी।

३७१ प्रनत-मनोरथ-करन—प्रणाम करने हुए अर्थात् शरणागत की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले।

३८६ सनै सनै—धीरे धीरे।

३६० अटवी मैं अटत—वन में घूमते फिरते हो; कूर्प—कटीली घास; अन्यारे—नुकीले।

३६२ अलबल बोलैं—ऊटपटाँग बातचीत करती है।

३६४ दृष्टिबंध करि—(इंद्रजाल अथवा जादू के प्रभाव से दर्शकों की) नज़र बाँध कर; नटवर—श्रेष्ठ नट या मदारी।

४०५ पटकी—कमर में बाँधा जाने वाला दुपट्टा।

४१६ एव—ही।

४५१ तूल—झगड़ा।

४५२ निरवधि—असीम; सूल—पीड़ा, दुःख।

४७७ तिरप—"नृत्य में एक प्रकार का ताल जिसे त्रिसम या तिहाई कहते हैं" (हिंदी-शब्दसागर)। त्रिसम अथवा तिहाई के ताल में नृत्य करने वाला तीन बार तेजी से एक ही स्थान पर चक्कर खाता है। अंतिम बार

जिस समय वह रुकता है उसे त्रिसम का मुख्य ताल (सम) कहते हैं।

४७७-७८ कोई सुंदर स्त्री किसी सखी के हाथ (हथेली) पर त्रिसम का ताल बाँध कर अथवा त्रिसम की गति से नाचती है। उसे नाचता देख कर ऐसा प्रतीत होता है मानों हथेली पर लट्टू नाच रहा हो; इस दृश्य को देख कर कृष्ण लट्टू (मुग्ध) हो जाते हैं।

४६६ सुलफ—कदाचित् यह शब्द 'सुलप' (=सुंदर आलाप) का विकृत रूप है।

५१६ गोलक—आँख की पुतली।

५३४ दगरौ—मार्ग।

५३८ व्रीड़न—लज्जित करने वाले।

५३६ मरगजी-माल—गीजी अथवा मली हुई माला।

५५६ भाँति—रीति।

५८३ अधिकारी—उपयुक्त पात्र।

५८६ हरि-धर्म-बहिर्मुख—वैष्णव-धर्म-विरोधी।

सिद्धांत पंचाध्यायी

६ महाभूत—पंचतत्त्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश)।

७ महतत्व—जीवात्मा।

१० बिस्व-प्रभव—विश्व की उत्पत्ति का कारण।

१४ आश्रय—अवलंब, आधार; अवधि-भूत—चरम उत्कर्ष को प्राप्त।

१८ निरोध—प्रतिबंध अथवा नियंत्रण।

२६ निरलास—इस शब्द का भावार्थ सार या निचोड़ जान पड़ता है।

२७ ननु—निश्चयपूर्वक।

६० खेवा—संभवत इस शब्द का प्रयोग यहाँ 'समूह' के अर्थ में हुआ है।

६१ निदेसा—निर्देश, आज्ञा।

७७ आत्मा-निष्ठ—आत्मा में स्थित; आतम-गामी—आत्मा को जानने वाला।

७८ अनावृत—जो ढँका न हो, प्रत्यक्ष।

८० निरबृत्ति-परा तैं—मुक्ति-

दायिनी होने के कारण।

८४ इंछै—इच्छा करते हैं।

१५८ ऊती—क्रीड़ा, खेल।

२१६ काम्य—"वह यज्ञ या कार्य जो किसी कामना की सिद्धि के लिए किया जाय" (हिंदी-शब्दसागर)।

२२० अनाकर्न—न सुनने वाला।

२२३ अविसेखै—समान रूप से।

२२५ अष्टांग-साधना—आठ प्रकार की योग की क्रियाएँ (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, और समाधि)।

२३३ आलात—जलती हुई लकड़ी।

२३४ अंसनि—कंधों पर।

२४० अनागत—अकस्मात।

२७४ छिया करि—घृणित वस्तु मान कर।

दशम स्कंध

प्रथम अध्याय

१ लच्छन—श्रीमद्भागवत पुराण के वर्ण्य विषय जो सृष्टि की उत्पत्ति और लय आदि से संबंध रखते हैं। इन की संख्या दस है—सर्ग, विसर्ग, स्थान, पोषण, ऊति, मन्वन्तर, ईशानुकथा, निरोध, मुक्ति, और आश्रय। इन में प्रथम नौ का वर्णन दसवें विषय 'आश्रय' (परब्रह्म श्री कृष्ण का चरित्र) को भलीभाँति मनोगत करने के लिए है। फलत. 'आश्रय' को नौ लक्षणों का लक्ष्य कहा गया है[1]।

१२ रेनुकनूका—धूल का कण।

१७ दया दरेर—दया के 'प्रवाह' का 'धक्का' अर्थात् असीम दया।

२४ महदादिक—'महत्' अथवा महत्तत्व (तथा पंच महाभूत, शब्दादि, तन्मात्रा व इंद्रिय) आदि प्रकृति में होने वाले विकार। महर्षि कपिल के सांख्य मत में इन्हें सृष्टि का

---

[1] **दे० 'श्रीमद्भागवतभाषा', स्कंध २, अध्याय १० तथा स्कंध १२, अध्याय ७**

कारण माना गया है और 'कारणसृष्टि' की संज्ञा दी गई है।

२५ बिसर्ग—महत्तत्व आदि कारणों द्वारा उत्पन्न समस्त चराचर के स्थूल शरीर। इन्हें 'स्थूलसृष्टि' अथवा 'कार्यसृष्टि' कहा गया है।

२६ मर्जाद बितान—मर्यादा का विस्तार अथवा उत्कर्ष; 'थान'—अपनी अपनी मर्यादा का पालन करते हुए सूर्यादिक जिस उत्कर्ष अथवा श्रेष्ठता को प्राप्त करते हैं उस का नाम 'स्थान' है।

२९ समीचीन—यथार्थ; 'मन्वंतर' बृत्ति—मनु आदि के धर्माचरण में संलग्न होने का नाम।

३० 'ईसान कथा'—राजाओं का जीवनचरित।

३१ निरोध—दुष्ट राजाओं को परास्त कर के अपने वश में करना (विशेष—श्री कर्मचंद गुग्गलानी के अनुसार 'निरोध' शब्द का यह अर्थ श्रीधर स्वामी कृत है)।

३६ अवर निरोध भेद—उपर्युक्त गुग्गलानी जी के अनुसार वल्लभाचार्य ने 'निरोध' शब्द का अर्थ दो प्रकार से किया है—(१) प्रपच विस्मृतिपूर्वक भगवान् में भक्त की आसक्ति (२) आत्मविस्मृतिपूर्वक भगवान् की अपने भक्त में आसक्ति। आगे की पंक्तियों में कवि ने दोनों प्रकार के 'निरोध' का वर्णन किया है।

६४ पितहि न...दियौ—यदु ययाति राजा के पुत्र थे। एक समय ययाति के पापाचरण से क्रुद्ध हो कर शुक्राचार्य ने उन्हें श्राप दे कर तुरंत वृद्ध कर दिया किंतु क्रोध शांत होने पर बाद में उन्हों ने यह भी कहा कि तुम किसी पुरुष की युवावस्था के साथ अपनी वृद्धावस्था बदल सकोगे। कामुक ययाति ने अपने पुत्र यदु से अपनी युवावस्था देने के लिए आग्रह किया किंतु उस ने ऐसा

करना अस्वीकार किया[1]।

६६ बिभावन—उत्पन्न करने वाले।

६६ इषै—इच्छानुसार।

७१ मुमुषन कौं—मुमुक्षुओं को, मुक्ति पाने के इच्छुक व्यक्तियों को; संसृति—आवागमन।

७७ अतिरथि—वह व्यक्ति जो बहुत योद्धाओं के साथ अकेले ही लड़ सकता हो।

८० गिलत—निगलते हुए।

८१ दुरत्यय—अपार।

८६ उदर-दरी मैं पैसे—देखिए पृष्ठ ५८१।

६० अर्भ—बालक।

६४ धर्म के बर्म—धर्म के रक्षक।

१०१ बैयासिक—व्यास के पुत्र।

११० कलमल्यौ—आकुल हुए।

११६ बिबुधन सौं—देवताओं से।

१२४ परिकर—अनुचरों का समूह।

१३७ किक्यान—केकान देश के घोड़े; पलान—चारजामा।

१४४ जंता—सारथी।

१४७ आनकदुंदुभि—वसुदेव।

१४६ अमै—क्षति, अनिष्ट[1]।

१६१ सुरापी—शराबी।

१७४ औन—कदाचित् इस शब्द का संबंध सं० 'अवन' (= सुख) से है।

१६७ कर्म-कषाय—कर्म रूपी कसैलापन।

द्वितीय अध्याय

२६ बिसंसृत भयौ—गिर गया।

४१ सुसा—बहिन; गुर्बिनी—गर्भिणी।

५६ प्रपन्न—आश्रित।

६३ ऊर्ननाभि—मकड़ी।

६४ बिस्फुलिंग—चिनगारी।

७० वार—इस पार अर्थात् संसार में।

७७ उखटि कै परे—लड़खड़ा कर गिरे।

---

[1] दे० श्रीमद्भागवत, स्कंध ६, अध्याय १८

[1] श्री कर्मचन्द गुग्गलानी ने इस का अर्थ "इस तरह" दिया है।

तृतीय अध्याय

५७ उपसंहरौ—परित्याग करो।
६७ लटि रही—लुभा रही।
७० घूमि—चक्कर खा कर, व्याकुल हो कर।

चतुर्थ अध्याय

३ रौर—कोलाहल।
१७ गारौ—गर्व।
२३ ब्रम्हहा—ब्रह्महत्या करने वाला।
२५ सौनक—कसाई।
३८ बलगन करै—बक बक करते हैं, बातें मारते हैं।
५२ बृकन—भेड़ियों को; अजन प्रति—बकरियों के समीप।

सप्तम अध्याय

२० बरहे—खेत सींचने वाली छोटी नाली।
२१ अभिचार—मंत्र आदि के प्रयोग द्वारा प्रेरित।
३० कूट—पर्वत की चोटी।
३६ साँकरी—संकट, कष्ट।
४३ परी...धुकि—पृथ्वी पर गिर पड़ी।
५० घुरि गयौ—लिपट गया।
५३ किरच किरच—टुकड़े टुकड़े होकर।

अष्टम अध्याय

१२ अतींद्रिय—इंद्रियों के अनुभव के परे, अगोचर।
४० नाक-नथूली—नाक की छोटी नथ; झगूली—बच्चों के पहनने का ढीला कुरता।
४१ जटित बघूली—सोने अथवा चाँदी में जड़ा हुआ छोटा बाघ का नाखून।
६१ खरिक—पशुओं के रहने का स्थान, बाड़ा; खोरि—गली।
६४ अरग अरग—चुपके चुपके।
८६ लिलाई—लीला अथवा क्रीड़ा करता है।
१०१ माखन मो हारे—यह पाठ चिंत्य है।
१०३ हित-ईषनी—हित की प्रबल इच्छा रखने वाली।

नवम अध्याय

११ पृथु—चौड़ी; बिलुलित—हिलती हुई; कबरी—चोटी।

१२ नेत—मथानी की रस्सी।

४८ नोई—दूध दुहते समय गाय के पैर बाँधने की रस्सी।

४९ अवर . . . साँठि — और (रस्सी) जोड़ ली।

८२ दरबी—दाल आदि चलाने का पात्र, चमचा।

दशम अध्याय

४२ अव्यय—सदा एक से रहने वाले।

५४ परिचर्या—सेवा।

६८ ऊक—अंगार; बिभाकर. . टूक—दो सूर्यों के टुकड़े।

७० गुह्यक—कुबेर के यक्ष।

एकादश अध्याय

२४ पाँवरि—खड़ाऊँ।

५५ नाख्यौ—पटका, फेंका।

६२ सुठे—सुंदर।

१११ बिचेतन—मूर्च्छित।

१३७ अगदराज—औषधियों के राजा।

द्वादश अध्याय

२९ नर-दारक—मनुष्य का बेटा।

४३ तिलोदक—"मृतक संस्कार की एक क्रिया जिस में जल और तिल लेकर मृतक के नाम से छोड़ते हैं" (हिंदी-शब्दसागर)।

५४ तरहर—नीचे।

८४ गह्वर—अंधकारमय, गूढ़ स्थान।

९७ सूत—पुराणवक्ता।

११२ अनघ—पाप से मुक्त।

त्रयोदश अध्याय

२१ बिसाखा—सत्ताइस नक्षत्रों के समूह में सोलहवाँ नक्षत्र।

१०७ अजा जवनिका—माया का पर्दा।

चतुर्दश अध्याय

४ ईड्य—प्रशंसनीय, स्तुत्य; तड़िदिव—बिजली की भाँति।

६ अवतंस—श्रेष्ठ।

४७ अनासक्त—लोभ रहित।

६७ त्रिसरैन—"वह चमकता हुआ कण जो छेद में से आती हुई धूप में चलता या

घूमता दिखाई देता है" (हिंदी-शब्दसागर)।

षोडश अध्याय

८ ह्रद—झील।
१७ अमुना—इस से।
४८ बरियारौ—बलवान।
५१ माड़े—मैदे की बनी हुई एक प्रकार की बहुत पतली रोटी;[1] भाँड़े—बरतन।

सप्तदश अध्याय

६ दौर—धावा।
१४ भिहरानौ—टूट पड़ा; मधु-रिपु-आसन—गरुड़।
२६ लेलिह—सर्प।

अष्टादश अध्याय

२१ बीरी—समूह, दल।
४० टोल—मंडली।

एकोनविंश अध्याय

२० बगदी—लुढ़क चलीं।

विंश अध्याय

३ प्रावृट—पावस, वर्षा।
१६ उत्पथ—कुमार्ग।
२१ बुढी—राम की बुढ़िया, बीर-बहूटी, लुढ़ी—लुढ़क चलीं; उछलीध्र—कुकुरमुत्ता।
२७ ऊर्म्मी—तरंग, लहर।
५४ बनौकस—बनवासी।
५६ कचोर—कटोरा।
६८ गतकल्मष—पाप रहित।
८७ पुहुपवती—रजस्वला।

एकविंश अध्याय

४५ भई. . ईरति—मुनियों (के हृदय) को आंदोलित अथवा चंचल किया।

द्वाविंश अध्याय

२ दारिका—कन्याएँ।
६ हविषा—साकल्य, जौ तिल आदि मिली हुई हवन की सामग्री।

---

[1] **दे० श्रीमद्भागवत, १०–१६–२४ पर श्रीधर स्वामी की टीका—"मंडकपाकभाजनंतद्वत्"।**

१३ अमुना—इस।

३५ बेपंत—काँपती है।

४६ आत्यंतिक—बहुत काल तक ठहरने वाला।

त्रयोविंश अध्याय

११ जाचग्या तैं—माँगने से।

२० ओदन—भात।

२१ मचिबौ—उत्तेजित होना।

३० अरथी—गरज़ वाला।

६७ अध्यास—मिथ्याज्ञान, भ्रम।

६६ जजन—यज्ञ का स्थान।

७० सन्न—समीप [संभवतः इस शब्द के स्थान पर 'सत्र' (=यज्ञ) पाठ रहा होगा[1]]।

७७ रलक—चोटी।

८२ असूया—ईर्षा।

पंचविंश अध्याय

१ पंचबिस—पंच तत्त्व तथा उन की पाँच प्रकृतियाँ।

४ घाती—छल, चालबाज़ी।

५ उरन पूँछि—भेड़ की पूँछ।

२६ साँप बेठना—कदाचित् यह कुकुरमुत्ता का प्रादेशिक नाम है। श्रीमद्भागवत में इस के लिए 'छत्राक' शब्द प्रयुक्त हुआ है[1]।

सप्तविंश अध्याय

२१ दुरासद—कठिन।

एकोनत्रिंश अध्याय

१६ खजादिक—संगीत के षडज आदि सात स्वर।

४६ पारषद—पास रहने वाला, मुसाहब।

१२० कलगी—पक्षियों के पंख जिन्हे मुकुट आदि पर लगाया जाता है।

१२१ आरज-पथ—उच्च कुल की मर्यादा।

१२२ कौर तैं—पक्ति से, क़तार में।

पदावली

६ कोरन सथिया चीतति—कोनो मे स्वस्तिक चिह्न

---

[1] दे० श्रीमद्भागवत, १०-२३-

[1] दे० १०-२५-१६

चित्रित करती है।

८४ गौरी—एक राग।

१०७ उरप तिरप—नृत्य का एक भेद।

१२० हस्तक—ताली।

१२८ मड़हन—मुंडेरियों पर।

१३२ हटरी—दिवाली के अवसर पर मिट्टी का बनाया हुआ एक छोटा सा मकान जो विशेष रूप से सजाया जाता है।

१५१ रमकि रमकि—पेंग मार कर।

१८४ भुरकौ—छिड़का हुआ।

२३४ अनाघात—"संगीत के अंतर्गत ताल विशेष। वह विराम जो गायन में चार मात्राओं के बाद आता है और कभी कभी सम का काम देता है" (हिंदी-शब्द-सागर)।

२८५ निस्तम—अंधकार रहित, उज्वल।